चमत्कारी कुरान और
इसके कुछ रहस्य

रिसाले-ए-नूर संग्रह से

मानवता का ईश्वरीय मुठभेड़ श्रृंखला

चमत्कारी

कुरान और उसके कुछ रहस्य

बारहवाँ वचन
बीसवाँ वचन
पच्चीसवाँ शब्द
उनतीसवाँ पत्र

बेदिउज्जमां

नर्स ने कहा

The Light

न्यू जर्सी 2006

पहला संस्करण कुरान के रहस्यों के नाम से प्रकाशित 2002 संशोधित संस्करण 2006

08 07 06 05 2 3 4 5

द लाइट, इंक. द्वारा प्रकाशित.
26 वर्ल्ड्स फेयर डॉ. सुइट सी समरसेट, न्यू जर्सी,

08873, यूएसए

www.thelightpublishing.com

तुर्की से अली उनाल द्वारा अनुवादित

लाइब्रेरी ऑफ कांग्रेस कैटलॉगिंग-इन-पब्लिकेशन डेटा

नर्सी, सईद, 1877-1960।
[रिसाले-ए नूर. अंग्रेजी. चयन]
कुरान के रहस्य / बेदिउज्जमां सईद नूरसी. पृ. सेमी. - (मानवता का ईश्वर से साक्षात्कार ; 7)

"रिसाले-ए नूर संग्रह से।"
इसमें ग्रंथसूची संदर्भ (पृ.) और अनुक्रमणिका शामिल है।
आईएसबीएन 1-59784-004-1 (पीबीके: एल्क पेपर) 1. नूरकुलुक--सिद्धांत। 2.
कुरान--आलोचना, व्याख्या, आदि।
शीर्षक. II. श्रृंखला.
बीपी252.आर5713 2002
297.1'221--डीसी21

2002013931

मुद्रित लेखक:
Çaðlayan A.Þ., इज़मिर - तुर्की, जनवरी 2006

विषयसूची

उनतीसवाँ पत्र

कुरान

बेदिउज्जमां और रिसाले-ए नूर

अपने जीवनकाल की उपलब्धियों के अनेक आयामों के साथ-साथ अपने व्यक्तित्व और चरित्र के कारण, बेदिउज़्ज़मान (1877-1960) मुस्लिम जगत में एक महत्वपूर्ण विचारक और लेखक थे और अपने निरन्तर प्रभाव के कारण आज भी हैं।

उन्होंने इस्लाम की बौद्धिक, नैतिक और आध्यात्मिक शक्तियों को सबसे प्रभावी और गहन तरीके से प्रस्तुत किया, जो इसके चौदह शताब्दी के इतिहास में विभिन्न स्तरों पर स्पष्ट है। वे अस्सी-पांच साल तक जीवित रहे। उन्होंने लगभग सभी वर्ष इस्लाम के लिए प्रेम और जोश से भरे हुए, तर्क और कुरान और पैगंबर के उदाहरण की छाया में आधारित एक बुद्धिमान और मापा सक्रियता में बिताए।

बेदीउज्जमां उस दौर में जी रहे थे जब भौतिकवाद अपने चरम पर था और बहुत से लोग साम्यवाद के पीछे पागल थे, और दुनिया बहुत बड़े संकट में थी। उस महत्वपूर्ण दौर में, बेदीउज्जमां ने लोगों को विश्वास के स्रोत की ओर इशारा किया और उनमें सामूहिक बहाली की प्रबल आशा जगाई। ऐसे समय में जब विज्ञान और दर्शन का इस्तेमाल युवा पीढ़ी को नास्तिकता की ओर गुमराह करने के लिए किया जा रहा था, और शून्यवादी दृष्टिकोण का व्यापक आकर्षण था, ऐसे समय में जब यह सब सभ्यता, आधुनिकीकरण और समकालीन सोच के नाम पर किया जा रहा था और जो लोग उनका विरोध करने की कोशिश करते थे, उन्हें सबसे क्रूर उत्पीड़न का सामना करना पड़ता था, बेदीउज्जमां ने पूरे लोगों के समग्र पुनरुत्थान के लिए प्रयास किया, उनके मन और आत्मा में वही सब फूंक दिया जो आधुनिक और पारंपरिक शिक्षा और आध्यात्मिक प्रशिक्षण दोनों के संस्थानों में सिखाया जाता है।

बेदिउज़्ज़मान ने देखा था कि आधुनिक अविश्वास विज्ञान और दर्शन से उत्पन्न हुआ है, अज्ञानता से नहीं

जैसा कि पहले भी कहा गया है। उन्होंने लिखा है कि प्रकृति संग्रह है
दैवीय संकेत और इसलिए विज्ञान और धर्म नहीं कर सकते
परस्पर विरोधी अनुशासन हो सकते हैं। बल्कि, वे एक ही सत्य की दो (स्पष्टतः) भिन्न अभिव्यक्तियाँ हैं। मन को एक दूसरे से अलग होना चाहिए।
हमें विज्ञान से प्रकाशित होना चाहिए, जबकि हृदय को धर्म से प्रकाशित होना चाहिए।

बेदिउज़्ज़माँ सामान्य अर्थों में लेखक नहीं थे।
शब्द। उन्होंने अपनी शानदार रचना रिसाले-ए-नूर लिखी,
5,000 पृष्ठों से अधिक का संग्रह, क्योंकि उनका एक मिशन था: उन्होंने भौतिकवादी और नास्तिकवाद के खिलाफ संघर्ष किया
विज्ञान और दर्शन द्वारा पोषित और परीक्षित विचारधारा के रुझान
इस्लाम की सच्चाइयों को आधुनिक मन और हृदय तक पहुंचाना
समझ के हर स्तर पर। रिसाले-ए-नूर, कुरान की एक आधुनिक टिप्पणी, मुख्य रूप से कुरान की व्याख्या पर केंद्रित है।
ईश्वर का अस्तित्व और एकता, पुनरुत्थान, पैगम्बरत्व,
ईश्वरीय धर्मग्रंथों में मुख्य रूप से कुरान,
अस्तित्व के अदृश्य क्षेत्र, ईश्वरीय नियति और मानव की स्वतंत्र इच्छा, उपासना, मानव जीवन में न्याय, तथा सृष्टि में मानवता का स्थान और कर्तव्य।

लोगों के दिलो-दिमाग से मिटाने के लिए
झूठी मान्यताओं और धारणाओं के संचित 'तलछट' को निकालने और उन्हें बौद्धिक और आध्यात्मिक रूप से शुद्ध करने के लिए, बेदिउज़्ज़मान जोरदार ढंग से लिखते हैं और दोहराते हैं।
वह न तो अकादमिक और न ही उपदेशात्मक तरीके से लिखते हैं; बल्कि
वह भावनाओं से अपील करता है और अपने विचारों को उंडेलने का लक्ष्य रखता है
लोगों के दिलों और दिमागों में विश्वास और दृढ़ विश्वास जगाने के लिए विचारों और विचारों को डालना।

यह पुस्तक रिसाले-ए-नूर से एक चयनित खंड है
संग्रह।

बारहवाँ वचन

प्रकट बुद्धि और

मानवीय विचार

भगवान के नाम पर,
दयालु, कृपालु.

जिसे बुद्धि दी गई है, उसे निश्चय ही
बहुत अच्छा दिया गया है। (2:269)

[नोट: यह शब्द एक संक्षिप्त तुलना प्रस्तुत करता है
कुरान के पवित्र ज्ञान और मानव दर्शन के बीच अंतर, मानवता के
व्यक्तिगत और सामाजिक जीवन के लिए कुरान की शिक्षा और प्रशिक्षण
का संक्षिप्त सारांश
जीवन, और कुरान की श्रेष्ठता का संकेत
अन्य सभी दिव्य शब्दों और भाषण के लिए।]

चार बुनियादी बातें

पहला मूलभूत तथ्य: के बीच अंतर

कुरानिक ज्ञान और मानव दर्शन: एक धार्मिक, कुशल और प्रसिद्ध शासक बनाना चाहता था

कुरान की एक प्रति उतनी ही सुन्दरता से जितनी कि अपेक्षित है

इसके पवित्र अर्थ और चमत्कारी शब्द

अपने अद्भुत शब्दों को योग्य रूप से सजाने के लिए

फैशन। इसलिए, उन्होंने इसे सभी प्रकार के कीमती रत्नों के साथ वास्तव में अद्भुत फैशन में लिखा।

इसकी सच्चाई की विविधता को देखते हुए, उन्होंने इसके कुछ पत्र हीरे और पन्ने से लिखे, अन्य मोती और

गोमेद, दीप्तिमान रत्न और मूंगा, और सोना और चांदी। वह

इस तरह से सजाया और संवारा गया कि हर कोई प्रशंसा और आश्चर्य से भर गया।

कुरान सबसे कीमती कलाकृति बन गई

सत्य के लोग, क्योंकि इसकी बाहरी सुंदरता इसकी ओर संकेत करती थी

शानदार आंतरिक सौंदर्य और अद्भुत अलंकरण।

शासक ने यह कुरान एक विदेशी [गैर-मुस्लिम] दार्शनिक और एक मुस्लिम विद्वान को दिखाया।

उन्हें परखने और पुरस्कृत करने के लिए, उसने प्रत्येक को लिखने के लिए कहा

दोनों व्यक्तियों ने इस बात का अनुपालन किया। दार्शनिक

अक्षरों के आकार, सजावट और अंतर-संबंधों और रत्नों के गुणों और उपयोग के तरीकों पर चर्चा की। उन्होंने इसके अर्थ के बारे में कुछ नहीं कहा, क्योंकि उन्होंने

केवल एक अलंकृत वस्तु देखी और अनजान था

यह एक अमूल्य पुस्तक है, जिसमें बहुत गहरा अर्थ छिपा है। चूँकि उन्हें

इंजीनियरिंग के बारे में अच्छी जानकारी थी

और रसायन शास्त्र, चीजों का वर्णन कर सकते थे, और एक बात जानते थे

आभूषणों के बारे में तो बहुत कुछ है लेकिन अरबी के बारे में कुछ नहीं,

उन्होंने अपनी पुस्तक इसी के अनुसार लिखी। लेकिन सत्य-प्रेमी मुस्लिम विद्वान,

यह समझते हुए कि यह सही था

स्पष्ट पुस्तक (बुद्धिमान कुरान) ने इसकी उपेक्षा की।

वार्ड अलंकरण और पत्रों की सजावट

और पवित्र सत्य और गुप्त प्रकाश का वर्णन किया
सजावट के पर्दे के पीछे, क्योंकि वे कहीं अधिक हैं
मूल्यवान और सम्मान के योग्य, अधिक उपयोगी और
विस्तृत।

दोनों व्यक्तियों ने अपनी पुस्तकें शासक को भेंट कीं।
जिसने दार्शनिक की किताब से शुरुआत की।
उसने बहुत मेहनत की थी, फिर भी शासक ने उसकी पुस्तक लेने से
इनकार कर दिया और उसे अपने घर से निकाल दिया।
उपस्थिति। क्यों? क्योंकि उसने कुछ भी नहीं लिखा था
रत्नजटित कुरान की सच्ची बुद्धि, समझी गई
इसका कोई मतलब नहीं समझा, और अपना अनादर दिखाया
क्योंकि यह सोचकर कि सत्य का यह स्रोत है
अर्थहीन सजावट का। दूसरी पुस्तक को देखते हुए, और यह देखते हुए
कि सत्य-प्रेमी विद्वान ने एक बहुत ही सुंदर और उपयोगी व्याख्या, एक
बुद्धिमान और ज्ञानवर्धक रचना लिखी थी, वह

उसे बधाई दी। यह शुद्ध ज्ञान था, और इसका
लेखक एक सच्चे विद्वान, एक सच्चे ऋषि थे।
पुरस्कार स्वरूप विद्वान को 10 स्वर्ण सिक्के दिए गए।
प्रत्येक अक्षर के लिए शासक का अटूट खजाना
उनकी पुस्तक का.

इसका अर्थ इस प्रकार है: अलंकृत
कुरान यह कलात्मक रूप से निर्मित ब्रह्मांड है;
शासक शाश्वत प्रभु है। पहला मनुष्य प्रतिनिधि है-

दर्शन और दार्शनिकों की लाइन से नाराज़ है; दूसरा आदमी कुरान और उसके छात्रों के तरीके का प्रतिनिधित्व करता है। वास्तव में, बुद्धिमान कुरान इस ब्रह्मांड (एक मैक्रो-कुरान) का सबसे उत्कृष्ट व्याख्याता और सबसे शानदार अनुवादक है। यह वह मानदंड है जो जिन्न और मानवता को सृष्टि के संकेतों में निर्देश देता है - सृष्टि और ब्रह्मांड के संचालन के बारे में दिव्य कानून - ब्रह्मांड की चादरों और समय के पन्नों पर शक्ति की कलम द्वारा अंकित।

यह प्राणियों को, जिनमें से प्रत्येक का एक अर्थपूर्ण अक्षर है, दूसरे का अर्थ (उनके निर्माता के कारण) दर्शाता है और कहता है: "वे कितने सुंदर ढंग से बनाए गए हैं, वे कितने अर्थपूर्ण ढंग से निर्माता की सुंदरता और कृपा की ओर संकेत करते हैं।" इस प्रकार यह ब्रह्मांड की वास्तविक सुंदरता को दर्शाता है।

सृष्टि के "अक्षरों" के डिजाइन और सजावट पर केंद्रित दर्शन ने अपना रास्ता खो दिया है। जबकि इसे इस वृहद पुस्तक के अक्षरों को दूसरे के अर्थ के रूप में देखना चाहिए (ईश्वर के कारण), यह उन्हें स्वयं के अर्थ के रूप में देखता है (स्वयं के कारण) और कहता है: "वे कितने सुंदर हैं," न कि "वे कितने सुंदर तरीके से बनाए गए हैं।" इस प्रकार दार्शनिक सृष्टि का अपमान करते हैं और उसे शिकायत करने के लिए मजबूर करते हैं। सच में, भौतिकवादी दर्शन एक झूठ है जिसमें कोई सत्य नहीं है, सृष्टि का अपमान है।

दूसरा मूलभूत सिद्धांत: व्यक्तिगत जीवन में नैतिक प्रशिक्षण: दर्शनशास्त्र के सच्चे विद्यार्थी फिरौन जैसे अत्याचारी होते हैं। यदि वे समझते हैं कि ऐसा करना उनके हित में है, तो वे सबसे नीच चीज़ के सामने झुककर स्वयं को अपमानित करते हैं।

ये भौतिकवादी छात्र जिद्दी, गुमराह करने वाले और अडिग होते हैं, लेकिन इतने नीच होते हैं कि एक सुख के लिए अंतहीन अपमान को स्वीकार कर लेते हैं; अडिग लेकिन इतने नीच कि एक नीच लाभ के लिए शैतानी लोगों के पैर चूम लेते हैं। वे अहंकारी और दबंग होते हैं, लेकिन अपने दिल में किसी सहारे को न पाकर, पूरी तरह से नपुंसक और घमंडी तानाशाह होते हैं। ऐसे लोग अपनी भौतिक और शारीरिक इच्छाओं को पूरा करने के लिए प्रयासरत स्वार्थी अहंकारी, व्यक्तिगत हितों और कुछ राष्ट्रीय हितों के पीछे भागने वाले से अधिक कुछ नहीं होते।

कुरान के सच्चे विद्यार्थी ईश्वर के इबादत करने वाले सेवक हैं। वे सृष्टि के सबसे महानतम प्राणी के सामने भी झुककर खुद को नीचा नहीं दिखाते। वे सम्माननीय सेवक हैं जो किसी लाभ, यहाँ तक कि जन्नत पाने के लिए भी इबादत नहीं करते।

वे विनम्र, सौम्य और सौम्य छात्र हैं, जो केवल

1 फिरौन प्राचीन मिस्र के राजाओं को दी जाने वाली उपाधि है। यह विशेष रूप से पैगंबर मूसा के समय में रहता था और असाधारण रूप से घमंडी और क्रूर था। (ट्र.)

वे स्वेच्छा से अपने निर्माता के सामने झुकते हैं, कभी भी उसकी अनुमति से अधिक नहीं। वे जानते हैं
अपनी कमज़ोरी और ज़रूरतों के प्रति संवेदनशील हैं, लेकिन स्वतंत्र हैं
क्योंकि उदार मालिक उन्हें प्रदान करता है
आध्यात्मिक धन। अपने गुरु की असीम शक्ति पर भरोसा करते हुए
शक्ति, वे शक्तिशाली हैं। वे पूरी तरह से भगवान की खातिर और खुशी के लिए
काम करते हैं और प्रयास करते हैं, और सुसज्जित होने के लिए
सद्गुण के साथ। दर्शन और द्वारा दिया गया प्रशिक्षण
कुरान को उपरोक्त माध्यम से समझा जा सकता है
तुलना।

तीसरा मूल सिद्धांत: मानवीय मूल्यों में नैतिक प्रशिक्षण
सामाजिक जीवन: दर्शनशास्त्र बल को सामाजिक जीवन का मूलमंत्र मानता है।
सामाजिक जीवन में समर्थन का बिंदु, और जीवन स्व-हित (इसका लक्ष्य) और संघर्ष (इसका
सिद्धांत) एक समुदाय के एकीकृत बंधन जाति हैं
और आक्रामक राष्ट्रवाद, और इसके फल हैं
शारीरिक इच्छाओं की संतुष्टि और बढ़ती ज़रूरतें।
बल प्रयोग से आक्रमण की आवश्यकता होती है, स्वार्थ की तलाश से भौतिक संसाधनों पर लड़ाई होती है, तथा संघर्ष से विनाश होता है।
संघर्ष। नस्लवाद दूसरों को निगलकर पोषित होता है, जिससे
आक्रामकता का मार्ग प्रशस्त करना। यही कारण है कि मानवता खुश नहीं है।

कुरान ने हक को आधार के रूप में स्वीकार किया है
सामाजिक जीवन में। इसका उद्देश्य सद्गुण और ईश्वर की स्वीकृति है,
और इसका सिद्धांत पारस्परिक सहायता है।

यह समुदाय धर्म, पेशे और देश के बंधनों को स्वीकार करता है। इसका उद्देश्य नियंत्रण करना है और इस प्रकार
आत्मा को उदात्त बनाने के लिए प्रेरित करके शारीरिक इच्छाओं को कमजोर करें
मामलों, हमारी उच्च भावनाओं को संतुष्ट करना ताकि हम
मानवीय पूर्णता और सच्ची मानवता के लिए प्रयास करेंगे। सही एकता की मांग करता है, सद्गुण एकजुटता लाते हैं,
और पारस्परिक सहायता का अर्थ है एक दूसरे की मदद करना।
धर्म भाईचारा, बहनचारा और सामंजस्य सुनिश्चित करता है। हमारी इच्छाओं पर लगाम लगाना और आत्मा को प्रेरित करना
पूर्णता की ओर बढ़ने से दोनों लोकों में खुशी मिलती है।

चौथा मूलभूत सिद्धांत: कुरान सभी अन्य ईश्वरीय ग्रंथों, भाषणों और लेखन से श्रेष्ठ है: इस सत्य को निम्नलिखित दो उदाहरणों में समझाया गया है:

दृष्टांत: पहला, राजा के बोलने के दो तरीके होते हैं
और संबोधन। बोलते समय वह पहले वाले का इस्तेमाल करता है
अपने फोन पर एक नाबालिग से संबंधित सामान्य विषय पर
मामला या निजी जरूरत। वह दूसरे का उपयोग करता है
सर्वोच्च संप्रभु, सर्वोच्च प्रमुख के रूप में उनकी क्षमता
धार्मिक कार्यालय का, और सर्वोच्च शासक। वह निर्देश देता है
किसी दूत या उच्च अधिकारी के प्रति उसके शब्द ताकि
उसके आदेशों को एक के माध्यम से प्रख्यापित किया जाएगा
महान आदेश जो उसकी महिमा को प्रकट करता है।

दूसरा, एक व्यक्ति सूर्य की ओर दर्पण रखता है।
दर्पण की क्षमता के अनुसार, वह प्राप्त करता है

सूर्य के सात रंगों का प्रकाश और इस प्रकार स्थापित होता है
इसके साथ एक संबंध है। जब वह इस प्रकाश से भरे दर्पण को अपने अंधेरे घर और छत से ढके बगीचे की ओर निर्देशित करता है, तो उसे सूरज से केवल दर्पण की इसे प्रतिबिंबित करने की क्षमता के अनुसार लाभ होता है। एक अन्य व्यक्ति अपने घर या छत से ढके बगीचे में चौड़ी खिड़कियाँ खोलता है, इस प्रकार उन्हें सीधे और निरंतर सूर्य के प्रकाश के लाभों के संपर्क में लाता है। कृतज्ञता में,

वह कहता है: "हे सुन्दर सूर्य, संसार और आकाश की सुन्दरता,
जो धरती को अपनी रोशनी से चमकाता है और फूलों को मुस्कुराता है।
तुमने मेरे घर और बगीचे को सजाया है
अपनी गर्मी और रोशनी के साथ, जैसा कि आपने किया है
आकाश, पृथ्वी और फूल।" पहला व्यक्ति ऐसी बातें नहीं कह सकता,
क्योंकि उसे इससे संतुष्ट होना पड़ता है
उसके दर्पण में सूर्य के प्रकाश और ऊष्मा का प्रतिबिम्ब दिखाई देता है।

इन दो बातों की रोशनी में कुरान पर विचार करें
दृष्टांत। इसकी चमत्कारिकता देखें और समझें
इसकी पवित्रता। कुरान में कहा गया है: यदि पृथ्वी पर सभी पेड़
पृथ्वी कलम बन जाए और सारे समुद्र स्याही,
और यदि वे सर्वशक्तिमान के शब्द लिखें
हे भगवान, वे कभी ख़त्म नहीं होंगे।

कुरान को ईश्वर की पुस्तकों में सबसे बड़ा स्थान प्राप्त है।
अनंत शब्द क्योंकि इसकी उत्पत्ति उनकी महानतम में हुई थी
नाम और प्रत्येक नाम के सबसे बड़े स्तर पर, प्रत्येक
जिसके प्रकटीकरण के स्तर अनंत रूप से भिन्न हैं-

tation.2 यह परमेश्वर का वचन है क्योंकि वह है

सारे संसार का स्वामी; उसका आदेश, क्योंकि वह सर्वशक्तिमान है।

सभी प्राणियों के देवता; और एक दिव्य संबोधन क्योंकि

वह आकाश और पृथ्वी का निर्माता है।

परमेश्वर का अपने पूर्ण प्रभुत्व के संबंध में भाषण,

उनके सार्वभौमिक दिव्य संबंध में एक शाश्वत संबोधन

संप्रभुता; दयालु ईश्वर का लेखा-जोखा

उसकी सर्वव्यापी, व्यापक दया के दृष्टिकोण से अनुग्रह; संचार का एक संग्रह जो

कभी-कभी सिफर के साथ शुरू होता है

उनकी दिव्यता की उदात्त महिमा के प्रति सम्मान; और

ज्ञान से भरपूर पवित्र शास्त्र, जो दिव्य महानतम नाम के सर्व-सम्मत से उत्पन्न हुआ है।

वह परमेश्वर के सर्वोच्च सिंहासन के सर्वव्यापी क्षेत्र को देखता है और उसकी

जांच करता है।

इसीलिए कुरान को यह कहा जाना चाहिए—
और इसे परमेश्वर का वचन कहा गया है।

कुछ अन्य दिव्य शब्द दिव्य वाणी हैं

किसी विशिष्ट कारण से, किसी छोटे शीर्षक के अंतर्गत प्रकट किया गया,

और एक विशेष नाम की विशेष अभिव्यक्ति के माध्यम से। यह एक विशेष मनुष्य

से उत्पन्न होता है-

---

[2] उदाहरण के लिए, सर्वरंग और सर्वगुण संपन्न ईश्वर की अभिव्यक्तियाँ।
वसंत में सभी सजावट उसी स्तर पर नहीं हैं जैसे कि
सर्दी. (ट्र.)

दैवी प्रभुत्व, संप्रभुता या दया का प्रतीक।
दिव्य वचन विशिष्टता और सार्वभौमिकता के संबंध में भिन्न-भिन्न होते हैं।
अधिकांश प्रेरणा इसी से मिलती है
उदाहरण के लिए, बढ़ते क्रम में, भगवान भेजता है
जानवरों के लिए सबसे खास और सरल प्रेरणा। इसका महत्व तब और
बढ़ जाता है जब इसे आम लोगों, आम स्वर्गदूतों, संतों और महान लोगों
को भेजा जाता है।
स्वर्गदूतों, क्रमशः.

यही कारण है कि जो संत बिना किसी ध्यान के सीधे हृदय के टेलीफोन
के माध्यम से प्रार्थना करते हैं
“परमेश्वर से जुड़े” कहते हैं: “मेरा दिल मुझसे रिपोर्ट करता है
वे यह नहीं कहते कि, "वह मुझे ख़बर देता है कि
सारे संसार के पालनहार की ओर से।" वे कह सकते हैं: "मेरे
दिल एक दर्पण है, एक सिंहासन, मेरे भगवान का," लेकिन नहीं:
“मेरा हृदय सर्वलोक के प्रभु का सिंहासन है,”
क्योंकि संतों को ईश्वरीय संबोधन केवल उनकी क्षमता के अनुसार ही प्राप्त
होता है और ७०,००० में से कितनों को ही मिलता है
मानवता और ईश्वर को अलग करने वाले परदे उनके पास हैं
निकाला गया।

राजा द्वारा राजा के रूप में जारी किया गया एक आदेश
सर्वोच्च प्रभुसत्ता उससे अधिक ऊँची और महान है
एक आम आदमी के साथ उनकी बातचीत। हमें बहुत कुछ मिलता है
सूर्य के सीधे संपर्क से अधिक लाभ
हम उसके प्रतिबिंब से करते हैं। कुरान श्रेष्ठ है
सभी भाषणों और पुस्तकों के लिए इसी तरह से। इसके बाद आते हैं

अन्य दिव्य शास्त्र,3 जो श्रेष्ठ हैं
अन्य सभी भाषण और किताबें, क्योंकि वे पर आधारित हैं
रहस्योद्घाटन। यदि सब कुछ गैर-कुरान है, लेकिन फिर भी ठीक है

यदि मनुष्य और जिन्न को ज्ञात शब्द, सूक्तियाँ और बुद्धिमानी भरी बातें एकत्र की जातीं, तो वे उन शब्दों की बराबरी नहीं कर सकतीं, जो उन शब्दों से मेल खाते हैं ...

कुरान.

यदि आप यह समझना चाहते हैं कि
कुरान की उत्पत्ति ईश्वर के महानतम नाम से हुई है
और हर नाम के सबसे बड़े स्तर पर, विचार करें
आयत अल-कुरसी के सार्वभौमिक, उदात्त कथन
(2:255) और निम्नलिखित आयतें:

> ईश्वर, उसके अलावा कोई ईश्वर नहीं; वह सदा जीवित है,
> स्वयं निर्वाह करने वाला (जिससे सब जीवित हैं।) निद्रा
> उसे न तो नींद आती है, न ही वह पकड़ता है।
> आकाश में और पृथ्वी में जो कुछ है, वह सब कौन है?
> क्या कोई है जो उसके साथ हस्तक्षेप कर सके सिवाय उसके
> वह जानता है कि उनके सामने क्या है और क्या
> उनके पीछे क्या है, (उनके भविष्य में और उनके अंदर क्या है)
> वे अपने अतीत को, जो कुछ उन्हें ज्ञात है और जो कुछ उनसे छिपा है, नहीं समझते
> और वे उसके ज्ञान में से कुछ भी नहीं समझते, सिवाय इसके कि वह चाहे।
>
> (राज्य का) आसन आकाश और पृथ्वी को घेरे हुए है,
> और उनकी रक्षा करने से वह थकता नहीं; वह है
> सर्वशक्तिमान, अत्यन्त प्रभुत्वशाली (2:255)
>
> ग़ैब की कुंजियाँ उसी के पास हैं। (6:59)

---

3 दिव्य पुस्तकें और पृष्ठ.

हे परमेश्वर, प्रभुता के स्वामी! (3:26)

वह दिन को रात से ढक देता है, और वे एक दूसरे का पीछा करते रहते हैं। (7:54)

हे पृथ्वी, अपना जल पी जा, और हे आकाश, अपनी वर्षा बंद कर दे! (11:44)

सातों आकाश और धरती और जो कुछ उनमें है, सब उसी की स्तुति करते हैं। (17:44)

तेरी रचना और तेरा पालन-पोषण एक ही प्राण के समान है। (31:28)

हमने अमानत को आकाशों और धरती और पहाड़ों के समक्ष प्रस्तुत किया। (33:72)

जिस दिन हम आकाश को लपेट देंगे जैसे पुस्तकों को लपेटा जाता है। (21:104)

वे अल्लाह को उसके हक के अनुसार नहीं नापते, क़ियामत के दिन सारी धरती उसकी मुट्ठी भर होगी। (39:67)

यदि हम इस क़ुरआन को किसी पहाड़ पर उतारते तो तुम देखते कि वह अल्लाह के भय से फटकर टुकड़े-टुकड़े हो गया है। (59:21)

अल-हम्दु लि-ल्लाह (सभी प्रशंसा ईश्वर के लिए है) या तुसब्बिहु (उसकी महिमा) से शुरू होने वाली उन सूराओं की शुरुआती आयतों पर ध्यान दें , और इस महत्वपूर्ण तथ्य को समझने की कोशिश करें।

वे सूरे जो अलिफ़ लाम मीम, अलिफ़ लाम से शुरू होते हैं
रा, और हा मीम का अध्ययन करें और कुरान की आयतों को समझने का प्रयास करें।
सर्वशक्तिमान परमेश्वर की दृष्टि में इसका बहुत महत्व है।

यदि आप इसका महत्वपूर्ण सार समझ गए हैं
चौथा मूलभूत सिद्धांत, आप निम्नलिखित को समझें
तथ्य:

- रहस्योद्घाटन ज्यादातर स्वर्गदूतों के माध्यम से भविष्यद्वक्ताओं तक आया; प्रेरणा अधिकांशतः बिना मध्यस्थता के होती है।

- सबसे महान संत किसी भी स्तर को प्राप्त नहीं कर सकते पैगंबर.

- कुरान की अपनी भव्यता, पवित्रता है महिमा और सम्मान, जो इसके स्रोत हैं उत्कृष्ट चमत्कार.

- पैगम्बर मुहम्मद को स्वर्गारोहण का सम्मान दिया गया, वे स्वर्ग में चढ़े, सबसे दूर के कमल के पेड़ तक पहुंचे और केवल दो मील की दूरी पर

  धनुष की लंबाई, 4 और वहां सर्वशक्तिमान परमेश्वर से प्रार्थना की गई वह महाप्रतापी, जो हमारी कंठ शिराओं से भी अधिक हमारे निकट है, और पलक झपकते ही लौट आया

---

4 सबसे दूर का लोटे-ट्री उस सबसे दूर की सीमा को दर्शाता है
एक नश्वर, चाहे कितना भी महान हो, पहुँच सकता है। दो धनुषों की दूरी'
लंबाई पैगम्बर मुहम्मद की निकटता को दर्शाती है
सर्वशक्तिमान के स्वर्गारोहण में, जो किसी के द्वारा अप्राप्य है
अन्य नश्वर. (ट्र.)

विशिष्ट कारणों से आँख। जिस तरह चाँद को चीरना एक चमत्कार था जो पैगम्बर होने का था और जिन्न और मानवता के लिए उनकी पैगम्बरियत को दर्शाता था, उसी तरह स्वर्गारोहण भी उनकी ईश्वर की आराधना और सेवकाई का एक चमत्कार था जो आत्माओं और फ़रिश्तों को दर्शाता था कि वह ईश्वर के प्रिय हैं।

> हे ईश्वर, अपनी दया और अपनी गरिमा के अनुरूप उन्हें और उनके परिवार को आशीर्वाद और शांति प्रदान करें।

5 पैगम्बर का परिवार: पैगम्बर, अली, फातिमा, हसन और हुसैन को अहल अल-बैत, यानी घर का परिवार (या लोग) कहा जाता है। पैगम्बर की पत्नियाँ यहाँ शामिल नहीं हैं।

बीसवाँ वचन

कुरान:
वाकपटुता और विज्ञान

दो स्टेशन

ईश्वर के नाम से, जो दयालु एवं
कृपालु है।

प्रथम चरण: निम्नलिखित श्लोकों पर विचार करें:

जब हमने फ़रिश्तों से कहा कि आदम को सजदा करो तो इबलीस के सिवा सभी सजदा करने लगे। (2:34)

अल्लाह तुम्हें आदेश देता है कि तुम एक गाय की क़ुर्बानी दो। (2:67)

परन्तु इस सब के बाद तुम्हारे हृदय कठोर हो गये, और पत्थर के समान हो गये, और उससे भी अधिक कठोर हो गये। (2:74)

एक बार शैतान ने इनके बारे में तीन बातें सुझाईं

छंद:

आप कहते हैं कि कुरान अनंत वाक्पटुता और मार्गदर्शन का चमत्कार है जो हमेशा के लिए सभी के लिए है। तो फिर यह लगातार, एक तरह से ऐतिहासिक तरीके से, कत्लेआम जैसी कुछ महत्वहीन घटनाओं को क्यों दोहराता है?

गाय की पूजा करना और यहाँ तक कि सबसे लंबे सूरा (अल-बक़रा का मतलब है "गाय") का नाम भी उस घटना के नाम पर रखना? इसके अलावा, आदम के सामने फ़रिश्तों का सजदा करना एक मामला है अदृश्य और तर्क इसे समझ नहीं सकते। यह हो सकता है किसी व्यक्ति द्वारा प्राप्त किये जाने के बाद ही उसे स्वीकार किया जाएगा और उसकी पुष्टि की जाएगी एक मजबूत विश्वास, और फिर भी कुरान सभी को संबोधित करता है जिनके पास तर्क या बुद्धि है और अक्सर चेतावनी देते हुए कहा: 'क्या वे अपने तर्क का इस्तेमाल नहीं करेंगे?' इस प्रकार वर्णन करने से किस प्रकार का मार्गदर्शन अभिप्रेत है चट्टानों की कुछ प्राकृतिक स्थितियों को बलपूर्वक क्या ये सब केवल संयोग के परिणाम हैं?

मेरे मन में निम्नलिखित बातें विचार आईं।

पहला बिंदु: कुरान में कई स्पष्ट रूप से महत्वहीन घटनाएं हैं, जिनमें से प्रत्येक में एक रहस्य छिपा है। सार्वभौमिक सिद्धांत और एक सामान्य कानून की नोक प्रस्तुत करते हैं। उदाहरण के लिए: (उसने) आदम को नाम सिखाए उन सभी में से (2:31) में कहा गया है कि आदम को सिखाया गया था अपनी श्रेष्ठता दिखाने के लिए "नाम" को चमत्कार के रूप में प्रस्तुत किया परमेश्वर की कृपा से स्वर्गदूतों पर विजय प्राप्त करना पृथ्वी पर उप-शासन - नाम में पृथ्वी का शासन भगवान की।

यद्यपि यह एक छोटी और विशेष घटना लगती है, यह निम्नलिखित सार्वभौमिक सिद्धांत का एक सिरा है: आदम की व्यापक प्रकृति के कारण, मानवता को सिखाया गया था (या प्राप्त करने की क्षमता दी गई थी) बहुत सारी जानकारी, कई विज्ञान संबंधित हैं-

ब्रह्मांड के सभी पहलुओं और विशाल ज्ञान का ज्ञान
सृष्टिकर्ता के गुणों और कार्यों के बारे में। यह सब
मानवता को स्वर्गदूतों, स्वर्गों, पृथ्वी और पहाड़ों से श्रेष्ठ बनाया, क्योंकि केवल मानवता ही
सर्वोच्च ट्रस्ट को वहन कर सकता है। इसने मानवता को भगवान के नाम पर पृथ्वी का शासक भी बनाया।

इसी प्रकार फ़रिश्तों का आदम के सामने सजदा करना,
शैतान की अस्वीकृति के विपरीत, अदृश्य में एक छोटी, विशेष घटना है। हालाँकि, यह टिप है
सबसे व्यापक और सार्वभौमिक रूप से देखा जाने वाला
सिद्धांत और एक सबसे व्यापक सत्य का सुझाव देता है:
उनकी आज्ञाकारिता और समर्पण का उल्लेख करते हुए
शैतान के अहंकारपूर्ण इनकार के बावजूद, कुरान दर्शाता है कि अधिकांश लोग
ब्रह्मांड में भौतिक प्राणी और उनके आध्यात्मिक प्रतिनिधि हमारे अधीन हैं और हमारी आवश्यकताओं और इच्छाओं को पूरा करने के लिए हमेशा तैयार रहते हैं।

इसके अलावा, कुरान हमें बुराई के बारे में चेतावनी देता है
प्राणियों और उनके अमूर्त प्रतिनिधियों, के रूप में
साथ ही पृथ्वी के शैतानी निवासी जो भ्रष्ट करते हैं
पूर्णता के लिए हमारी क्षमता और हमें लुभाने के लिए
गलत रास्ते। यह हमें उन भयानक शत्रुओं और बड़ी बाधाओं की याद दिलाता है जिनका हम रास्ते में सामना करेंगे
पूर्णता की ओर प्रगति का मार्ग। इस प्रकार, एक व्यक्ति (आदम) से संबंधित एक विशेष घटना का वर्णन करते हुए, चमत्कारिक अभिव्यक्ति की कुरान

समस्त सृष्टि के साथ एक उच्च प्रवचन रखता है और

इंसानियत।

दूसरा बिंदु: यद्यपि सहारा का हिस्सा
रेगिस्तान में, धन्य नील नदी के उदार उपहारों ने
मिस्र को उपजाऊ, कृषि योग्य भूमि बनाया। ऐसा धन्य,
स्वर्ग जैसी भूमि नारकीय भूमि से सटी हुई है
सहारा ने खेती और कृषि को इतना ख़राब कर दिया
मिस्रवासियों के स्वभाव में यह स्थापित हो गया कि कृषि-संस्कृति पवित्र हो गई और गाय और बैल

पूजा की वस्तु बन गए। वास्तव में, मिस्रवासी
मूसा के समय के लोग गायों और बैलों की पूजा करते थे, जैसा कि
यहूदियों ने वर्षों तक पूजा के लिए एक बछड़ा बनाते हुए देखा
पलायन के बाद। कुरान में बताया गया है कि मूसा,
गाय की बलि देकर और अपने संदेशवाहक के माध्यम से, इस जड़ जमाई
हुई अवधारणा को मिटा दिया। इस प्रकार यह
प्रत्यक्षतः महत्वहीन घटना एक उच्च चमत्कारिकता वाले सार्वभौमिक
सिद्धांत की ओर संकेत करती है, तथा
इसे एक अत्यंत आवश्यक सबक के रूप में व्याख्यायित किया गया है
हर समय हर किसी के लिए ज्ञान।

उदाहरण के लिए, कुछ छोटी-छोटी घटनाओं का उल्लेख किया गया है
कुरान में ऐतिहासिक घटनाओं को सार्वभौमिक सिद्धांतों की युक्तियाँ
बताया गया है। लेमात में, "ग्रंथ" में
कुरान की चमत्कारिकता को समझाने के लिए मैंने मूसा की कहानी के
सात वाक्यों का उदाहरण दिया।

कैसे उन विशेष वाक्यों के प्रत्येक भाग में एक महत्वपूर्ण सार्वभौमिक सिद्धांत निहित है।

तीसरा बिन्दु: निम्नलिखित श्लोक पर विचार करें:

> फिर भी इतना सब होने के बाद भी तुम्हारे हृदय कठोर हो गये और
> चट्टानों की तरह हो गए, या उससे भी ज़्यादा कठोर: क्योंकि वहाँ चट्टानें हैं
> जहाँ से नदियाँ फूटती हैं, और कुछ जहाँ से,
> जब वे फटे होते हैं, तो पानी की समस्या होती है; और कुछ जो
> भगवान के भय से गिर जाओ। भगवान इस बात से अनजान नहीं है
> तुम क्या करते हो. (2:74)

यह आयत पढ़ते हुए शैतान ने पूछा: “क्यों?
चट्टानों की कुछ प्राकृतिक स्थितियाँ हैं, जो ज्ञात हैं
सभी का उल्लेख इस तरह किया गया मानो वे उनमें से हों
सबसे महत्वपूर्ण मुद्दे क्या हैं?" जवाब में, कुरान की शिक्षा से निम्नलिखित बिंदु सामने आया:
ऐसा करना उचित है, और इसकी आवश्यकता भी है
क्योंकि केवल कुरान की चमत्कारिक संक्षिप्तता और ज्ञान की प्रचुरता के माध्यम से ही विषय को सरल और संक्षेपित किया गया है।

संक्षिप्तता कुरान की शिक्षाओं का आधार है।
चमत्कारिकता, और भरपूर ज्ञान और
स्पष्टीकरण की सुन्दरता इसके मार्गदर्शन का हिस्सा है।
इन गुणों के लिए आवश्यक है कि सार्वभौमिक सत्य और
गहन किन्तु सामान्य सिद्धांतों को प्रस्तुत किया जाना चाहिए
सरल शब्दों में व्यापक जनसमूह को यह संदेश दिया गया कि
कुरान के अधिकांश श्रोता। जैसा कि अधिकांश लोग-

चूंकि ये लोग गहरे विचारक नहीं हैं, इसलिए यह आवश्यक है कि केवल उनके सुझाव और सरल रूप ही दिखाए जाएं। साथ ही, सभी घटनाओं, जिनमें से प्रत्येक एक दिव्य क्रिया है, जिसका असाधारण चरित्र परिचितता द्वारा छिपा हुआ है, को संक्षेप में इंगित किया जाना चाहिए।

इस प्रकार, इस सूक्ष्म वास्तविकता के कारण, यह श्लोक कहते हैं:

> हे इस्राएल के बच्चों और आदम के बच्चों, तुम्हारे दिल चट्टानों से भी ज़्यादा कठोर और बेजान क्यों हो गए हैं? विशाल भूमिगत परतों में बनी उन बहुत कठोर, बेजान, बड़ी चट्टानों को देखो। देखो कि वे ईश्वरीय आदेशों के प्रति कितने आज्ञाकारी और विनम्र हैं, वे प्रभु के कार्यों के लिए कितने पारगम्य और खुले हैं। यह इतना स्पष्ट है कि जिस आसानी से पेड़ों से ईश्वरीय क्रियाएँ बनती हैं, उसी आसानी, व्यवस्था और पूर्ण बुद्धि के साथ भूमिगत रूप से भी देखी जा सकती हैं। पानी बिना किसी प्रतिरोध के उनके पास बहता है, ठीक वैसे ही जैसे रक्त शिराओं में, सुव्यवस्थित जल चैनलों और शिराओं में कठोर, बहरी चट्टानों के माध्यम से बहता है।6

---

[6] यह उचित ही है कि कुरान उन तीन महत्वपूर्ण कार्यों के बारे में बताए जो महान निर्माता ने चट्टानों को सौंपे हैं, जो उस शानदार, गतिशील महल की नींव हैं जिसे हम पृथ्वी कहते हैं। पहला कार्य: जिस तरह धरती, भगवान की शक्ति से, पौधों के लिए “माँ” के रूप में कार्य करती है और उन्हें पालती है, उसी तरह दिव्य शक्ति से चट्टानें पृथ्वी के लिए “नर्स” के रूप में कार्य करती हैं और उसे “पालती” हैं।

दूसरा कार्य: वे पृथ्वी के शरीर में जल का व्यवस्थित परिसंचरण करते हैं, जैसे [हमारे शरीर में] रक्त का परिसंचरण होता है।

तीसरा कार्य: वे उपस्थिति और उपस्थिति के लिए एक "कोषाध्यक्ष" के रूप में कार्य करते हैं

जिस प्रकार पेड़-पौधों की शाखाएं आसानी से फैलती हैं, उसी प्रकार
जड़ों की नाजुक नसें भूमिगत रूप से फैली हुई हैं
वही सहजता और चट्टानों से प्रतिरोध की कमी।

क़ुरआन इस ओर संकेत करता है तथा उस आयत के माध्यम से एक व्यापक सत्य की शिक्षा देता है, और इस प्रकार संकेत द्वारा कठोर हृदय वालों से कहता है:

ऐ इसराइल की सन्तान और आदम की सन्तान!
कमजोर और नपुंसक हैं, और फिर भी आप अपना बना सकते हैं
हृदय इतने कठोर हो गए हैं कि वे ईश्वरीय सत्ता का प्रतिरोध करते हैं
आदेश। कठोर चट्टानों की विशाल परतें अपना कार्य करती हैं
अंधकार में रहकर सूक्ष्म कार्यों को पूर्ण रूप से करना तथा उसकी आज्ञाओं के प्रति पूर्ण समर्पण करना। वे एक स्रोत के रूप में कार्य करते हैं
सभी जीवित प्राणियों के लिए पानी और जीवन के अन्य साधन इस तरह से, और उनके विभाजन के साधन के रूप में
और इतनी बुद्धिमत्ता और न्याय के साथ वितरण,
वे मोम या यहां तक कि हवा की तरह लचीले होते हैं
महामहिम सर्वज्ञ की शक्ति का हाथ।
बिना किसी प्रतिरोध के, वे उसकी शक्ति के आगे दंडवत करते हैं
विशालता, लगभग समान सुव्यवस्थित घटनाओं और बुद्धिमान और अनुग्रहपूर्ण दिव्य कार्यों के लिए
जो हम ज़मीन के ऊपर देखते हैं, वह ज़मीन के नीचे भी घटित होता है।

झरनों और नदियों का सुव्यवस्थित संतुलन के साथ जारी रहना,
स्रोत और धाराएँ। चट्टानें पृथ्वी पर “लिखती” और बिखरती हैं

ईश्वरीय एकता के “प्रमाण” का सामना करें जो वे प्रवाहित करते हैं,
अपनी पूरी ताकत से, पानी के रूप में “मुँह भरकर”,
जो जीवन की सेवा करता है.

इसके अलावा, ईश्वरीय ज्ञान और अनुग्रह वहाँ अधिक अद्भुत और अधिक चमत्कारिक रूप में प्रकट होते हैं

ज़मीन से ज़्यादा वे इस तरह से हैं। सोचिए कैसे
सबसे नरम और सबसे कठोर विशाल चट्टानें हैं
ब्रह्मांड के निर्माण और संचालन में ईश्वर के आदेशों के प्रति वे कितने अडिग और लचीले हैं, और सुखद जल, नाजुक जड़ों के प्रति वे कितने अडिग और लचीले हैं,
और रेशम जैसी नसें जो उसके आदेश के अनुसार काम करती हैं। एक प्रेमी की तरह, चट्टान अपने दिल को तोड़ देती है
उन नाजुक, खूबसूरत चीजों का स्पर्श और बन जाता है
उनके रास्ते में नरम मिट्टी है।

इसके अलावा, कविता में वाक्य के माध्यम से और वहाँ
कुछ लोग परमेश्वर के भय के कारण गिर जाते हैं,
कुरान एक जबरदस्त सच्चाई का संकेत देता है: जब
मूसा ने खड़े होकर परमेश्वर के दर्शन की प्रार्थना की
पहाड़ के नीचे, पहाड़ टूट गया
दिव्य प्रकटीकरण और उसकी चट्टानों पर

बिखरे हुए। इस तरह, भूकंप और इसी तरह के दिव्य महिमा के विस्मयकारी अभिव्यक्तियों के माध्यम से
भूवैज्ञानिक घटनाओं के कारण, शिखरों से चट्टानें गिरती हैं, जिससे
ये आम तौर पर गाढ़े तरल पदार्थ से बने विशाल मोनोलिथ की तरह होते हैं, और बिखर जाते हैं। इनमें से कुछ टूटकर उपजाऊ मिट्टी बन जाते हैं; अन्य चट्टान के रूप में रह जाते हैं
और घाटियों और मैदानों तक फैले हुए हैं।

वे पृथ्वी के निवासियों के लिए कई उद्देश्यों की पूर्ति करते हैं, जैसे कि उनके घरों में।

दिव्य शक्ति और बुद्धि, और कुछ छिपी हुई

उद्देश्यों और लाभों के लिए, वे उपयोग के लिए तैयार हैं
दिव्य बुद्धि के सिद्धांतों के अनुसार.
व्यर्थ या दुर्घटनावश या आकस्मिक रूप से नहीं
संयोगवश, वे शिखर पर अपना स्थान छोड़ देते हैं और विनम्रता और धैर्य के साथ निचले स्थानों को चुनते हैं।
उन महत्वपूर्ण लाभों का साधन बनें।
बल्कि, वे ऐसा परमेश्वर के प्रति भय के कारण करते हैं।

इससे पता चलता है कि ऐसी घटनाएँ एक सर्वज्ञ और सर्वशक्तिमान व्यक्ति के विवेकपूर्ण कार्य से घटित होती हैं, और
ऐसी प्रतीत होने वाली अराजक घटनाओं में सतही आंखों के लिए अदृश्य एक बुद्धिमान व्यवस्था है।
इनके उद्देश्य और लाभ क्या हैं?
चट्टानों, और सही व्यवस्था और ठीक कलात्मकता में
फलों और फूलों के आभूषणों से सजे और उभरे हुए "वस्त्र" जिनसे "शरीर"
वे पहाड़ जिनसे वे लुढ़कते हैं, वस्त्र से ढके हुए हैं।

इस प्रकार, आपने श्लोक के तीन अर्थों का महत्व देख लिया है।
ज्ञान के दृष्टिकोण से भागों को देखें।
कुरान की अभिव्यक्ति का उत्तम ढंग और चमत्कारी वाक्पटुता, यह उसकी युक्तियों के माध्यम से कैसे प्रकट होती है
उल्लिखित व्यापक और महत्वपूर्ण सत्य
उन तीन सुप्रसिद्ध एवं देखी गई घटनाओं से ऊपर।

इसके अलावा, तीन के एक ही तीन भागों में याद दिलाकर
आगे की घटनाएँ, जिनमें से प्रत्येक आगे बढ़ने का एक साधन है

यह एक सबक है, यह एक अच्छा मार्गदर्शन प्रदान करता है और इस तरह से संयमित करता है जिसका विरोध नहीं किया जा सकता।

उदाहरण के लिए, आयत का दूसरा भाग कहता है: और कुछ ऐसे भी हैं, जो जब फट जाते हैं, तो उनसे पानी निकलता है। मूसा द्वारा अपनी लाठी से चट्टान को “पूरी तत्परता” से तोड़ने और उसके बाद बारह स्रोतों से बारह धाराओं के निकलने का उल्लेख करते हुए, इसका अर्थ है:

> ऐ इसराइल की सन्तान! बड़े-बड़े पत्थर भय या खुशी से आँसू बन जाते हैं, फिर भी तुम इतने अन्यायी हो कि मूसा के सभी चमत्कारों के सामने भी तुम अड़ियल बने रहते हो।
>
> तुम रोते नहीं हो। क्या तुम्हारी आँखें इतनी सूखी हैं और तुम्हारा दिल इतना कठोर है?

तीसरे भाग में, यह कहता है: और कुछ ऐसे भी हैं जो ईश्वर के भय से गिर जाते हैं। सिनाई पर्वत पर ईश्वरीय महिमा के प्रकट होने पर भय से पहाड़ के टूटने और चट्टानों के लुढ़कने की प्रसिद्ध घटना को याद करते हुए, जो मूसा द्वारा ईश्वर के दर्शन के लिए प्रार्थना करने पर घटित हुई थी, यह निम्नलिखित शिक्षा देता है:

> ऐ मूसा की क़ौम! तुम अल्लाह से नहीं डरते, फिर भी पहाड़ उसके खौफ़ से टूट जाते हैं। तुम गवाही देते हो कि वह
>
> परमेश्वर ने आपके प्रति अपनी वफ़ादारी का पवित्र वचन प्राप्त करने के लिए सिनाई पर्वत को आपके ऊपर उठाया, और जब मूसा ने दिव्य दर्शन के लिए प्रार्थना की तो वह पर्वत टूट गया।

> और फिर भी तुम इतने साहसी हो कि परमेश्वर के भय से नहीं कांपते, और तुम अपने हृदय को इतना कठोर और निर्दयी बनाए रखते हो!

पहले भाग में, यह कहता है: क्योंकि ऐसी चट्टानें हैं जिनसे नदियाँ निकलती हैं। नील, टिगरिस और यूफ्रेट्स जैसी नदियों को याद करके, जो पहाड़ों से निकलती हैं, यह बताता है कि कैसे आश्चर्यजनक और चमत्कारी रूप से चट्टानें सृष्टि के दिव्य आदेशों के प्रति संवेदनशील और अधीन हैं। जागृत, चौकस दिलों के लिए, इसका मतलब है:

> पहाड़ ऐसी आपदाओं का वास्तविक स्रोत नहीं हो सकते।
>
> शक्तिशाली नदियाँ, क्योंकि अगर वे पूरी तरह से पानी से बनी भी हों, तो वे ऐसी नदी को केवल कुछ महीनों तक ही पानी दे सकती हैं। साथ ही, बारिश, जो केवल एक मीटर भूमिगत तक पहुँचती है, उस उच्च व्यय के लिए पर्याप्त आय नहीं हो सकती। कोई भी सामान्य कारण, प्राकृतिक कारण या संयोग इन नदियों के स्रोतों और प्रवाह की व्याख्या नहीं कर सकता। सर्व-महान निर्माता उन्हें एक अदृश्य "खजाने" से वास्तव में अद्भुत तरीके से प्रवाहित करता है।

एक परंपरा7 में इसका उल्लेख है: "हर मिनट एक बूंद स्वर्ग से उन तीनों में गिरती है

---

7 अरबी शब्द हदीस, जिसका सामान्यतः अंग्रेजी में अनुवाद परंपरा होता है, का शाब्दिक अर्थ समाचार, कहानी, संचार या वार्तालाप होता है, चाहे वह धार्मिक हो या धर्मनिरपेक्ष, ऐतिहासिक हो या हालिया।

कुरान में यह शब्द धार्मिक (39:23, 68:44) में आता है,

नदियाँ। इसीलिए वे प्रचुर मात्रा में बहती हैं।"
परंपरा कहती है: "इन तीन नदियों का स्रोत
स्वर्ग में है।"८ चूँकि भौतिक कारण उत्पन्न नहीं कर सकते
उनके प्रचुर प्रवाह, उनके स्रोतों को एक में होना चाहिए
अदृश्य दुनिया, दया का एक छिपा हुआ खजाना, ताकि
आने वाले और बाहर जाने वाले पानी के बीच संतुलन
इस अर्थ की ओर ध्यान आकर्षित करते हुए, कुरान निम्नलिखित निर्देश देता है:

> ऐ इसराइल की सन्तान और आदम की सन्तान, तुम्हारे
> हृदय की कठोरता और भावना की कमी के कारण आप
> ऐसे महामहिम की आज्ञाओं की अवहेलना करो।
> आपकी असावधानी आपको अपनी आँखें बंद करने के लिए मजबूर करती है
> ऐसे सनातन सूर्य के ज्ञान का प्रकाश।
> वह नील नदी जैसी विशाल नदियों को फूटने देता है
> साधारण, ठोस चट्टानों के मुंह और मिस्र बारी
> एक स्वर्ग में। ब्रह्मांड के दिल और पृथ्वी के लिए
> मन, वह अपनी शक्ति और बुद्धि के चमत्कार पैदा करता है-

धर्मनिरपेक्ष या सामान्य (6:68), ऐतिहासिक (20:9), और वर्तमान या
संवादात्मक (६६:३) संदर्भ। पैगंबर ने इसका इस्तेमाल इसी तरह के अर्थ में किया था, उदाहरण के लिए, जब उन्होंने कहा: "सबसे अच्छी हदीस वह है जो सच हो।"
कुरान" (बुखारी)। हालाँकि, मुहद्दिसिन के अनुसार
(परंपरावादी [परंपराओं के विद्वान]), इस शब्द का अर्थ है
"पैगंबर के अधिकार, उनके कार्यों पर जो कुछ प्रसारित किया गया,
कथन, मौन स्वीकृति, या उसके शारीरिक रूप का वर्णन।" न्यायविद अपनी परिभाषा में इस अंतिम मद को शामिल नहीं करते हैं-

tion. (ट्र.)

8 मुस्लिम और इब्न हंबल द्वारा रिकॉर्ड किया गया।

> वह उन महान नदियों के समान ही प्रबल और प्रचुर है, तथा उन्हें जिन्नों और मनुष्यों के हृदयों और मनों में प्रवाहित करता है। इसके अतिरिक्त, जबकि यह उस महान सृष्टिकर्ता को उसी प्रकार दर्शाता है, जिस प्रकार सूर्य का प्रकाश सूर्य को दर्शाता है, कि वह कुछ कठोर, निर्दयी चट्टानों को अपनी शक्ति के चमत्कारों का विषय बनाता है, तो फिर ऐसा कैसे हो सकता है कि तुम उसके ज्ञान के प्रकाश के प्रति अंधे हो और सत्य को नहीं देख पाते?

देखिए कुरान इन सच्चाइयों को कितनी खूबसूरती से व्यक्त करता है। उस वाक्पटुता के मार्गदर्शन पर ध्यान दें। मुझे आश्चर्य है कि दिल की कठोरता और भावना की कमी को इसकी "गर्मी" से पिघलाया नहीं जा सकता। अगर आपने मेरे शब्दों को समझा है, तो कुरान की चमत्कारिकता की एक मार्गदर्शक किरण देखें और भगवान का शुक्रिया अदा करें।

---

[9] नील नदी की एक मुख्य शाखा किस पर्वत से निकलती है?

चाँद, टिगरिस की मुख्य शाखा तुर्की की एक गुफा में उगती है, और यूफ्रेट्स की मुख्य धाराओं में से एक दियादीन में एक पहाड़ की तलहटी में उगती है। यह वैज्ञानिक रूप से स्थापित है कि पहाड़ तरल पदार्थ से ठोस चट्टानें हैं। पैगंबर की महिमाओं में से एक - ठोस तरल पर मिट्टी फैलाने वाले की महिमा हो - यह प्रमाणित करती है कि पृथ्वी का मूल निर्माण इस प्रकार है: कुछ तरल पदार्थ ईश्वरीय आदेश पर जम गए और चट्टान बन गए, और फिर चट्टान मिट्टी बन गई।

दूसरे शब्दों में, तरल पदार्थ इतना नरम था कि उस पर बैठना संभव नहीं था, और चट्टान इतनी कठोर थी कि उससे लाभ नहीं मिल सकता था। इसलिए, सर्वज्ञ और दयालु परमेश्वर ने चट्टान पर मिट्टी बिछा दी और उसे जीवित प्राणियों के रहने की जगह बना दिया।

तेरी महिमा हो। हमें कोई ज्ञान नहीं है सिवाय उस ज्ञान के जो तूने हमें सिखाया है। वास्तव में, तू ही सर्वज्ञ, सर्वज्ञ है। हे ईश्वर, हमें कुरान के रहस्यों को समझने की शक्ति प्रदान कर जैसा तू चाहता है और हमें इसकी सेवा में सफलता प्रदान कर। आमीन, तेरी दया से, हे दयावानों के दयावान। हे ईश्वर, उस व्यक्ति पर कृपा और शांति प्रदान कर जिसके पास ज्ञानपूर्ण कुरान भेजा गया है, और उसके परिवार और साथियों पर।

दूसरा स्टेशन: (कुरान की चमत्कारिकता की एक झलक, जो पैगम्बरों के चमत्कारों के माध्यम से चमकती है।) अंत में दो प्रश्नों और उनके उत्तरों पर ध्यान दें।

***

ईश्वर के नाम पर, जो दयालु है, कृपालु है।

कोई भी चीज़, चाहे ताज़ा हो या मुरझाई हुई, गीली हो या सूखी, वह किसी प्रत्यक्ष किताब में दर्ज़ नहीं है। (6:59)

कई साल पहले अपने इशारत अल-इजाज़ (चमत्कार के संकेत) में, मैंने अरबी में इस आयत के एक अर्थ पर चर्चा की थी।10 अब मेरे दो मज़हब भाइयों ने, जिनकी इच्छाएँ मेरे लिए महत्वपूर्ण हैं, उस चर्चा का तुर्की में स्पष्टीकरण माँगा है।

10 इशरत अल-इजाज़: सूरत अल-फ़ातिहा पर टिप्पणी और सूरत अल-बकरा के शुरुआती 30 छंद ।

सर्वशक्तिमान ईश्वर की मदद पर, और कुरान के आधार पर
आत्मज्ञान, मैं निम्नलिखित अनुभाग लिखता हूं।

एक व्याख्या के अनुसार, मैनिफेस्ट
किताब कुरान है। इस आयत में कहा गया है कि हर चीज़
इसमें पाया जाता है। यह सच है। हालाँकि, हमें यह समझना चाहिए कि चीज़ें
अलग-अलग स्तरों पर पाई जाती हैं। वे
बीज, नाभिक, सारांश, सिद्धांत या संकेत के रूप में प्रस्तुत किए जाते हैं, साथ
ही स्पष्ट रूप से या निहित रूप से, संकेतात्मक रूप से, अस्पष्ट रूप से या
संकेतात्मक रूप से भी प्रस्तुत किए जाते हैं।
किसी अवसर पर, किसी एक रूप को सर्वोत्तम ढंग से व्यक्त करना बेहतर होता है
कुरान के उद्देश्यों और संदर्भ की आवश्यकताओं को पूरा करना
टिप्पणियाँ.

उदाहरण के लिए, विज्ञान और उद्योग में प्रगति
इसके परिणामस्वरूप हवाई जहाज, बिजली, मोटर चालित
परिवहन, रेडियो और दूरसंचार।
ऐसी बातें हमारे दैनिक जीवन में प्रमुख हैं।
कुरान मानवता को [हर समय] संबोधित करता है, यह
इन घटनाक्रमों को नजरअंदाज नहीं करता है; बल्कि, यह इंगित करता है
यह ज्ञान उन्हें पैगम्बरों के चमत्कारों के माध्यम से तथा कुछ ऐतिहासिक घटनाओं के माध्यम से प्राप्त हुआ।

> ईंधन से चलने वाली खाई बनाने वालों का नाश हो
>
> आग। जब वे उसके पास बैठे, और स्वयं आग में जल रहे थे।
>
> उन्होंने विश्वासियों के साथ जो कुछ किया, उसके गवाह वे हैं।
>
> उनके साथ किसी और कारण से बुरा व्यवहार नहीं किया गया, सिवाय इसके कि वे

परमेश्वर पर विश्वास करो, जो सर्वशक्तिमान और सर्वप्रशंसित है।

(85:4-8)11

... और हमने उनके लिए जहाज़ में सवार होकर उन्हें बनाया है।

उसी के समान, जिस पर वे सवार होते हैं। (36:41-42)

ऐसी आयतें रेलगाड़ियों की ओर संकेत करती हैं, जबकि निम्नलिखित आयतें

यह पद्य, अपने कई अन्य अर्थों और अर्थों के अलावा, बिजली की ओर संकेत करता है:

ईश्वर आकाश और पृथ्वी का प्रकाश है। उसके प्रकाश की मिसाल एक आले के समान है जिसमें एक दीपक रखा हुआ है।
दीपक एक गिलास में है, और गिलास, मानो एक धन्य जैतून के पेड़ से निकला एक चमकता हुआ तारा है, न ही
पूर्व या पश्चिम का, जिसका तेल लगभग
(स्वयं) चमक उठना यद्यपि उसे किसी अग्नि ने नहीं छुआ: प्रकाश
12 ईश्वर जिसे चाहता है, उसे अपने प्रकाश की ओर मार्ग दिखाता है।

(24:35)

चूँकि कई लोगों ने श्लोकों का विश्लेषण किया है
दूसरे प्रकार के, ऐतिहासिक घटनाओं के संबंध में आधुनिक तकनीक का उल्लेख करने वाले, और चूंकि
उन्हें बहुत सावधानी और विस्तृत स्पष्टीकरण की आवश्यकता होती है,

---

11 ये आयतें रेलगाड़ियों की ओर संकेत करती हैं, जो मुस्लिम जगत को अपने वश में करने में अविश्वासियों के लिए बहुत लाभकारी थीं।
उनका नियंत्रण.

12 वाक्यांश: जिसका तेल लगभग चमक उठेगा (स्वयं ही)
यद्यपि इसे किसी अग्नि ने छुआ तक नहीं था: प्रकाश पर प्रकाश संकेत को और अधिक स्पष्ट कर देता है।

साथ ही बहुत संख्या में होने के कारण, मैं संतुष्ट रहूंगा
मैं खुद को उन आयतों के साथ प्रस्तुत कर रहा हूँ जिनमें रेलगाड़ियों और बिजली का
उल्लेख है जैसा कि पैगंबरों के कुरानिक विवरणों में देखा गया है।
चमत्कार.

परिचय

सर्वशक्तिमान ईश्वर ने पैगम्बरों को नेता और न्यायकर्ता के रूप में भेजा।
आध्यात्मिक और नैतिक प्रगति के अग्रदूत, और इस प्रकार
उन्हें कुछ चमत्कार और चमत्कारों से संपन्न किया
और उन्हें मानवता की भौतिक प्रगति का स्वामी और अग्रदूत बनाया। वह लोगों को आदेश
देता है कि वे
उनका पूर्णतः पालन करें।

पैगम्बरों के आध्यात्मिक और नैतिक विचारों को बताकर
कुरान लोगों को उनसे लाभ उठाने के लिए प्रोत्साहित करता है। उनके चमत्कारों
को प्रस्तुत करके, यह आग्रह करता है
लोगों को विज्ञान के माध्यम से कुछ ऐसा ही हासिल करने की प्रेरणा मिलती है।
यह भी कहा जा सकता है कि आध्यात्मिक और
नैतिक उपलब्धियाँ, भौतिक उपलब्धियाँ और चमत्कार सबसे पहले मानवता को
उपहार के रूप में दिए गए थे
भविष्यसूचक चमत्कार। उदाहरण के लिए, नूह पहला व्यक्ति था
जहाज़ बनाने के लिए, और जोसेफ़ जहाज़ बनाने वाले पहले व्यक्ति थे
घड़ियाँ। इस प्रकार जहाज और घड़ी पहले दी गई
भविष्यसूचक चमत्कारों के रूप में। यह एक सार्थक संकेत है
इस वास्तविकता के कारण कि इतने सारे शिल्प संघ एक पैगंबर लेते हैं
अपने शिल्प के “संरक्षक” या प्रवर्तक के रूप में। उदाहरण के लिए-

नाविक नूह को ले लो, घड़ीसाज़ यूसुफ को ले लो,
और दर्जी हनोक को ले जाते हैं।

चूंकि सत्य की खोज करने वाले विद्वान और विज्ञान वाक्पटुता के बावजूद, इस बात पर सहमत हैं कि प्रत्येक कुरान की आयत में मार्गदर्शन और निर्देश निहित है, इसलिए यह निष्कर्ष निकलता है कि पैगम्बरों के चमत्कारों से संबंधित आयतों को, जो सभी आयतों में सबसे शानदार हैं, मात्र शिक्षाप्रद नहीं माना जाना चाहिए।
ऐतिहासिक घटनाएँ। बल्कि, वे अनेकों घटनाओं से मिलकर बने हैं मार्गदर्शन के संकेत। इन चमत्कारों से संबंधित, कुरान वैज्ञानिक और तकनीकी विकास के अंतिम लक्ष्य को दर्शाता है, और निर्दिष्ट करता है

उनके अंतिम लक्ष्य, जिनकी ओर यह मानवता को प्रेरित करता है।
जैसे अतीत भविष्य के बीजों का क्षेत्र है
और इसकी संभावित तस्वीर के लिए दर्पण, तो है
भविष्य पिछले जीवन की फसल काटने का समय है और
वास्तविक स्थिति का आईना। कई में से
उदाहरण के लिए, मैं केवल कुछ का ही उल्लेख करूंगा।

आयत: और सुलैमान के अधीन कर दिया (हमने)
हवा: इसकी सुबह की चाल एक महीने की यात्रा थी और
शाम का एक कदम एक महीने का सफ़र था (34:12)
सुलैमान के प्रति हवा की अधीनता को व्यक्त करता है:
सोलोमन ने 2 महीने की पैदल यात्रा की दूरी तय की

हवा में उड़कर दो कदम चलना। इससे पता चलता है कि मानवता हवा में यात्रा करने का प्रयास कर सकती है और उसे ऐसा करना भी चाहिए। सर्वशक्तिमान परमेश्वर भी कह रहा है: "एक

मेरे सेवकों में से किसी ने भी अपनी शारीरिक इच्छाओं का पालन नहीं किया,
और मैंने उसे हवा में उड़ा दिया। यदि तुम आलस्य त्याग दोगे और मेरे कुछ नियमों से उचित लाभ उठाओगे
प्रकृति में, आप भी इसे माउंट कर सकते हैं।”

आयत: जब मूसा ने अपने बेटे के लिए पानी माँगा
हमने कहा, "अपनी लाठी चट्टान पर मारो।"
फिर उसमें से बारह सोते फूट निकले।
प्रत्येक जनजाति को अपना पीने का स्थान पता था” (2:60) यह दर्शाता है कि सरल उपकरण मर्सी के भूमिगत खजानों को खोल सकते हैं। चट्टान की तरह कठोर स्थानों में, पानी
क्योंकि जीवन को इतनी सरल युक्ति से चित्रित किया जा सकता है
एक छड़ी। इस अर्थ के माध्यम से, कविता हमें आग्रह करती है
इन खजानों की तलाश करें। इस श्लोक के माध्यम से, भगवान
सर्वशक्तिमान सुझाव देते हैं: "मेरे सेवकों में से एक ने मुझ पर भरोसा किया
मैं, और इसलिए मैंने उसे एक छड़ी दी जो पानी खींचती है
जहाँ चाहे वहाँ से जीवन भर के लिए। अगर आप भरोसा करते हैं
मेरी दया के नियम, तुम भी ऐसा पा सकते हो
आधुनिक वैज्ञानिकों ने कई आविष्कार किए हैं
भूमिगत जल को ऊपर लाने के लिए उपकरण।
यह आगे के लक्ष्यों की ओर संकेत करता है, जैसे कि पिछले लक्ष्य में आज के हवाई जहाजों से कहीं आगे की उपलब्धियों का उल्लेख किया गया था।

श्लोक: मैं उस व्यक्ति को चंगा करता हूँ जो जन्म से अंधा था, और
मैं ईश्वर की अनुमति से कोढ़ी को जिलाता हूँ और मुर्दों को जिलाता हूँ (3:49),
यीशु के एक चमत्कार के बारे में, परमेश्वर द्वारा की गई उच्चतम स्तर की चिकित्सा का संकेत देता है और उसे प्रोत्साहित करता है

उसे वरदान दिया। यह बताता है कि सबसे पुरानी बीमारियों का भी इलाज किया जा सकता है। इसलिए, हमें इसकी खोज करनी चाहिए। इस आयत से सर्वशक्तिमान ईश्वर का मतलब है:

> मैंने अपने एक सेवक को, जिसने मेरे लिए संसार त्याग दिया था, दो उपहार दिए: आध्यात्मिक बीमारियों का उपचार, और शारीरिक बीमारियों का इलाज। मार्गदर्शन के प्रकाश से मृत हृदयों में जान आ गई, और बीमार लोग जो मानो मृत थे, उनकी सांस और उपचार से स्वास्थ्य प्राप्त किया। आप प्रकृति में मेरी "फार्मेसी" में सभी बीमारियों का इलाज पा सकते हैं, जहाँ मैंने प्रत्येक चीज़ से कई महत्वपूर्ण उद्देश्य जोड़े हैं। काम करो और इसे पाओ।

यह श्लोक चिकित्सा विकास के उस अंतिम बिंदु को दर्शाता है जो वर्तमान स्तर से कहीं आगे है तथा हमें उस ओर बढ़ने के लिए प्रेरित करता है।

आयतें: हमने उसके लिए लोहे को लचीला बनाया [दाऊद] (34:10), हमने उसे [दाऊद को] बुद्धि और बात करने और निर्णय करने में सही निर्णय दिया (38:20), और हमने उसके [सुलैमान] पास तांबे का फव्वारा फूटने दिया (34:12) संकेत देते हैं कि लोहे को नरम करना ईश्वर की सबसे बड़ी नेमतों में से एक है, जिसके माध्यम से वह एक महान पैगंबर की खूबियों को दर्शाता है। लोहे को नरम करना, तांबे को गलाना और खनिजों को निकालना सभी भौतिक उद्योगों की उत्पत्ति, स्रोत और आधार है।

इन श्लोकों में कहा गया है कि ये दोनों प्रक्रियाएँ महान हैं

दो महान पैगम्बरों को दिए गए उपकार, जिन्होंने ईश्वर की आज्ञाओं के अनुसार शासन किया, और जो अधिकांश सामान्य उद्योगों के साधन हैं।

चूँकि ईश्वर ने एक ऐसे पैगम्बर को, जो आध्यात्मिक और राजनीतिक नेता दोनों था, बुद्धिमानी भरी बोली, शिल्पकला और उद्योग से संपन्न किया, इसलिए वह लोगों से बुद्धिमानी से बोलने का आग्रह करता है और उन्हें शिल्पकला और उद्योग की ओर प्रोत्साहित करता है। इन आयतों के ज़रिए, सर्वशक्तिमान ईश्वर सुझाव देते हैं:

> मैंने एक सेवक की जीभ और हृदय को ऐसी बुद्धि दी जो मेरी धार्मिक आज्ञाओं का पालन करता था, ताकि वह सभी चीजों के बीच सही स्पष्टता से न्याय और अंतर कर सके और सत्य को समझ सके। मैंने उसे ऐसी कुशलता प्रदान की कि वह लोहे को किसी भी सांचे में ढाल सके और फिर उसे अपने शासन के लिए ताकत के एक महत्वपूर्ण स्रोत के रूप में इस्तेमाल कर सके।

> चूँकि यह संभव है और चूँकि लोहे का आपके सामाजिक जीवन के लिए बहुत महत्व है, जिसके लिए इसकी आवश्यकता है, इसलिए यदि आप मेरी सृष्टि के आदेशों, प्रकृति के नियमों का पालन करेंगे तो आपको ऐसी बुद्धि और कौशल प्रदान किया जाएगा। अंततः आप इसे प्राप्त करेंगे।

लोहे को नरम करके और तांबे को गलाकर, मानवता ने महान औद्योगिक प्रगति और भौतिक शक्ति हासिल की है। ये श्लोक हमारा ध्यान इस सत्य की ओर आकर्षित करते हैं। ठीक वैसे ही जैसे उन्होंने पहले के लोगों को चेतावनी दी थी जो

इसके महत्व को नहीं समझा, इसलिए वे आज के आलसी लोगों को चेतावनी देते हैं।

आयत: जिस व्यक्ति को किताब का ज्ञान था, उसने कहा: "मैं इसे तुम्हारे पास ला दूंगा इससे पहले कि तुम्हारी नज़र तुम्हारी ओर वापस आए (पलक झपकते ही)।"

जब सुलैमान ने इसे अपनी उपस्थिति में स्थापित देखा... (27:40), सुलैमान के दरबार में शेबा की रानी के सिंहासन को लाने की अद्भुत घटना का वर्णन करता है। यह सुझाव देता है कि चीजों को लंबी दूरी तक ले जाया जा सकता है, या तो शारीरिक रूप में या उनकी छवियों में। वास्तव में, सर्वशक्तिमान ईश्वर ने इसे सुलैमान पर एक चमत्कार के रूप में प्रदान किया, जिसे राजा के साथ-साथ दिव्य संदेशवाहक के रूप में सम्मानित किया गया था, ताकि वह अपने व्यापक क्षेत्र में सभी क्षेत्रों के बारे में व्यक्तिगत रूप से जानकारी प्राप्त करके अपनी अचूकता और न्याय को बनाए रख सके, अपने विषयों की स्थितियों को देख सके, और उनकी परेशानियों के बारे में सुन सके।

इसका मतलब यह है कि अगर हम सर्वशक्तिमान ईश्वर पर भरोसा करते हैं और अपनी क्षमताओं के अनुसार उनसे प्रार्थना करते हैं,

सुलैमान ने अपनी अचूकता की भाषा में कहा, और यदि हमारे कार्य ब्रह्मांड में उसके नियमों के अनुरूप हैं और

जो कुछ भी उसकी कृपा को आकर्षित करता है, उससे दुनिया हमारे लिए एक शहर की तरह बन सकती है। रानी का सिंहासन यमन में था, फिर भी इसे दमिश्क में या तो शारीरिक रूप में या छवि में देखा गया था, जैसा कि इसके आस-पास के लोगों के रूप थे, जिन्हें देखा और सुना गया था।

यह श्लोक लंबी दूरी पर रूपों के परिवहन और ध्वनियों के संचरण की ओर इशारा करता है। वास्तव में, यह कहता है: "हे शासकों। यदि आप पूर्ण न्याय को महसूस करना चाहते हैं, तो अपने राज्य को उसके सभी विवरणों में देखने और जानने का प्रयास करें, जैसा कि सुलैमान ने किया था। केवल इस स्तर तक उठने से ही एक न्यायप्रिय शासक जो अपने विषयों को प्यार करता है, जवाबदेही से बच सकता है। केवल इस तरह से वह पूर्ण न्याय को महसूस कर सकता है।" सर्वशक्तिमान ईश्वर का अर्थ है:

> हे मानवजाति! मैंने अपने सेवक को एक विशाल साम्राज्य प्रदान किया है। ताकि वह इस धरती पर संपूर्ण न्याय को महसूस कर सके, मैंने उसे इस बात की अनुमति दी कि वह जो कुछ भी हो रहा है, उसे जान सके। चूँकि मैंने हर व्यक्ति को मेरे आदेशों के अनुसार शासन करने की क्षमता के साथ बनाया है, इसलिए मैंने उसे अपनी बुद्धि की आवश्यकता के अनुसार, धरती के चेहरे को स्कैन करने और उसमें जो कुछ भी है उसे समझने की क्षमता भी दी है। यदि हर व्यक्ति इस बिंदु तक नहीं पहुँच सकता है, तो एक प्रजाति के रूप में मानवता इसे प्राप्त कर सकती है। यदि वे इसे शारीरिक रूप से प्राप्त नहीं करते हैं, तो वे संतों की तरह आध्यात्मिक रूप से इसे प्राप्त कर सकते हैं। इसलिए, आप इस महान आशीर्वाद से लाभान्वित हो सकते हैं। आओ, मुझे यह करते हुए देखने दो। अपनी इबादत के कर्तव्यों को पूरा करो। इस तरह से प्रयास करो कि तुम धरती के चेहरे को एक बगीचे में बदल सको, जिसका हर हिस्सा तुम देख सको और हर कोने से आवाज़ें तुम सुन सको। सबसे दयालु के आदेश पर ध्यान दो: उसने धरती को तुम्हारे अधीन कर दिया है, इसलिए उसके मार्गों पर चलो और उसके प्रावधान से खाओ। उसी के लिए पुनरुत्थान है। (67:15)

इस प्रकार ऊपर वर्णित श्लोक इस बात का संकेत देता है कि छवियों और ध्वनियों के संचरण में अंतिम बिंदु, जो विज्ञान और प्रौद्योगिकी में नवीनतम और सबसे महत्वपूर्ण विकासों में से एक है, और मानवता को उस अंतिम बिंदु की ओर प्रोत्साहित करता है।

आयतें: अन्य लोग जंजीरों में बंधे हुए थे (38:38) और: दुष्टों में से कुछ लोग उसके लिए गोता लगाते थे और दूसरे काम करते थे (21:82), बताती हैं कि सुलैमान ने जिन्न, शैतान और दुष्ट आत्माओं को अपनी आज्ञा मानने के लिए मजबूर किया। उसने उनकी बुराई को रोका और उन्हें लाभकारी कामों के लिए इस्तेमाल किया। दूसरे शब्दों में: जिन्न, जो सचेत प्राणी हैं और मानवता के बाद पृथ्वी के सबसे महत्वपूर्ण निवासी हैं, हमारी सेवा कर सकते हैं और उनसे संपर्क किया जा सकता है। शैतानों को भी सेवा करने के लिए मजबूर किया जा सकता है, चाहे वह स्वेच्छा से हो या अनिच्छा से। सर्वशक्तिमान ईश्वर ने उन्हें एक ऐसे सेवक का आज्ञाकारी बनाया जो उसकी आज्ञाओं का पालन करता था।

इन आयतों का अर्थ है: "हे मनुष्य! मैंने जिन्न और शैतानों को, जिनमें उनके सबसे बुरे लोग भी शामिल हैं, एक ऐसे सेवक का आज्ञाकारी बनाया जो मेरा आज्ञाकारी था। यदि तुम मेरे आदेशों का पालन करो, तो जिन्न और शैतानों सहित अधिकांश प्राणी तुम्हारे अधीन हो सकते हैं।"

ये श्लोक अलौकिक घटनाओं से संबंधित गुप्त या अलौकिक विज्ञान के उच्चतम बिंदु को चिह्नित करते हैं, जो कला और विज्ञान के मिश्रण के रूप में दिखाई देते हैं

और हमारी असाधारण भौतिक और आध्यात्मिक संवेदनशीलता के कारण। वे हमें कुरान के माध्यम से ऐसे प्राणियों को वश में करने और उनसे काम लेने के लिए प्रेरित करते हैं ताकि हम उनकी बुराई से बच सकें।

ये आयतें और इस तरह की अन्य आयतें: फिर हमने अपनी आत्मा उसके पास भेजी और उसने उसके लिए एक सिद्ध पुरुष का रूप धारण किया (19:17), संकेत देती हैं कि आत्माएँ दृश्यमान रूप धारण कर सकती हैं। लेकिन कुरान आधुनिक भूत-प्रेत विद्या की ओर इशारा नहीं कर रहा है, जिसे कुछ "सभ्य" लोग मृतकों की आत्माओं से संपर्क करने की कोशिश करके अभ्यास करते हैं, क्योंकि ये वास्तव में, मृत व्यक्ति के वेश में रहने वाली बुरी आत्माएँ हैं। बल्कि, यह कुछ संतों, जैसे मुही अल-दीन इब्न अल-अरबी को ज्ञात रूप है, जो अपनी इच्छानुसार अच्छी आत्माओं से संवाद कर सकते थे, उनसे संपर्क कर सकते थे और उनके साथ संबंध बना सकते थे, और उनके निवास पर जाकर और उनके वातावरण के करीब आकर, उनकी आध्यात्मिकता से लाभ उठा सकते थे।

आयतें: हमने पहाड़ों को वश में किया ताकि वे शाम को और सूर्योदय के बाद उसके साथ (अपने रब की) प्रशंसा करें (38:18), ऐ पहाड़ों, तुम भी उसकी प्रशंसा के पद गाओ, और तुम भी पक्षियों, और हमने उसके लिए लोहे को लचीला बनाया (34:10), और हमें पक्षियों की भाषा सिखाई गई है (27:16), जो दाऊद के चमत्कारों के बारे में हैं, बताते हैं कि सर्वशक्तिमान ईश्वर ने दाऊद की महिमा को ऐसी शक्ति और ऐसा दिया

एक गूंजती और मनभावन ध्वनि जो उन्होंने लाई
पहाड़ों से लेकर परमानंद तक। एक विशाल ध्वनि प्रणाली की तरह,
प्रत्येक पर्वत ने प्रमुख पर्वत के चारों ओर एक चक्र बनाया

वाचक—दाऊद—और अपनी महिमा दोहराई।
यह एक वास्तविकता है, क्योंकि गुफाओं वाला हर पर्वत
तोते की तरह “बोलें”। यदि आप पहाड़ के सामने घोषणा करते हैं: “सभी प्रशंसा परमेश्वर की है,” तो पहाड़ आपकी बात को प्रतिध्वनित करेगा
इसे वापस ले आओ। चूँकि सर्वशक्तिमान ईश्वर ने यह क्षमता पहाड़ों को दी है,
इसलिए इसे विकसित किया जा सकता है।

परमेश्वर ने दाऊद को सन्देशवाहक का पद और संदेशवाहक का पद दोनों प्रदान किये।
और खिलाफत को एक असाधारण रूप में बनाया। इस प्रकार उसने
क्षमता का यह बीज चमत्कार की तरह पनपता है
व्यापक दूतत्व और शानदार संप्रभुता कि महान पर्वत उसके पीछे चले जैसे

सैनिक, छात्र या शिष्य। उनके निर्देशन में
और उसकी भाषा में उन्होंने सर्वशक्तिमान की महिमा की
सृष्टिकर्ता ने जो कुछ कहा था उसे दोहराया।

वर्तमान में संचार में प्रगति के कारण एक महान सेनापति एक बड़ी सेना प्राप्त कर सकता है।
पहाड़ों में फैलकर उन्होंने एक ही समय में अपना उद्घोष दोहराया कि "ईश्वर सबसे महान है",
और पहाड़ों को बोलने और गूंजने दो
शब्दों में कहें तो अगर एक साधारण कमांडर ऐसा कर सकता है, तो
सर्वशक्तिमान ईश्वर के शानदार कमांडर को मिल सकता है
उन्हें वास्तव में परमेश्वर की महिमा का उच्चारण और पाठ करना है-

इसके अलावा, प्रत्येक पर्वत की एक सामूहिक व्यक्तित्व और कॉर्पोरेट पहचान होती है, और वह अपने लिए अद्वितीय महिमा और पूजा प्रदान करता है।

कोई मानवता की भाषा में प्रतिध्वनि के माध्यम से महिमामंडित करता है, यह यह अपने आप में सर्वशक्तिमान सृष्टिकर्ता की महिमा भी करता है विशेष भाषा.

पद्यांश: हमें अन्यभाषाएँ सिखाई गई हैं पक्षियों की (27:16) और पक्षी इकट्ठे हुए (38:19) बता दें कि सर्वशक्तिमान परमेश्वर ने दाऊद को और सोलोमन को पक्षियों की भाषाओं का ज्ञान और क्षमताओं की भाषाओं के बारे में (वे कैसे हो सकती हैं लाभ का)। यह देखते हुए, और यह कि पृथ्वी एक भारित है हमारे सम्मान में स्थापित सबसे दयालु की मेज-या, अधिकांश जानवर और पक्षी जो इससे लाभान्वित होते हैं मेज़ हमारी सेवा कर सकती है। परमेश्वर ऐसे छोटे जानवरों का उपयोग करता है जैसे मार्गदर्शन के माध्यम से मधुमक्खियों और रेशम के कीड़ों को उनकी विशेष प्रेरणा से मानवता को लाभ पहुँचाया जा सके। हमें कबूतरों का उपयोग करने और कुछ पक्षियों को बनाने में सक्षम बनाना तोते की तरह बोलते हुए, उसने सुंदरता में वृद्धि की है मानव सभ्यता.

यदि हम यह पता लगा सकें कि अन्य पक्षियों का उपयोग कैसे किया जाए जानवरों, कई प्रजातियों के लिए नियोजित किया जा सकता है पालतू जानवरों की तरह ही महत्वपूर्ण कार्य। उदाहरण के लिए, यदि टिड्डियों को नष्ट करने वाले तारों की भाषा ज्ञात हो और उनकी गतिविधियों का पता लगाया जा सके

अगर इन्हें नियंत्रित किया जाए, तो इनका इस्तेमाल टिड्डियों के प्रकोप के खिलाफ किया जा सकता है। यह कितनी मूल्यवान मुफ़्त सेवा होगी!

इस प्रकार, उल्लिखित श्लोक पक्षियों को वश में करने और उनसे लाभ उठाने तथा ऐसे निर्जीव प्राणियों को टेलीफोन की तरह बोलने के लिए प्रेरित करने के अंतिम बिंदु को दर्शाते हैं। इस क्षेत्र में सबसे दूर के लक्ष्य को निर्दिष्ट करके, श्लोक मानवता को उस ओर प्रेरित करते हैं।

इन्हीं आयतों के द्वारा सर्वशक्तिमान ईश्वर संकेत करते हैं:

> ताकि एक पैगम्बर के रूप में उनकी अचूकता और एक संप्रभु के रूप में उनके न्याय को नुकसान न पहुंचे, मैंने तुम्हारे एक साथी को, जो पूरी तरह से मेरे अधीन था, अपने राज्य के विशाल प्राणियों को वश में कर लिया और उन्हें बोलने लायक बना दिया। मैंने अपनी सेना और जानवरों में से ज़्यादातर को उसकी सेवा में लगा दिया। मैंने तुममें से हर एक को सर्वोच्च भरोसा सौंपा है13 जिसे स्वर्ग, पृथ्वी और पहाड़ों ने अस्वीकार कर दिया है, और तुम्हें मेरी आज्ञाओं के अनुसार पृथ्वी पर शासन करने की क्षमता प्रदान की है। इसलिए तुम्हें उस एक के आगे झुकना चाहिए जिसके हाथ में सभी प्राणियों की बागडोर है। यह

> वह अपने राज्य के प्राणियों को आपके अधीन कर देगा, ताकि आप उनका उपयोग उस परमेश्वर के नाम पर कर सकें जो उनकी लगाम थामे हुए है, और अपनी क्षमता के योग्य स्थिति तक उठ सकें।

13 सर्वोच्च विश्वास हमारा अहंकार या मानवीय पहचान है, जिसमें स्वतंत्र इच्छा, ज्ञान, बुद्धि और वाणी शामिल है। इस विषय पर विस्तार से जानने के लिए, तीसवाँ वचन देखें। (अनुवाद)

> इसे देखते हुए, रिकॉर्ड प्लेयर, संगीत वाद्ययंत्र, कबूतरों के साथ खेलना, तोते से बात करवाना आदि में अपना समय बर्बाद न करें। बल्कि, सबसे अच्छा प्रयास करें
> सुखद, उत्कृष्ट और पवित्र मनोरंजन - जो
> पहाड़ एक विशाल ध्वनि प्रणाली के रूप में कार्य कर सकते हैं
> तुम्हारे लिए भी वैसा ही जैसा उन्होंने दाऊद के लिए किया था, कि एक हवा बहे
> ईश्वरीय स्तुति और महिमा की धुनें बजाएँ
> वृक्षों और पौधों से आपके कानों तक ध्वनि पहुंचे, जिससे पर्वत भी अद्भुत
> प्राणियों के रूप में प्रकट होकर हजारों स्वरों में ईश्वरीय महिमा का गान कर सकें।
>
> भाषाएँ, और यह कि अधिकांश पक्षी सुलैमान के जैसे अंतरंग मित्र या आज्ञाकारी सेवक हो सकते हैं
> वे आपका मनोरंजन कर सकते हैं और आपको ड्राइव कर सकते हैं
> पूर्णता और उपलब्धियों की ओर उत्साह के साथ
> जिसके लिए आप सक्षम हैं, न कि आपको पैदा करने वाला
> अपनी मानवता के लिए अपेक्षित स्थिति से गिर जाना, जैसा कि व्यर्थ मनोरंजन करते हैं।

आयत: हमने कहा: "ऐ आग! ठंडक और शांति दे"
अब्राहम के लिए शांति” (21:69), अब्राहम के चमत्कारों में से एक के बारे में, तीन सूक्ष्म संकेत शामिल हैं:

प्रथम: प्रकृति के हर तत्व की तरह, आग भी एक आदेश के तहत अपना कर्तव्य निभाती है। यह आग को नहीं जलाती
अब्राहम, क्योंकि परमेश्वर ने उसे ऐसा न करने की आज्ञा दी थी।

दूसरा: एक प्रकार की गर्मी ठंडक से जलती है। वाक्यांश शांति हो, सर्वशक्तिमान ईश्वर
ठंड को आदेश दिया: “गर्मी की तरह, उसे मत जलाओ।”14

---

[14] कुरान के एक व्याख्याकार ने टिप्पणी की: "यदि उसने यह न कहा होता: शांति हो, इसकी ठंडक उसे जला देती।”

यह एक साथ आग और ठंड है। विज्ञान ने "श्वेत ऊष्मा" नामक एक अग्नि की खोज की है, जो अपनी गर्मी को विकीर्ण नहीं करती। इसके बजाय, यह आसपास की गर्मी को आकर्षित करके, आसपास के क्षेत्र को इतना ठंडा कर देती है कि तरल पदार्थ जम जाते हैं और वास्तव में अपनी ठंड के माध्यम से उन्हें जला देती है। (नरक, जिसमें सभी प्रकार की आग और डिग्री मौजूद है, में भी यह तीव्र ठंड होनी चाहिए।)

तीसरा: जिस तरह ईमान जैसा अमूर्त पदार्थ और इस्लाम जैसा कवच है, जो जहन्नम की आग के असर को दूर करेगा और उससे बचाएगा, उसी तरह एक भौतिक पदार्थ भी होना चाहिए जो आग के असर से बचाएगा और उसे रोकेगा। जैसा कि उसके नाम सर्वज्ञ की माँग है, और चूँकि यह दुनिया बुद्धि का घर है, [जहाँ सब कुछ एक निश्चित उद्देश्य के लिए होता है और आमतौर पर कारण और प्रभाव के अनुसार होता है], सर्वशक्तिमान ईश्वर कारण और प्रभाव के पर्दे के पीछे काम करता है। इसलिए, चूँकि आग ने अब्राहम के शरीर या कपड़ों को नहीं जलाया, इसलिए उसने उन्हें ऐसी अवस्था दी जो आग का प्रतिरोध करती थी।

इस प्रकार यह श्लोक सुझाता है:

> हे इब्राहीम के राष्ट्र। इब्राहीम की तरह बनो, ताकि तुम्हारे वस्त्र आग से तुम्हारा बचाव कर सकें, जो दोनों दुनिया में तुम्हारा सबसे बड़ा दुश्मन है। अपनी आत्मा को विश्वास से ढक लो, और यह नरक की आग के खिलाफ तुम्हारा कवच होगा।

> इसके अलावा, पृथ्वी में ऐसे पदार्थ हैं जो आपको अग्नि की बुराई से
> बचाएंगे। उन्हें खोजें, निकालें
> उन्हें ले लो, और उन्हें अपने ऊपर ओढ़ लो।

अपनी प्रगति में एक महत्वपूर्ण कदम के रूप में, मानवता ने एक अग्निरोधी पदार्थ की खोज की। लेकिन देखिए
यह वस्त्र कितना उत्तम, उत्तम और सुन्दर है
कविता इशारा करती है, जो करघे पर बुना जाएगा
ईश्वर में विश्वास और उसके प्रति समर्पण की पवित्रता, और
जो अनंत काल तक किराये पर नहीं रहेगा।

आयत: उसने आदम को सभी नाम सिखाये (2:31)
उन्होंने कहा कि, ईश्वर के नाम पर यह उनका सबसे बड़ा चमत्कार है
सर्वोच्च उप-शासनकाल में, एडम को नाम सिखाए गए थे।
जबकि अन्य पैगम्बरों के चमत्कार वैज्ञानिक और तकनीकी प्रगति के क्रम में एक विशेष आश्चर्य की ओर इशारा करते हैं, ईश्वर के पिता आदम का चमत्कार ...

सभी पैगम्बरों का कार्यालय खोलना और
पैगम्बरत्व, मानव उपलब्धि के अंतिम बिंदुओं और अंतिम लक्ष्यों की ओर लगभग स्पष्ट रूप से संकेत करता है
और प्रगति। इस श्लोक के द्वारा, सर्वशक्तिमान ईश्वर सुझाव देते हैं:

> ऐ आदम की संतान! अपनी श्रेष्ठता सिद्ध करने के लिए
> स्वर्गदूतों को उप-शासन के सम्बन्ध में मैंने आदम को सिखाया
> सभी नाम.15 उसके बच्चे और उत्तराधिकारी होने के नाते

---

15 आदम को जो नाम सिखाए गए वे उन चीज़ों के नाम हैं जो
मानव ज्ञान की कुंजी। वे दिव्य नामों से उत्पन्न होते हैं,
प्रत्येक विज्ञान की एक शाखा का स्रोत है। उदाहरण के लिए,

अपनी क्षमताओं का उपयोग करते हुए, सभी नामों को जानें और दिखाएँ कि आप अन्य सभी प्राणियों पर इस श्रेष्ठता के योग्य हैं, ताकि पृथ्वी जैसे विशाल प्राणी आपके आज्ञाकारी बन जाएँ। आगे बढ़ो, मेरे नामों में से एक को थामो और उठो। आदम को शैतान ने हमेशा के लिए धोखा दिया था, और वह अस्थायी रूप से बगीचे जैसे निवास से पृथ्वी पर गिर गया। इसलिए शैतान का अनुसरण न करें

आपकी प्रगति में बाधा उत्पन्न होगी, जिससे यह ईश्वरीय ज्ञान के स्वर्ग से प्रकृति को रचनात्मकता का श्रेय देने, या सृष्टि में कारण और प्रभाव को वास्तविक प्रभाव का श्रेय देने की गुमराही में गिरने का साधन बन जाएगा।

प्रकृति के संचालन के लिए अपने सिर को ऊपर उठाओ और मेरे सुंदर नामों का अध्ययन करते हुए विज्ञान और अपनी प्रगति के चरणों को बनाओ, जिसके द्वारा तुम स्वर्ग तक चढ़ सको। फिर तुम मेरे प्रभु के नामों तक उठ सकते हो, जो तुम्हारे विज्ञान और उपलब्धियों का सार और स्रोत हैं, और उनके माध्यम से अपने दिलों से अपने भगवान की ओर देखो।

एक महत्वपूर्ण बिंदु और महत्वपूर्ण रहस्य

ज्ञान की सभी उपलब्धियों, वैज्ञानिक प्रगति और प्रौद्योगिकी के चमत्कारों का वर्णन करते हुए, जो हमें हमारे विशाल विज्ञान के कारण प्राप्त हुए हैं।

"शिक्षा के शीर्षक के तहत संभावित "नाम" में उपर्युक्त श्लोक एक सुन्दर बात की ओर संकेत करता है:

चिकित्सा का स्रोत सर्व-चिकित्सा करने वाले नाम में है, और इंजीनियरिंग का स्रोत सर्व-निर्धारक और निश्चित माप देने वाले नाम में है। (ट्र.)

प्रत्येक उपलब्धि, पूर्णता, शिक्षा, प्रगति, और
विज्ञान में एक दिव्य आधार पर एक उन्नत वास्तविकता है
नाम: आवरणों के माध्यम से तथा विभिन्न तरीकों और स्तरों पर स्वयं को
अभिव्यक्त करने वाली, विज्ञान की एक विशेष शाखा
या कला अपनी पूर्णता प्राप्त कर वास्तविकता बन जाती है।
अन्यथा यह अपूर्ण, अपूर्ण और अस्पष्ट बना रहता है।

उदाहरण के लिए, इंजीनियरिंग की वास्तविकता इसमें निहित है
ईश्वर ने उसे सर्व-न्यायी (वह जो प्रत्येक वस्तु को एक निश्चित माप देता है और
प्रत्येक वस्तु को एक निश्चित सीमा में बनाता है) कहा है।
इसका स्थान) और निर्धारक। इसका अंतिम उद्देश्य है
उन नामों की बुद्धिमान अभिव्यक्तियाँ प्राप्त करें
पूर्ण मात्रा में और अपनी पूरी महिमा के साथ। चिकित्सा
एक कला और विज्ञान है। इसकी वास्तविकता ईश्वर में निहित है
सर्व-चिकित्सा का नाम बताइए, तथा परम बुद्धिमान की दया के प्रकटीकरण
द्वारा प्रत्येक बीमारी का इलाज ढूंढने में इसकी पूर्णता का नाम बताइए।

पृथ्वी पर, उसकी विशाल “फार्मेसी”।

प्रत्येक प्राकृतिक विज्ञान, जो सत्ताओं की वास्तविकता पर चर्चा करता है, ज्ञान से भरा एक सच्चा विज्ञान हो सकता है
केवल वस्तुओं में सर्वज्ञ ईश्वरीय नाम के विनियमन, निर्देशन, प्रशासन, पोषण
और सर्वव्यापी अभिव्यक्तियों को समझकर;

उन चीज़ों के लाभ और फायदों में;
और उस नाम पर आधारित होने से। अन्यथा वे

अंधविश्वास और बकवास बन जाते हैं, या, प्राकृतिक दर्शन की तरह, गुमराही का कारण बनते हैं। तुलना करें
इन तीन उदाहरणों को अन्य विज्ञानों के साथ जोड़कर देखें-
टिप्पणियाँ.

इस आयत के साथ, बुद्धिमान कुरान इस ओर इशारा करता है उच्चतम बिंदु, सबसे दूर की सीमाएँ, अंतिम डिग्री—
जिससे हम अभी भी बहुत दूर हैं—और आग्रह करता है
हमें उनके प्रति प्रेरित करें। यह श्लोक अत्यंत समृद्ध है और
अर्थ में विस्तार से बताऊँगा, लेकिन अभी मैं नहीं जाऊँगा
आगे।

कुरान पैगम्बर का सर्वोच्च चमत्कार है,
पैगंबर के कार्यालय की मुहर, नेता
पैगम्बरों का, तथा सभी प्राणियों के गर्व का कारण है।
जब उसकी तुलना उसके पैगम्बरत्व के कारण से की जाती है,
सभी पैगम्बरों के चमत्कार एक चमत्कार की तरह हैं।
सिखाए गए सभी नामों के सभी स्तरों से पूर्ण रूप से संपन्न,
संक्षेप में, एडम को। मूड में अपनी उंगली उठाकर

[16] पैगम्बर मुहम्मद से संबंधित किसी भी प्रकाशन में,
नाम या उपाधि के बाद “उन पर शांति और आशीर्वाद हो” लिखा जाता है, ताकि उनके प्रति हमारा सम्मान प्रदर्शित हो और क्योंकि यह एक धार्मिक आवश्यकता है। उनके साथियों और अन्य प्रतिष्ठित मुसलमानों के लिए: “अल्लाह उनसे प्रसन्न हो”

इस्तेमाल किया। हालाँकि, यह गैर-मुस्लिमों को विचलित कर सकता है
पाठकों, ये वाक्यांश इस पुस्तक में नहीं दिखाई देते हैं,
यह समझते हुए कि उन्हें मान लिया गया है और कोई अनादर नहीं
(संपादक)

महिमा के कारण, पैगंबर ने चंद्रमा को विभाजित किया; अनुग्रह के प्रदर्शन में इसे नीचे करके, उन्होंने पानी का प्रवाह किया
उससे प्रचुर मात्रा में; और सैकड़ों चमत्कारों द्वारा उसकी पुष्टि और पुष्टि हुई। कई छंद
जैसे: कहो: "यदि लोग और जिन्न एक साथ मिलकर
इस कुरान के समान कुछ भी बनाओ, वे कभी नहीं
इसकी तरह उत्पादन, भले ही वे एक दूसरे का समर्थन करते हैं" (17:88)
इसकी शुद्ध व्याख्या, वाक्पटुता व्यक्त करते हैं
अभिव्यक्ति, व्यापक अर्थ और उदात्त
और मीठी शैलियाँ। साथ में, ये एक का गठन करते हैं
कुरान के सबसे शानदार पहलू.

ऐसी आयतें लोगों और जिन्नों को सबसे अधिक आकर्षित करती हैं
उस शाश्वत चमत्कार के स्पष्ट और शानदार पहलू।
यह उन्हें उकसाता है, अपने दोस्तों का उत्साह बढ़ाता है
और अपने दुश्मनों की हठधर्मिता को बढ़ावा देता है।
और उन्हें ऐसा कुछ बनाने के लिए प्रेरित करता है जो उसके जैसा हो। यह चमत्कार लोगों की आँखों के सामने रखता है
प्राणियों को, मानो मानवता का एकमात्र उद्देश्य इसे छीनना है
जीवन में अपना लक्ष्य और मार्गदर्शक सिद्धांत के रूप में अध्ययन करना
ताकि हम सृष्टि में निर्धारित लक्ष्य की ओर सचेतन और जानकार ढंग से आगे बढ़ सकें।

संक्षेप में, अन्य पैगम्बरों के चमत्कार इस ओर संकेत करते हैं
मानव कला या शिल्प और प्रौद्योगिकी का आश्चर्य।
आदम का चमत्कार एक संक्षिप्त, संक्षेपित संकेत देता है
उन शिल्पों के आधार का स्वरूप, साथ ही अनुक्रमणिकाएँ

विज्ञान, ज्ञान की शाखाएँ, आश्चर्य और सिद्धियाँ, तथा हमें उनकी ओर प्रेरित करता है।

चमत्कारी अभिव्यक्ति का कुरान, मुहम्मद का सर्वोच्च चमत्कार, सभी दिव्य नामों की पूर्णता में अभिव्यक्ति का उद्देश्य, विज्ञान और ज्ञान की सभी शाखाओं के सच्चे लक्ष्य को पूरी तरह से दर्शाता है, साथ ही दोनों दुनियाओं की पूर्णता, उपलब्धियों और खुशी को भी दर्शाता है। यह हमें उनकी ओर इस तरह से प्रेरित करता है कि इसका अर्थ है:

> हे लोगों, इस ब्रह्मांड को बनाने का उत्कृष्ट उद्देश्य ईश्वरीय प्रभुत्व की अभिव्यक्ति (प्रशासन, निर्देशन, प्रशिक्षण और पोषण) के प्रति आपकी प्रतिक्रिया है, जो सार्वभौमिक पूजा के माध्यम से है। आपका अंतिम उद्देश्य विज्ञान, प्राप्ति और पूर्णता के माध्यम से उस पूजा को साकार करना है।

कुरान भी इस ओर संकेत करता है: “समय के अंत में, मानवता विज्ञान और शिक्षा में डूब जाएगी।
लोग विज्ञान से सारी शक्ति प्राप्त करेंगे। शक्ति और शासन विज्ञान और ज्ञान के हाथों में चले जाएँगे।" अपनी वाक्पटु और सुंदर शैली पर बार-बार जोर देते हुए, कुरान सुझाव देता है: "समय के अंत में, वाक्पटुता और अभिव्यक्ति की सुंदरता, सबसे शानदार विज्ञान और ज्ञान की शाखाएँ, अपनी सभी किस्मों में सबसे अधिक माँगी जाएँगी। लोग पाएंगे कि जब एक-दूसरे के साथ अच्छा व्यवहार करने की बात आएगी

उनकी राय को स्वीकार करें और उनके शासन का प्रयोग करें, उनका सबसे प्रभावी हथियार वाक्पटु अभिव्यक्ति होगी; उनकी सबसे अदम्य शक्ति उत्कृष्ट वक्तृता होगी।

संक्षेप में, अधिकांश कुरान की आयतें पूर्णता के खजाने और ज्ञान के भंडार की कुंजी हैं।

अगर आप कुरान के आसमान पर चढ़ना चाहते हैं और इसकी आयतों के सितारों तक पहुँचना चाहते हैं, तो इन 20 शब्दों को 20-सीढ़ियाँ बनाएँ और उन पर चढ़ें। आप देखेंगे कि कुरान कितना चमकीला, चमकता हुआ सूरज है। ध्यान दें कि यह ईश्वरीय सत्य और आकस्मिक (सृजित) क्षेत्र के सत्यों पर कैसे शुद्ध प्रकाश बिखेरता है।

देखो, यह कैसी शानदार रोशनी फैलाता है।

इस प्रकार, चूंकि पैगम्बरों से संबंधित आयतें समकालीन प्रौद्योगिकी के चमत्कारों की ओर संकेत करती हैं और उनकी अभिव्यक्ति का तरीका उनकी सुदूर सीमाओं का संकेत देता है, चूंकि प्रत्येक आयत के कई अर्थ हैं, और चूंकि पैगम्बरों का अनुसरण करने और उनकी आज्ञा पालन करने के स्पष्ट आदेश हैं, इसलिए ऊपर उल्लिखित आयतें अपने शाब्दिक अर्थों के अतिरिक्त, मानव कलाओं और विज्ञानों के महत्व की ओर भी संकेत करती हैं, और हमें उनकी ओर प्रेरित करती हैं।

दो महत्वपूर्ण प्रश्नों के दो महत्वपूर्ण उत्तर

प्रश्न: चूँकि कुरान मानवता के लिए भेजा गया था, तो इसमें स्पष्ट रूप से ईश्वर का उल्लेख क्यों नहीं किया गया है?

सभ्यता के वे तत्व जिन्हें हम महत्वपूर्ण मानते हैं?
यह केवल संकेत, संकेत या संदर्भों से ही संतुष्ट क्यों हो जाता है?

उत्तर: कुरान ऐसा इसलिए करता है क्योंकि यह प्रत्येक विषय पर उसकी दृष्टि में उसके महत्व के अनुसार चर्चा करता है। इसका मूल कर्तव्य ईश्वरीय प्रभुत्व की पूर्णता, आवश्यक गुण और कार्य, साथ ही सेवकाई के कर्तव्य, स्थिति और मामलों को सिखाना है। इस प्रकार मानव सभ्यता के चमत्कार केवल एक मामूली संकेत या निहित संदर्भ या संकेत के योग्य हैं।

उदाहरण के लिए, यदि कोई हवाई जहाज कुरान से यह अपील करता है: “मुझे बोलने का अधिकार और अपनी आयतों में जगह दीजिए,” तो प्रभुत्व के क्षेत्र (जैसे, ग्रह, पृथ्वी, चंद्रमा) का विमान कुरान की ओर से उत्तर देगा: “आपको अपने आकार के अनुपात में जगह मिल सकती है।”17 यदि कोई पनडुब्बी जगह मांगती है, तो उस क्षेत्र से संबंधित पनडुब्बियां (जैसे, वायुमंडल और ईथर के विशाल “महासागर” में “तैरने वाले” आकाशीय पिंड) कहेंगी: “हमारे बगल में आपकी जगह दिखाई देने के लिए बहुत छोटी है।” यदि एक चमकती हुई, तारे जैसी बिजली की रोशनी शामिल करने के लिए कहती है, तो

17 इस गंभीर विषय पर चर्चा करते समय, मेरी कलम अनायास ही इस हल्के-फुल्के लेखन में फिसल गई, और मैंने उसे छोड़ दिया।
मुझे आशा है कि इससे विषय की गंभीरता कम नहीं होगी।

उस क्षेत्र की विद्युत रोशनियाँ (जैसे, बिजली, चमकते हुए तारे, और आकाश को सुशोभित करते हुए तारे) कहेंगी:

“आपको उल्लेख किए जाने और आपके बारे में बात किए जाने का अधिकार है केवल आपके प्रकाश के अनुपात में।”

यदि मानव सभ्यता के आश्चर्यों को उनकी कला की उत्कृष्टता के संबंध में स्थान

चाहिए,

एक मक्खी जवाब देती: "चुप रहो, क्योंकि मेरा एक भी
पंखों का अधिकार आपसे ज़्यादा है। अगर आपके सारे
ललित कला और नाजुक उपकरणों को जोड़ा गया
एक साथ, वे उतने अद्भुत और उतने नहीं हो सकते
मेरे छोटे से शरीर में संकेन्द्रित ललित कला और नाजुक अंगों की तरह उत्तम।"
कविता: निश्चित रूप से वे

जिसे तुम अल्लाह के अलावा पुकारते हो, वह कभी एक मक्खी भी पैदा नहीं करेगा, यद्यपि वे ऐसा करने के लिए एकत्रित हो जाएं (22:73) और वे तुम्हें चुप करा देंगे।

यदि वे आश्चर्य क्षेत्र को आकर्षित करते हैं
दासत्व, उन्हें इस तरह का उत्तर मिलेगा
अगले:

> आपका हमारे साथ बहुत कम संबंध है, इसलिए आप
> हमारे क्षेत्र में प्रवेश नहीं कर सकते। हमारा कार्यक्रम यह है:
> दुनिया एक अतिथिगृह है। मानवता एक अतिथि है
> कई कर्तव्य। प्रत्येक व्यक्ति वहाँ थोड़े समय के लिए रहेगा
> समय के साथ खुद को तैयार करने का जिम्मा लिया जा रहा है।
> अनंत जीवन के लिए, वे अपनी सबसे ज़रूरी बात को प्राथमिकता देंगे
> और महत्वपूर्ण कर्तव्य। जैसा कि आप ज्यादातर प्रतीत होते हैं
> असावधानी और सांसारिकता में रचित,

मानो दुनिया अनंत हो, तुम्हारा हिस्सा बहुत कम है
ईश्वर की सेवा और आराधना में, जो कि
सत्य और परलोकवाद के प्रेम पर आधारित।

तथापि, यदि आप में कोई सम्मानित शिल्पकार, वैज्ञानिक और प्रेरणादायी आविष्कारक हैं, जो विशुद्ध रूप से ईश्वर के सेवकों के लाभ के लिए, सामान्य हित और सार्वजनिक सुविधा तथा सामाजिक उपलब्धि की सेवा करते हैं, तो कृपया उन्हें धन्यवाद दीजिए।
जीवन, जो एक मूल्यवान प्रकार की पूजा है, कुरान का कहना है
ऐसे मामलों के लिए संकेत और संकेत पर्याप्त हैं
संवेदनशील लोग, जो अपने समुदाय में अल्पसंख्यक हैं
सहकर्मियों को प्रोत्साहित करना, उनकी उपलब्धियों का सम्मान करना।

प्रश्न: आप पूछ सकते हैं: "इन चर्चाओं के बाद, मैं समझता हूँ कि कुरान में शामिल है,
साथ ही अन्य सभी सत्य और संकेत भी
आधुनिक सभ्यता के सबसे उन्नत रूप के संदर्भ में
आश्चर्य की बात है। दोनों दुनियाओं में मानवीय खुशी के लिए आवश्यक हर चीज इसमें पाई जाती है, अनुपात में
लेकिन कुरान में इसका ज़िक्र क्यों नहीं है?
उन्हें स्पष्ट रूप से बताएं, ताकि हर कोई विश्वास करे और
क्या हमारा मन शांत हो जाएगा?”

उत्तर: धर्म परीक्षा के लिए है, एक परीक्षण है और
परमेश्वर द्वारा ऊँचे और
बेस स्पिरिट्स को एक दूसरे से अलग करें। जिस तरह हीरे को कोयले से अलग करने के लिए कच्चे माल को जलाया जाता है और
मिट्टी से सोना, ईश्वरीय दायित्व चेतना का परीक्षण करते हैं

ताकि मानव क्षमता की “खान” में मौजूद बहुमूल्य “अयस्क” को मलबे से अलग किया जा सके।
चूँकि कुरान मानवता को परीक्षण के माध्यम से परिपूर्ण बनाने के लिए भेजा गया था, इसलिए यह केवल भविष्य में दुनिया से संबंधित घटनाओं का संकेत देता है, जिसे हर कोई देखेगा। यह केवल तर्क के द्वार खोलता है जितना कि इसके तर्क को साबित करने के लिए आवश्यक है।

अगर उसने ऐसी बातों का स्पष्ट उल्लेख किया होता, तो परीक्षण करना अर्थहीन होता। वे इतने स्पष्ट होते, जैसे कि आकाश के तारों वाले मुख पर लिखा हो कि ईश्वर के अलावा कोई पूज्य नहीं है , कि हर कोई विश्वास करने के लिए बाध्य हो जाता। कोई प्रतिस्पर्धा नहीं होती, और परीक्षण और परीक्षा का कोई मतलब नहीं होता। कोयले जैसी आत्मा हीरे जैसी आत्मा के बराबर दिखाई देती और उसके साथ रहती।[18] संक्षेप में, कुरान बुद्धिमान है और हर चीज को उसके मूल्य के अनुपात में स्थान देता है। इस प्रकार, 1,300 साल पहले इसने मानव प्रगति और उसके

फलों की सीमा को देखा, जो अदृश्य (भविष्य) के अंधेरे में छिपे हुए थे, और उन्हें बेहतर रूप में दिखाया। इससे पता चलता है कि कुरान ईश्वर का वचन है।

18 अबू जहल शापित और अबू बकर सत्यवादी समान प्रतीत होंगे, और लोगों का परीक्षण करने और उनके स्वतंत्र कार्यों के लिए उन्हें उत्तरदायी ठहराने का उद्देश्य निरर्थक हो जाएगा।

वह जो एक ही क्षण में सारे समय और उसके भीतर की सभी चीजों को देखता है।

अब तक हमने जो कुछ भी समझाया है वह कुरान की चमत्कारिकता की एक झलक मात्र है, जो पैगम्बरों के चमत्कारों के "चेहरे" पर चमकती है।

हे ईश्वर! हमें क़ुरआन के रहस्यों को समझने की शक्ति प्रदान कर और हमें हर क्षण और हर समय इसकी सेवा करने में सफल बना। आपकी महिमा हो। हमें कोई ज्ञान नहीं है सिवाय उसके जो आपने हमें सिखाया है।

निस्संदेह, आप सर्वज्ञ, तत्वदर्शी हैं।

हे ईश्वर! हमारे स्वामी और प्रभु मुहम्मद, आपके सेवक और पैगंबर और रसूल, अनपढ़ पैगंबर, उनके परिवार और साथियों और पत्नियों और वंशजों पर, अन्य सभी पैगंबरों और रसूलों पर, आपके निकट किए गए फ़रिश्तों पर, और संतों और धर्मी लोगों पर आशीर्वाद, शांति, आशीर्वाद और सम्मान प्रदान करें।

उन्हें कुरान की सूरा, आयतें, शब्द, अक्षर, अर्थ, संकेत, संकेत और संदर्भों की संख्या के अनुसार सबसे उत्तम आशीर्वाद, सबसे शुद्ध शांति और सबसे प्रचुर आशीर्वाद प्रदान करें। हमें क्षमा करें, हम पर दया करें और हम पर कृपा करें, हमारे ईश्वर, हमारे निर्माता, उन सभी आशीर्वादों में से प्रत्येक के लिए, आपकी दया के माध्यम से, हे दयालुओं में सबसे दयालु। सभी प्रशंसाएँ ईश्वर की हैं, जो संसार के स्वामी हैं। आमीन।

पच्चीसवाँ शब्द

चमत्कारी कुरान

जबकि हमारे पास कुरान जैसा शाश्वत चमत्कार है, मुझे किसी अन्य प्रमाण
की आवश्यकता महसूस नहीं होती।
जबकि हमारे पास कुरान जैसा सत्य का प्रमाण है, मुझे इनकार करने वालों
को चुप कराने में कोई कठिनाई महसूस नहीं होती।

नोट: इस ग्रंथ में जिन श्लोकों की चर्चा की गई है वे ये हैं

जिनकी आलोचना की गई है या जिन पर प्रश्न उठाए गए हैं। उनकी सच्चाईयों को इस तरह से स्पष्ट किया गया है कि वास्तव में ये ही चमत्कारों की किरणें और कुरान की वाक्पटुता के स्रोत हैं।

सूर्य के दौड़ने और पहाड़ों को मस्तूल मानने जैसे बहानों पर आधारित संदेह, जिनके माध्यम से वे कुरान की प्रामाणिकता और लेखकीयता पर संदेह करना चाहते हैं, दूर हो जाते हैं।

चूँकि यह ग्रंथ शीघ्रता से और समयबद्धता के साथ लिखा गया था
अशांत परिस्थितियों में, कुछ दोष हो सकते हैं
विचारों की अभिव्यक्ति में। हालाँकि, यह बताता है
कई मुद्दे जिनका वैज्ञानिक महत्व बहुत अधिक है,
और इसलिए अपने वर्तमान स्वरूप में भी यह उपयोगी हो सकता है।

- नर्सी ने कहा

भगवान के नाम पर,
दयालु, कृपालु.

कह दो, "यदि मनुष्य और जिन्न मिलकर इस क़ुरआन के समान कुछ बना लें, तो वे कभी भी ऐसा कुछ नहीं बना सकेंगे, यद्यपि वे एक-दूसरे का समर्थन ही क्यों न करें।" (17:88)

कुरान की चमत्कारिकता के अनगिनत पहलुओं में से, जो चमत्कारों का भंडार है और
पैगम्बर मुहम्मद का सबसे बड़ा चमत्कार, मेरे पास है
अब तक मेरे अरबी ग्रंथों में लगभग 40 का उल्लेख किया गया है,
इशारत अल-इजाज़ (चमत्कार के संकेत, कुरान पर एक परिचयात्मक टिप्पणी) और
पिछला 24 शब्द. मैं यहाँ केवल पाँच की व्याख्या करूँगा,
जिसमें कुरान की परिचयात्मक परिभाषा के बाद अन्य का भी संक्षेप में उल्लेख किया गया है।

तीन हिस्से

पहला भाग

प्रश्न: क्या आप कुरान को परिभाषित करेंगे?

उत्तर: जैसा कि उन्नीसवीं सदी में बताया गया है और अन्यत्र तर्क दिया गया है, कुरान ब्रह्मांड की महान पुस्तक का शाश्वत अनुवाद है[19] और उन "भाषाओं" का शाश्वत अनुवादक है जिनमें ब्रह्मांड के निर्माण और संचालन के दिव्य नियम "अंकित" हैं; दृश्यमान, भौतिक दुनिया और अदृश्य दुनिया की पुस्तकों का व्याख्याकार; धरती और आसमान में छिपे दिव्य नामों के अमूर्त खजानों का खुलासा करने वाला; घटनाओं की रेखाओं के पीछे छिपी सच्चाईयों की कुंजी; दृश्यमान, भौतिक दुनिया में अदृश्य दुनिया की भाषा; दयालु ईश्वर के अनुग्रहों और महिमावान ईश्वर के शाश्वत संबोधनों का खजाना जो अदृश्य दुनिया से परदे के पीछे से आते हैं।

---

[19] सैद नूरसी के विचार में, ईश्वर ने ब्रह्मांड को एक "पुस्तक" के रूप में बनाया है, जिसे वे लोग "पढ़" सकते हैं जो उसके बारे में जानना चाहते हैं और उसके करीब आना चाहते हैं। ब्रह्मांड की व्यवस्था, नियमितता, परस्पर जुड़ाव, कामकाज, इत्यादि उसके कुछ नामों और गुणों को प्रदर्शित करते हैं। अन्य नाम उसकी रचना के सजीव और निर्जीव सदस्यों के माध्यम से प्रदर्शित होते हैं, जैसे कि सर्व-दयालु, सर्व-प्रदान करने वाला, सर्व-दयालु, क्षमा करने वाला, इत्यादि। (संपादक)

यह दृश्यमान दुनिया; इस्लाम के आध्यात्मिक और
बौद्धिक दुनिया, साथ ही इसकी नींव और
योजना; परलोक की दुनिया का पवित्र मानचित्र;
व्याख्याता, सुस्पष्ट व्याख्याकार, स्पष्ट प्रमाण, और
दिव्य सार, गुण, का स्पष्ट अनुवादक,
नाम और कार्य; मानवता की दुनिया के शिक्षक और प्रशिक्षक और इस्लाम
का पानी और प्रकाश,
सच्ची और महानतम मानवता; और सच्ची बुद्धि
मानवता और उन्हें खुशी की ओर ले जाने वाले सच्चे मार्गदर्शक की खोज करें।

मानवता के लिए यह कानून, प्रार्थना, ज्ञान और प्रेम की पुस्तक है।
ईश्वर की आराधना और सेवा, आज्ञाएँ और
निमंत्रण, आह्वान और चिंतन। यह एक पवित्र
हमारी सभी आध्यात्मिक आवश्यकताओं के लिए पुस्तकें युक्त पुस्तक;
एक स्वर्गीय पुस्तक, जो एक पवित्र पुस्तकालय की तरह है,
अनेक पुस्तिकाएँ जिनसे सभी संत, अत्यंत सत्यनिष्ठ लोग, सभी शुद्ध और
विवेकशील विद्वान और ईश्वर के ज्ञान में पारंगत लोग

अपने स्वयं के विशिष्ट तरीके निकाले हैं, और जो
प्रत्येक मार्ग पर प्रकाश डालें और अपने अनुयायियों के प्रश्नों का उत्तर दें
जरूरतें.

दूसरा हिस्सा

परमेश्वर के सर्वोच्च सिंहासन से आकर, उसके महानतम नाम से उत्पन्न होकर, और प्रत्येक से निकला हुआ

नाम का सबसे व्यापक दर्जा, और जैसा कि बारहवें शब्द में बताया गया है, कुरान ईश्वर का वचन है (जहाँ तक कि वह संसार का स्वामी है) और उसका आदेश (उसके सभी प्राणियों के देवता होने के संबंध में)। यह आकाश और पृथ्वी के निर्माता के नाम पर एक प्रवचन है, पूर्ण दिव्य प्रभुत्व के दृष्टिकोण से एक भाषण है, और सर्व-महिमावान की सार्वभौमिक संप्रभुता की ओर से एक शाश्वत उपदेश है। यह सर्वव्यापी दया के दृष्टिकोण से परम दयालु के उपकारों का एक रजिस्टर भी है; संदेशों का एक संग्रह, जिनमें से कुछ सिफर से शुरू होते हैं; और एक पवित्र पुस्तक जो दिव्य महानतम नाम के आस-पास के घेरे से उतरी है, जो उसके सर्वोच्च सिंहासन से घिरे घेरे को देखती और सर्वेक्षण करती है।

यही कारण है कि कुरान को "ईश्वर का वचन" शीर्षक दिया गया है (और हमेशा दिया जाएगा)। कुरान के बाद अन्य पैगम्बरों को भेजे गए शास्त्र और पृष्ठ आते हैं। अन्य अनगिनत ईश्वरीय शब्दों में से कुछ प्रेरणाएँ हैं जो ईश्वरीय दया, संप्रभुता और आधिपत्य के एक विशेष पहलू के विशेष प्रदर्शन के रूप में एक विशेष शीर्षक और एक विशेष सम्मान के साथ आती हैं। स्वर्गदूतों, लोगों और जानवरों को आने वाली प्रेरणाएँ उनकी सार्वभौमिकता या विशिष्टता के संबंध में बहुत भिन्न होती हैं।

तीसरा भाग

कुरान में संक्षेप में सभी धर्मग्रंथ समाहित हैं
पिछले पैगम्बरों को बताई गई सभी बातों की विषय-वस्तु
संतों के ग्रंथ, और सभी शुद्ध विद्वानों के कार्य।
इसकी छह भुजाएँ चमकीली हैं और पूर्णतः मुक्त हैं
संदेह और मनमौजी विचार। इसका समर्थन दिव्य रहस्योद्घाटन और दिव्य शाश्वत है
शब्द, जिसका लक्ष्य शाश्वत सुख है और जिसका
अंदर शुद्ध मार्गदर्शन है। यह ऊपर से विश्वास की रोशनी से घिरा हुआ है और समर्थित है,
नीचे प्रमाण और साक्ष्य के साथ, दाईं ओर से
हृदय की समर्पणता और विवेक, और
तर्क और अन्य बौद्धिक क्षमताओं की स्वीकृति द्वारा बायीं ओर से।

इसका फल अत्यंत दयालु ईश्वर की दया और कृपा है।
स्वर्ग। इसे स्वीकार किया गया है और बढ़ावा दिया गया है
सदियों से स्वर्गदूतों और असंख्य लोगों और जिन्नों का अस्तित्व रहा है।

ऊपर बताए गए सभी गुण
अन्य स्थानों पर सिद्ध हो चुका है या आगामी पृष्ठों में सिद्ध हो जाएगा।

पहली बार प्रकाश

इस प्रकाश की तीन किरणें हैं।

पहली किरण

यह कुरान की चमत्कारी वाक्पटुता है, जो
इसकी उत्पत्ति इसके शब्दों के सौंदर्य, क्रम और संरचना में, इसके शाब्दिक सौंदर्य और पूर्णता में, इसकी शैलीगत मौलिकता और विशिष्टता में, इसके स्पष्टीकरण में होती है।
श्रेष्ठता, उत्कृष्टता और स्पष्टता; इसके अर्थ'
शक्ति और सत्य; और इसकी भाषाई शुद्धता और प्रवाह। इसकी वाक्पटुता इतनी असाधारण है कि हर व्यक्ति को इसके जैसा कुछ लिखने की इसकी शाश्वत चुनौती, भले ही केवल एक अध्याय ही क्यों न हो, अभी तक पूरी नहीं हुई है
जवाब दिया। इसके बजाय, वे प्रतिभाशाली लोग जो अपने आत्म-गौरव और आत्मविश्वास में खुद को बराबर मानते हैं
इस कार्य के लिए समर्पित कार्यकर्ताओं को अंततः अपने आपको इसके समक्ष विनम्र करना पड़ा।

मैं इसकी चमत्कारी वाक्पटुता को दो तरीकों से इंगित करता हूँ:

पहला तरीका: उस समय अरब के लोग अधिकतर अशिक्षित थे, और इसलिए उन्होंने अपनी भाषा को सुरक्षित रखा।
मौखिक कविता में आदिवासी गौरव, इतिहास और कहावतें।
वे वाकपटुता को बहुत महत्व देते थे, और
इसलिए किसी भी सार्थक, अनूठी अभिव्यक्ति को उसके काव्यात्मक रूप और वाक्पटुता के लिए याद किया जाता था और फिर
भावी पीढ़ी को सौंपा गया। वाक्पटुता और धाराप्रवाहता की इतनी अधिक मांग थी कि एक जनजाति
इसके वाक्पटु साहित्यिक व्यक्तित्व राष्ट्रीय नायक हैं।

वे बुद्धिमान लोग, जो इस्लाम के आगमन के बाद विश्व के एक बड़े भाग पर शासन करेंगे, अन्य राष्ट्रों की तुलना में अधिक वाक्पटु थे।

वाकपटुता का इतना सम्मान किया जाता था कि कभी-कभी दो कबीले एक साहित्यिक पात्र की कहावत पर युद्ध कर लेते थे और फिर दूसरे के शब्दों से सुलह कर लेते थे। यहाँ तक कि उन्होंने सात कवियों की कविताओं को सोने से खुदवाकर काबा की दीवार पर टांग दिया।

ऐसे समय में जब वाक्पटुता की बहुत मांग थी, चमत्कारिक व्याख्या वाली कुरान का अवतरण हुआ।

जिस तरह अल्लाह ने मूसा और ईसा को उनके समय के लिए सबसे उपयुक्त चमत्कारों से संपन्न किया था, उसी तरह उसने वाक्पटुता को कुरान का सबसे उल्लेखनीय पहलू बनाया, जो पैगंबर मुहम्मद का मुख्य चमत्कार है।21 जब इसे उतारा गया, तो इसने सबसे पहले अरब प्रायद्वीप के साहित्यिक हस्तियों को चुनौती दी: यदि तुम्हें उस चीज़ पर संदेह है जो हमने अपने सेवक पर उतारी है, तो इसके जैसा एक सूरा लाओ (2:23)। इसने उनके बौद्धिक दावों को हरा दिया और उन्हें यह कहते हुए विनम्र बना दिया: यदि तुम नहीं कर सकते, और तुम निश्चित रूप से नहीं कर सकते, तो आग से डरो,

20 इन सातों कविताओं को सात निलंबित कविताएँ कहा गया।

[21] मूसा को लाठी और सफेद हाथ के चमत्कार दिए गए थे, क्योंकि उसके समय में जादू-टोना बहुत मांग में था। यीशु को मृतकों को जीवित करने और कुछ बीमारियों को ठीक करने के चमत्कार दिए गए थे, क्योंकि उसके समय में उपचार को बहुत महत्व दिया जाता था।

जिसका ईंधन मनुष्य और पत्थर हैं, जो अविश्वासियों के लिए तैयार किए गए हैं (2:24)

वे अहंकारी लोग कुरान के साथ मौखिक रूप से बहस नहीं कर सकते थे। हालाँकि यह कुरान के संदेश को बाधित करने और उसे गलत साबित करने का एक आसान और सुरक्षित तरीका था, लेकिन उन्होंने तलवारों से लड़ने का विकल्प चुना, जो कि सबसे खतरनाक और सबसे कठिन रास्ता था। अगर कूटनीति में कुशल वे बुद्धिमान लोग कुरान के साथ मौखिक रूप से बहस कर सकते, तो वे खतरनाक, कठिन रास्ता नहीं चुनते और अपनी संपत्ति और जान गंवाने का जोखिम नहीं उठाते। चूँकि वे ऐसा नहीं कर सकते थे, इसलिए उन्हें ज़्यादा खतरनाक रास्ता चुनना पड़ा।

कुरान जैसी कोई चीज़ बनाने की कोशिश करने के दो शक्तिशाली कारण थे: रहस्योद्घाटन के अपने दावे का खंडन करना (इसके दुश्मन) और इसका अनुकरण करना (इसके दोस्त)। इसका नतीजा यह हुआ कि अरबी में अनगिनत किताबें लिखी गईं और आज भी लिखी जा रही हैं। सभी लोग, चाहे वे विद्वान हों या नहीं, जो ऐसी किताबें पढ़ते हैं, उन्हें यह स्वीकार करने के लिए मजबूर होना पड़ता है कि वे कुरान जैसी नहीं हैं। तो, या तो कुरान निम्न है - दोस्त और दुश्मन स्वीकार करते हैं कि यह अकल्पनीय है - या उन सभी से बेहतर है। कोई दूसरा विकल्प नहीं है।

प्रश्न: हमें कैसे पता कि लोगों ने कभी भी इससे विवाद करने का साहस नहीं किया, तथा उनका सहयोगात्मक प्रयास विफल हो गया?

उत्तर: यदि ऐसा संभव होता, तो विवादकर्ता सामने आए हैं। चूंकि बहुत से लोगों ने इसका विरोध किया है सच तो यह है कि इस तरह के प्रयास से कई लोगों को मदद मिल सकती थी समर्थकों और अच्छी तरह से जाना जाता है। जब भी एक तुच्छ संघर्ष भी बड़ी जिज्ञासा जगाता है, जैसे एक ऐतिहासिक, असामान्य प्रतियोगिता नहीं रखी जा सकती थी गुप्त। यद्यपि सबसे तुच्छ और घृणित इस्लाम से संबंधित आपत्तियाँ प्रसारित की गई हैं व्यापक रूप से, मुसैलिमा के कुछ टुकड़ों के अलावा कुछ भी नहीं झूठा सुनाया गया है।22 जो कुछ भी उसकी ओर से कहा गया है- उनके शब्दों का ऐतिहासिक रिकॉर्ड उनकी कला कौशल को दर्शाता है तुलना करने पर वे पूरी तरह से बेतुके लगते हैं कुरान की असीम सुन्दर अभिव्यक्तियाँ। इस प्रकार कुरान की चमत्कारिक वाक्पटुता निर्विवाद है।

दूसरा तरीका: अब हम पाँच बिंदुओं में समझाते हैं कुरान की चमत्कारिक वाक्पटुता में ज्ञान है।

पहला बिंदु: इसमें असाधारण वाक्पटुता है और कुरान के शब्द क्रम में शैलीगत शुद्धता या रचना। यह मेरे इशारत अल-इजाज में समझाया गया है। जिस तरह एक घड़ी की सुइयां पूरी होती हैं और फिट होती हैं-

---

22 मुसैलिमा द लायर ने दावा किया कि उसे पैगम्बर के साथ सत्ता में भागीदार बनाया गया था और उसने कुछ “सूरा” की रचना की थी।
पैगंबर ने उसे अस्वीकार कर दिया, और मुसैलिमा अल-यमामा (633) की लड़ाई के दौरान मारा गया, जो 1524 में हुआ था।
अबू बकर की खिलाफत. (ट्र.)

कुरान के प्रत्येक शब्द और वाक्य सटीक क्रम में एक दूसरे से जुड़े हुए हैं, इसलिए प्रत्येक शब्द और वाक्य - वास्तव में संपूर्ण कुरान - एक दूसरे को पूर्ण और फिट बैठता है।

यह असाधारण वाक्पटुता सभी को दिखाई देती है
देखने के लिए। निम्नलिखित उदाहरणों पर विचार करें:

• सूरत अल-अनबिया से:

यदि तेरे रब की यातना की एक साँस भी उन्हें छू जाए (21:46)

ईश्वर की सज़ा की गंभीरता को इंगित करने के लिए, उपरोक्त खंड इसकी सबसे कम मात्रा या सबसे मामूली तत्व की ओर इशारा करता है। चूँकि पूरा खंड इस मामूलीपन को व्यक्त करता है, इसलिए इसके सभी भागों को उस अर्थ को पुष्ट करना चाहिए।

अगर लेकिन (ला'इन) अनिश्चितता को दर्शाता है और इस प्रकार (दंड की) तुच्छता को दर्शाता है। मस्सा का अर्थ है थोड़ा छूना, जो तुच्छता को भी दर्शाता है। नफ़हतुन (एक साँस) केवल हवा का झोंका है। व्याकरणिक रूप से एकलता को व्यक्त करने के लिए इस्तेमाल किए जाने वाले शब्द से व्युत्पन्न, यह भी तुच्छता को रेखांकित करता है। नफ़हतुन के अंत में दोहरा एन (तनविन) अनिश्चितता को दर्शाता है और सुझाव देता है कि यह मामूली और महत्वहीन है। मिन एक भाग या एक टुकड़ा को दर्शाता है, इस प्रकार कमी को दर्शाता है।

'अज़हब (यातना या सज़ा) मतलब में हल्का है-

नकल (अनुकरणीय दंड) और 'इकाब (भारी दंड) की तुलना में , और एक हल्की सजा या यातना को दर्शाता है। रब्ब (भगवान, प्रदाता, संवाहक) का उपयोग करना, स्नेह का सुझाव देना, (उदाहरण के लिए) भारी, सभी-मजबूर, या बदला लेने वाला, भी तुच्छता व्यक्त करता है।

अंत में, इस खंड का अर्थ है कि यदि यातना या दंड की इतनी हल्की सांस भी इतना प्रभाव डालती है, तो व्यक्ति को यह विचार करना चाहिए कि ईश्वरीय दंड कितना गंभीर है।

हो सकता है। हम इस छोटे से खंड में देखते हैं कि इसके भाग एक दूसरे से कैसे संबंधित हैं और अर्थ को बढ़ाते हैं।
यह उदाहरण चुने गए शब्दों और उन्हें चुनने के उद्देश्य से संबंधित है।

• सूरत अल-बकरा से:

हमने जो कुछ उन्हें प्रदान किया है, उसमें से वे जीविका देते हैं। (2:3)

उपरोक्त वाक्य के कुछ अंश पाँच स्थितियों की ओर संकेत करते हैं जो दान-दान को परमेश्ँवर को स्वीकार्य बनाती हैं।

पहली शर्त: दान देते समय, विश्वासियों को इतना नहीं देना चाहिए कि वे भीख मांगने पर मजबूर हो जाएं ।

दूसरी शर्त: जो कुछ उनके पास है उसमें से देना चाहिए, दूसरों के पास जो कुछ है उसमें से नहीं। हमने उन्हें जो दिया है, उसका मतलब यह है कि जो कुछ हमने तुम्हें दिया है, उसमें से दो।

तीसरी शर्त: उन्हें अपने अहसानों की याद नहीं दिलानी चाहिए। हम इसका संकेत देते हैं, क्योंकि इसका मतलब है: मैंने तुम्हें रोज़ी दी है जिससे तुम गरीबों को दान देते हो। चूँकि तुम मेरा कुछ हिस्सा दे रहे हो, इसलिए तुम पाने वाले पर अहसान नहीं लगा सकते।

चौथी शर्त: उन्हें उन लोगों को देना चाहिए जो इसे केवल अपनी आजीविका के लिए खर्च करेंगे। वे जीविका के रूप में देते हैं ।

पांचवी शर्त: अल्लाह के लिए उन्हें देना होगा। हमने उन्हें जो दिया है, वह इस प्रकार है। इसका अर्थ है: तुम मेरी संपत्ति में से दे रहे हो, इसलिए मेरे नाम से देना होगा।

इन शर्तों के साथ, शब्द ' क्या' का अर्थ है कि ईश्वर जो कुछ भी देता है वह व्यक्ति के जीविका या आजीविका का हिस्सा है। इसलिए विश्वासियों को जो कुछ भी उनके पास है उसमें से देना चाहिए। उदाहरण के लिए, एक अच्छा शब्द, कुछ मदद, सलाह और शिक्षा सभी रिज़्क (जीविका) और सदका (दान) के अर्थ में शामिल हैं। 'क्या' (मा) का एक सामान्य अर्थ है और यह नहीं है

यहाँ प्रतिबंधित है। इस प्रकार इसमें वह सब कुछ शामिल है जो परमेश्वर ने प्रदान किया गया।

इस छोटे से वाक्य में एक बात निहित है और यह सुझाव भी देता है भिक्षा के लिए अर्थ की व्यापक रेंज और यह हमारे लिए प्रदान करता है समझ। कुरान के वाक्यों के शब्द क्रम में कई समान पहलू हैं, और शब्दों में समानता है।

एक दूसरे के साथ संबंधों की एक विस्तृत श्रृंखला।

वाक्यों के बीच संबंधों के लिए भी यही सच है,

में जैसा दिखा:

• सूरत अल-इखलास, जो इस प्रकार है:

> कह दो कि वह अल्लाह है, एक है, अल्लाह सर्वदा चाहने वाला है, न उसने कोई पैदा किया, न उसने दस को पैदा किया, उसके बराबर कोई नहीं। (112:1-5)

इस लघु सूरा में छह वाक्य हैं, तीन सकारात्मक और तीन नकारात्मक, जो ईश्वरीय एकता के छह पहलुओं को सिद्ध और स्थापित करते हैं और अस्वीकार और नकारते हैं

भगवान के साथ जुड़ने के छह प्रकार। प्रत्येक

वाक्य के दो अर्थ होते हैं: एक पूर्वोक्त (कारण या प्रमाण के रूप में कार्य करना) और दूसरा पश्चातोक्त (प्रभाव या परिणाम के रूप में कार्य करना)।

इसका मतलब है कि सुरा में 66 सुराएँ हैं, जिनमें से प्रत्येक छह वाक्यों से बना है। इनमें से एक या तो आधार है या फिर एक प्रस्ताव है, और अन्य उसके पक्ष में तर्क हैं।

उदाहरण के लिए:

> कह दो, "वह ईश्वर है, क्योंकि वह एक है, क्योंकि वह सर्वदा प्रार्थना करने वाला है, क्योंकि उसने जन्म नहीं लिया, क्योंकि वह पैदा नहीं हुआ, क्योंकि उसके समान कोई नहीं है।"

भी:

> कह दो कि उसके समान कोई नहीं, क्योंकि वह पैदा नहीं हुआ, क्योंकि उसने जन्म नहीं दिया, क्योंकि वह सर्वदा मांगा जाने वाला है, क्योंकि वह एक है, क्योंकि वह ईश्वर है।

भी:

> वह ईश्वर है, इसलिए वह एक है, इसलिए वह सबका नित्य वंदनीय है, इसलिए उसने जन्म नहीं लिया, इसलिए उसका जन्म नहीं हुआ, इसलिए उसके समान कोई नहीं है।

- सूरत अल-बकरा से:

> अलिफ़ लाम मीम - यही वह किताब है, इसमें कोई संदेह नहीं, यह मार्गदर्शन है ईश्वर का भय मानने वाले परहेज़गारों के लिए। (2:1-2)

हर वाक्य के दो अर्थ होते हैं। एक अर्थ दूसरे के लिए प्रमाण है, और दूसरे के माध्यम से उनका परिणाम। उनके बीच संबंधों के 16 धागों से चमत्कारीपन की एक मिश्रित रचना बुनी गई है। यह रचना मेरी इशारत में दिखाई गई थी

अल-इयाज। जैसा कि तेरहवें वचन में बताया गया है, यह
ऐसा लगता है जैसे कुरान की हर आयत में एक आँख है जो देखती है
अधिकांश छंद और एक चेहरा जो देखता है
उन्हें। यह देखते हुए, यह उन तक रिश्ते के अमूर्त धागे को बढ़ाता है ताकि एक
डिजाइन बुना जा सके
चमत्कारिकता। रचना की सुंदरता को इशारात अल-इजाज़ में विस्तार से बताया गया है।

दूसरा बिंदु: इसमें अद्भुत वाक्पटुता है
कुरान के अर्थों में.

• निम्नलिखित उदाहरण पर विचार करें :

आकाश और पृथ्वी परमेश्वर की महिमा करते हैं; और वह
वह सर्व-सम्मानित, प्रभुत्वशाली, अत्यन्त बुद्धिमान है

(57:1, 59:1, 61:1).

अर्थों में छिपी वाक्पटुता को पूरी तरह समझने के लिए कल्पना कीजिए कि आप रेगिस्तान में रह रहे हैं।
इस्लाम से पहले का अरब। ऐसे समय में जब सब कुछ
अज्ञानता और असावधानी के अंधकार से आच्छादित तथा "निर्जीव" प्रकृति की बुराई में लिपटे हुए,
तुम क़ुरआन की स्वर्गीय भाषा से सुनते हो :
जो आकाश और पृथ्वी में है वह परमेश्वर की महिमा करता है या
सात आकाश और पृथ्वी और उनमें रहने वाले लोग
उसकी महिमा करो (17:44), या इसी तरह की आयतें।

आप देखेंगे कि कैसे लोगों के मन में वे गतिहीन लाश जैसे प्राणी एक उद्देश्यपूर्ण अस्तित्व प्राप्त कर लेते हैं।

आकाश में जो कुछ है उसकी ध्वनि सुनकर तनाव

और पृथ्वी परमेश्वर की महिमा करती है, और इस प्रकार उठकर,

उसके नाम। उसकी पुकार और प्रकाश से उसकी महिमा होती है,

तारे, तब तक अंधेरे में आग के बेजान टुकड़े

आकाश में जो कुछ है, वह उनकी समझ में ज्ञान प्रकट करने वाले शब्दों और सत्य दिखाने वाले प्रकाश के रूप में प्रकट होता है।

सस्वर पाठ, भूमि और समुद्र को स्तुति की भाषा के रूप में, और

प्रत्येक पौधे और जानवर को महिमा के शब्द के रूप में।

• सूरह अल-रहमान से:

> ऐ जिन्नों और इंसानों के गिरोह! अगर तुम पैठ कर सको और आसमान के दायरे से आगे निकल जाओ
> और पृथ्वी, फिर भेदकर (उनके आगे) निकल जाएँगे।
> आप उनमें प्रवेश नहीं कर सकेंगे और उनसे आगे नहीं जा सकेंगे सिवाय
> एक अधिकार के साथ। तो फिर आशीर्वाद के
> क्या तुम अपने रब को झुठलाते हो? तुमपर अवश्य ही कोई भेजा जाएगा।
> आग की एक चमक, और धुआं, और कोई मदद नहीं मिलेगी तुम्हें,
> फिर तुम अपने रब की कौन सी नेमतों का लाभ उठाओगे
> इनकार? (55:33-36)

> निस्संदेह हमने धरती के सबसे निकट के आकाशों को सुशोभित किया है
> दीपकों से उन्हें दूर भगाने के लिए मिसाइलें बनाईं
> शैतानों (67:5)

इन श्लोकों को सुनिए, जिनकी चर्चा इस प्रकार है:

पंद्रहवें वचन को ध्यान से पढ़ें और उनके अर्थ पर ध्यान दें। वे कहते हैं:

ऐ इंसानों और जिन्न! तुम अपनी कमज़ोरी और बदनसीबी के बावजूद
घमंडी और बदतमीज़ हो, अपनी कमज़ोरी और बदनियती के बावजूद
विद्रोही और जिद्दी हो। अगर तुम मेरे हुक्मों को मानना नहीं चाहते,

यदि तुम कर सको तो मेरी सीमाओं से आगे निकल जाओ
राज्य। तुम्हारी हिम्मत कैसे हुई एक राजा की अवज्ञा करने की, जिसका
आदेशों का पालन तारे, चंद्रमा और सूर्य द्वारा किया जाता है
मानो वे प्रशिक्षित सैनिक हों जो हमेशा तैयार रहते हैं
आप अपने कमांडर के आदेशों का उल्लंघन करते हैं।
एक प्रतापी शासक जिसके पास ऐसे शक्तिशाली और आज्ञाकारी सैनिक
हैं कि, यदि तुम्हारे शैतान विरोध करें,
वे उन्हें पहाड़ जैसे पत्थरों से मार सकते थे
तोप के गोले। आपकी कृतघ्नता आपको विद्रोह करने के लिए प्रेरित करती है
एक प्रतापी सम्राट के राज्य में जिसने
उसकी सेनाओं में वे लोग थे जो उस पर प्रहार कर सकते थे
आप पहाड़ के आकार के या यहाँ तक कि पृथ्वी के आकार के तारे या
ज्वलंत मिसाइलें, यदि आप उस पर विश्वास नहीं करते
आकार, और आप को भगाओ। इसके अलावा, आप एक कानून का उल्लंघन करते हैं
जिससे ऐसे प्राणी बंधे होते हैं: यदि आवश्यक हो, तो वे पृथ्वी को आपके
चेहरे पर फेंक सकते हैं और बारिश कर सकते हैं
आप पर सितारों की तरह भगवान की मिसाइलें गिर रही हैं
छुट्टी।

अन्य श्लोकों के अर्थ में बल और वाक्पटुता तथा उनकी उच्च शैली की तुलना कीजिए।
इन।

तीसरा बिन्दु: कुरान में अद्वितीय, मौलिक तत्व हैं।
इसकी शैलियाँ नवीन और विश्वसनीय दोनों हैं।
जो अभी भी अपनी मौलिकता, ताज़गी और

“युवावस्था का उत्कर्ष” की नकल नहीं की जा सकती और न ही इसकी नकल की जा सकती है। कुछ उदाहरण इस प्रकार हैं:

• मुक़त्तत:

सिफर जैसा मुक़त्तात, विच्छिन्न, व्यक्तिगत अक्षर (जैसे, अलिफ़-लाम-मीम, अलिफ़-लाम-रा,
ता-हा, या-सिन, हा-मीम, और 'ऐन-सिन-काफ, के साथ
जिससे कुछ सूरा शुरू होते हैं), में पाँच या छह झलकियाँ होती हैं
चमत्कारिकता का। उदाहरण के लिए, वे आधे से अधिक होते हैं
प्रत्येक श्रेणी की प्रसिद्ध श्रेणियों में से
अक्षर - जोरदार, फुसफुसाए, बल दिया, नरम, लेबियो-लिंगुअल, और कलकले (बा, जिम, दाल, ता, कफ) ।
आधे से ज़्यादा “हल्के” अक्षरों से और आधे से कम
आधे "भारी" अक्षरों से, जिनमें से कोई भी नहीं है
विभाज्य होने के नाते, कुरान ने हर श्रेणी को आधा कर दिया है।

यद्यपि सभी श्रेणियों को आधा करना संभव है,
एक दूसरे के भीतर, एक बाहर एक साथ विद्यमान
200 संभावित तरीकों में से, प्रत्येक श्रेणी से आधा निकालना मानव मस्तिष्क या गणित का काम नहीं हो सकता है।
मौका। इन असंबद्ध अक्षरों के साथ
कुछ सूरों के प्रारम्भ में दिव्य अंक लिखे होते हैं, जिनमें इस प्रकार के चमत्कारों की पाँच-छह झलकियाँ दिखाई देती हैं, तथा अक्षरों के रहस्यों में पारंगत विद्वान्, तथा सटीक, संत विद्वान् भी इस बात को स्वीकार करते हैं कि,
उन्होंने कई रहस्यमय निष्कर्ष निकाले हैं और ऐसे सत्य खोजे हैं कि वे इन पत्रों को

एक अत्यंत शानदार चमत्कार बनाने के लिए। चूँकि मैं उनके रहस्यों को स्पष्ट रूप से खोजकर नहीं दिखा सकता, इसलिए मैं पाठकों को इशारत अल-इयाज में बताए गए उनके चमत्कारों की पाँच या छह झलकियाँ बताता हूँ।

अब मैं संक्षेप में कुरान की उन शैलियों पर चर्चा करूँगा जिनका अनुसरण इसके सूराओं, उद्देश्यों, आयतों, वाक्यों, मुहावरों और शब्दों में किया गया है।

• सूरत अल-नबा' पर विचार करें:

सूरत अल-नबा में अंतिम दिन और पुनरुत्थान के साथ-साथ स्वर्ग और नरक का वर्णन इस तरह के मौलिक और अद्वितीय अंदाज में किया गया है कि यह दिल को यह यकीन दिलाता है कि इस दुनिया में प्रत्येक ईश्वरीय कार्य और ईश्वरीय प्रभुता का कार्य आख़िरत के आगमन और उसके सभी पहलुओं को साबित करता है। जगह की कमी के कारण, मैं केवल कुछ बिंदुओं का उल्लेख करता हूँ।

सूरा के आरंभ में , यह प्रलय के दिन को इस प्रकार प्रमाणित करता है:

> मैंने धरती को तुम्हारे लिए बिछाया हुआ एक सुंदर पालना बनाया है, और पहाड़ों को तुम्हारे घरों और खजानों से भरी ज़िंदगियों की दीवार बनाया है। मैंने तुम्हें जोड़े में बनाया है, एक दूसरे से प्यार करते हुए और एक दूसरे से परिचित, मैंने रात को तुम्हारे आराम के लिए एक कंबल बनाया है, दिन का समय वह अखाड़ा है जिसमें तुम अपनी आजीविका कमा सकते हो, और सूरज को एक रोशनी देने वाला और गर्म करने वाला दीपक बनाया है, और बादलों से मैं पानी बरसा रहा हूँ जैसे कि वे तुम्हारे लिए थे।

> जीवन का जल उत्पन्न करने वाला एक झरना। मैं उसी एक जल से आसानी से और थोड़े समय में सभी फूल और फल देने वाली चीजें बनाता हूँ जो तुम्हारे सारे जीव-जंतु पैदा करती हैं। चूँकि ऐसा है, इसलिए अंतिम दिन, जो अंतिम निर्णय का दिन है, तुम्हारा इंतज़ार कर रहा है। उस दिन को लाना हमारे लिए मुश्किल नहीं है। (78:6- 17—ठीक से अनुवादित नहीं बल्कि व्याख्या की गई [ट्र.])

इसी क्रम में आगे बढ़ते हुए, सूरा स्पष्ट रूप से साबित करता है कि आख़िरी दिन पहाड़ हिल जाएँगे और मृगतृष्णा की तरह हो जाएँगे, आसमान फट जाएगा, जहन्नम तैयार हो जाएगा और जन्नत के लोगों को बाग़ और बगीचे दिए जाएँगे। इसका मतलब है: "चूँकि वह धरती और पहाड़ों पर तुम्हारी आँखों के सामने ये सब करता है, इसलिए वह आख़िरत में भी वैसा ही करेगा।"

दूसरे शब्दों में, सूरा के आरंभ में वर्णित पर्वतों का आख़िरत के पर्वतों से कुछ संबंध है, तथा बाग़ों का सूरा के अंत में वर्णित बाग़ों से तथा आख़िरत में वर्णित बाग़ों से कुछ संबंध है। इसी दृष्टिकोण से अन्य बिंदुओं का अध्ययन करें, तथा देखें कि इसकी शैली वास्तव में कितनी उच्च है।

• सूरत अल-इमरान से:

> कह दो, ऐ अल्लाह! तू जिसे चाहता है बादशाहत देता है और जिससे चाहता है बादशाहत छीन लेता है। तू ही जिसको चाहता है सम्मान देता है।

> तू चाहता है और जिसे चाहता है अपमानित करता है। तेरे हाथ में भलाई है। निश्चय ही तू हर चीज़ पर सामर्थ्य रखता है। तू रात को दिन में बदल देता है और दिन को रात में बदल देता है। तू जीवित को मुर्दों में से निकालता है और मुर्दों को जीवित में से निकालता है। और तू जिसे चाहता है बेहिसाब रोज़ी देता है। (3:26-27)

इस संसार में दिव्य कार्य और संचालन, दिन और रात के परिवर्तन में दिव्य अभिव्यक्तियाँ, जीवन और मृत्यु में ऋतु-पुत्रों और कार्यों पर प्रभु का नियंत्रण, तथा संसार के परिवर्तन, नवीकरण, रूपांतरण और आक्षेप इतने सजीव और उच्चतर शैली में व्यक्त किये गये हैं कि वे ध्यान लगाने वालों के मन को मोहित कर लेते हैं।

चूंकि इस शानदार, उन्नत और व्यापक शैली को देखने के लिए थोड़ा सा ध्यान ही पर्याप्त है, इसलिए मैं आगे नहीं जाऊंगा।

• सूरत अल-इंशिकाक से:

> जब आकाश फट जाएगा और अपने रब की आज्ञा का पालन करेगा, जैसा कि उसे करना ही चाहिए।
> और जब धरती समतल हो जाएगी, और जो कुछ उसमें से है उसे निकाल देगी और खाली हो जाएगी, और अपने रब की आज्ञा का पालन करेगी, जैसा कि उसे करना ही चाहिए। (84:1-5)

ये आयतें अत्यंत उच्च शैली में व्यक्त करती हैं कि आकाश और पृथ्वी किस हद तक परमेश्वर के अधीन हैं और किस हद तक परमेश्वर के अधीन हैं।

सर्वशक्तिमान परमेश्वर की आज्ञा का पालन करें। युद्ध को पूरा करने और समाप्त करने के लिए—रणनीति, लड़ाई, भर्ती करना, और सैनिकों को जुटाना, इत्यादि—एक सेनापति दो पद स्थापित करता है। लड़ाई खत्म होने के बाद, वह इन पदों का उपयोग दूसरे कामों के लिए करना चाहता है। हालाँकि, पद अपने कर्मचारियों की भाषा में उससे अनुरोध करते हैं: “हे सेनापति, हमें पहले के कामों को साफ करने और हटाने दें, और फिर अपनी उपस्थिति से हमें सम्मानित करें।” वे ऐसा करते हैं, और फिर सेनापति से कहते हैं: “अब हम आपकी आज्ञा पर हैं। आप जो चाहें करें, क्योंकि आप जो भी करते हैं वह सही, अच्छा और लाभदायक है।”

इसी तरह, स्वर्ग और पृथ्वी को परीक्षण और परीक्षा के दो क्षेत्रों के रूप में बनाया गया था। सचेत प्राणियों के लिए परीक्षण की इस अवधि के अंत के बाद, स्वर्ग और पृथ्वी ईश्वर के आदेश पर उस परीक्षण से जुड़ी चीजों को बाहर निकाल देंगे। फिर वे पुकारेंगे: "हे प्रभु, हम आपकी आज्ञा पर हैं, इसलिए हमें अपनी इच्छानुसार उपयोग करें। हमारा कर्तव्य आपकी आज्ञा का पालन करना है, क्योंकि आप जो भी करते हैं वह सही और सच्चा है।" इस समझ के आधार पर, छंदों की उच्च शैली और अर्थ पर विचार करें।

• सूरा हूद से:

> हे पृथ्वी, अपना पानी पी जा। हे आकाश, (अपनी वर्षा रोक ले) और पानी कम हो गया। और मामला खत्म हो गया।

> और वह जहाज़ जूदी पर्वत पर आकर रुका और कहा गया कि अत्याचार करनेवालों दूर हो जाओ। (11:44)

इस कविता की वाक्पटुता के सागर से एक बूँद की ओर संकेत करने के लिए, मैं एक सादृश्य के दर्पण के माध्यम से इसकी शैली का एक पहलू दिखाऊँगा। जीत के बाद, एक सेनापति अपनी एक सेना को गोलीबारी बंद करने का आदेश देता है और दूसरी सेना को गोली चलाने का आदेश देता है।

दूसरे को वहीं रहने दिया जाए जहां वह है। वह घोषणा करता है: "काम अच्छी तरह से किया गया है। दुश्मन को हरा दिया गया है, और हमारा झंडा दुश्मन के मुख्यालय में सबसे ऊंचे टॉवर पर फहराया गया है। उन आक्रामक अपराधियों को वह मिला है जिसके वे हकदार थे और वे सबसे निचले स्तर पर चले गए हैं।"

इसी तरह, राजा जिसकी कोई बराबरी नहीं है, ने स्वर्ग और पृथ्वी को नूह के लोगों को नष्ट करने का आदेश दिया। जब उन्होंने ऐसा किया, तो उसने आदेश दिया:

> हे पृथ्वी, अपना पानी निगल जा। हे आकाश, रुक जा, क्योंकि तूने अपना कर्तव्य पूरा कर दिया है। पानी कम हो गया। जहाज़ पहाड़ पर आकर रुक गया, मानो तम्बू खड़ा कर रहा हो। गलत काम करने वालों को उनका हक़ मिल गया।

गौर करें कि यह शैली कितनी शानदार है। कविता कहती है कि दो सैनिकों की तरह, स्वर्ग और पृथ्वी ईश्वर की आज्ञाओं पर ध्यान देते हैं और उनकी आज्ञा का पालन करते हैं। शैली से पता चलता है कि ब्रह्मांड क्रोधित है और स्वर्ग

और पृथ्वी मानवता के विद्रोही शेर से क्रोधित हैं। इसके अलावा, यह मानवता को चेतावनी देता है कि उसका विद्रोही शेर उस व्यक्ति के खिलाफ है जिसका स्वर्ग पर शासन है

और पृथ्वी का पालन करना अनुचित है और लोग

विद्रोह नहीं करना चाहिए। यह कविता बहुत शक्तिशाली संयम व्यक्त करती है। कुछ वाक्यों में, यह बाढ़ जैसी वैश्विक घटना का वर्णन करती है, इसकी सभी सच्चाइयों और परिणामों के साथ,

संक्षिप्त, चमत्कारी और सुंदर तरीके से।

इस सागर की अन्य बूँदों की तुलना इस बूँद से करो।

अब इस शैली पर विचार करें जो स्पष्ट रूप से दिखाई देती है

कुरान के शब्दों की खिड़की: और चाँद के लिए

हमने तब तक हवेलियाँ निर्धारित कर रखी हैं जब तक कि वह वापस नहीं आ जाती

एक पुराना मुरझाया हुआ खजूर का डंठल (36:39)। देखने में ऐसा लगता है

एक पुराना मुरझाया हुआ खजूर का डंठल। यह कितनी अच्छी शैली प्रदर्शित करता है:

चंद्रमा के महलों में से एक प्लीएडेस है।

यह श्लोक चंद्रमा की अंतिम तिमाही की तुलना करता है -

अर्धचन्द्राकार - एक पुराने सिकुड़े हुए खजूर के डंठल को।

तुलना से यह आभास होता है कि

आकाश का काला पर्दा एक पेड़ है, एक नुकीला चमकता हुआ

जिसका डंठल घूंघट फाड़कर खुद को दिखाता है

उस डंठल से लटकते हुए एक समूह की तरह प्लीएडेस,

और अन्य तारे उस छिपे हुए पेड़ के चमकते फलों की तरह हैं। अगर आपके पास स्वाद है, तो आप उसकी सराहना करेंगे

यह एक उचित, सुंदर, बढ़िया और महान शैली है, खासकर-

विशेष रूप से रेगिस्तान में रहने वाले लोगों के लिए जिनका सबसे महत्वपूर्ण
आजीविका का साधन खजूर है।

• सूरह या सिन से:

और सूर्य एक निश्चित विश्राम-स्थल की ओर दौड़ता है। (36:38)

अभिव्यक्ति अपने पाठ्यक्रम चलाता है एक महान छवि है।
हमें ईश्वरीय शक्ति की व्यवस्थित कार्यप्रणाली की याद दिलाकर,
दिन और रात के साथ-साथ गर्मी और सर्दी में भी शानदार, मुक्त कार्य
और संचालन,
यह निर्माता की शक्ति और महानता को समझने योग्य बनाता है, शक्ति
की कलम द्वारा ऋतुपुत्र के पृष्ठों पर अंकित शाश्वत-प्रार्थना-के-संदेशों की
ओर ध्यान आकर्षित करता है, और ज्ञात कराता है

सृष्टिकर्ता की बुद्धि.

दीपक का प्रयोग करके उसने सूर्य को दीपक बना दिया है।
(71:16), कुरान एक विशेष अर्थ पर एक खिड़की खोलता है: यह दुनिया
एक महल है, इसकी सामग्री
मानवता और अन्य जीवित चीजों का भोजन हैं और
जीवन की आवश्यकताएं पूरी होती हैं, और एक दीपक (सूर्य) रोशनी देता है
इसे बनाने वाले की महिमा और
सृष्टिकर्ता के उपकार इस प्रकार समझ में आते हैं,
यह वाक्य ईश्वर की एकता का प्रमाण प्रस्तुत करता है और
सूर्य की घोषणा है (जिसे उस समय के बहुदेववादी कहते थे)
सबसे महत्वपूर्ण और उज्ज्वल देवता के रूप में देखा जाता है)

एक निर्जीव वस्तु, जीवित प्राणियों के लाभ के लिए वश में किया गया एक दीपक।

दीपक में , यह श्लोक अपने प्रभु की शक्ति और महानता में सृष्टिकर्ता की दया को दर्शाता है, हमें उसकी दया की विशालता में उसके अनुग्रह की याद दिलाता है, उसकी संप्रभुता की भव्यता में उसकी उदारता का सुझाव देता है, और इस तरह उसकी एकता की घोषणा करता है। यह यह भी सिखाता है कि एक निर्जीव, अधीन दीपक पूजा के योग्य नहीं है। रात और दिन के साथ-साथ सर्दी और गर्मी में सर्वशक्तिमान ईश्वर के व्यवस्थित, अद्भुत कार्यों को इंगित करके, यह निर्माता की विशाल शक्ति का सुझाव देता है, जो अपने प्रभुत्व को स्वतंत्र रूप से निष्पादित करता है।

इस प्रकार यह आयत सूर्य और चंद्रमा के बारे में इस तरह से बात करती है कि हमारा ध्यान दिन और रात, गर्मी और सर्दी के पन्नों और उन पर अंकित घटनाओं की पंक्तियों की ओर जाए। कुरान सूर्य का उल्लेख उसके अपने नाम से नहीं बल्कि उसके नाम से करता है जिसने उसे चमकाया है। यह सूर्य की भौतिक प्रकृति को अनदेखा करता है, जो हमें लाभ नहीं पहुँचाती है, और हमारा ध्यान उसके आवश्यक कर्तव्यों की ओर आकर्षित करता है: ईश्वरीय सृजन और निर्माण के नाजुक क्रम के लिए एक पहिये या स्प्रिंग के रूप में कार्य करना, और ईश्वरीय डिजाइन के सामंजस्य के लिए एक शटल के रूप में कार्य करना, जिसे शाश्वत डिजाइनर रात और दिन के धागों से बुनता है। जब

आप कुरान के अन्य शब्दों की तुलना इनसे करते हैं,
आप देखते हैं कि प्रत्येक शब्द, भले ही सामान्य हो, एक महत्वपूर्ण शब्द है
उत्तम अर्थों के खजाने तक।

संक्षेप में, इसकी जीवंतता और असाधारणता
कुरान की शैली कभी-कभी बेडौइन को मंत्रमुग्ध कर देती थी
एक वाक्य के साथ, जो तब मुसलमान हुए बिना भी सजदा करेगा। एक बार
खुलेआम घोषणा करो
और जो आदेश तुम्हें दिया गया है, उसे दृढ़ता से करो (15:94)
यह प्रतिक्रिया तब सामने आई जब उनसे पूछा गया कि क्या वह
जब उनसे पूछा गया कि क्या वह मुसलमान बन गए हैं, तो उन्होंने जवाब दिया: "नहीं। मैं इस
वाक्यांश की वाक्पटुता के आगे सजदा करता हूँ।"

चौथा बिंदु: कुरान की शब्दावली असाधारण रूप से धाराप्रवाह और शुद्ध है।

अर्थ व्यक्त करते समय यह वाक्पटु है, इसलिए यह
शब्दों और पदावली में अद्भुत रूप से धाराप्रवाह और शुद्ध
व्यवस्था। इसका एक प्रमाण यह है कि यह नहीं है
इन्द्रियों को कष्ट देता है, बल्कि उन्हें आनन्द भी देता है
यदि इसे हज़ारों बार दोहराया जाए तो एक बच्चा याद कर सकता है-
इसे आसानी से समझ सकते हैं। गंभीर रूप से बीमार लोग, भले ही परेशान हों
आस-पास की साधारण बोली के कुछ शब्दों से राहत महसूस होती है
इसे सुनकर सुकून मिलता है। यह मरते हुए लोगों के कानों और दिमाग को वही
स्वाद और आनंद देता है
जैसा कि ज़मज़म के पानी ने उनके मुँह में छोड़ा था और
उनके तालू पर.

कुरान इंद्रियों को बोर नहीं करता; बल्कि यह दिल को पोषण देता है, दिमाग को शक्ति और धन देता है, आत्मा के लिए पानी और रोशनी का काम करता है, और आत्मा की बीमारियों को ठीक करता है। हम रोटी खाने से कभी नहीं थकते, लेकिन हर दिन एक ही फल खाने से हम थक सकते हैं। इसी तरह, कुरान की शुद्ध सच्चाई और मार्गदर्शन को पढ़ना या सुनना हमें बोर नहीं करता।

कुरैश23 ने अपने एक वाक्पटु नेता को कुरान सुनने के लिए भेजा। जब वह लौटा, तो उसने कहा: "यह इतना मीठा और मनभावन है कि कोई भी इंसानी ज़बान इसकी बराबरी नहीं कर सकती। मैं कवियों और भविष्यवक्ताओं को बहुत अच्छी तरह जानता हूँ। कुरान उनकी किसी भी रचना की तरह नहीं है। हमें इसे जादू-टोना कहना चाहिए ताकि यह हमारे अनुयायियों को धोखा न दे।" यहाँ तक कि इसके सबसे कठोरतम कवि भी इसे जादू-टोना कह सकते हैं।

शत्रु भी उसकी धाराप्रवाहता और वाकपटुता की प्रशंसा करते थे।

ऐसी बातें समझाने में बहुत समय लगेगा।

जो अक्षरों की व्यवस्था को देखता है:

> फिर जब तुममें से एक गिरोह को नींद आ गई, तो उसने तुमपर अफ़सोस के बाद शान्ति उतारी। और एक गिरोह अपने ही कारण परेशान था, अल्लाह के विषय में गलत संदेह और अज्ञानता के संदेह से। उन्होंने कहा, "क्या इस मामले में हमारा भी कोई हाथ है?"
>
> कह दो, "यह मामला तो अल्लाह का है।" वे अपने मन में कुछ छिपाते हैं, जिसे वे प्रकट कर देते हैं।

---

23 क़ुरैश पैगम्बर का कबीला था।

आपसे नहीं, यह कहते हुए: "यदि हमारा इसमें कोई हाथ होता
यदि हम यहाँ मारे न जाते तो कह दो,
"भले ही तुम अपने घरों में थे, वे
मारे जाने के लिए नियुक्त किया गया होगा आगे चला गया होगा
वे स्थान जहाँ उन्हें गिरना था। [यह सब]
ताकि परमेश्वर तुम्हारे हृदयों को परख सके
और जो तुम्हारे दिल में है उसे साबित करो। अल्लाह जानता है कि क्या
(लोगों के सीनों में) छिपा हुआ है। (3:154)

द्वारा लाया गया चमत्कार देखेंगे
पत्रों की असाधारण व्यवस्था।

ऐसी व्यवस्था, सूक्ष्म संबंध, नाजुक सामंजस्य और रचना दर्शाती है कि कविता
यह किसी व्यक्ति या संयोग का काम नहीं है। ऐसा
आदेश अन्य अज्ञात उद्देश्यों के लिए हो सकता है।
अक्षरों को एक निश्चित प्रणाली के अनुसार व्यवस्थित किया जाता है, उनके चयन और व्यवस्था में एक रहस्यमय क्रम और शानदार सुसंगति होनी चाहिए।
शब्द, वाक्य और अर्थ। जो लोग नोटिस करते हैं
और समझिए यह टिप्पणी करेगा: "भगवान को क्या आश्चर्य है
इच्छाएँ। भगवान ने उन्हें कितने शानदार ढंग से बनाया है।

पाँचवाँ बिंदु: क़ुरआन के भावों में श्रेष्ठता, शक्ति, उदात्तता और भव्यता समाहित है। इसकी धाराप्रवाह, वाक्पटु और शुद्ध रचना

और शब्द क्रम, साथ ही वाक्पटु अर्थ,
और मूल और अद्वितीय शैलियों, एक स्पष्ट करने के लिए नेतृत्व
इसकी व्याख्याओं में उत्कृष्टता। वास्तव में, सभी श्रेणियों में-

अभिव्यक्ति और संबोधन की भयावहता, इसकी व्याख्या
उच्चतम डिग्री के हैं.

उदाहरण के लिए: सूरत अल-इन्सान में अभिव्यक्तियाँ , अच्छे कर्मों को प्रोत्साहित करने और प्रोत्साहित करने के कई उदाहरणों में से एक, पानी की तरह सबसे अधिक मनभावन है
स्वर्ग की नदी की तरह, और फलों की तरह मीठा
स्वर्ग का.

निवारण और धमकी के उद्देश्य से, इसकी व्याख्या
सूरत अल-ग़ाशिया की शुरुआत में एक उत्पादन
गुमराह लोगों के कानों में उबलता सीसा जैसा प्रभाव,
उनके दिमाग में आग जल रही है, ज़क़्क़ुम उन्हें जला रहा है
तालू, नरक की आग उनके चेहरों पर हमला कर रही है, और उनके पेट में एक कड़वा, कांटेदार पेड़ है। वह नरक, एक "अधिकारी" जिस पर यातना देने, पीड़ा देने और ईश्वरीय सत्ता की धमकियों का प्रदर्शन करने का आरोप है, दहाड़ता है और लगभग क्रोध और गुस्से से फट पड़ता है (67:7-8), दिखाता है कि कैसे

यह कि सत्ता की रोकने और डराने की शक्तियाँ कितनी भयानक और विस्मयकारी हैं।

प्रशंसा की श्रेणी में, पाँच सूरों में कुरान की व्याख्याएँ हैं जो " सभी प्रशंसा" से शुरू होती हैं
भगवान के लिए हो [24] सूरज की तरह चमकदार हैं, जैसे सुशोभित
तारे, स्वर्ग और पृथ्वी की तरह राजसी, प्यारे
स्वर्गदूतों की तरह, कोमलता और करुणा से भरा हुआ

24 अर्थात्, अल-फ़ातिहा, अल-अनाम, अल-काफ़, अल-सबा', और अल-फ़ातिर।

और जो इस दुनिया में बच्चों के लिए एक सुन्दर और सुन्दर चीज़ है। और जहाँ तक निन्दा और संयम का प्रश्न है, तो सोचो कि क्या तुममें से कोई अपने मरे हुए भाई का माँस खाना चाहेगा? (49:12) यह निन्दा से दिल से घृणा पैदा करती है, निन्दा करनेवाले को छः दर्जे की निन्दा करती है और उसे छः दर्जे की कठोरता से रोकती है।

प्रारंभिक हम्ज़ा (मूल अरबी में) प्रश्नवाचक है। यह भाव पूरे वाक्य में पानी की तरह समाया हुआ है, इसलिए प्रत्येक शब्द वास्तव में पूछता है: "क्या आपके पास पूछने, उत्तर देने और अच्छे और बुरे के बीच अंतर करने के लिए पर्याप्त बुद्धि नहीं है, ताकि आप समझ सकें कि यह चीज़ कितनी घृणित है?" लाइक पूछता है: "क्या आपका दिल, जिससे आप प्यार और नफरत करते हैं, इतना भ्रष्ट हो गया है कि आप ऐसी घृणित चीज़ से प्यार करते हैं?"

आपमें से कोई पूछता है: "सामाजिक संबंध और सभ्यता की आपकी भावना को क्या हो गया है, जो सामूहिकता से अपनी जीवंतता प्राप्त करती है, कि आप सामाजिक जीवन के लिए इतनी जहरीली चीज को स्वीकार कर लेते हैं?"

मांस खाने के लिए पूछता है: "तुम्हारी मानवता की भावना को क्या हो गया है, कि तुम अपने दोस्त को जंगली जानवर की तरह अपने दांतों से टुकड़े-टुकड़े कर देते हो?" उसका भाई पूछता है: "क्या तुम्हारे पास कोई मानवीय कोमलता नहीं है, कोई रिश्तेदारी की भावना नहीं है? तुम एक निर्दोष व्यक्ति को अपने दांतों से कैसे घायल कर सकते हो जो तुम्हारे साथ कई लोगों द्वारा बंधा हुआ है?

भाईचारे की कड़ियाँ? या फिर तुम्हारे पास कोई बुद्धि नहीं है, और इसलिए तुम बिना सोचे-समझे अपने ही अंगों को काट रहे हो?”
डेड पूछता है: "तुम्हारा विवेक कहाँ है? क्या तुम्हारा स्वभाव इतना भ्रष्ट है कि तुम नरभक्षण में संलग्न हो सकते हो, हालाँकि तुम्हारा भाई बहुत सम्मान का हकदार है?"

इस प्रकार निन्दा और चुगली करना व्यक्ति की बुद्धि, हृदय, मानवता, विवेक, मानव स्वभाव तथा धार्मिक और राष्ट्रीय भाईचारे के लिए प्रतिकूल है। यह आयत चुगली की छः डिग्री में बहुत ही संक्षिप्त रूप से निंदा करती है, और छः चमत्कारी तरीकों से लोगों को इससे रोकती है।

जहाँ तक प्रमाण और प्रदर्शन का प्रश्न है, विचार करें:

> अतः अल्लाह की दयालुता के चिह्नों को देखो कि वह किस प्रकार धरती को उसके मरने के पश्चात जीवित करता है। वास्तव में वही है जो मुर्दों को जीवित करता है और वह हर चीज़ पर प्रभुत्व रखता है। (30:50)

यह आयत पुनरुत्थान का इतना अद्भुत प्रमाण है कि इससे बेहतर कोई प्रमाण संभव नहीं है।

पिछली शरद ऋतु और सर्दियों के दौरान मर चुके अनगिनत पौधों और जानवरों के वार्षिक वसंत पुनरुत्थान में पुनरुत्थान के अनंत उदाहरण हैं।25 श्लोक में कहा गया है कि वह जो

[25] दसवें वचन के नौवें सत्य में और पाँचवीं झलक में
बाईसवें शब्द का.

क्या ये चीज़ें दुनिया को नष्ट करने के बाद आसानी से मृतकों को जीवित कर सकती हैं। चूँकि यह एकता के प्रतीक की मुहर है कि वह पृथ्वी के पृष्ठ पर अपनी शक्ति की कलम से अनगिनत प्रजातियों को बिना किसी भ्रम के एक के भीतर अंकित करता है, साथ ही सूर्य की तरह दिव्य एकता को साबित करता है, इसलिए यह आयत पुनरुत्थान को सूर्योदय और सूर्यास्त की तरह स्पष्ट रूप से दिखाती है। कुरान पुनरुत्थान के तरीके को संदर्भित करने के लिए उपयोग करता है , और कई अन्य सूराओं में इसका वर्णन करता है ।

इसके अलावा, सूरा कफ़ (50) में , कुरान पुनरुत्थान को शानदार, सुंदर, मनमोहक और उच्च अभिव्यक्ति के तरीके से साबित करता है। अविश्वासियों के इस इनकार का जवाब देते हुए कि सड़ी हुई हड्डियाँ फिर से जीवित हो सकती हैं, यह घोषणा करता है:

> तो क्या उन्होंने अपने ऊपर आकाश को नहीं देखा कि हमने उसे किस प्रकार बनाया और उसे सुन्दर बनाया और उसमें कोई दरार नहीं है? और धरती को भी हमने
>
> फैलाओ, और उसमें दृढ़ पहाड़ बनाओ, और उसमें हर प्रकार के जीवित प्राणी उगाओ, कि वह हर पश्चातापी सेवक के लिए दर्शन और स्मरण का विषय हो।
>
> और हमने आकाश से बरकत वाला पानी बरसाया, जिससे बाग़ों और अनाजों को उगाया और ऊँचे-ऊँचे खजूर के पेड़ों को जिनके गुच्छे फैले हुए थे, लोगों के लिए रोज़ी बनाई और उसके ज़रिए हम मुर्दा ज़मीन को ज़िन्दा करते हैं। इसी तरह अल्लाह का भी दोबारा ज़िंदा होना है।
>
> मृत. (50:6-11)

सचमुच, इसकी प्रस्तुति का तरीका इस प्रकार है
पानी, सितारों की तरह चमकता है और, जैसे खजूर चमकते हैं
शरीर को आनंद, प्रसन्नता और पोषण देता है
हृदय तक.

प्रमाण और प्रमाण का सबसे बढ़िया उदाहरण है: या पाप। विवेकपूर्ण
कुरान की कसम। निश्चय ही
तुम भेजे गए लोगों में से हो (ईश्वर के दूत के रूप में)
(36:1-3)। यह शपथ इस बात की ओर इशारा करती है कि
मुहम्मद का संदेशवाहक होना इतना निश्चित और सत्य है
इस पर शपथ ली जा सकती है। दूसरे शब्दों में:
"आप कुरान के लिए सत्य संदेशवाहक हैं
और परमेश्वर का वचन तुम्हारे हाथ में है। इसमें सत्य है
बुद्धि और चमत्कार की मुहर लगी है।"

ऐसा ही एक और संक्षिप्त एवं चमत्कारी उदाहरण है:

> (मानवता) ने पूछा: "इन हड्डियों को कौन पुनर्जीवित करेगा?
> जब वे सड़-गल चुके होंगे?" कह दो, "वह फिर जीवित करेगा
> जिसने उन्हें सबसे पहले बनाया, उसी का पूर्ण प्रभुत्व है।
> हर सृष्टि का ज्ञान। (36:77-78)

जैसा कि अन्यत्र बताया गया है, जो पुनः एकत्रित होता है
एक दिन में एक विशाल, बिखरी हुई सेना निश्चित रूप से एक तुरही की आवाज के माध्यम से बिखरी हुई एक बटालियन को इकट्ठा कर सकती है
सैनिकों को आराम के लिए ले जाएं और फिर उन्हें पहले वाली स्थिति में खड़ा कर दें।26 इस बात पर विश्वास न करना तर्कहीन है।

---

[26] दसवें वचन के नौवें सत्य की तीसरी तुलना में।

इसी प्रकार, एक सर्वशक्तिमान, सर्वज्ञ
सभी जीवित प्राणियों के परमाणुओं को इकट्ठा कर सकते हैं, भले ही
स्थान के अनुसार: “हो, और यह है” (2:117) परिपूर्ण के साथ
सुव्यवस्था और ज्ञान का संतुलन, और बनाना
उनसे सबसे नाजुक इंद्रियों और सबसे तीव्र क्षमताओं वाले शरीर बनते हैं।
प्रत्येक वसंत में वह
पृथ्वी पर अनंत सेना जैसी सजीव प्रजातियाँ हैं। यदि वह
ऐसा कर सकता है, आपको क्यों लगता है कि वह किसी पूर्व जीवित इकाई के सभी
परमाणुओं को फिर से इकट्ठा नहीं कर सकता है और बढ़ा नहीं सकता है?
क्या यह इसराफिल की तुरही की ध्वनि से एक नये शरीर में आ जायेगा?

जहाँ तक मार्गदर्शन का प्रश्न है, कुरान इतना प्रभावशाली, गहन, कोमल
और मार्मिक है कि इसकी आयतें उत्थान करती हैं।
आत्मा में उत्साह, हृदय में प्रसन्नता,
बुद्धि को जिज्ञासा से और आँखों को आँसुओं से भर दो।
एक उदाहरण यह दर्शाता है:

> फिर उसके बाद तुम्हारे दिल कठोर हो गए और
> पत्थरों जैसे थे, या उससे भी कठोर; क्योंकि पत्थर हैं
> जहाँ से नदियाँ फूटकर आती हैं और कुछ फूटकर आती हैं,
> ताकि उनमें से पानी निकल जाए, और अन्य दुर्घटनाग्रस्त हो जाएं
> ईश्वर के भय में डूबे रहो। ईश्वर इस बात से बेखबर नहीं है
>
> जो काम आप करते हैं। (2:74)

यह आयत इसराइल की संतान को संबोधित है,
इसका मतलब है: "एक कठोर चट्टान भी झरने की तरह आँसू रोती है
अपनी बारह 'आँखों' से जब उसने मूसा के चमत्कार को देखा, और फिर
भी तुम्हारी आँखें सूखी रहीं और तुम्हारे दिल

कठोर और निर्मम। तुम्हें क्या हो गया है?”

चूँकि इस श्लोक का अर्थ अन्यत्र विस्तार से बताया जा चुका है, इसलिए मैं यहाँ इसकी चर्चा नहीं करूँगा।27

जहाँ तक तर्क-वितर्क में चुप्पी साधने और उस पर विजय पाने की बात है, तो निम्नलिखित श्लोक पर विचार करें:

> यदि तुम्हें उस बात में संदेह हो जो हमने अपने बन्दे पर उतारी है तो उसके समान एक सूरा ले आओ और यदि तुम सच्चे हो तो अल्लाह के सिवा अपने सहायकों और गवाहों को बुला लो। (2:23)

यह आयत मानवता और जिन्न को संबोधित करते हुए संक्षेप में कही गई है। मतलब:

> अगर आपको लगता है कि कुरान को किसी इंसान ने लिखा है, तो अपने अनपढ़ लोगों में से किसी एक को, जैसे कि मुहम्मद अनपढ़ हैं, कुछ ऐसा ही लिखने दें। अगर वह नहीं लिख सकता है, तो अपने सबसे मशहूर लेखकों या विद्वानों को भेजें। अगर वे नहीं लिख सकते हैं, तो उन्हें साथ मिलकर काम करना चाहिए और अपने पूरे इतिहास, "देवताओं", वैज्ञानिकों, दार्शनिकों, समाजशास्त्रियों, धर्मशास्त्रियों और लेखकों को कुछ ऐसा ही लिखने के लिए बुलाना चाहिए। अगर वे नहीं लिख सकते हैं, तो उन्हें कोशिश करने दें - चमत्कारी और अद्वितीय पहलुओं को छोड़कर

---

[27] बीसवें वचन के प्रथम स्थान में ये हैं:

जब हमने फ़रिश्तों से कहा कि आदम को सजदा करो तो इबलीस के सिवा सब सजदा करने लगे (2:34); अल्लाह तुम्हें आदेश देता है कि एक गाय की क़ुरबानी दो (2:67); फिर उसके बाद तुम्हारे दिल कठोर हो गए और पत्थर जैसे हो गए, या और भी अधिक कठोर हो गए (2:74)।

इसके अर्थ का - शब्द क्रम और रचना में समान वाक्पटुता का कार्य तैयार करना।

फिर उसके समान दस सूराएँ गढ़कर लाओ (11:13), कुरान का अर्थ है:

> आप जो लिखते हैं, जरूरी नहीं कि वह सच ही हो। लेकिन अगर आप फिर भी कुरान की लंबाई से मेल नहीं खा सकते, तो केवल 10 अध्याय ही लिखें। अगर आप ऐसा नहीं कर सकते, तो केवल एक अध्याय लिखें। अगर आप ऐसा नहीं कर सकते, तो केवल एक छोटा अध्याय लिखें। अगर आप ऐसा नहीं कर सकते - जो आप नहीं कर सकते - हालाँकि ऐसी अक्षमता आपके सम्मान, धर्म, राष्ट्रीयता, जीवन और संपत्ति को खतरे में डाल देगी, तो आप अपमानित होकर मरेंगे। इसके अलावा, जैसा कि कहा गया है: फिर आग से डरो, जिसका ईंधन लोग और पत्थर हैं (2:24), तुम और तुम्हारी मूर्तियाँ अनंत काल तक नरक में रहेंगी। अपनी अक्षमता के आठ स्तरों को समझने के बाद, आप आठ बार यह स्वीकार करने के अलावा और क्या कर सकते हैं कि कुरान एक चमत्कार है?

जहाँ तक मौन रखने की बात है, इस पर विचार करें: इस भाषण के बाद किसी अन्य भाषण की न तो आवश्यकता है और न ही हो सकती है। कुरान, साथ ही:

> अतः याद दिलाओ, अपने रब की कृपा से तुम न तो भविष्यवक्ता हो और न ही भूत-प्रेत से ग्रस्त हो। या वे कहते हैं कि वह कवि है, जिसके लिए हम प्रतीक्षा कर रहे हैं कि क्या होगा? कह दो कि प्रतीक्षा करो। मैं तुम्हारे साथ प्रतीक्षा कर रहा हूँ।
>
> या फिर उनकी बुद्धि उन्हें ऐसा करने के लिए कहती है?
>
> क्या वे एक अहंकारी, विद्रोही लोग हैं? या वे कहते हैं:

> "उसने इसे गढ़ा है?" बल्कि वे विश्वास नहीं करते।
> फिर यदि वे सच्चे हैं, तो उन्हें चाहिए कि वे ऐसी ही कोई बात लेकर आएँ।
> या वे शून्य से पैदा हुए हैं? या वे रचयिता हैं? या उन्होंने आकाशों और धरती को पैदा किया है? बल्कि वे सच्चे ईमान वाले नहीं हैं।
>
> या तुम्हारे रब के ख़ज़ाने उनके पास सुरक्षित हैं? या वे निगरानी करनेवाले रजिस्टर हैं? या उनके पास कोई सीढ़ी है जिस पर बैठकर वे सुनते हैं? फिर उनमें से जो कोई सुन रहा हो, वह स्पष्ट प्रमाण ले आए। या उसके पास बेटियाँ हैं और उनके पास बेटे? या तुम उनसे मज़दूरी माँगते हो, तो वे कर्ज के बोझ तले दब जाते हैं?
>
> या उनके पास ग़ैब की कोई चीज़ है, जो वे लिख रहे हैं? या वे कोई चाल चल रहे हैं? तो क्या वे लोग जो इनकार करते हैं, वही लोग धोखे में पड़ गए? या उनका कोई और पूज्य-प्रभु है, अल्लाह के सिवा? पवित्र है अल्लाह, उससे कहीं अधिक जिसे वे साझी ठहराते हैं। (52:29-43)

मैं इन आयतों में पाए जाने वाले अनगिनत सत्यों में से सिर्फ़ एक पर चर्चा करूँगा, ताकि यह दिखाया जा सके कि कुरान किस तरह अपने विरोधियों को चुप कराता है: या द्वारा प्रस्तुत 15 प्रश्नों के ज़रिए, जो अस्वीकृति और असंभवता को व्यक्त करते हैं, यह सभी विरोधियों को चुप करा देता है, सभी संदेहों को समाप्त कर देता है, और गुमराह करना असंभव बना देता है। यह उन सभी पर्दों को फाड़ देता है, जिनके नीचे वे छिप सकते हैं और उनकी भ्रांतियों को उजागर करता है। प्रत्येक प्रश्न भ्रांति को उजागर करता है, जहाँ भ्रांति स्पष्ट है, वहाँ चुप रहता है, या अविश्वासियों के दावे का संक्षेप में (और कहीं और अधिक विस्तार से) खंडन करता है। उदाहरण के लिए, यह उनके इस दावे को संदर्भित करता है कि पैगंबर एक कवि हैं: हमने उन्हें नहीं सिखाया

कविता; यह उसके लिए उचित नहीं है (36:69), और अंतिम भाग में उनके दावे का उत्तर इस प्रकार मिलता है: यदि उनमें (पृथ्वी और आकाश में) ईश्वर के अलावा अन्य देवता होते, तो वे निश्चित रूप से नष्ट हो जाते (21:22)।

शुरुआत में, यह कहता है: "दिव्य आज्ञाओं को सुनाओ। तुम भविष्यवक्ता नहीं हो, क्योंकि उनके शब्द भ्रमित करने वाले और अनुमान से भरे होते हैं। तुम पूर्ण निश्चय के साथ सत्य बोलते हो और तुम पर कोई भूत सवार नहीं है। तुम्हारे दुश्मन भी तुम्हारी उत्तम बुद्धि की गवाही देते हैं।" या वे कहते हैं: "वह एक कवि है। हम देखेंगे कि क्या होता है।" उनसे कहो: "रुको, और मैं भी प्रतीक्षा करूँगा।" तुम जो महान और शानदार सत्य लाते हो, वे काव्यात्मक कल्पना और कृत्रिम अलंकरण से मुक्त होते हैं।

या फिर उनकी बुद्धि उन्हें ऐसा करने के लिए कहती है? या फिर वे मूर्ख दार्शनिकों की तरह अपनी बुद्धि को ही पर्याप्त मानते हैं और इसलिए आपका अनुसरण करने से इनकार कर देते हैं? किसी भी अच्छी बुद्धि को आपका अनुसरण करना चाहिए, क्योंकि आप जो भी कहते हैं वह तर्कसंगत होता है। लेकिन, मानव बुद्धि उसके जैसा कोई भी नहीं बना सकती और उसे स्वयं समझ नहीं सकती। या फिर वे अहंकारी और विद्रोही हैं?

या फिर, विद्रोही अपराधियों की तरह, क्या उनका इनकार सत्य के प्रति समर्पण न करने के कारण है? फिरौन और निम्रोद जैसे विद्रोही अपराधियों के नेताओं का अंत तो हर कोई जानता है।

या वे कहते हैं कि, "उसने इसे गढ़ लिया है।" वे ईमान नहीं लाते और झूठे और बेईमान पाखंडियों की तरह तुम पर क़ुरआन को गढ़ने का आरोप लगाते हैं।

अब तक वे तुम्हें अपने बीच सबसे अधिक विश्वसनीय समझते थे और तुम्हें मुहम्मद (सच्चा) कहते थे। उनका ईमान लाने का कोई इरादा नहीं है। अन्यथा उन्हें कुरान के समान कोई मानवीय रचना अवश्य खोजनी चाहिए।

या फिर वे शून्य से निर्मित हुए थे? या फिर, उन दार्शनिकों की तरह जो अस्तित्व को बेतुका और उद्देश्यहीन मानते हैं, क्या वे खुद को उद्देश्यहीन, बिना किसी निर्माता के, और खुद पर छोड़ दिया हुआ मानते हैं? क्या वे अंधे हैं? क्या वे नहीं देखते कि ब्रह्मांड ज्ञान और फलदायी उदाहरणों से सुशोभित है, कि हर चीज के कर्तव्य हैं और हर चीज ईश्वरीय आज्ञाओं का पालन करती है?

या फिर वे निर्माता हैं? या फिर भौतिकवादियों की तरह जो फिरौन की तरह हैं, क्या वे खुद को स्वयं-अस्तित्व और आत्मनिर्भर मानते हैं, जो कुछ भी उन्हें चाहिए उसे बनाने में सक्षम हैं? क्या यही कारण है कि वे विश्वास और पूजा से इनकार करते हैं? ऐसा लगता है कि वे खुद को निर्माता मानते हैं। लेकिन जो एक चीज बनाता है, वह सब कुछ बनाने में सक्षम होना चाहिए। आत्म-दंभ और घमंड ने उन्हें इतना मूर्ख बना दिया है कि वे ऐसे नपुंसक को पूरी तरह से शक्तिशाली मानते हैं-

वे मानवता और विवेक से इतने रहित हैं कि वे पशुओं और निर्जीव वस्तुओं से भी नीचे गिर गए हैं। इसलिए उनके इनकार से दुखी न हों।

या फिर उन्होंने आकाश और पृथ्वी को बनाया? नहीं, क्योंकि उनके पास कोई पक्का ईमान नहीं है। या फिर, जो लोग सृष्टिकर्ता को नकारते हैं, क्या वे ईश्वर को नकारते हैं और इसलिए कुरान को नज़रअंदाज़ करते हैं? अगर ऐसा है, तो उन्हें आकाश और पृथ्वी के अस्तित्व को नकारना चाहिए या उनके रचयिता होने का दावा करना चाहिए, ताकि सभी को उनकी तर्कहीनता का पता चल सके।
ईश्वरीय सत्ता और एकता के प्रमाण सितारों और फूलों जितने असंख्य हैं। ऐसे लोगों का निश्चयपूर्वक विश्वास प्राप्त करने और सत्य को स्वीकार करने का कोई इरादा नहीं है। अन्यथा, वे यह कैसे कह सकते हैं कि इस ब्रह्मांड की पुस्तक, जिसके प्रत्येक अक्षर में एक पुस्तक अंकित है, का कोई लेखक नहीं है, जबकि वे जानते हैं कि एक अक्षर का कोई लेखक अवश्य होता है?

या फिर उनके पास तुम्हारे रब के खजाने हैं? या फिर कुछ गुमराह दार्शनिकों और ब्राह्मणों की तरह जो सर्वशक्तिमान ईश्वर की स्वतंत्र इच्छा को नकारते हैं, क्या वे पैगम्बर होने और इसलिए आप पर ईमान लाने से इनकार करते हैं? अगर ऐसा है, तो उन्हें पूरे ब्रह्मांड में देखी जाने वाली ज्ञान, उद्देश्य, व्यवस्था, उद्देश्यपूर्ण परिणाम, उपकार और दया के सभी कामों को नकारना चाहिए। उन्हें एक जानबूझकर किया गया चुनाव और पूर्ण इच्छा, साथ ही सभी पैगम्बरों के चमत्कारों को प्रकट करना चाहिए। या उन्हें दावा करना चाहिए कि वे दावा करते हैं कि वे पैगम्बर हैं।

सभी प्राणियों पर दिए गए उपकारों के भण्डार का निरीक्षण करें और दिखाएँ कि वे

उल्लेख के योग्य नहीं हैं।

यदि ऐसा है तो उनके इन्कार पर दुःख मत करो।

या फिर वे रजिस्ट्रार पर नज़र रख रहे हैं? या फिर,

मुताज़िलियों ने मामलों का फ़ैसला करने में तर्क को पूर्ण अधिकार बना लिया, क्या वे खुद

को

सृष्टिकर्ता के कार्य के पर्यवेक्षक और निरीक्षक और

क्या आप उसे ज़िम्मेदार ठहराना चाहते हैं? कभी भी निराश न हों और उनके इनकार

पर ध्यान न दें, क्योंकि यह व्यर्थ है।

या फिर उनके पास कोई सीढ़ी है जिस पर बैठकर वे सुनते हैं? अगर ऐसा है तो,

उनमें से कोई एक स्पष्ट प्रमाण लेकर आये।

या फिर उन भविष्यवक्ताओं और अध्यात्मवादियों की तरह जो

जिन्न और शैतान का अनुसरण करते हैं, क्या वे कल्पना करते हैं कि वे

क्या आपने अदृश्य तक पहुँचने का कोई दूसरा रास्ता खोज लिया है?

वे सोचते हैं कि उनके पास ऊपर चढ़ने के लिए एक सीढ़ी है

स्वर्ग की ओर, जो शैतानों के लिए बंद है?

क्या इसी कारण वे आपके स्वर्गीय समाचारों से इनकार करते हैं?

ऐसे लोगों को नकारने का कोई मतलब नहीं है।

क्या उसकी बेटियाँ हैं और उनके बेटे? या फिर,

दार्शनिक जो ईश्वर के साथ साझेदारों को जोड़ते हैं

(उदाहरण के लिए, दस बुद्धिजीवी और प्रजातियों के स्वामी), सबियन (जो एक

प्रकार की दिव्यता का श्रेय देते हैं

स्वर्गीय वस्तुओं और स्वर्गदूतों के लिए), या जो लोग सर्वशक्तिमान ईश्वर को पुत्रों का

श्रेय देते हैं, क्या वे दावा करते हैं कि स्वर्गदूत

उनकी बेटियाँ हैं, इस तथ्य के बावजूद कि ऐसा माना जाता है

अद्वितीय के आवश्यक अस्तित्व के लिए,
सदा से प्रार्थना करने वाला, उसकी एकता और पूर्णता के लिए
स्वतंत्रता, उसका सभी के लिए शाश्वत-प्रार्थना, तथा सभी की मासूमियत और दासता के प्रति
लिंगविहीन स्वर्गदूत? क्या वे स्वर्गदूतों पर विचार करते हैं
क्या वे ईश्वर के समक्ष अपने मध्यस्थ हैं और इसलिए आपका अनुसरण नहीं करते? यौन संबंध सभी आकस्मिक और नश्वर संस्थाओं की वृद्धि, सहयोग और निरंतरता सुनिश्चित करते हैं।

मानवता एक महान उदाहरण है, जिसके सदस्य
नपुंसक हैं, संसार से मोहित हैं, और चाहते हैं
बच्चों द्वारा उत्तराधिकारी बनाया जाना। ईश्वर को पितृत्व प्रदान करना सरासर मूर्खता है, क्योंकि उनका अस्तित्व अनिवार्य और शाश्वत है, तथा वे सभी पापों से पूर्णतः मुक्त हैं।
सभी भौतिक गुण, गुणा-भाग से छूट, और पूर्ण शक्ति पितृत्व को अनावश्यक बनाती है। इससे भी अधिक आश्चर्यजनक बात यह है कि उनका

यह कहते हुए कि भगवान की बेटियाँ हैं, जब वे
अपनी बेटियों को शर्म का स्रोत मानते हुए।
ऐसे लोगों के इनकार पर ध्यान मत दीजिए।

या फिर आप उनसे वेतन मांगते हैं और उन्हें नौकरी पर रखते हैं
कर्ज में डूबे हुए हैं? या, विद्रोही और अहंकारी, कंजूस और महत्वाकांक्षी
लोगों की तरह, क्या वे आज्ञाओं को सही पाते हैं?
क्या वे आपको असहनीय बताते हैं और इसलिए आपसे बचते हैं?
आपको नहीं पता कि आप वेतन की उम्मीद केवल उसी से करते हैं

क्या वे लोग इस्लाम का विरोध इसलिए करते हैं कि उन्हें ज़कात न देनी पड़े? उनका इनकार जवाब देने लायक नहीं है, बल्कि उन्हें सज़ा दी जाएगी।

या फिर अदृश्य उनके पास सुरक्षित है? क्या वे उसे लिख रहे हैं? या फिर, उन लोगों की तरह जो अदृश्य के बारे में जानने का दावा करते हैं और उन छद्म बुद्धिजीवियों की तरह जो भविष्य की घटनाओं के बारे में अपने अनुमानों को निश्चित मानते हैं, क्या उन्हें आपके अदृश्य के समाचार पसंद नहीं हैं? क्या उनके पास अदृश्य की किताबें हैं जो आपकी अदृश्य की किताब का खंडन करती हैं?

यदि ऐसा है, तो वे गलती से यह मान लेते हैं कि अदृश्य, जो केवल ईश्वरीय रहस्योद्घाटन प्राप्त करने वाले पैगम्बरों के लिए खुला है और कोई भी व्यक्ति अपने आप उसमें प्रवेश नहीं कर सकता, उनके लिए खुला है और वे केवल उससे प्राप्त जानकारी को लिख रहे हैं। इस तरह के इनकार से निराश न हों

---

28 प्रत्येक वयस्क और समझदार मुसलमान को, जो ऐसा कर सकता है, प्रत्येक वर्ष 9:60 में वर्णित आठ श्रेणियों के लोगों में से किसी एक या सभी को अनिवार्य रूप से धन देना चाहिए। इसकी सही मात्रा और इसे कौन प्राप्त कर सकता है, यह विभिन्न कारकों पर निर्भर करता है। (संपादक)

अभिमानी लोगों, क्योंकि जो सत्य आप लेकर आएँगे, वे
बहुत ही कम समय में उनकी कल्पनाएं नष्ट हो जाएंगी।

या फिर वे आपको चकमा देना चाहते हैं? जानिए कि
अविश्वासियों को मात दी जाती है। या, पाखंडियों और
विधर्मी, क्या वे दूसरों को उनके साथ शामिल होने के लिए प्रोत्साहित करते हैं
क्या वे आपको भविष्यवक्ता, जादूगर या भूत-प्रेत से ग्रस्त मानते हैं? वे वास्तव
में मनुष्य नहीं हैं,
और इसलिए आपको उनके द्वारा निराश नहीं होना चाहिए
इनकार और चालें। बल्कि, अधिक जोरदार और
अधिक प्रयास करें, क्योंकि उनकी चालाकी केवल उन्हें ही धोखा देती है। बुरे
कामों में उनकी स्पष्ट सफलता अस्थायी है, उनके लिए एक क्रमिक विनाश तैयार
किया गया है
ईश्वर।

या क्या उनके पास परमेश्वर के अलावा कोई और देवता है? महिमा
ईश्वर के लिए, उससे ऊपर जिसे वे साझीदार मानते हैं। या,
मागियों की तरह जो दो देवताओं में विश्वास करते हैं (एक
अच्छाई का निर्माता और बुराई का निर्माता), और वे
जो हर चीज को कारणता से जोड़ते हैं और इसे बनाते हैं
उनके लिए समर्थन का एक बिंदु, क्या वे झूठे पर भरोसा करते हैं
क्या वे देवताओं को अपने अधीन करके तुमसे बहस करते हैं? क्या वे स्वयं को
तुमसे स्वतंत्र मानते हैं?

यदि वे ऐसा करते हैं, तो वे ब्रह्माण्ड की परिपूर्ण व्यवस्था और नाजुक सुसंगति के
प्रति अंधे हैं: क्या वहां देवता थे?

उनमें (आसमानों और धरती में) अल्लाह के अलावा कोई नहीं है,
वे अवश्य ही बर्बाद हो जायेंगे (21:22)

एक गांव में दो पुरुष या बुजुर्ग, एक गांव में दो गवर्नर
शहर, या एक देश में दो संप्रभु बनाते हैं
व्यवस्था असंभव है। यदि ईश्वर के पास साझेदार होते, तो ब्रह्मांड की नाजुक व्यवस्था और सामंजस्य असंभव होता। चूँकि ऐसे लोग पूरी तरह से विपरीत कार्य करते हैं

तर्क, बुद्धि, सामान्य ज्ञान और स्पष्ट वास्तविकताओं के प्रति अपने दृष्टिकोण को त्यागने का प्रयास न करें, बल्कि उनके अस्वीकार के कारण अपने दृष्टिकोण को त्याग दें।
ईश्वरीय संदेश का संचार करना।

अब तक मैंने केवल एक का सारांश प्रस्तुत करने का प्रयास किया है। ऐसे सत्य से भरे छंदों में सैकड़ों रत्न हैं। अगर मैं उनके कुछ और रत्न दिखा सकता, तो आप
निष्कर्ष होगा: “प्रत्येक श्लोक एक चमत्कार है।”

शिक्षण और शिक्षा में कुरान की व्याख्या
व्याख्या करना बहुत अद्भुत, सुंदर और धाराप्रवाह है
कोई भी व्यक्ति सबसे गहन सत्य को आसानी से समझ सकता है। चमत्कारिक व्याख्या वाला कुरान कई गहन और सूक्ष्म सत्यों को इतनी स्पष्टता और सीधे तौर पर सिखाता और समझाता है कि यह किसी को भी ठेस नहीं पहुँचाता

मानवीय संवेदनशीलता का विरोध नहीं करता और न ही आम तौर पर प्रचलित राय का विरोध करता है। बल्कि, इस तरह की व्याख्या उस बात के अनुरूप है जो
हम इससे परिचित हैं।

जैसे एक बच्चे को संबोधित करते समय उपयुक्त शब्दों का उपयोग किया जाता है, कुरान, "भगवान का संबोधन
मानव मन," अपने लिए उपयुक्त शैली का उपयोग करता है
दर्शकों के स्तर पर। इसमें रूपक, दृष्टांत और

तुलना करना सबसे कठिन दिव्य बनाता है
सत्य और रहस्य आसानी से समझ में आ जाते हैं
सबसे आम, अनपढ़ व्यक्ति। उदाहरण के लिए:
सबसे दयालु ने खुद को स्थापित किया है
सर्वोच्च दिव्य सिंहासन (20:5) दिव्यता को दर्शाता है
आधिपत्य मानो एक राज्य था, और
ब्रह्माण्ड को संचालित करने वाले उनके प्रभुत्व का पहलू
मानो वह राजा हो जो अपनी सीट पर बैठा हो
प्रभुता के सिंहासन पर आसीन होना और अपना शासन चलाना।

कुरान, महान सृष्टिकर्ता का वचन
उनके आधिपत्य की अभिव्यक्ति की सर्वोच्च डिग्री से निकलने वाले
ब्रह्मांड की, अन्य सभी को पार कर जाती है
यह उन लोगों का मार्गदर्शन करता है जो उन डिग्री तक पहुंचते हैं,
और प्रत्येक को प्रकाशित करने के लिए 70,000 पर्दों से होकर गुजरता है।
समझ और बुद्धि के सभी स्तरों तक ज्ञान का प्रकाश फैलाते हुए, यह लोगों की क्षमता और वैज्ञानिक दृष्टिकोण की परवाह किए बिना अपना अर्थ प्रकट करता है।
स्तर, और इसकी अनंत ताज़गी और कोमलता बरकरार रखती है। यह सभी लोगों को आसान लेकिन सरल तरीके से सिखाता रहता है
सबसे कुशल और समझने योग्य तरीके से, और उन्हें इसकी सच्चाई के बारे में आश्वस्त करता है। आप इसमें जहाँ भी देखें,
आपको इसकी चमत्कारिकता की झलक मिलेगी।

संक्षेप में, जब कुरान में " सभी प्रशंसा" जैसा वाक्यांश
भगवान के लिए गाया जाता है, यह एक छोटी सी मक्खी के कान को भर देता है
साथ ही एक पहाड़ (गुफा) का भी। इसी तरह,

जिस तरह इसके अर्थ सबसे बड़ी बुद्धि को पूरी तरह से तृप्त कर देते हैं, उसी तरह इसके शब्द सबसे छोटी बुद्धि को भी तृप्त कर देते हैं। कुरान मानवता के सभी स्तरों और
जिन्न को विश्वास में लाता है और उन्हें विज्ञान की शिक्षा देता है
विश्वास। यह देखते हुए, सबसे अनपढ़ व्यक्ति के रूप में
साथ ही शिक्षित अभिजात वर्ग के सबसे प्रतिष्ठित सदस्य भी इसका अनुसरण करेंगे और इससे लाभान्वित होंगे।

कुरान एक ऐसी स्वर्गीय मेज है जिस पर
बौद्धिक और आध्यात्मिक भोजन से
बुद्धि, कारण, हृदय और आत्मा के सभी स्तरों पर
अपना भोजन ढूंढ़ना और अपनी भूख मिटाना
इसके अलावा, कुरान में अर्थ और सत्य के कई और खजाने हैं जो हमारे द्वारा खोले जाएंगे।
भविष्य की पीढ़ियों के लिए। पूरा कुरान इस सत्य का उदाहरण है। सभी मुसलमान, चाहे उनका पेशा कुछ भी हो, बुद्धि का स्तर कुछ भी हो, या ईश्वर के बारे में उनका ज्ञान कुछ भी हो,
घोषणा करें: “कुरान हमें सर्वोत्तम तरीके से शिक्षा देता है।”

दूसरी किरण

यह किरण, इसकी असाधारण व्यापकता
कुरान में पाँच आयतें हैं।

पहली झलक: यह कुरान से ली गई है
व्यापक शब्दावली, जिस पर चर्चा की गई
पिछले शब्दों में, साथ ही उन छंदों में भी जिनके
इस शब्द में अर्थ उद्धृत किए गए हैं। जैसा कि बताया गया है

परंपराओं में, प्रत्येक छंद में बाहरी और आंतरिक होते हैं
अर्थ, सीमाएँ और समझ का एक बिंदु, जैसे
साथ ही शाखाएं, डालियां और टहनियाँ।29 प्रत्येक वाक्यांश,
शब्द, अक्षर और विशेषक बिंदु के कई पहलू हैं।
जो भी व्यक्ति इसे सुनता है, उसे उसका हिस्सा मिलता है
एक अलग दरवाजे के माध्यम से.

• सूरत अल-नबा से:

और पहाड़ों को मस्तूल बना दिया (78:7)

इसका मतलब है: “मैंने पहाड़ों को मस्तूलों की तरह बनाया है और
अपनी धरती के लिए दांव लगाओ।” साधारण लोग पहाड़ों को ऐसे देखते हैं जैसे कि
उन्हें ज़मीन में गाड़ दिया गया हो और वे भगवान का शुक्रिया अदा करते हैं
परिणामी लाभ और इनाम के लिए निर्माता।
कवि पृथ्वी की कल्पना एक ऐसी भूमि के रूप में करते हैं जिस पर आकाश का गुंबद एक
विशाल चाप में, एक शक्तिशाली पर्वत के रूप में स्थापित है।
बिजली के लैंप से सजा नीला तम्बू। आकाश के आधार के चारों ओर लगे पहाड़ों
को तम्बू की खूंटियों के रूप में देखते हुए, उन्होंने
विस्मय में महिमावान सृष्टिकर्ता की आराधना करें।

रेगिस्तान में रहने वाले साहित्यकार पृथ्वी की कल्पना करते हैं
एक विशाल रेगिस्तान की तरह, और उसकी पर्वत श्रृंखलाएँ उतनी ही
खानाबदोशों के तंबू। वे उन्हें ऐसे देखते हैं जैसे मिट्टी हो
ऊंचे खंभों पर फैले हुए थे और मानो खंभों की नुकीली नोकों ने मिट्टी का
"कपड़ा" उठा दिया हो, जिसे वे

---

29 इब्न हिब्बन, साहिह, 1:146; अल-मुनावी, फ़ायद अल-कादिर, 3:54.

वे इसे अनगिनत प्राणियों का घर मानते हैं। वे उस महान सृष्टिकर्ता के सामने विस्मय से झुक जाते हैं, जिसने इतनी भव्य और शक्तिशाली चीज़ों को इतनी आसानी से बनाया और स्थापित किया।

साहित्यिक झुकाव वाले भूगोलवेत्ता पृथ्वी को हवा या ईथर के सागर में नौकायन करने वाले जहाज के रूप में देखते हैं, और पहाड़ों को जहाज को संतुलन और स्थिरता देने वाले मस्तूल के रूप में देखते हैं। पूर्णता के सर्वशक्तिमान के सामने, जिसने पृथ्वी को एक सुव्यवस्थित जहाज की तरह बनाया है जिस पर वह हमें ब्रह्मांड के माध्यम से यात्रा कराता है, वे घोषणा करते हैं: "आपकी जय हो। आपकी रचना कितनी शानदार है।"

दार्शनिक या संस्कृति के इतिहासकार पृथ्वी को एक घर के रूप में देखते हैं, जिसके जीवन का आधार पशु जीवन है, जो बदले में, हवा, पानी और मिट्टी (जीवन की परिस्थितियाँ) द्वारा समर्थित है। पहाड़ इन परिस्थितियों के लिए आवश्यक हैं, क्योंकि वे पानी का भंडारण करते हैं, हानिकारक गैसों को बाहर निकालकर वातावरण को शुद्ध करते हैं, और जमीन को दलदल बनने और समुद्र द्वारा नष्ट होने से बचाते हैं। पहाड़ मानव जीवन की अन्य आवश्यकताओं के लिए भी खजाने हैं।

पूर्ण श्रद्धा के साथ, वे महिमा और उदारता के निर्माता की प्रशंसा करते हैं, जिन्होंने इन महान पर्वतों को पृथ्वी के लिए स्तंभों के रूप में बनाया है, जो हमारे जीवन का घर है, और

उन्हें हमारी आजीविका के खजाने के रखवाले के रूप में नियुक्त किया।

प्रकृतिवादी वैज्ञानिक कहते हैं: "पृथ्वी के भूकंप और कंपन, जो कुछ भूमिगत संरचनाओं और विलयों के कारण होते हैं, पहाड़ों के उभरने के साथ स्थिर हो गए। इस घटना ने पृथ्वी की धुरी और कक्षा को भी स्थिर कर दिया। इस प्रकार इसका वार्षिक घूर्णन भूकंप से प्रभावित नहीं होता। इसका क्रोध और गुस्सा पहाड़ों के झरनों से होकर गुजरने से शांत हो जाता है।"

वे यह मानने लगे और घोषणा करने लगे: “परमेश्वर के हर काम में बुद्धि है।”

• सूरत अल-अनबिया से:

> आकाश और धरती एक ही टुकड़े थे, फिर हमने उन्हें अलग-अलग कर दिया (21:30)

जिन विद्वानों ने भौतिकवादी दर्शन का अध्ययन नहीं किया है, उनके लिए इसका एक अर्थ यह है कि जब आकाश साफ था और बादल रहित था, और पृथ्वी सूखी, बेजान और जन्म देने में असमर्थ थी, तब ईश्वर ने आकाश को वर्षा से और मिट्टी को वनस्पतियों से भर दिया, और एक तरह के विवाह और गर्भाधान के माध्यम से सभी जीवित प्राणियों का निर्माण किया। ऐसे लोग समझते हैं कि सब कुछ एक ऐसे सर्वशक्तिमान महामहिम का काम है कि पृथ्वी का चेहरा उसका छोटा बगीचा है, और आकाश के सभी बादल बादलों को ढकते हैं।

चेहरे को सींचने के लिए स्पंज हैं। वे दंडवत करते हैं
उसकी शक्ति की प्रचंडता के आगे।

कठोर ऋषियों के लिए इसका अर्थ है: "शुरुआत में,
आकाश और पृथ्वी एक निराकार पिंड थे,
गीले आटे की तरह पदार्थ से बना, बिना किसी उत्पादन या जीव के। सर्वज्ञ सृष्टिकर्ता ने अलग किया
उन्हें बनाया और प्रत्येक को एक सुंदर आकार और लाभकारी रूप देकर, उन्हें बहुरूपी, सुशोभित प्राणियों की उत्पत्ति बना दिया। " ये ऋषि

उसकी बुद्धि की व्यापकता पर लोग प्रशंसा से भर जाते हैं।

आधुनिक दार्शनिक या वैज्ञानिक समझते हैं
सौरमंडल आटे के एक ढेर की तरह जुड़ा हुआ है।
तब वह सर्वशक्तिमान और आत्मनिर्भर
इसे बाहर निकाला और ग्रहों को उनके संबंधित स्थानों पर रख दिया। उसने सूर्य को वहीं छोड़ दिया जहाँ वह था और
पृथ्वी को यहाँ लाया। इसके चेहरे पर मिट्टी फैलाकर,
इसे वर्षा से सींचकर और सूर्य के प्रकाश से प्रकाशित करके, उसने संसार को रहने योग्य बनाया और हमें इस संसार में स्थान दिया।
इस पर। इन लोगों को दलदल से बचाया जाता है
प्रकृतिवाद, और घोषणा करें: "मैं ईश्वर में विश्वास करता हूँ, एक, अद्वितीय।"

• सूरह या सिन से:

> सूर्य अपने नियत विश्राम स्थान की ओर गति करता है।
>
> (36:38)

कण ली (जिसे एकल अक्षर लैम के रूप में लिखा जाता है), जिसका अनुवाद यहाँ "से" किया गया है, "की ओर", "में" और "के लिए" के अर्थों को व्यक्त करता है। आम लोग इसे "की ओर" के रूप में पढ़ते हैं और समझते हैं कि सूर्य, जो प्रकाश और गर्मी प्रदान करने वाला एक चलता-फिरता दीपक है, एक दिन अपने विश्राम स्थल पर पहुँच जाएगा और अपनी यात्रा समाप्त करके ऐसा रूप धारण कर लेगा जो अब उनके लिए लाभकारी नहीं होगा।

सूर्य के माध्यम से महान सृष्टिकर्ता द्वारा प्रदान की जाने वाली महान कृपाओं के बारे में सोचते हुए, वे घोषणा करते हैं: "सारी महिमा परमेश्वर की हो। सारी स्तुति परमेश्वर की हो।"

विद्वान लोग ली को "की ओर" के रूप में भी पढ़ते हैं, लेकिन सूर्य को वसंत और गर्मियों के करघे में बुने गए भगवान के वस्त्रों के लिए एक दीपक और एक शटल के रूप में देखते हैं, एक स्याही के बर्तन के रूप में जिसकी स्याही रात और दिन के पन्नों पर अंकित शाश्वत-सभी-के-लिए-प्रार्थना के अक्षरों के लिए प्रकाश है। दुनिया के क्रम पर विचार करते हुए, जिसका सूर्य की स्पष्ट गति एक संकेत है और जिसकी ओर यह इशारा करता है, वे सर्वज्ञ निर्माता की कला के सामने घोषणा करते हैं: "भगवान ने क्या चमत्कार किया है," उनकी बुद्धि के सामने: "भगवान इसे आशीर्वाद दें," और दंडवत करते हैं।

भूगोलवेत्ता-दार्शनिकों के लिए, ली का अर्थ है "अंदर" और यह बताता है कि सूर्य ईश्वरीय आदेश के माध्यम से और अपनी धुरी पर स्प्रिंग जैसी गति के साथ अपनी प्रणाली को आदेश देता है और आगे बढ़ाता है।

सृष्टिकर्ता, जिसने एक शक्तिशाली प्राणी को बनाया और व्यवस्थित किया
सौरमंडल जैसी घड़ी को देखकर वे पूर्णतः विस्मय और प्रशंसा से कहते हैं: "सभी महानता
और शक्ति ईश्वर की है," भौतिकवादी दर्शन को त्यागें, और कुरान के ज्ञान को अपनाएं।

सटीक और बुद्धिमान विद्वान ली को कारण मानते हैं
और क्रियाविशेषण। वे समझते हैं कि चूंकि सर्वज्ञ निर्माता स्पष्ट पर्दे के पीछे काम करता है
कारण-कार्य संबंध के कारण, उसने ग्रहों को सूर्य से बांध दिया है
गुरुत्वाकर्षण का नियम और उन्हें घूमने का कारण बनता है
उनकी सार्वभौमिक बुद्धि के अनुसार अलग-अलग लेकिन नियमित गतियाँ।
गुरुत्वाकर्षण उत्पन्न करने के लिए, उन्होंने बनाया है
सूर्य का अपनी धुरी पर घूमना इसका स्पष्ट कारण है।
इस प्रकार विश्राम स्थल का अर्थ है कि "सूर्य गति करता है
आदेश के लिए निर्धारित स्थान पर और
अपनी स्वयं की (सौर) प्रणाली की स्थिरता।”

ईश्वरीय नियमों की तरह, गति से गर्मी उत्पन्न होती है,
ऊष्मा से बल उत्पन्न होता है, और बल से गुरुत्वाकर्षण उत्पन्न होता है।
सूर्य ईश्वरीय प्रभुत्व का नियम है। कुरान के एक अक्षर से ज्ञान के ऐसे उदाहरण
को समझने पर, बुद्धिमान विद्वान घोषणा करते हैं: "सभी प्रशंसाएँ ईश्वर की हैं।"

ईश्वर के प्रति समर्पित रहो। सच्ची बुद्धि कुरान में पाई जाती है।
मानवीय दर्शन का लगभग कोई मूल्य नहीं है।”

इस कविता के कवियों के मन में निम्नलिखित विचार आते हैं:
और स्थिरता का उल्लेख किया गया: "सूर्य एक प्रकाश-विभेदक है-

यह एक गतिशील वृक्ष है और ग्रह इसके गतिशील फल हैं।
लेकिन पेड़ों के विपरीत, सूरज को हिलाया जाता है ताकि फल न गिरें। अगर इसे हिलाया न जाए, तो वे गिर जाएंगे और बिखर जाएंगे।" वे सूर्य को भगवान के नाम का जाप करने वाले एक मंडली के नेता के रूप में भी कल्पना कर सकते हैं, जो मंडली के केंद्र में आनंदपूर्वक पाठ करता है और दूसरों को सुनाने का नेतृत्व करता है। कहीं और, मैंने इसका अर्थ इस प्रकार व्यक्त किया है:

सूर्य एक फल देने वाला वृक्ष है; इसे हिलाया जाता है
ताकि यह
यात्रा करते हुए फल गिरते नहीं।
यदि यह विश्राम कर ले, और इसे और न हिलाया
जाए, तो आकर्षण समाप्त हो जाएगा, और जो लोग इसकी ओर
आकर्षित होंगे वे अंतरिक्ष में रोते हुए चले जाएंगे।

• सूरत अल-बकरा से:

वही लोग सफल होंगे। (2:5)

यह सामान्य आयत यह निर्दिष्ट नहीं करती कि वे कैसे समृद्ध होंगे। इसलिए प्रत्येक व्यक्ति इसमें वह पा सकता है जो वह चाहता है। इसका अर्थ संक्षिप्त है ताकि यह व्यापक हो सके। लोग आग से बचना चाहते हैं, स्वर्ग में जाना चाहते हैं, या शाश्वत सुख प्राप्त करना चाहते हैं। अन्य लोग ईश्वर की कृपा या ईश्वर के दर्शन की तलाश करते हैं। कई जगहों पर, कुरान न तो अर्थ को सीमित करता है और न ही स्पष्ट करता है, क्योंकि यह कुछ बातों को अनकहा छोड़कर कई अर्थ व्यक्त कर सकता है।

यह न बताते हुए कि वे किस तरह से समृद्ध होंगे, इसका अर्थ है: "ऐ मुसलमानों, शुभ समाचार! ऐ ईश्वर से डरने वाले, तुम नरक से बच जाओगे। ऐ धर्मी, तुम स्वर्ग में प्रवेश करोगे। ऐ ईश्वर के ज्ञान वाले, तुम ईश्वर की प्रसन्नता प्राप्त करोगे।

हे ईश्वर के प्रेमी, तुम्हें दर्शन का पुरस्कार मिलेगा
भगवान की।"

• सूरा मुहम्मद से:

> जान लो कि अल्लाह के सिवा कोई पूज्य-प्रभु नहीं और अपनी ग़लतियों के लिए क्षमा माँगो। (47:19)

इस श्लोक के इतने सारे पहलू और स्तर हैं कि
सभी संत स्वयं को इसकी आवश्यकता समझते हैं और

इससे उन्हें एक नया अर्थ और आध्यात्मिक पोषण मिलता है जो उनके लिए उपयुक्त है। ऐसा इसलिए है क्योंकि
"ईश्वर" दिव्य सत्ता का सर्वव्यापी स्वरूप है
नाम, और इस प्रकार इसमें कई पुष्टियां शामिल हैं
दिव्य एकता के दिव्य नामों की संख्या के रूप में:
उसके सिवा कोई अन्नदाता नहीं, उसके सिवा कोई रचयिता नहीं,
उसके सिवा कोई दयालु नहीं, इत्यादि।

मूसा की कहानी के हज़ारों फ़ायदे हैं
और कई उद्देश्यों को पूरा करता है, जैसे शांत करना और
पैगम्बर को सांत्वना देना, अविश्वासियों को धमकाना, पाखंडियों की निंदा करना और यहूदियों को धिक्कारना। इस प्रकार
इसे विभिन्न सुरों में अलग-अलग बातों पर जोर देने के लिए दोहराया गया है

यद्यपि सभी उद्देश्य प्रत्येक स्थान पर प्रासंगिक हैं, लेकिन केवल एक ही मुख्य उद्देश्य है।

प्रश्न: आप कैसे जानते हैं कि कुरान में वे सभी अर्थ निहित हैं और उनका अभिप्राय क्या है?

उत्तर: चूँकि कुरान एक शाश्वत प्रवचन है जो सभी स्तरों और समयों पर मानवता से बात करता है और उसे शिक्षा देता है, इसलिए इसमें उन सभी अर्थों को समाहित किया गया है, उनका इरादा है और उनका संकेत दिया गया है। अपने इशारत अल-इजाज़ में, मैं अरबी व्याकरण के नियमों के साथ-साथ बयानबाजी, शब्दार्थ और वाक्पटुता के सिद्धांतों का उपयोग करता हूँ, ताकि यह साबित हो सके कि कुरान के शब्दों में विभिन्न अर्थ शामिल हैं और उनका इरादा है। मुस्लिम न्यायविदों की सहमति और व्याख्याओं, कुरान के व्याख्याकारों और धार्मिक पद्धति के विद्वानों के अनुसार, कुरान से समझे गए सभी पहलुओं और अर्थों को इसके अर्थों में माना जा सकता है यदि वे अरबी के व्याकरण के नियमों, इस्लाम के सिद्धांतों और बयानबाजी, शब्दार्थ और वाक्पटुता के विज्ञानों के अनुरूप हों।

कुरान ने प्रत्येक अर्थ के लिए उसकी डिग्री के अनुसार एक संकेत, चाहे वह शाब्दिक हो या संकेतात्मक, निर्धारित किया है।
यदि संकेतात्मक है, तो पिछले या अगले संदर्भ से कोई अन्य संकेत है, या अर्थ को इंगित करने के लिए कोई अन्य आयत है। हज़ारों कुरानिक टिप्पणियाँ इसके शब्दों की असाधारण व्यापकता को साबित करती हैं। इच्छुक पाठक इसका संदर्भ ले सकते हैं

अधिक विस्तृत (फिर भी आंशिक) चर्चा के लिए कृपया मेरी इशारत अल-इजाज़ पर जाएँ ।

दूसरी झलक: यह कुरान के असाधारण व्यापक अर्थ से संबंधित है। इसके अलावा, कुरान ने अपने अर्थ के भण्डार से न्यायविदों को स्रोत प्रदान करने, ईश्वर के ज्ञान की खोज करने वालों को प्रकाश देने, ईश्वर तक पहुँचने की कोशिश करने वालों के मार्ग, सिद्ध मनुष्यों के मार्ग और सत्य की खोज करने वाले विद्वानों के विद्यालयों को हमेशा मार्गदर्शन दिया है और उनके मार्ग को प्रकाशित किया है। इस पर सभी सहमत हैं।

तीसरी झलक: यह कुरान में निहित ज्ञान की असाधारण व्यापकता से संबंधित है। न केवल इसका विशाल ज्ञान शरिया, सत्य (हकीका) और धार्मिक आदेशों (तारीका) से संबंधित अनगिनत विज्ञानों का स्रोत है, बल्कि कुरान में आकस्मिकताओं के क्षेत्र (भौतिक दुनिया) का सच्चा ज्ञान और वैज्ञानिक ज्ञान, आवश्यकता के क्षेत्र (ईश्वरीय क्षेत्र) का सच्चा ज्ञान और परलोक का गूढ़ ज्ञान भी शामिल है। उदाहरण के लिए, पिछले शब्दों पर विचार करें, हालाँकि वे कुरान के ज्ञान के महासागर से केवल 25 बूँदें हैं। उन शब्दों में कोई भी त्रुटि मेरी दोषपूर्ण समझ से आती है।

चौथी झलक: यह कुरान की असाधारण रूप से व्यापक विषय-वस्तु से संबंधित है। यह मानवता और उसके कर्तव्यों, ब्रह्मांड और उसके निर्माता, आकाश और पृथ्वी, इस दुनिया और अगली दुनिया, तथा भूत, भविष्य और अनंत काल से संबंधित है। यह हमारे निर्माण और जीवन से संबंधित सभी आवश्यक मामलों की व्याख्या करता है, खाने और सोने के सही तरीकों से लेकर ईश्वरीय आदेश और इच्छा के मुद्दों तक, 6 दिनों में ब्रह्मांड के निर्माण से लेकर ऐसी शपथों में उल्लिखित हवाओं के कार्यों तक: (हवाओं) द्वारा भेजे गए (77:1) और (हवाओं) द्वारा जो बिखराते हैं (51:1)।

इसमें कई अन्य विषयों पर चर्चा की गई है: हमारे हृदय और स्वतंत्र इच्छा में परमेश्वर के हस्तक्षेप से: (परमेश्वर) एक व्यक्ति और उसके हृदय के बीच खड़ा है (8:24), और

परन्तु तुम नहीं कर पाओगे जब तक कि अल्लाह न चाहे (76:30) आकाश को उसकी मुट्ठी में ले लिया जाएगा: आकाश उसके "दाहिने हाथ" में लपेटा जाएगा (39:67); धरती के फूलों, अंगूरों और खजूरों से: हमने उसमें खजूर और लताओं के बाग़ बनाए (36:34) उस आश्चर्यजनक घटना तक जिसका वर्णन इस प्रकार है: जब धरती एक शक्तिशाली झटके से हिल जाएगी (99:1); सृष्टि के दौरान स्वर्ग की स्थिति से: फिर उसने अपने डिजाइन में आकाश को समझा जब वह धुआं था (41:11) उसके फटने और तारों के अंतहीन अंतरिक्ष में बिखर जाने तक; परीक्षण और परीक्षा के लिए इस दुनिया के निर्माण से लेकर इसके विनाश तक-

कब्र से लेकर, दूसरी दुनिया के प्रथम स्टेशन, पुनरुत्थान, पुल और स्वर्ग में अनन्त खुशी तक।

इसमें अतीत की भी चर्चा की गई है, जिसमें शामिल हैं:

> जबकि तुम्हारे रब ने आदम की सन्तान में से उनकी संतान निकाली, फिर उनसे स्वयं गवाही कराई कि क्या मैं तुम्हारा रब नहीं हूँ?
>
> उन्होंने कहा, "हाँ, हम इसकी गवाही देते हैं।" ऐसा न हो कि तुम क़ियामत के दिन कहने लगो कि "हमें तो इसकी कोई ख़बर ही नहीं थी।" (7:172)

आदम के शरीर की रचना और उसके दो बेटों के बीच संघर्ष, जल प्रलय, फिरौन के लोगों का डूबना और पैगम्बरों की जीवन-कथाएँ, से लेकर प्रलय के दिन क्या होगा: जब कुछ चेहरे चमक रहे होंगे, अपने प्रभु की ओर देख रहे होंगे (75:22)।

कुरान इन सभी आवश्यक और महत्वपूर्ण मामलों को एक सर्वशक्तिमान महान ईश्वर के अनुरूप समझाता है, जो ब्रह्मांड का प्रशासन एक महल की तरह करता है, दुनिया और आख़िरत को दो कमरों की तरह खोलता और बंद करता है, धरती को एक बगीचे की तरह और आकाश को एक दीपक से सजे गुंबद की तरह नियंत्रित करता है, और जिसकी दृष्टि में अतीत और भविष्य दिन और रात या दो पन्नों की तरह हैं, और अनंत काल वर्तमान समय के एक बिंदु की तरह है।

जैसे एक बिल्डर अपने दो मकानों का वर्णन कर रहा हो
कुरान में यह भी बताया गया है कि वह क्या करेगा और क्या नहीं।
अगर कोई इसे व्यक्त कर सकता है - एक सूची या प्रोग्राम लिखा गया
जिसने इसे बनाया है उसके लिए उपयुक्त शैली में
ब्रह्मांड का प्रशासन करता है। कुरान कहता है कि यह
यह ब्रह्मांड के निर्माता का वचन है। इसमें बनावट, दिखावा या अनावश्यक बातों का कोई
निशान नहीं है
इसमें कोई परेशानी नहीं है, नकल, छल या धोखे का कोई तरीक़ा नहीं है। यह किसी दूसरे के नाम पर बोलने का दिखावा नहीं करता।
जैसे दिन का प्रकाश सूर्य से आने की घोषणा करता है,
इसकी बिल्कुल वास्तविक, शुद्ध, स्पष्ट, गंभीर, मौलिक और शानदार शैली में, यह घोषणा
करता है: "मैं शब्द हूँ
ब्रह्मांड के निर्माता की।"

क्या कुरान किसी और का हो सकता है?
निर्माता, वरदानों का दाता, जिसने
इस दुनिया को सबसे मूल और
कला के अमूल्य कार्य और इसे सबसे अधिक से भर दिया
सुखद उपहार? यह पूरे क्षेत्र में गूंजता है
जयजयकार और प्रशंसा के नारे के साथ दुनिया भर में
प्रशंसा और धन्यवाद की प्रार्थनाएँ, और बनाया है
पृथ्वी को एक ऐसे घर में बदलें जहाँ भगवान के नाम का जाप किया जाता है-
जहाँ भगवान की पूजा की जाती है और उनके कार्यों का प्रदर्शन किया जाता है
कला का अध्ययन आश्चर्य से किया जाता है। प्रकाश कहाँ हो सकता है
दुनिया को रोशन करने वाली रोशनी कहाँ से आ रही है, अगर नहीं
सूरज? कुरान किसकी रोशनी हो सकती है, इसके अलावा

अनन्त सूर्य, जिसने ब्रह्मांड के अर्थ को उजागर और प्रकाशित किया है? कौन हिम्मत कर सकता है

क्या आप इसके जैसा कुछ बना सकते हैं?

यह अकल्पनीय है कि जिस कलाकार ने अपनी कला से इस संसार को सजाया है,

मानवता को संबोधित नहीं करता, जो उस कला की सराहना और प्रशंसा करता है। चूँकि वह जानता है और बनाता है, इसलिए वह करेगा

बोलो। चूँकि वह बोलता है, वह परमेश्वर के द्वारा ही बोलेगा।

कुरान। ईश्वर, जो सारे साम्राज्य का स्वामी है, वह कैसे ऐसा कर सकता है?

जो फूल के निर्माण के प्रति उदासीन नहीं है, वह हो

उनके सम्पूर्ण हृदय में गूंजते एक शब्द के प्रति उदासीन

क्या वह दूसरों को अपने अधीन करने की अनुमति दे सकता था?

क्या यह व्यर्थ और शून्य हो जाएगा?

पाँचवीं किरण: इसमें कुरान की व्यापक शैली और संक्षिप्तता से संबंधित पाँच किरणें शामिल हैं।

प्रथम किरण: कुरान की शैली इतनी अद्भुत और व्यापक है कि एक सूरा में इतनी सारी बातें समाहित हो सकती हैं।

कुरान का पूरा सागर जिसमें ब्रह्मांड

निहित है। एक आयत से यह समझा जा सकता है कि सूरा का

खजाना, जैसे कि अधिकांश छंद छोटे सूरा हैं और अधिकांश

सूरा छोटे कुरान हैं।

यह चमत्कारी संक्षिप्तता एक महान उपहार है

मार्गदर्शन और सहजता के संबंध में ईश्वरीय कृपा, हालांकि हर किसी को हमेशा इसकी आवश्यकता होती है

कुरान, सभी लोग इसे नहीं पढ़ते हैं। इसलिए वे नहीं हैं
इसके आशीर्वाद से वंचित, प्रत्येक सूरा एक छोटे कुरान के लिए और प्रत्येक
लंबी कविता एक छोटे कुरान के लिए स्थानापन्न हो सकती है
छोटा सूरा। इसके अलावा, आध्यात्मिक खोज के सभी लोग और
विद्वान इस बात पर सहमत हैं कि कुरान में निहित है
सूरत अल-फातिहा में , जो स्वयं में निहित है
बसमाला (ईश्वर के नाम पर, दयालु,
दयालु)

दूसरी किरण: कुरान में संदर्भ हैं
मानवता के लिए आवश्यक सभी ज्ञान के लिए।30 इसके अलावा,
यह लोगों को वह सब कुछ देता है जिसकी उन्हें आवश्यकता होती है, ताकि :
कुरान से जो चाहो, जिस किसी के लिए चाहो
आपकी आवश्यकता को व्यापक रूप से प्रसारित किया गया है
विद्वानों द्वारा इसकी पुष्टि की गई है। इसकी आयतें इतनी व्यापक हैं
कि किसी भी बीमारी का इलाज और उत्तर
कोई भी ज़रूरत उसमें पूरी हो सकती है। ऐसा होना ही चाहिए,
उस पुस्तक के लिए जो सभी सिद्ध लोगों का पूर्ण मार्गदर्शक है जो प्रत्येक
दिन जीवन में आगे बढ़ते हैं।
परमेश्वर का मार्ग उसी गुणवत्ता का होना चाहिए।

३० जैसे कि सच्चे ज्ञान की व्याख्या, पहलू और विविधताएँ, आदेश और निषेध, वादे और धमकियाँ,
प्रोत्साहन और निवारण, संयम और मार्गदर्शन, कहानियाँ और दृष्टांत, ईश्वरीय ज्ञान और आदेश, प्राकृतिक विज्ञान, और हमारे व्यक्तिगत जीवन के नियम और शर्तें,

सामाजिक, आध्यात्मिक और पारलौकिक जीवन।

तीसरी किरण: कुरान की अभिव्यक्तियाँ संक्षिप्त लेकिन सर्वसमावेशी हैं। कभी-कभी इसमें उल्लेख किया गया है

एक लंबी श्रृंखला के पहले और अंतिम पदों को इस तरह से यह सब दिखाता है; अन्य बार यह एक शब्द में शामिल होता है कई स्पष्ट, अंतर्निहित, सांकेतिक या विचारोत्तेजक किसी कारण का प्रमाण.

• सूरत अल-रम से:

> और उसकी निशानियों में से है आकाशों और पृथ्वी की रचना।
> पृथ्वी और आपकी भाषाओं और रंगों की विविधता।
> (30:22)

ब्रह्माण्ड की दो भागों में रचना का उल्लेख करते हुए- आकाश और पृथ्वी और विभिन्न प्राणियों की रचना

मानव भाषाओं और जातियों की विविधता - यह सुझाव देता है सभी सजीव और निर्जीव प्राणियों की रचना और विविधता ईश्वरीय एकता के संकेत हैं। यह सर्वज्ञ निर्माता के अस्तित्व और एकता की भी गवाही देता है, जिसने सबसे पहले आकाश और पृथ्वी को बनाया और फिर

इसके बाद अन्य लिंक दिए गए - सजाने से लेकर तारों से भरा आकाश देने से लेकर पृथ्वी को सजीव प्राणियों से आबाद करने तक; सूर्य, पृथ्वी और चंद्रमा देने से लेकर नियमित कक्षाएँ, साथ ही दिन और रात का परिवर्तन, भाषण को अलग और व्यक्तिगत बनाने के लिए अत्यधिक गुणन के मामलों में रंग.

चूँकि विशाल आकाश और पृथ्वी का निर्माण कुछ कलात्मकता और उद्देश्यों को प्रदर्शित करता है, इसलिए कलात्मकता और एक निर्माता का उद्देश्य जिसने ब्रह्मांड की स्थापना की आकाश और पृथ्वी उसकी सृष्टि के अन्य भागों में और भी अधिक स्पष्ट होंगे। इस प्रकार, जो छिपा हुआ है उसे प्रकट करके और जो मानवीय है उसे छिपाकर, यह श्लोक अत्यंत सुंदर संक्षिप्तता प्रदर्शित करता है।

इसके अलावा, अन्य सभी चीजों की तुलना में अधिक संभावना है अस्तित्व में, विभेदीकरण की अद्भुत उद्देश्यपूर्ण प्रणाली स्पष्ट रूप से एक सुविचारित क्रम को प्रकट करती है। यद्यपि कोई यह मान सकता है कि यह व्यवस्था संयोग से निर्धारित हुई है, लेकिन सृष्टि की कड़ियाँ उनके अस्तित्व की ओर संकेत करती हैं। डिजाइनर.

सबूत छह बार से शुरू होता है: उसके आपके शाम में परमेश्वर की महिमा हो घंटे और अपने सुबह के घंटे में (30:17), उसकी है स्वर्ग और पृथ्वी में सर्वोच्च तुलना; वह प्रभुत्वशाली, तत्वदर्शी है (30:27), यह एक क्रम है रत्नों, रोशनी, चमत्कारों और चमत्कारी संक्षिप्तता का खजाना। मैं उन खजानों में मौजूद हीरे दिखाना चाहता हूँ, लेकिन ऐसा करना स्थगित करना होगा।

• सूरा यूसुफ़ से:

> तब जो छुड़ाया गया था, उसने कुछ समय बाद स्मरण करके कहा, "मैं स्वयं तुम्हें इसका अन्त बताऊंगा।

हे यूसुफ, हे सच्चे मनुष्य... (12:45-46)

कथा में कई घटनाओं को छोड़ दिया गया है

हे सच्चे मनुष्य, मुझे और यूसुफ को भेज दे : सो मुझे यूसुफ के पास भेज, कि मैं उस से स्वप्न का फल पूछूं। उन्होंने उसे भेज दिया।

वह जेल में आया और कहा: [जोसेफ ...] इस तरह से कुरान स्पष्टता के किसी भी नुकसान के बिना संक्षेप में और बिंदु पर वर्णन करता है।

• सूरह या सिन से:

जिसने तुम्हारे लिए हरे वृक्ष से आग बनाई। (36:80)

और, विद्रोही मानवता द्वारा पुनरुत्थान को नकारने के सामने:

जब हड्डियाँ सड़ चुकी हों, तो उन्हें कौन जीवित करेगा? (36:78)

कुरान में कहा गया है: "जिसने उन्हें पैदा किया है, वही उन्हें जिलाएगा। जिसने बनाया है, वह सभी चीज़ों के सभी पहलुओं को जानता है। इसके अलावा, जिसने तुम्हारे लिए हरे पेड़ से आग बनाई है, वह सड़ी हुई हड्डियों को भी जिला सकता है।" आयत का यह अंश उद्धृत है-

यह पुस्तक पुनरुत्थान से संबंधित है (और इसे प्रमाणित भी करती है)
अलग-अलग दृष्टिकोण.

सबसे पहले, यह हमें ईश्वरीय कृपा की याद दिलाता है।
कुरान में इनका विवरण अन्यत्र दिया गया है, यह केवल संकेत करता है
उन्हें यहाँ रखें। इसका असल में मतलब है: "आप बच नहीं सकते
या उससे छिप जाओ जिसने तुम्हारे लिए आग बनाई है
पेड़ों की देखभाल, उन्हें आपको फल देने का कारण बनता है, प्रदान करता है
आपने अनाज और पौधों के साथ, पृथ्वी को आपके सभी प्रावधानों को शामिल करने
वाला एक प्यारा पालना बनाया है, और
दुनिया एक खूबसूरत महल है जिसमें आप जो कुछ भी रखते हैं
आवश्यकता है। आपको व्यर्थ और बिना उद्देश्य के नहीं बनाया गया है, और इसलिए
आप स्वतंत्र नहीं हैं या सोने में सक्षम नहीं हैं
कब्र में हमेशा के लिए बिना जगाये पड़े रहना।"

दूसरा, इस बात के प्रमाण की ओर इशारा करते हुए कि
पुनरुत्थान, यह हरे पेड़ का उपयोग यह सुझाव देने के लिए करता है: "हे
तुम जो पुनरुत्थान से इनकार करते हो, पेड़ों को देखो।
क्या तुम उस एक की शक्ति को नकार सकते हो जो वसंत में असंख्य पेड़ों को जीवित
कर देता है जो सर्दियों में मर गए और कठोर हो गए? उन्हें खिलने के लिए प्रेरित
करके, आओ
पत्ते में बदलना और फल उत्पन्न करना, वह तीन प्रकार का प्रदर्शन करता है
हर पेड़ पर पुनरुत्थान के उदाहरण हैं।" यह इशारा करता है
दूसरे प्रमाण के लिए और इसका अर्थ है: "आप कैसे मान सकते हैं
यह असंभव है कि वह जो कठोर, अंधकारमय और अग्नि से अग्नि जैसा परिष्कृत
और प्रकाश देने वाला पदार्थ बनाता है
भारी पेड़? आप कैसे कह सकते हैं कि वह नहीं दे सकता

अग्नि जैसा जीवन और प्रकाश जैसी चेतना
लकड़ी जैसी हड्डियाँ?"

यह एक और सबूत बताता है: "हर चीज़
ब्रह्माण्ड नियमों के अधीन है और उन पर निर्भर है
वह जो खानाबदोशों के दो हाथ रगड़ने पर आग पैदा करता है
हरे पेड़ की शाखाएँ आपस में जुड़ती हैं और विरोधी प्रकृतियों में सामंजस्य स्थापित कर नई चीज़ें पैदा करती हैं। आप कैसे कर सकते हैं
उसका विरोध करो और पुनरुत्थान को असंभव मानो?" इसके अलावा, यह प्रसिद्ध
पेड़ का संकेत देता है
जिसके निकट पैगम्बर मूसा को प्रथम बार
रहस्योद्घाटन और पता चलता है कि मुहम्मद का कारण
और मूसा के विचार एक जैसे हैं। इस प्रकार यह अप्रत्यक्ष रूप से सभी पैगम्बरों की समान
आवश्यक बिंदुओं पर सहमति को संदर्भित करता है और इस कथन में एक और अर्थ
जोड़ता है।
उस शब्द के अर्थ का संक्षिप्त खजाना।

चौथी किरण: कुरान की संक्षिप्तता इस प्रकार है
एक घड़े में सागर भरकर भेंट चढ़ाना। दया और
सामान्य मानव मन के लिए, यह दर्शाता है
सबसे व्यापक और सार्वभौमिक सिद्धांत और
किसी विशेष अवसर पर किसी विशेष घटना के माध्यम से सामान्य कानून।
निम्नलिखित उदाहरण केवल
ऐसे कई संक्षिप्त उदाहरणों में से कुछ:

• प्रथम अध्याय के तीन श्लोकों की व्याख्या
बीसवें शब्द का स्टेशन.

कई बातें सुझाई गई हैं। मानवता को सभी चीज़ों के नाम सिखाने का मतलब है कि मनुष्य और
महिलाओं को सभी ज्ञान और विज्ञान प्राप्त करने की क्षमता दी गई थी; स्वर्गदूतों का सजदा
आदम और शैतान का ऐसा करने से इनकार करना यह दर्शाता है कि अधिकांश जीवों को हमारे नियंत्रण में रखा गया है, जबकि
हानिकारक प्राणी (जैसे, शैतान और साँप) नहीं करेंगे
इतना विनम्र बनो। इस्राएलियों द्वारा गाय का वध करने का उल्लेख करने का अर्थ है कि गाय की पूजा (उधार ली गई)
मिस्र से आया और इस्राएलियों की आराधना में दिखाया गया
सामरी ने उनके लिए जो बछड़ा बनाया था, उसके विषय में: 20:85-88) को मूसा के चाकू से नष्ट कर दिया गया था।
कुछ चट्टानों से नदियाँ फूटती हैं, तो कुछ टूट जाती हैं
ताकि उनसे पानी निकले, और फिर भी अन्य लोग ईश्वर के भय से नीचे गिरें (2:74) स्पष्ट रूप से बताता है कि उपसतह चट्टान की परतें भूमिगत होने की अनुमति देती हैं
पानी की नसों को उनके माध्यम से गुजरने दें और वे
पृथ्वी की उत्पत्ति में भूमिका थी।

• मूसा की कहानी का प्रत्येक वाक्यांश और वाक्य इंगित करता है और एक सार्वभौमिक सिद्धांत को व्यक्त करता है।

उदाहरण के लिए: हामान, मेरे लिए एक मीनार बनाओ (४०:३६), कुरान का अर्थ है: “फिरौन ने अपने
मंत्री हामान: 'मेरे लिए एक ऊंची मीनार बनाओ। मैं
आकाश का निरीक्षण करें और यह जानने का प्रयास करें

स्वर्गीय घटनाएँ, चाहे कोई ईश्वर हो या न हो
मूसा का दावा है।'”

इस विशेष आयोजन और टावर के माध्यम से ,
कुरान में फिरौन की एक अनोखी प्रथा का उल्लेख है:
प्रकृति के उपासक जो विशाल रेगिस्तान में रहते थे
पहाड़ों के बिना, भगवान में अविश्वास के कारण जादू-टोने और पुनर्जन्म में
विश्वास करने वाले, वे पहाड़ों की गहरी इच्छा रखते थे और दावा करते थे

दैवीय प्रभुत्व के समान पूर्ण संप्रभुता
लोगों पर। उनके नाम और प्रसिद्धि को अमर बनाने के लिए,
उन्होंने अपने ममीकृत शरीरों के लिए पर्वत जैसे पिरामिड बनाए।

• सूरा युनुस से:

अतः आज हम तुम्हें तुम्हारे शरीर सहित छुड़ा लेंगे। (10:92)

फिरौन के डूबने का उल्लेख करके, कुरान
सुझाव देते हैं: “चूँकि सभी फ़राओ पुनर्जन्म में विश्वास करते थे, इसलिए
उन्होंने अपने शरीर को अमर बनाने के लिए ममी बना दिया
इस प्रकार उनके शरीर आज तक जीवित हैं।

अब। हालाँकि ममी नहीं बनाया गया है, लेकिन शव
फिरौन जो मूसा का पीछा करते हुए डूब गया
उसकी सेना नील नदी के किनारे गिरी हुई पाई गई
उन्नीसवीं सदी के अंतिम वर्ष। यह

यह कुरान का एक स्पष्ट चमत्कार है, जिसकी भविष्यवाणी सदियों पहले उक्त आयत में की गई थी।

• सूरा युनुस से:

> फ़िरऔन की क़ौम जो तुमपर बुरी यातनाएँ लाती थी, तुम्हारे बेटों को क़त्ल करती थी और तुम्हारी औरतों को बदनाम करती थी। (2:49)

इस आयत में फिरौन द्वारा इस्राएलियों के साथ की गई बुराइयों और क्रूरताओं का ज़िक्र है। इसमें कई जगहों और समयों पर यहूदियों की सामूहिक हत्या और इतिहास में कुछ यहूदी महिलाओं द्वारा निभाई गई कुख्यात भूमिका का भी ज़िक्र है:

> तुम उन्हें जीवन के लिए सबसे अधिक उत्सुक पाओगे। (2:96)

> तुम उनमें से बहुतों को पाप और शत्रुता में पड़े हुए देखते हो और वे किस प्रकार हराम चीज़ों का सेवन करते हैं, और जो कुछ वे करते रहे हैं वह बहुत बुरा है। (5:62)

> वे धरती पर बिगाड़ पैदा करने के लिए जल्दी-जल्दी घूमते हैं, अल्लाह बिगाड़ पैदा करनेवालों को पसन्द नहीं करता। (5:64)

> हमने किताब में बनी इसराईल के लिए आदेश दे दिया था कि तुम धरती पर दो बार बिगाड़ पैदा करोगे। (17:4)

> धरती पर उत्पात मचाकर उपद्रव न करो। (2:60)

ये श्लोक मानवता के सामाजिक जीवन के विरुद्ध दो सामान्य विनाशकारी यहूदी षड्यंत्रों को व्यक्त करते हैं। यहूदियों ने मिश्रित सूदखोरी का उपयोग किया है, जिसने मानव सामाजिक जीवन को हिलाकर रख दिया है। पूंजी के विरुद्ध श्रम को खड़ा करके, उन्होंने गरीबों को अमीरों के विरुद्ध संघर्ष करने के लिए प्रेरित किया है और बैंकों के निर्माण और अवैध तरीकों से धन संचय का कारण बने हैं। इसके अलावा, वे आम तौर पर वही राष्ट्र रहे हैं, जिन्होंने अपने साथ अन्याय करने वाले या पराजित करने वाले राज्यों या सरकारों से बदला लेने के लिए, राजद्रोही समितियों में प्रवेश किया है या क्रांतियों में भाग लिया है।

• सूरह अल-जुमुआ से:

> हे यहूदियों, यदि तुम कहते हो कि हम परमेश्वर के मित्र हैं, और अन्य लोगों से अलग हैं, तो यदि तुम सच कहते हो, तो मृत्यु की कामना करो। परन्तु वे कभी भी मृत्यु की कामना नहीं करेंगे... (62:6-7)

मदीना के यहूदी समुदाय के एक दावे का खंडन करने के लिए प्रकट की गई इन आयतों में कहा गया है कि यहूदी, जो जीवन के प्रति अपने प्रेम और मृत्यु के भय के लिए प्रसिद्ध हैं, अंतिम दिन तक इन गुणों को नहीं छोड़ेंगे।

अपमान और दुख उन पर थोपे गए (2:61) उनके सामान्य भाग्य को बताता है। उनके स्वभाव और भाग्य के ऐसे सामान्य और भयानक पहलुओं के कारण,

कुरान उनके साथ कठोर व्यवहार करता है और उनकी आलोचना करता है कठोरता से। इन अन्य पहलुओं के साथ तुलना करें मूसा और उनके बच्चों का कुरानिक विवरण इसराइल। चमत्कारों की अनेक झलकियाँ देखिए कुरान के सरल शब्दों और विशेष बातों के पीछे विषय, चमत्कारिक संक्षिप्तता की चमक की तरह इस किरण में वर्णित है।

पाँचवाँ भाग: यह कुरान के असाधारण रूप से व्यापक उद्देश्य, विषय-वस्तु, अर्थ, शैली, सौंदर्य और सूक्ष्मता से संबंधित है। जब ध्यानपूर्वक अध्ययन किया जाता है, तो इसके सूरा और आयतें, विशेष रूप से पूर्व की

शुरुआती खंड और बाद की शुरुआत और अंत में, स्पष्ट रूप से पता चलता है कि इसमें भ्रम का कोई निशान नहीं है। और यह इस तथ्य के बावजूद है कि इसमें सभी शामिल हैं वाक्पटुता के प्रकार, सभी प्रकार की अच्छी वाणी, सभी उन्नत शैली की श्रेणियाँ, अच्छे के सभी उदाहरण नैतिकता और सद्गुण, प्राकृतिक विज्ञान के सभी सिद्धांत, ईश्वर के ज्ञान के सभी सूचकांक, सभी लाभकारी नियम व्यक्तिगत और सामाजिक जीवन का, और सभी ज्ञानवर्धक सृष्टि के उत्कृष्ट कारणों और उद्देश्यों के नियम।

सचमुच, इतना उत्तम और व्यापक कार्य यह केवल सर्वशक्तिमान का ही कार्य हो सकता है जो सब कुछ चमत्कारी क्रम में। यह केवल हो सकता है चमत्कारों के स्रोत का असाधारण कार्य जैसे कुरान, जो सत्य को देखता और दिखाता है, पारिवारिक है-

वह अदृश्य की ओर मार्गदर्शन प्रदान करता है।
इस तरह के काम की मर्मस्पर्शी अभिव्यक्तियाँ
चीज़ों के ऊपर से सामान्यता का पर्दा हटा दें और
घटनाएँ, जो मिश्रित अज्ञानता का कारण बनती हैं जो अविश्वास की ओर ले जाती हैं (उदाहरण के लिए, नास्तिकता और भौतिकवाद),
और उस पर्दे के पीछे की असाधारणता को दर्शाता है।

केवल इसकी हीरे जैसी प्रमाण तलवार ही नष्ट कर सकती है
प्रकृतिवाद (भ्रांति का स्रोत), हटाएँ
असावधानी की मोटी परतें अपनी गड़गड़ाहट जैसी
रोता है, और अस्तित्व के छिपे अर्थों को उजागर करता है और
सृष्टि के रहस्य, जो सभी दार्शनिकों और वैज्ञानिकों की क्षमता से परे हैं।

अन्य पुस्तकों के विपरीत, कुरान धीरे-धीरे सामने आने वाले तर्कों की श्रृंखला का अनुसरण नहीं करता है।
कुछ परस्पर संबंधित विषय। बल्कि, इसके छंद देते हैं
यह धारणा कि प्रत्येक पद्य या प्रत्येक समूह
एक समय में छंदों को अलग-अलग भेजा जाता था क्योंकि कोड
एक बहुत ही गंभीर और महत्वपूर्ण संचार।
ब्रह्मांड के रचयिता के अलावा और कौन कुरान के माध्यम से ब्रह्मांड और उसके रचयिता से संबंधित संवाद कायम कर सकता है?

राजसी सृष्टिकर्ता बोलें और ब्रह्मांड का कारण बनें
इतना सच बोलना? दरअसल, ब्रह्मांड का मालिक
बोलता है और ब्रह्मांड को सबसे गंभीर बात करने पर मजबूर करता है-

सच्चे और सच्चे ढंग से, और सबसे ऊंचे अंदाज में,
कुरान.

इसमें किसी भी प्रकार की नकल का कोई चिन्ह नहीं मिलता, क्योंकि
कोई नहीं है। असंभव मान लीजिए, कि मुसैलिमा द लायर जैसा कोई
व्यक्ति प्रकट हुआ और सर्वशक्तिमान, सर्व-सम्मोहक और

ब्रह्माण्ड का महान् रचयिता अपनी इच्छानुसार बोले और ब्रह्माण्ड को
उससे बात करने दे, तो ऐसा होगा।
नकल और दिखावे के अनगिनत संकेत हैं। हर
उन लोगों का तरीका जो बड़ा दिखावा करते हैं, यहाँ तक कि
उनकी सबसे नीची स्थिति, उनके ढोंग को दर्शाती है। विचार करें
निम्नलिखित श्लोक, जो इस बात की घोषणा करते हैं
शपथ: उस तारे की कसम जब वह डूब गया, तुम्हारा साथी
न तो भटकता है, न गलती करता है, न ही मनमाने ढंग से बोलता है।
यह और कुछ नहीं, बल्कि प्रकाशितवाक्य है (53:1-4)।

तीसरी किरण

यह कुरान की चमत्कारी भविष्यवाणी से संबंधित है,
साथ ही इसकी ताज़गी और सभी को संबोधित करने की क्षमता
समय और परिस्थिति की परवाह किए बिना समझ के स्तर
इस किरण में तीन चमकें हैं।

प्रथम प्रकाश: यह कुरान से संबंधित है

इसमें भविष्यवाणियां करने की क्षमता है और इसके तीन प्रकाश देने वाले पहलू हैं।

पहला पहलू: कुरान अतीत की खबर देता है।
यद्यपि यह संदेश एक अनपढ़ व्यक्ति द्वारा दिया गया है,

बुद्धिमान कुरान सभी के महत्वपूर्ण अनुभवों को एक गंभीर और शक्तिशाली तरीके से उल्लेख करता है
आदम के समय से लेकर ईसा के युग तक के पैगम्बर
खुशी के साथ-साथ उनके मिशन के मुख्य पहलू। यह जो जानकारी प्रदान करता है वह आमतौर पर मेल खाती है
आम तौर पर सहमत विवरण के साथ
पिछले शास्त्रों में भी कुछ बिंदुओं को सही किया गया है।
जिससे उनके भ्रष्ट रूप असहमत हैं। इस प्रकार
कुरान में सर्वज्ञ दृष्टि है जो अतीत को जानती है
पिछले शास्त्रों से बेहतर है।

अतीत का उसका विवरण तर्कसंगत नहीं है, लेकिन यह पारंपरिक हो सकता है। परंपरा आमतौर पर शिक्षित व्यक्तियों के लिए विशेष होती है, जबकि पैगंबर
अनपढ़ था.31 जबकि पिछली कहानियाँ
पैगम्बरों का उल्लेख मुख्यतः मक्का सूरा में किया गया है।
मक्का में कोई भी उनके बारे में नहीं जानता था।
परंपराएँ आंशिक रूप से सुनी-सुनाई बातों पर आधारित होती हैं और आमतौर पर सत्य और असत्य का मिश्रण होती हैं। लेकिन कुरान
अतीत की घटनाओं के बारे में ऐसे बात करता है जैसे कि उन्हें देख रहा हो।

यह घटनाओं की एक लंबी श्रृंखला का सार निकालता है
और उसी के माध्यम से अपना तर्क प्रस्तुत करता है।
इसलिए इसमें पाए गए अंश, सारांश और संकेत बताते हैं कि जो उन्हें प्रस्तुत करता है

---

[३१] इसके अलावा, कोई भी स्थानीय लोग उसे अतीत के बारे में नहीं बता सके। (ट्र.)

अतीत के सभी आयामों को देखता है। बस एक सारगर्भित सारांश, एक बढ़िया अंश, या एक दमदार उदाहरण के रूप में
किसी विशेषज्ञ के कौशल या विशेषज्ञ ज्ञान को दर्शाता है,
कुरान के मुख्य बिंदु और मुख्य विषय, निम्नलिखित में से चुने गए
कुछ घटनाएँ दिखाती हैं कि उन्हें चुनने वाला
सम्पूर्ण ज्ञान है
और उनका वर्णन असाधारण कुशलता से कर रहे हैं।

दूसरा पहलू: यह कुरान के कई कथनों से संबंधित है
भविष्यवाणियों की श्रेणियाँ, जिनमें से एक विशेष है
संत और आध्यात्मिक अनावरण। उदाहरण के लिए, मुहीय
अल-दीन इब्न अल-अरबी ने कई भविष्यवाणियाँ कीं
सूरत अल-रम। इमाम रब्बानी ने इसके संकेत खोजे
मुक़त्तात (कुछ निश्चित अक्षरों के आरंभ में अलग-अलग अक्षर) में भविष्य की कई घटनाएँ दर्ज होती हैं
सूरा) इसके आंतरिक पहलुओं और गूढ़ अर्थों और सृष्टि के विद्वानों के लिए, कुरान ज्ञान से भरा है।
मैं केवल एक पर ध्यान केन्द्रित करूंगा और संतुष्ट रहूंगा
कुछ उदाहरण देते हुए, बिना विस्तार में जाए
विवरण।

क़ुरआन पैगम्बर से कहता है:

> अतः धैर्य रखो, निश्चय ही अल्लाह का वादा सच्चा है। (30:60)

> यदि ईश्वर ने चाहा तो तुम पवित्र मस्जिद में प्रवेश करोगे।
> सुरक्षा, आपके सिर मुंडे हुए, आपके बाल छोटे कटे हुए,
> डरना नहीं. (48:27)

वही है जिसने अपने रसूल को मार्गदर्शन और सत्य धर्म के साथ भेजा, ताकि उसे उच्चतर स्तर पर ले जाए।
हर धर्म से ऊपर है। (48:28)

रोमनों को निकट भविष्य में पराजित कर दिया गया है
भूमि का हिस्सा; और, उनकी पराजय के बाद, वे
कुछ ही वर्षों में विजेता हो जाएँगे। यह ईश्वर का है
आज्ञा (30:3-4)

तुम देखोगे और वे भी देखेंगे कि तुममें से कौन है?
विक्षिप्त (68: 5-6)

या फिर वे कहते हैं: "वह एक कवि है जिसका हम इंतज़ार करते हैं
कहो: "रुको। मैं इंतज़ार कर रहा हूँ
तुम्हारे साथ।" (52:30-31)

अल्लाह तुम्हें लोगों से बचाएगा। (5:67)

यदि तुम्हें हमारे भेजे हुए वचन में कोई संदेह हो
हमारे बन्दे पर नाज़िल हो, तो ऐसी ही एक सूरा ले आओ और पुकारो
यदि तुम परमेश्वर से अलग होकर अपने गवाहों और सहायकों में से हो,
सत्यनिष्ठ। यदि आप ऐसा नहीं करते हैं - और आप ऐसा कभी नहीं करेंगे -
तो आग से डरो... (2:23-24)

कह दो, "यदि अल्लाह के पास अंतिम निवास केवल तुम्हारा है, और किसी अन्य व्यक्ति का नहीं, तो फिर मृत्यु की कामना करो।
यदि तुम सच बोलो।" लेकिन वे कभी भी इसकी लालसा नहीं करेंगे।
(2:94)

हम उन्हें बाहरी दुनिया में अपनी निशानियाँ दिखाएँगे
और अपने आप में तब तक जब तक यह उनके लिए स्पष्ट न हो जाए कि यह
सत्य. (41:53)

कह दो, "यदि मनुष्य और जिन्न मिलकर इस क़ुरआन के समान कुछ बना लें, तो वे कभी भी ऐसा कुछ नहीं बना सकेंगे, यद्यपि वे एक-दूसरे का समर्थन ही क्यों न करें।" (17:88)

परमेश्वर ऐसे लोगों को लाएगा जिन्हें वह प्यार करता है और जो प्यार करते हैं
वह विश्वासियों के प्रति विनम्र, अविश्वासियों के विरुद्ध शक्तिशाली और गौरवशाली है, जो संघर्ष करते हैं
परमेश्वर के मार्ग पर चलो, किसी की निन्दा से न डरो
निंदक. (5:54)

कह दो, "सारी प्रशंसा अल्लाह के लिए है। वह तुम्हें अपना दर्शन देगा।"
ये निशानियाँ हैं और तुम उन्हें पहचान लोगे। (27:93)

कह दो, "वह अत्यन्त दयावान है। हम उसपर ईमान लाए।"
और हम अपना पूरा भरोसा उसी पर रखते हैं। निश्चय ही, आप
शीघ्र ही जान लोगे कि कौन खुली गुमराही में पड़ा है। (67:29)

अल्लाह ने तुममें से जो लोग ईमान लाए हैं उनसे वादा किया है
अच्छे कर्म करो, ताकि वह तुम्हें धरती में उत्तराधिकारी बनाए, जिस प्रकार उसने उन लोगों को उत्तराधिकारी बनाया जो उसके अधीन थे।
उनसे पहले उत्तराधिकारी नियुक्त किये जायेंगे, और वह उन्हें स्थापित करेगा
उनके लिए उनका धर्म, जिसे परमेश्वर ने स्वीकार किया है
उन्हें, और उनके बाद उन्हें सुरक्षा में लाएगा
डर. (24:55)

इन श्लोकों में की गई सभी भविष्यवाणियाँ सच हुआ। तो अगर एक व्यक्ति जो के अधीन था सबसे गंभीर आलोचनाएं और आपत्तियां, जिनमें भी एक गलती निश्चित रूप से उसके उद्देश्य की विफलता का कारण बनती थी, इतनी निःसंकोच और आत्मविश्वास से भविष्यवाणियाँ करता है-

इतने गंभीर ढंग से, कि इससे बिना किसी संदेह के पता चलता है कि वह अपने बारे में नहीं, बल्कि अपने शाश्वत गुरु से जो प्राप्त करता है, उसके बारे में बोलता है।

तीसरा पहलू: यह कुरान में अदृश्य, ईश्वरीय सत्य और परलोक की वास्तविकताओं के बारे में कही गई बातों से संबंधित है। सृष्टि के कुछ सत्यों को भी इस श्रेणी में शामिल किया जा सकता है।

इन क्षेत्रों में कुरान की व्याख्या अदृश्य के बारे में सबसे महत्वपूर्ण जानकारी में से एक है। मानवता गुमराही के रास्तों के बीच सीधे दिशा में आगे नहीं बढ़ सकती और अदृश्य की सच्चाई या वास्तविकता तक नहीं पहुँच सकती। दर्शनशास्त्र और वैज्ञानिकों के बीच गहरे, अंतहीन मतभेदों से पता चलता है कि उनके सबसे बड़े प्रतिभाशाली लोग भी बिना किसी सहायता के तर्क से इन सच्चाईयों में से सबसे छोटी सच्चाई भी नहीं खोज सकते। शुद्ध आत्माओं, परिष्कृत दिलों, विकसित आत्माओं और कुरान द्वारा परिपूर्ण बुद्धि के साथ, मानवता उन सच्चाईयों और वास्तविकताओं को समझ और स्वीकार कर सकती है, और फिर केवल यही कह सकती है: "भगवान कुरान को आशीर्वाद दें।"

कोई भी व्यक्ति खुद से आख़िरत की घटनाओं, अवस्थाओं, स्थितियों और चरणों, जिसमें क़ब्र का जीवन भी शामिल है, को नहीं जान सकता और न ही समझ सकता है। हालाँकि, कोई भी व्यक्ति क़ुरआन की रोशनी के ज़रिए उन्हें समझ सकता है और उन्हें स्पष्ट रूप से देख और देख सकता है।

आप दसवें शब्द का संदर्भ ले सकते हैं, जिसमें चर्चा की गई है कि परलोक की अदृश्य दुनिया के बारे में कुरान की व्याख्या कितनी सही और सत्य है।

दूसरी चमक: यह कुरान से संबंधित है
ताज़गी, जो इस तरह बनी रहती है जैसे कि वह प्रकट हुई हो
हर युग में नए सिरे से। एक शाश्वत प्रवचन के रूप में समय या स्थान की परवाह किए बिना
सभी मानवता को संबोधित करते हुए और
समझ के स्तर पर, यह होना चाहिए - और है -
एक कभी न मिटने वाली ताज़गी.

कुरान प्रत्येक नई पीढ़ी को इतना प्रभावित करता है
हर कोई इसे अपने आप में प्रकट हुआ मानता है
और वहां से निर्देश प्राप्त करता है। मानव
शब्द और कानून पुराने हो गए हैं और इसलिए उन्हें बदलने की जरूरत है
संशोधित या परिवर्तित। लेकिन कुरान के कानून और सिद्धांत इतने स्थापित और स्थिर हैं,
कि वे आवश्यक मानव प्रकृति और सृष्टि के साथ इतने सुसंगत हैं

अपरिवर्तनीय नियम, कि समय बीतने का कोई असर नहीं होता
उन पर इसका कोई प्रभाव नहीं पड़ता। इसके बजाय, यह कुरान के प्रभाव को दर्शाता है
सत्य, वैधता और बल को और भी अधिक स्पष्टता से समझाइए!

यह बीसवीं सदी, जिसमें इसके लोग भी शामिल हैं
किताब [32] अपने आप में पिछली किताबों से ज़्यादा आश्वस्त है, और फिर भी उसे कुरान की हिकमत की सबसे ज़्यादा ज़रूरत है जो इस तरह से शुरू होती है: ऐ किताब वालों!

---

[32] यहूदी और ईसाई।

इस वाक्यांश का अर्थ यह भी है कि “हे शिक्षा और शिक्षा के लोगों,” ये संदेश विशेष रूप से इसी सदी के लिए निर्देशित प्रतीत होते हैं। अपनी पूरी ताकत और ताज़गी के साथ, कुरान हमें पुकारता है:

> कह दो, "ऐ किताब वालों! अब हमारे और तुम्हारे बीच एक समान बात पर आओ कि हम अल्लाह के अतिरिक्त किसी की बन्दगी न करें और उसके साथ किसी को साझी न ठहराएँ और हममें से कोई अल्लाह के अतिरिक्त किसी को अपना रब न बनाए।" (3:64)

हमारी वर्तमान सभ्यता, जो मानवीय विचारों और शायद जिन्न की उपज है, ने कुरान के साथ बहस करना चुना है। यह अपने जादू और "जादू" के माध्यम से इसकी चमत्कारिकता का खंडन करने की कोशिश करता है। इस नए, भयानक प्रतिद्वंद्वी के खिलाफ कुरान की चमत्कारिकता को साबित करने और इसकी चुनौती की पुष्टि करने के लिए:

> कह दो, "यदि मनुष्य और जिन्न मिलकर इस क़ुरआन के समान कुछ बना लें, तो वे कभी भी इसके समान कुछ नहीं बना सकेंगे, चाहे वे एक-दूसरे का समर्थन ही क्यों न करें।" (17:88)

मैं आधुनिक सभ्यता के सिद्धांतों और आधारों की तुलना कुरान से करूंगा।

सबसे पहले, अब तक सामने रखी गई सभी तुलनाएं और मानदंड, तथा इसमें निहित सत्य और आयतें

उसमें कुरान की चमत्कारिकता को साबित करें और
आधुनिक सभ्यता पर निर्विवाद श्रेष्ठता।

दूसरा, जैसा कि बारहवीं सदी में तर्क दिया गया है
शब्द: आधुनिक सभ्यता कहती है कि
सामाजिक जीवन में समर्थन बल या शक्ति है, जिसका उद्देश्य
जीवन स्वार्थ को साकार करना है, संघर्ष जीवन में रिश्ते का सिद्धांत है,

समुदायों के बीच व्याप्त भेदभाव नस्लवाद और नकारात्मक राष्ट्रवाद है,
और इसका फल शारीरिक इच्छाओं की संतुष्टि है
और मानवीय आवश्यकताओं की वृद्धि।

इसके अलावा, बल प्रयोग से आक्रामकता की ज़रूरत होती है और स्वार्थ की पूर्ति से भौतिक संसाधनों पर संघर्ष होता है। संघर्ष से कलह पैदा होती है। नस्लवाद से दुश्मनी

बढ़ती है
दूसरों को निगलकर खुद को नष्ट कर लेता है, और इस तरह रास्ता तैयार करता है
आक्रामकता के लिए। इस प्रकार आधुनिक सभ्यता के बावजूद
लाभ और सकारात्मक पहलू, केवल 20 प्रतिशत
80 प्रतिशत लोग सतही तौर पर संतुष्ट हैं, जबकि अन्य 80 प्रतिशत लोग
कठिनाई और दुख में हैं।

इसके विपरीत, कुरान सही को मुख्य बिंदु मानता है।
सामाजिक जीवन में सहयोग का भाव, जीवन का उद्देश्य समझता है
सद्गुण और ईश्वर की स्वीकृति, जीवन में रिश्ते के सिद्धांत के रूप में पारस्परिक
सहायता को मान्यता देता है,
और धर्म, पेशे और नागरिकता के संबंधों को समुदायों के बीच बंधन के रूप
में स्वीकार करता है।
वासना के अवैध हमलों के खिलाफ एक बाधा खड़ी करना,

आत्मा को अपनी उच्च आकांक्षाओं को पूर्ण करने और संतुष्ट करने का आग्रह करता है, और लोगों को पूर्णता और आनंद के लिए प्रोत्साहित करता है। इसलिए यह उन्हें वास्तव में मानव बनाता है।

धर्म एकता की मांग करता है; सद्गुण परस्पर सहयोग और एकजुटता लाता है। पारस्परिक सहायता का अर्थ है एक दूसरे की मदद करना। धर्म भाईचारा (और भाईचारा) सुनिश्चित करता है
बहनापा) और आपसी आकर्षण, जबकि शारीरिक आत्म को नियंत्रित करना और आत्मा को पूर्णता के लिए प्रेरित करना
इस दुनिया और अगले जन्म में खुशियाँ लाएँ।

इस प्रकार, पिछले वर्षों से उधार लेने के बावजूद
ईश्वरीय धर्म और विशेषकर कुरान,
यद्यपि आधुनिक सभ्यता कुरान के स्वीकार्य पहलुओं को ध्यान में रखते हुए भी इसका कोई व्यवहार्य विकल्प प्रस्तुत नहीं कर सकती।

तीसरा, मैं कुरान के कुछ उदाहरण दूंगा।
अनेक विषय और आज्ञाएँ। इसके कानून के रूप में
और सिद्धांत समय और स्थान से परे हैं, वे करते हैं
अप्रचलित नहीं हो जाना चाहिए। उदाहरण के लिए, इसके सभी के बावजूद
धर्मार्थ संस्थाएं, बौद्धिक संस्थाएं
और नैतिक प्रशिक्षण, और कठोर अनुशासन और कानून
आधुनिक सभ्यता को कुरान ने निम्नलिखित मामलों में पराजित किया है:

पहली तुलना: निर्धारित तरीके से कार्य करें
नमाज़ पढ़ो और ज़कात अदा करो (2:43) और: अल्लाह ने
व्यापार वैध और ब्याज अवैध (2:275)
मैंने अपने इशारत अल-इजाज़ में निम्नलिखित दो बातों का वर्णन किया है

दृष्टिकोण या दृष्टिकोण सभी क्रांतियों और सामाजिक उथल-पुथल के कारण हैं, साथ ही मूल भी हैं
सभी नैतिक असफलताओं का सारांश इस प्रकार है,
क्रमशः, जैसे: "मुझे परवाह नहीं कि दूसरे भूख से मरें
जब तक मेरा पेट भरा है," और: "तुम्हें सहना होगा
मेरी सहजता की कीमत - आपको काम करना होगा ताकि मैं
खा सकते हैं।"

एक शांतिपूर्ण सामाजिक जीवन संतुलन पर निर्भर करता है अभिजात वर्ग (अमीर) और आम (गरीब) लोगों के बीच।33 यह संतुलन पूर्व की देखभाल पर आधारित है
और करुणा और बाद के सम्मान और आज्ञाकारिता। पहले दृष्टिकोण की अनदेखी करने से अमीर लोग
गलत काम, हड़पना, अनैतिकता और निर्दयता; दूसरे दृष्टिकोण की अनदेखी गरीबों को प्रेरित करती है
धनवानों के प्रति घृणा, दुर्भावना, ईर्ष्या और संघर्ष।
इस संघर्ष ने सामाजिक शांति को नष्ट कर दिया है

---

33 सईद नूरसी ने कुलीन शब्द का प्रयोग उन लोगों के लिए किया है जो ज़कात दे सकते हैं , और
इसे प्राप्त करने के पात्र लोगों के लिए जनसमूह । ये पदनाम
सापेक्ष हैं, क्योंकि वे स्थानीय स्तर पर संपन्नता के मानक पर निर्भर करते हैं। चूँकि इस्लाम गहरे सामाजिक-आर्थिक अंतर की अनुमति नहीं देता
मुसलमानों के बीच जो खाई है, वह कम नहीं है।
बहुत बढ़िया। आज कई मुस्लिम समाजों में, दोनों के सदस्य
मध्यम वर्ग के भीतर कई समूह पाए जा सकते हैं।
ज़कात का उद्देश्य गरीबों को पर्याप्त धन प्राप्त कराना है
अपने परिवारों के भरण-पोषण के लिए हमें जीवित लोगों पर विचार करना चाहिए
ज़कात पर विचार करते समय इस्लाम द्वारा परिकल्पित मानक । (ट्र.)

पिछले 2 या 3 शताब्दियों में, विशेष रूप से यूरोप के सामाजिक
उथल-पुथल, जिनमें से सभी श्रम और पूंजी के बीच सदियों पुराने संघर्ष में निहित हैं।

अपनी तमाम धर्मार्थ संस्थाओं, समाजों और संस्थाओं के बावजूद
नैतिक प्रशिक्षण, और कठोर कानून और नियम,
आधुनिक सभ्यता ने न तो इनमें सामंजस्य स्थापित किया है
दो सामाजिक वर्गों और न ही उन दो गंभीर को ठीक किया
मानव जीवन के घाव। हालाँकि, कुरान पहले दृष्टिकोण को मिटा देता है और इसके माध्यम से अपने घावों को ठीक करता है
ज़कात, और ब्याज पर रोक लगाकर दूसरे को मिटा देता है। कुरान दुनिया के दरवाजे पर खड़ा है और
यह हमसे कहता है: "यदि आप ख़त्म करना चाहते हैं
सामाजिक संघर्ष और संघर्ष, हित में संलग्न न हों," और अपने छात्रों को ऐसी चीजों से बचने का आदेश देता है।

दूसरी तुलना: आधुनिक सभ्यता
बहुविवाह को नासमझी और नुकसानदेह बताकर खारिज कर दिया
सामाजिक जीवन में, भले ही विवाह का उद्देश्य यौन संतुष्टि हो, बहुविवाह मान्य होगा।

इसे प्राप्त करने का एक वैध तरीका हो। कुरान इसकी अनुमति देता है
किसी व्यक्ति को कुछ विशेष परिस्थितियों में एक से अधिक पत्नियाँ रखने का अधिकार
परिस्थितियों। हालाँकि, जैसा कि जानवरों और पौधों में भी देखा गया है, इसका उद्देश्य और बुद्धिमत्ता
यौन संबंध प्रजनन है। परिणामस्वरूप प्राप्त होने वाला आनंद ईश्वरीय दया द्वारा निर्धारित एक छोटा सा भुगतान है
इस कर्तव्य को समझने के लिए.

विवाह प्रजनन और स्थायित्व के लिए है
प्रजाति का। अधिकतम एक बार जन्म देने में सक्षम होना
एक वर्ष में आधे महीने के दौरान गर्भवती होना,
और ५० के आसपास रजोनिवृत्ति में प्रवेश करती है, एक महिला
यह आमतौर पर एक आदमी के लिए अपर्याप्त है, जो कभी-कभी 100 साल की उम्र तक भी गर्भधारण कर सकता है।
यही कारण है कि, अधिकांश मामलों में, आधुनिक सभ्यता वेश्यावृत्ति को बर्दाश्त करती है।

तीसरी तुलना: आधुनिक सभ्यता कुरान की इस बात के लिए आलोचना करती है कि उसमें महिलाओं को एक तिहाई अधिकार दिया गया है।
विरासत (अपने भाई के हिस्से का आधा) जबकि
एक व्यक्ति को दो तिहाई हिस्सा देना। हालाँकि, सामान्य परिस्थितियों को सामान्य स्थापित करते समय विचार किया जाता है
नियम और कानून। इस मामले में, एक महिला आमतौर पर पाती है
उसे बनाए रखने के लिए एक आदमी, जबकि एक आदमी के पास आमतौर पर होता है
किसी और की देखभाल करना।34 इसे देखते हुए, एक महिला की

34 कुरान के अनुसार, पति कानूनी रूप से परिवार की देखभाल करने के लिए जिम्मेदार है। पत्नी चाहे कितनी भी अमीर क्यों न हो, उसे परिवार की देखभाल करने की पूरी जिम्मेदारी लेनी चाहिए।
परिवार की आजीविका में योगदान देने का कोई कानूनी दायित्व नहीं है।
दूसरा, चूंकि पत्नी अपनी संपत्ति को बढ़ाने के लिए स्वतंत्र है
व्यापार जैसे उपक्रमों के लिए कुरान उसे बाध्य नहीं करता
आर्थिक रूप से अपने पति पर निर्भर रहना पड़ता है। इसलिए
कुरान में विरासत के वितरण का मनोवैज्ञानिक, सामाजिक,
और आर्थिक उद्देश्य और निहितार्थ। अधिक जानकारी के लिए, सईद नूरसी के ग्यारहवें पत्र, द लेटर्स देखें
(तुर्की: द लाइट, इंक., 2002) (ट्र.)

पति को उसके और उसके बीच के अंतर को पूरा करना है
विरासत में उसका और उसके भाई का हिस्सा।

दूसरी ओर, उसका भाई अपने खर्च का आधा हिस्सा खर्च करेगा।
अपनी पत्नी को अपनी विरासत सौंप दी, जो उसकी बहन के बराबर थी
साझा करें। यही सच्चा न्याय है।

चौथी तुलना: कुरान मूर्ति पूजा पर रोक लगाता है और चित्रों की पूजा की निंदा करता है, जो कि
मूर्तिपूजा की नकल हो सकती है। हालाँकि, आधुनिक
सभ्यता मूर्तिकला और जीवित प्राणियों के चित्रण को, जिसकी कुरान निंदा करती है, सबसे पवित्र चीजों में से एक मानती है।
इसके गुण। छाया सहित या बिना छाया के रूप (मूर्तियां और जीवित प्राणियों के चित्र) या तो एक पालतू जानवर की तरह दिखने वाला अत्याचार (पत्थर में दर्शाया गया अत्याचार), मूर्त आडंबर या मनमौजीपन हैं, जो सभी लोगों को अत्याचार, आडंबर और मनमौजीपन के लिए प्रेरित करते हैं।

दया के कारण कुरान महिलाओं को आदेश देता है
सम्मान बनाए रखने के लिए विनम्रता का पर्दा पहनना
उन्हें वस्तुओं में बदलने से रोकने के लिए
कम इच्छा या वासना को उत्तेजित करने के लिए इस्तेमाल किया जा रहा है। आधुनिक
सभ्यता ने महिलाओं को घरों से बाहर खींच लिया है,
उनके परदे फाड़ डाले और मानवता को भ्रष्टाचार की ओर ले गए। पारिवारिक
जीवन आपसी प्रेम और
विनम्र पुरुषों और महिलाओं के बीच सम्मान; आधुनिक
सभ्यता ने सच्चे प्रेम और सम्मान को नष्ट कर दिया है,
और पारिवारिक जीवन में ज़हर घोल दिया।

मूर्तियां और चित्र, विशेषकर अश्लील चित्र,
इस नैतिक भ्रष्टाचार में उनका भी बड़ा हाथ है और
आध्यात्मिक पतन। जैसे लाश को देखना
एक खूबसूरत महिला जो दया की पात्र है
वासना और इच्छा से नैतिकता को नष्ट कर देता है, जीवित महिलाओं
की तस्वीरों को वासना से देखता है, जो कि
छोटी लाशें, परेशानियाँ और भटकाव, हिलाना और
उन्नत मानवीय भावनाओं को नष्ट कर देता है।

अंत में, खुशी हासिल करने के अलावा
इस दुनिया में सभी लोगों के लिए, कुरान की आज्ञाएँ उनकी शाश्वत
खुशी का साधन हैं। तुलना करें
अन्य विषयों के साथ उल्लेख किया गया है।

आधुनिक सभ्यता पराजित खड़ी है,

सामाजिक जीवन के लिए कुरान के नियम और सिद्धांत
कुरान की चमत्कारी सामग्री के सामने मानवता दिवालिया हो गई है।
अब तक लिखे गए शब्द, मुख्य रूप से ग्यारहवें और बारहवें, यह दर्शाते
हैं कि
यूरोपीय दर्शन और वैज्ञानिकता की भावना
वह सभ्यता, जब सामना करती है तो असहाय होती है
कुरान की बुद्धिमत्ता। इसके अलावा, जब तुलना की जाती है
इसकी साहित्यिक खूबियों की तुलना की जा सकती है
एक उन्नत प्रेमी के उत्थान गीत से उत्पन्न
अस्थायी अलगाव या अपने दर्शकों को जीत और महान बलिदान के
लिए प्रोत्साहित करने वाली वीर महाकाव्य -
आधुनिक सभ्यता का साहित्य और बयानबाजी

एक अनाथ की हताश, दु:खी चीख या
एक शराबी का शोर.

साहित्य और बयानबाजी की शैलियाँ जन्म लेती हैं
दु:ख या खुशी। दु:ख दो तरह का होता है: अकेलापन
किसी भी प्रकार की सुरक्षा और सहायता का अभाव, या प्रियतम से अलगाव। पहला है निराशा और
आधुनिक गुमराह प्रकृतिवादी और लापरवाह सभ्यता द्वारा निर्मित दूसरा विचार
उदात्त और उत्साहवर्धक है, और पुनर्मिलन की आशा और उत्सुकता जगाता है।

यह वह प्रकार है जो मार्गदर्शक, प्रकाश फैलाने वाले कुरान द्वारा दिया गया है।

आनंद भी दो प्रकार का होता है। पहला आत्मा को उत्तेजित करता है
पशुवत इच्छाओं (तथाकथित “ललित” कला, नाटक,
और सिनेमा, आदि)। दूसरा शारीरिक संबंधों पर लगाम लगाता है
स्वयं से आग्रह करता है (शिष्ट, मासूम तरीके से)
मानव हृदय, आत्मा, बुद्धि और सभी आंतरिक इंद्रियाँ
और महान चीजों और पुनर्मिलन के लिए संकायों
मूल, शाश्वत निवास और उन मित्रों के साथ जो
क़ुरान इस खुशी को बढ़ावा देता है
स्वर्ग, शाश्वत सुख और ईश्वर के दर्शन पाने की उत्सुकता जगाकर।

इस प्रकार इसमें गहन अर्थ और महान सत्य निहित है:

> कह दो: “यदि मनुष्य और जिन्न मिलकर इस क़ुरआन के समान कुछ बना लें, तो भी वे कभी न बना सकेंगे।

इसका मतलब यह है कि भले ही वे एक दूसरे का समर्थन करते हों”

(17:88),

जैसा कि कुछ लोग दावा करते हैं, यह कोई अतिशयोक्ति नहीं है। यह शुद्ध है
सत्य और वास्तविकता, जो इस्लाम के लम्बे इतिहास में है
साबित हो गया है.

यहाँ जो चुनौती दी गई है उसके दो मुख्य पहलू हैं। एक यह कि कोई भी मानव या जिन्न कार्य नहीं कर सकता।
कुरान की शैली, वाक्पटुता,
बयानबाजी, शब्द-रचना, व्यापकता, संक्षिप्तता और गहनता। न ही उनकी सबसे सुंदर
और वाक्पटु शब्द, सभी एक खंड में व्यवस्थित
उनके सबसे सक्षम प्रतिनिधि, बराबर हैं
कुरान। दूसरा पहलू यह है कि सभी मनुष्य और जिन्न
सभ्यताएँ, दर्शन, साहित्य और कानून,
स्पष्ट गहराई और सुंदरता की परवाह किए बिना,
कुरान के सामने मंद और असहाय
आज्ञाएँ, बुद्धि और वाक्पटुता।

तीसरी चमक: बुद्धिमान कुरान सभी को सूचित करता है
ईश्वर, इस्लाम और आस्था के बारे में लोगों की समझ, चाहे वे किसी भी समय, स्थान या समझ के स्तर पर हों, को प्रभावित करती है। इसलिए यह
प्रत्येक समूह और स्तर को उचित तरीके से सिखाना। चूँकि लोग बहुत विविध हैं, इसलिए कुरान को अवश्य ही प्रत्येक समूह और स्तर को उचित तरीके से सिखाना चाहिए।
इन सभी के लिए पर्याप्त स्तर हैं। मैं कुछ छोटे-छोटे बिंदुओं को इंगित करके इसे संक्षेप में समझाऊंगा।

• सूरत अल-इखलास से:

> वह न तो जन्मा है, न ही जन्मा था। और कोई भी नहीं है
> उसके तुल्य (112:3-4)

साधारण लोग, मानवता का बहुमत, यह समझता है कि सर्वशक्तिमान ईश्वर के कोई माता-पिता, बच्चे नहीं हैं,
पत्नियों, और बराबरी के लोगों को। अपेक्षाकृत उच्च स्तर की समझ रखने वाले लोग यह अनुमान लगाएंगे कि ये आयतें यीशु के कथित (ईसाइयों द्वारा) दिव्य विचारों को अस्वीकार करती हैं
पुत्रत्व और देवत्व, और स्वर्गदूतों की दिव्यता और
सभी प्राणी जो जन्म देते हैं और जन्म लेते हैं।

अब, चूँकि किसी निषेध या असंभवता को अस्वीकार करना बेकार है, वाक्पटुता के विज्ञान के अनुसार, इसका एक और महत्वपूर्ण, उपयोगी पहलू भी होना चाहिए।
आयात। चूंकि ईश्वर जन्म नहीं देता और न ही वह जन्मा था, इसलिए इस अस्वीकृति का एक और उद्देश्य अवश्य पूरा होना चाहिए:
जिसके पास माता-पिता, बच्चे और समान लोग हों, वह नहीं कर सकता
भगवान है और इसलिए पूजा के लायक नहीं है। यह
एक कारण यह है कि सूरत अल-इखलास, जिसमें से
उपरोक्त श्लोक उद्धृत किए गए हैं, जो बहुत उपयोगी हैं
सभी व्यक्तियों को हर समय.

जिनकी समझ अधिक है
इसका अर्थ यह है कि सर्वशक्तिमान ईश्वर मुक्त है
सृष्टि के साथ सभी रिश्ते जो पैदा करने और पैदा किए जाने का संकेत देते हैं, और यह कि उसका इसमें कोई हिस्सा नहीं है-

वह ईश्वर का निर्माता, सहायक या साथी देवता है। वह सृष्टिकर्ता है,
और बाकी सब कुछ और हर कोई बनाया गया है।
परमेश्वर आज्ञा देकर सृष्टि करता है, "हो जा! और यह हो जाता है" और
अपनी शाश्वत इच्छा के माध्यम से। वह पूरी तरह से मुक्त है
हर वह गुण जो मजबूरी या बाध्यता का संकेत देता हो,
और अनिच्छुक, अनपेक्षित कार्रवाई, क्योंकि ये
उसकी पूर्ण पूर्णता के विपरीत हो।

एक और समूह जिसका स्तर और भी अधिक है
समझ से यह निष्कर्ष निकलता है कि सर्वशक्तिमान ईश्वर अनादि है, उसका न आरंभ है, न अंत, तथा वह प्रथम और एकमात्र है।
वह अंतिम है। उसके अस्तित्व में उसके समान कोई नहीं है, कोई सहकर्मी नहीं है,
कोई पसंद नहीं है, या कोई भी चीज उसके समान या अनुरूप नहीं है,
गुण, या कार्य। हालाँकि, उसके कार्यों को बनाने के लिए
समझने योग्य बात यह है कि कुरान उचित तुलना का सहारा लेने की अनुमति देता है। आप इन समझों से उन लोगों के विचारों की तुलना कर सकते हैं जो ईश्वर के बारे में पूर्ण ज्ञान और प्रेम रखते हैं, तथा सबसे सच्चे, परिश्रमी विद्वान हैं।

• सूरत अल-अहज़ाब से:

> मुहम्मद तुम्हारे किसी आदमी का पिता नहीं है।
> (33:40)

आम लोग समझते हैं कि ज़ैद, अल्लाह के रसूल का बन्दा और उसका दत्तक पुत्र,
अपनी पत्नी ज़ैनब को तलाक दे दिया क्योंकि उसने उसे पाया

सद्गुणों में उससे श्रेष्ठ। ईश्वर की आज्ञा से, ईश्वर की
फिर पैगम्बर ने उससे विवाह कर लिया। इसलिए यह आयत इस प्रकार है:
कहते हैं: “यदि पैगम्बर तुम्हें ‘बेटा’ कहते हैं, तो इसका कारण यह है कि
संदेशवाहक के रूप में अपने मिशन के बारे में। जैविक रूप से, वह नहीं है
तुम्हारे किसी पुरुष का पिता तुम्हारी विधवाओं में से किसी से विवाह करने से
रोकेगा।”

दूसरा समूह इस अर्थ को निकालता है: "एक वरिष्ठ अपने विषयों के साथ
पिता की तरह देखभाल और करुणा से पेश आता है। यदि वह वरिष्ठ एक
सांसारिक शासक और एक ही समय में ...
एक आध्यात्मिक मार्गदर्शक, उसकी करुणा कहीं अधिक होगी
पिता की तुलना में अधिक। उनकी प्रजा उन्हें वास्तविक मानती है
पिता।"

चूँकि इससे लोगों को कठिनाई हो सकती है
पैगम्बर को देखकर, जिन्हें वे अधिक मानते हैं
पिता से भी अधिक पितृतुल्य, अपनी स्त्रियों के पति के समान,
कुरान इस दृष्टिकोण को सही करता है: "पैगंबर आप पर ईश्वरीय दया की दृष्टि
से विचार करता है
और तुम्हें एक पिता की तरह मानता है। तुम उसके बच्चों की तरह हो
अपने मिशन के दृष्टिकोण से। लेकिन वह नहीं है
आपके जैविक पिता, जिसके कारण उनका आपकी किसी महिला से विवाह
करना अनुचित होगा।”

तीसरा समूह समझता है कि केवल इसलिए कि
पैगंबर के साथ उनके संबंध के बारे में, साथ ही
उनकी पूर्णता और पितृतुल्य करुणा पर उनके भरोसे के कारण, विश्वासी यह
विश्वास नहीं कर सकते कि उनका उद्धार होगा।

भले ही वे पाप करते हों, फिर भी उनकी रक्षा सुनिश्चित है
त्रुटियाँ.35

चौथा समूह एक भविष्यवाणी निकालता है:
पैगम्बर को अपना वंश आगे बढ़ाने के लिए कोई पुत्र नहीं होगा। उसके बेटे जवानी में ही मर जायेंगे। जैसा कि लोगों ने कहा है, अर्थात्, चूँकि वह मनुष्यों का पिता नहीं होगा, वह
वह बेटियों का पिता होगा। इस प्रकार उसकी वंशावली उसकी बेटी के माध्यम से जारी रहेगी।

> सारी स्तुति परमेश्वर की हो, उसकी धन्य संतानों की
> बेटी फातिमा, उनके दो पोते हसन और
> हुसैन, दो शानदार वंशों के "प्रकाश देने वाले चंद्रमा", सूर्य वंश की रेखा को जारी रखते हैं
> जैविक और आध्यात्मिक दोनों रूप से पैगम्बरत्व।
> भगवान, उन पर और उनके परिवार पर आशीर्वाद बनाए रखें।

दूसरा प्रकाश

इस दूसरे प्रकाश में तीन किरणें हैं।

पहली किरण

कुरान एक उत्तम प्रवाह, उत्कृष्ट भाषा-ज्ञान की पुस्तक है। स्पष्टता और सुदृढ़ता, दृढ़ सुसंगति, और अच्छी तरह से

---

[35] उदाहरण के लिए, कुछ अलावी निर्धारित कार्य नहीं करते हैं
प्रार्थना करें और कहें कि उनकी प्रार्थना पूरी हो गई है
ईसाई लोग खुद को धोखा देते हैं कि यीशु ने बलिदान दिया
वे अपने उद्धार के लिए स्वयं को समर्पित करते हैं, और इसलिए अपने नेता या
(वे मार्गदर्शक की सम्पूर्णताओं का पालन करने में आलसी हैं और धार्मिक आज्ञाओं का पालन करने में आलसी हैं।)

सामंजस्य और अनुपात स्थापित किया गया है।
मजबूत, आपसी समर्थन और आपसी संबंध
इसके वाक्यों और उनके भागों के बीच उच्चस्तरीय सामंजस्य तथा इसके छंदों और उनके उद्देश्यों के बीच उच्चस्तरीय सामंजस्य।
अरबी भाषाशास्त्र, साहित्य,
और अल-ज़मखशारी, अल-सक्काकी, और शब्दार्थ
'अब्द अल-काहिर अल-जुरजानी इसकी गवाही देते हैं।

इसके अलावा, यद्यपि सात या आठ कारक
प्रति प्रवाह, सुदृढ़ता, सुसंगति, सामंजस्य,
अनुपात, अंतर्संबंध और पत्राचार, ये
बल्कि ये कारक कुरान की प्रवाहशीलता, सुदृढ़ता और सुसंगतता को समृद्ध करते हैं। जैसे फल देने वाले पेड़ के तने से शाखाएँ और टहनियाँ निकलती हैं और पेड़ की सुंदरता और वृद्धि को पूरा करती हैं, वैसे ही ये कारक कभी-कभी धाराप्रवाह बोलने वालों में मतभेद पैदा नहीं करते हैं।

कुरान की रचना में सामंजस्य, बल्कि
नये, समृद्ध और पूरक अर्थ व्यक्त करें।

निम्नलिखित तथ्यों पर विचार करें:

- हालाँकि कुरान को कई भागों में अवतरित किया गया
  23 वर्षों से विभिन्न आवश्यकताओं और उद्देश्यों के लिए
  इसमें इतना उत्तम सामंजस्य है कि ऐसा लगता है मानो यह
  सभी बातें एक साथ उजागर हो गईं।

- हालाँकि कुरान का अवतरण 23 वर्षों में हुआ
  विभिन्न अवसरों पर इसके भाग इतने परस्पर-संबंधित होते हैं-

इस बात का पूरा समर्थन है कि ऐसा लगता है जैसे सब कुछ उजागर हो गया हो तुरंत।

• यद्यपि कुरान विभिन्न और बार-बार पूछे गए प्रश्नों के उत्तर में आया, फिर भी इसके भाग एक-दूसरे के साथ इतने एकीकृत और सामंजस्यपूर्ण हैं कि यह

ऐसा लगता है जैसे यह एक ही प्रश्न का उत्तर हो।

• यद्यपि कुरान विविध मामलों और घटनाओं का निर्णय करने के लिए आया था, फिर भी यह इतना उत्तम क्रम प्रदर्शित करता है कि ऐसा लगता है मानो यह किसी एक मामले या घटना पर दिया गया निर्णय हो।

• यद्यपि कुरान ईश्वरीय कृपा से विभिन्न शैलियों में अवतरित हुआ, जो विभिन्न स्तर की समझ, मनोदशा और स्वभाव वाले असंख्य लोगों के लिए उपयुक्त था, तथापि इसके भागों में इतनी सुन्दर समानता, संगति और प्रवाह है कि ऐसा लगता है मानो यह एक ही स्तर की समझ और स्वभाव को संबोधित कर रहा हो।

• यद्यपि कुरान असंख्य प्रकार के लोगों से बात करता है जो समय, स्थान और चरित्र में एक दूसरे से बहुत दूर हैं, फिर भी इसमें व्याख्या का इतना आसान तरीका, शुद्ध शैली और वर्णन का इतना स्पष्ट तरीका है कि ऐसा लगता है मानो यह एक समरूप समूह को संबोधित कर रहा हो, जिसमें प्रत्येक व्यक्ति अलग-अलग है।

समूह यह सोचता है कि इसे अद्वितीय और विशिष्ट रूप से संबोधित किया जा रहा है।

• यद्यपि कुरान विभिन्न लोगों के क्रमिक मार्गदर्शन के लिए विभिन्न तरीकों से अवतरित हुआ था
उद्देश्यों के लिए, इसमें इतनी परिपूर्ण सरलता, संवेदनशील संतुलन और सुंदर व्यवस्था है कि
ऐसा लगता है जैसे यह केवल एक ही उद्देश्य का पीछा कर रहा हो।

भ्रम के कारण होने के बावजूद, ये
कुरान की चमत्कारिकता में और भी कई कारक जुड़ते हैं
स्पष्टीकरण और इसकी शैली और सामंजस्य की प्रवाहशीलता। कोई भी
व्यक्ति जिसका हृदय स्वस्थ है, स्वस्थ है
विवेक, और अच्छा स्वाद सुंदर प्रवाह को देखता है,
इसकी व्याख्याओं में उत्तम अनुपात, सुखद सामंजस्य और बेजोड़
वाक्पटुता है।
दृष्टि और अंतर्दृष्टि की स्वस्थ शक्ति देखती है कि
कुरान में एक आँख है जिससे पूरे ब्रह्माण्ड को, उसके सभी आंतरिक और बाहरी आयामों के साथ देखा जा सकता है।
एक ही पृष्ठ पर और उसमें निहित सभी अर्थों को पढ़ने के लिए। चूँकि मुझे इसके लिए कई खंडों की आवश्यकता होगी
इस सत्य को उदाहरणों सहित समझाने के लिए कृपया देखें
मेरी इशारत अल-इजाज़ और अब तक लिखे गए शब्द ।

दूसरी किरण

यह कुरान के चमत्कारी गुणों से संबंधित है जो इसके सारांशों और आयतों के माध्यम से प्रदर्शित होते हैं।

भगवान के सुंदर नामों का उपयोग करने की अनूठी शैली

इसकी कई आयतें समाप्त हो जाती हैं।

> नोट: इस किरण में कई छंद हैं जो इस प्रकार हैं
> इस किरण और अन्य पहले से चर्चित विषयों के लिए कुछ उदाहरण हैं।
> इसलिए मैं उनका संक्षेप में उल्लेख करता हूँ।

कुरान आम तौर पर अपनी आयतों को सारांश के साथ समाप्त करता है
जिसमें उन दिव्य सुंदर नामों का समावेश होता है
जिसमें छंदों की सामग्री उत्पन्न होती है, संक्षेप में सभी अर्थों को समाहित करती है
कुरान के मुख्य उद्देश्यों से संबंधित आयतों या सर्वव्यापक सिद्धांतों को समझना, उन आयतों की पुष्टि और पुष्टि करना, या मन को ध्यान के लिए प्रेरित करना।
यह देखते हुए, इन सारांशों में निम्नलिखित अंश शामिल हैं
कुरान की उच्च बुद्धि, पानी से गिरती है
ईश्वरीय मार्गदर्शन के जीवन की, या कुरान की चमत्कारिकता की चमक से उत्पन्न चिंगारियाँ।

मैं इनमें से केवल 10 पर ही संक्षेप में चर्चा करूंगा।
निशान, और प्रत्येक निशान के कई पहलुओं के कई उदाहरणों में से केवल एक का उल्लेख करें। मैं संलग्न करूंगा
अनेक में से किसी एक के अर्थ का संक्षिप्त विवरण
प्रत्येक उदाहरण में निहित सत्य। अधिकांश निशान हैं
अधिकांश छंदों में एक साथ पाए जाते हैं और एक बनाते हैं
चमत्कारिकता का वास्तविक डिजाइन। अधिकांश छंद
उदाहरण के रूप में दिए गए उदाहरण भी अधिकांश के लिए उदाहरण हैं

निशान। में उल्लिखित छंद के संबंध में
पिछले शब्दों में, मैं एक संक्षिप्त संदर्भ दूंगा
यहाँ उद्धृत अर्थ।

वाक्पटुता का पहला गुण: अपनी चमत्कारी अभिव्यक्ति के साथ, कुरान वाक्पटुता का प्रसार करता है।
राजसी निर्माता के कार्य और कर्म। फिर यह निष्कर्ष निकलता है
या तो ईश्वरीय नाम या उन कार्यों और कर्मों से उत्पन्न नामों के साथ, जैसा कि कुरान के एक आवश्यक उद्देश्य के प्रमाण के साथ है (उदाहरण के लिए, ईश्वरीय एकता या
जी उठने)।

उदाहरण के लिए: उसने तुम्हारे लिए वह सब कुछ बनाया जो है
फिर उसने आकाश की ओर रुख किया और उसे सात आकाश बना दिया। वह सब कुछ जानने वाला है।
चीज़ें (2:29), आयत एक विशेष परिणाम या महत्वपूर्ण लक्ष्य की ओर ले जाने वाले तरीके से संबंधित है, सबसे
व्यापक कार्य, जो सभी ईश्वरीय कृपा की गवाही देते हैं
ज्ञान और शक्ति अपने उद्देश्यों और व्यवस्था के माध्यम से,
और इसका समापन “ज्ञाता” नाम से होता है।

क्या हमने धरती को पालना नहीं बनाया ?
और हमने तुम्हें जोड़े जोड़े में पैदा किया है
... निश्चय ही निर्णय का दिन एक नियत समय है
(78:6-8, 17), इसमें सर्वशक्तिमान परमेश्वर की महानता का उल्लेख है
कृत्यों और जबरदस्त काम करता है और के साथ समाप्त होता है

पुनरुत्थान का दिन (न्याय का दिन)।

वाक्पटुता का दूसरा बिंदु: कुरान ईश्वरीय कला के कार्यों को प्रत्येक कार्य के मूल ईश्वरीय नाम को निर्दिष्ट किए बिना प्रस्तुत करता है, और नामों को एक साथ उल्लेख करके या उन्हें बुद्धि से संदर्भित करके समाप्त करता है। उदाहरण के लिए:

> कहो, "कौन है जो तुम्हें आकाश और धरती से रोज़ी देता है, या जो सुनने और देखने का अधिकारी है, और जो जीवित को मुर्दों से और मुर्दों को जीवितों से निकालता है, और जो सारे मामलों का संचालन करता है?" वे कहेंगे, "अल्लाह।" फिर कहो, "तो क्या तुम डरते नहीं और डर नहीं रखते? तो वही अल्लाह है, तुम्हारा पालनहार, सच्चा।" (10:31-32)

आरंभ में यह प्रश्न करता है: "कौन है जिसने आकाश और पृथ्वी को तुम्हारी कृपा के दो स्रोत बना कर वहाँ से वर्षा भेजी और यहाँ से अन्न उपजाया? उसके अतिरिक्त और कौन है जो आकाश और पृथ्वी को तुम्हारी कृपा के दो भंडार बना कर वश में करता है? अतः प्रशंसा और धन्यवाद केवल उसी के लिए है।" दूसरे भाग में इसका अर्थ है: "तुम्हारी आँखें और कान, जो तुम्हारे शरीर के सबसे मूल्यवान अंग हैं, किसका है? तुमने उन्हें किस दुकान या कारखाने से खरीदा है? केवल तुम्हारा रब ही तुम्हें ये सूक्ष्म श्रवण और दृष्टि प्रदान कर सकता है। वही

"वही तुम्हें बनाता है और पालता भी है। इसलिए उसके अलावा कोई भगवान नहीं है और केवल वही पूजा के योग्य है।"

तीसरे भाग में, इसका अर्थ है: "हर वसंत में मृत पृथ्वी को कौन जीवन देता है, और पिछली शरद ऋतु या सर्दियों में मरने वाली असंख्य प्रजातियों को पुनर्जीवित करता है? पूरे ब्रह्मांड के निर्माता, सत्य के अलावा कौन ऐसा कर सकता है? जैसे वह पृथ्वी को जीवन देता है, वैसे ही वह आपको भी पुनर्जीवित करेगा और आपको सर्वोच्च न्यायाधिकरण में भेजेगा।"

चौथे भाग में यह स्पष्ट किया गया है: "ईश्वर के अलावा कौन इस विशाल ब्रह्मांड को पूर्ण व्यवस्था के साथ संचालित कर सकता है? चूँकि केवल वही ऐसा कर सकता है, इसलिए ब्रह्मांड और उसके विभिन्न क्षेत्रों को आसानी से संचालित करने वाली शक्ति इतनी परिपूर्ण और अनंत है कि उसे किसी साझेदार या सहायक की आवश्यकता नहीं है। जो ब्रह्मांड को संचालित करता है, वह छोटे जीवों को दूसरे हाथों में नहीं छोड़ता।

इसलिए तुम्हें परमेश्वर को स्वेच्छा से या अनिच्छा से स्वीकार करना होगा।”

पहला और चौथा भाग ईश्वर को सूचित करता है, जबकि दूसरा भाग प्रभु को सूचित करता है और तीसरा भाग सत्य को सूचित करता है। इससे समझो कि ऐसे ही चमत्कारी ईश्वर हैं, तुम्हारा प्रभु, सत्य।

सर्वशक्तिमान ईश्वर के महान कार्यों और उनकी शक्ति के महत्वपूर्ण उत्पादों को प्रस्तुत करने के बाद, कुरान ईश्वर, प्रभु और भगवान के नामों का उल्लेख करता है।

सत्य, और इस प्रकार उन की उत्पत्ति को इंगित करता है
कार्य और उत्पाद.

कुरान किस प्रकार मानव जाति से आग्रह करता है इसका एक उदाहरण उसके कार्यों पर विचार करने और उसे पहचानने की बुद्धि
उसका विवरण नीचे प्रस्तुत है:

> आकाश और पृथ्वी की रचना में, रात और दिन के परिवर्तन में, समुद्र में चलने वाले जहाजों में
> मानवता के लाभ के लिए, भगवान जो पानी भेजता है
> आकाश से नीचे उतरकर और इस प्रकार पृथ्वी को पुनर्जीवित करके
> उसकी मृत्यु, और उसमें सभी प्रकार के जानवरों को तितर-बितर करना,
> हवाओं को निर्देशित करना और उनका निपटान करना, और
> आकाश और पृथ्वी के बीच दबे बादल,
> ये निशानियाँ उन लोगों के लिए हैं जो अपनी बुद्धि का इस्तेमाल करते हैं। (2:164)

यह श्लोक कार्यों की गणना करता है और प्रकट करता है-
ईश्वरीय सृजन के उदाहरण, जैसे ईश्वरीय सृजन को दर्शाना
आकाश और पृथ्वी का निर्माण करके संप्रभुता;
रात और दिन में दिव्य आधिपत्य की,
सर्वशक्तिमान परमेश्वर की पूर्णता को प्रदर्शित करना
उनकी प्रभुता की शक्ति और भव्यता, तथा उनकी एकता का साक्ष्य; समुद्र और जहाज को वश में करके दया दिखाना, जो बहुत उपयोगी हैं

मानव सामाजिक जीवन के लिए; पृथ्वी और उसके असंख्य प्राणियों को पुनर्जीवित करने और इसे एक उत्कृष्ट प्राणी की तरह बनाने के लिए बारिश भेजने में शक्ति की महानता को प्रकट करना
पुनरुत्थान और एकत्रीकरण का स्थान; प्रकटीकरण

मिट्टी से असंख्य प्राणियों को उत्पन्न करने में शक्ति और करुणा; पौधों को परागित करने और सजीव प्राणियों को सांस लेने की अनुमति देने के लिए पवन को प्रेरित करने में दया और बुद्धि को प्रकट करना; बादलों (दया के साधन) को एकत्रित करने और फैलाने में प्रभुत्व को प्रकट करना, और उन्हें स्वर्ग और पृथ्वी के बीच निलंबित करना।

ईश्वरीय कार्यों और अभिव्यक्तियों को गिनाने के बाद, उनके मूल नामों का उल्लेख किए बिना, श्लोक का निष्कर्ष है ... ये उन लोगों के लिए संकेत हैं जो अपनी बुद्धि का उपयोग करते हैं और बुद्धि से आग्रह करते हैं कि वे उनमें निहित सत्यों पर पूरी तरह से चिंतन करें।

वाक्पटुता का तीसरा गुण: कभी-कभी कुरान सर्वशक्तिमान ईश्वर के कार्यों का विस्तार से वर्णन करता है और सारांश के साथ समाप्त होता है। यह दृढ़ विश्वास दिलाने के लिए विस्तृत विवरण का उपयोग करता है, और फिर उनका सारांश देकर मन पर प्रभाव डालता है।

• सूरा यूसुफ़ से:

> अतः तुम्हारा रब तुम्हें चुन लेगा और तुम्हें स्वप्नों और सभी सामाजिक और प्राकृतिक घटनाओं का अर्थ बताना सिखाएगा और तुमपर और याकूब के घराने पर अपनी कृपा पूरी करेगा, जिस प्रकार उसने तुम्हारे पूर्वजों इबराहीम और इसहाक पर पूरी की थी। तुम्हारा रब सर्वज्ञ, तत्वदर्शी है। (12:6)

यह आयत पैगंबर यूसुफ, उनके पिता और पूर्वजों पर ईश्वरीय आशीर्वाद की ओर इशारा करती है और कहती है: "उसने आपको (जोसेफ) पैगंबरी से प्रतिष्ठित किया है और पैगंबरों की श्रृंखला को आपके साथ जोड़कर, आपके वंश को सबसे सम्मानित और प्रमुख बनाया है। उसने आपके घर को शिक्षा और मार्गदर्शन का स्थान बनाया है जिसमें ईश्वर का ज्ञान और दिव्य ज्ञान सिखाया जाता है, और उस ज्ञान और बुद्धि के माध्यम से आप में दुनिया की सुखद आध्यात्मिक संप्रभुता और परलोक में अनंत सुख का मिश्रण होता है। वह आपको उस ज्ञान और बुद्धि से सुसज्जित करेगा और आपको एक प्रतिष्ठित शासक, एक महान पैगंबर और एक बुद्धिमान मार्गदर्शक बनाएगा।"

"तुम्हारा रब सर्वज्ञ, सर्वज्ञ है" के साथ समाप्त करते हुए , आयत उन सभी नेमतों का सारांश प्रस्तुत करती है और इसका अर्थ है: "तुम्हारा रब सर्वज्ञ, सर्वज्ञ है। उसकी प्रभुता और बुद्धि की आवश्यकता है कि वह तुम्हारे माध्यम से अपने सर्वज्ञ, सर्वज्ञ नामों को प्रकट करे और तुम्हें ज्ञानवान और विवेकवान बनाए, जैसा कि उसने तुम्हारे पिता और पूर्वजों को किया था।"

• सूरत अल-इमरान से:

कह दो: "ऐ अल्लाह! राज्य के स्वामी! तू ही राज्य देता है।"
राज्य जिसे आप चाहते हैं, और राज्य को जब्त कर लें

> जिससे आप चाहें। आप जिसे चाहें ऊंचा उठाते हैं और
>
> तू जिसे चाहे अपमानित कर सकता है। भलाई तेरे ही हाथ में है।
> तू हर चीज़ पर सामर्थ्यवान है। तू रात को दिन में और दिन को रात में प्रविष्ट करता है। तू जीवित को मुर्दों में से और मुर्दों को जीवित में से निकालता है। तू जिसे चाहता है बेहिसाब देता है।” (3:26-27)

ये आयतें मानवता के सामाजिक जीवन और ब्रह्मांड में परमेश्वर के नियमों के क्रियान्वयन की ओर इशारा करती हैं।
वे इस बात पर ज़ोर देते हैं कि सम्मान और अवनति, साथ ही धन और गरीबी, सीधे सर्वशक्तिमान ईश्वर की इच्छा और पसंद पर निर्भर करते हैं। कुछ भी नहीं, यहाँ तक कि बहुलता के क्षेत्र में सबसे तुच्छ घटनाएँ भी, ईश्वरीय इच्छा के दायरे से परे नहीं हैं, और इसलिए संयोग के लिए कोई जगह नहीं है।

इस आवश्यक सिद्धांत को इंगित करने के बाद, श्लोक पुष्टि करता है कि हमारा प्रावधान, जो इस सांसारिक जीवन में सबसे आवश्यक है, सीधे वास्तविक प्रदाता की दया के खजाने से उत्पन्न होता है, और इसका अर्थ है: "आपका प्रावधान पृथ्वी की जीवन शक्ति पर निर्भर करता है, जिसका पुनरुद्धार वसंत के आगमन के माध्यम से संभव है। केवल वही जिसने सूर्य और चंद्रमा को वश में कर लिया है, और रात और दिन को बारी-बारी से बदलता है, वसंत ला सकता है। यदि ऐसा है, तो केवल वही जो पृथ्वी की सतह को फलों से भरता है, वह प्रदान कर सकता है

किसी के पास सेब होना और उसका असली होना
प्रदाता।"

और आप जिसे चाहते हैं बिना किसी सीमा के प्रदान करते हैं, के साथ समाप्त करके , आयतें संक्षेप में कहती हैं

सभी कार्य जो पहले विस्तार से वर्णित हैं और पुष्टि करते हैं
कि जो तुम्हें बिना माप के प्रदान करता है
वह ये सब काम करता है।

वाक्पटुता का चौथा बिन्दु: कभी-कभी
कुरान में ईश्वर की रचना और प्राणियों का उल्लेख है।
एक निश्चित श्रृंखला। यह दर्शाकर कि उनका अस्तित्व
और जीवन में एक उद्देश्यपूर्ण व्यवस्था और संतुलन हो, यह
ऐसा लगता है कि यह उन्हें एक खास चमक और चमक देता है। फिर यह दिव्य नाम
या नामों की ओर इशारा करता है
उस व्यवस्था की उत्पत्ति, जो दर्पण की तरह प्रतिबिंबित करती है
ऐसा लगता है मानो प्रत्येक उल्लिखित प्राणी एक शब्द था

और नाम उन शब्दों के अर्थ थे, या
प्रत्येक प्राणी एक फल था और नाम थे

उनके बीज या पर्याप्त भाग। उदाहरण के लिए:

• सूरत अल-मुमिनुन से:

> हमने मानवता को मिट्टी के अंश से बनाया है। फिर
> हमने शुक्राणु को एक सुरक्षित स्थान पर रखा और फिर बनाया
> शुक्राणु किसी निलंबित वस्तु में गिर जाता है (
> गर्भ की दीवार)। हमने उस लटकी हुई चीज़ को बनाया
> चबाये हुए मांस के एक टुकड़े जैसा कुछ, और उस टुकड़े से हड्डियाँ बनाईं,
> और हड्डियों को कपड़े से ढक दिया

> फिर हमने मनुष्य को एक और रचना में बनाया। अतः धन्य है वह ईश्वर जो सृजन में सर्वोच्च और धन्य है। (23:12-14)

कुरान में मानवता की रचना के असाधारण और अद्भुत, सुव्यवस्थित, सुसंगठित चरणों का इस तरह उल्लेख किया गया है कि मानो दर्पण में, सृजन की सर्वोच्च और सर्वाधिक धन्य अवस्था, 'अतः धन्य है ईश्वर' दिखाई देती है, जिसके परिणामस्वरूप जो कोई भी इसे पढ़ता या सुनता है, वह आशीर्वाद के उसी वाक्यांश को कहे बिना नहीं रह सकता।

ईश्वर के दूत द्वारा रहस्योद्घाटन को रिकॉर्ड करने के लिए नियुक्त एक लेखक ने यह वाक्य पैगंबर द्वारा इसे पढ़े जाने से पहले ही बोल दिया, जिससे लेखक को आश्चर्य हुआ कि क्या वह भी रहस्योद्घाटन प्राप्त कर रहा है। लेकिन वास्तव में, यह आयतों का सही क्रम, सुसंगतता और स्पष्टता थी जिसने उस वाक्यांश को उसके पढ़े जाने से पहले ही जन्म दे दिया था।

• सूरत अल-अराफ़ से:

> तुम्हारा रब वही अल्लाह है, जिसने आकाशों और धरती को छः दिन में पैदा किया, फिर अर्श पर विराजमान हुआ, दिन को रात से ढक दिया, एक दूसरे का पीछा करते हुए, और सूरज, चाँद और तारे उसके हुक्म से आज्ञाकारी हैं। निस्संदेह, सृष्टि और हुक्म उसी का है। बरकतवाला अल्लाह, सारे जहान का रब। (7:54)

यहाँ कुरान इसकी महानता को दर्शाता है
परमेश्वर की शक्ति और उसके प्रभुत्व की संप्रभुता
यह दर्शाता है कि कैसे सूर्य, चंद्रमा और तारे उसकी आज्ञा का पालन करते हैं
आज्ञाएँ; और सर्वशक्तिमान की महिमा
जो प्रभुता के सिंहासन पर बैठा है, जो
रात और दिन को लगातार एक दूसरे का अनुसरण करते हुए
अन्य लोग सफेद और काले रिबन या रेखाओं की तरह लिखते हैं
ब्रह्माण्ड के पन्नों पर उनके प्रभुत्व का चिन्ह।

अतः जो कोई इस श्लोक को पढ़ेगा या सुनेगा
भगवान, भगवान धन्य हो कहने के लिए उत्सुक महसूस करता है
इस प्रकार यह वाक्यांश दुनिया का सारांश प्रस्तुत करता है
संदर्भ में पिछली पंक्तियाँ, उसका सार या बीज
या फल.

वाक्पटुता का पाँचवाँ गुण: क़ुरआन
कभी-कभी कुछ भौतिक या भौतिक बातों का उल्लेख होता है
विभिन्न गुणों वाली तथा परिवर्तन और विघटन के अधीन चीजें या पदार्थ।
फिर, क्रम में
उन्हें स्थिर और अपरिवर्तनीय वास्तविकताओं में बदलने के लिए, यह उन्हें कुछ निश्चित के साथ जोड़ता है और निष्कर्ष निकालता है
सार्वभौमिक और स्थायी दिव्य नामों का पाठ किया जाता है, या फिर एक सारांश के साथ समाप्त किया जाता है जिसमें चिंतन और सबक लेने का आग्रह किया जाता है।

• सूरत अल-बकरा से:

> उसने आदम को सारे नाम सिखाए, फिर उन्हें फ़रिश्तों के सामने पेश किया और कहा: "अब मुझे बताओ कि कौन सा नाम सही है।

> यदि तुम सच बोलो तो इनके नाम बताओ।" उन्होंने कहा: "महिमा
> तेरे लिए, हमें कोई ज्ञान नहीं सिवाय इसके कि
> तूने हमें शिक्षा दी है, तू ही सर्वज्ञ, तत्वदर्शी है। (2:31-32)

आयतों में सबसे पहले उल्लेख किया गया है कि आदम परमेश्वर का प्रतिनिधि होने के कारण स्वर्गदूतों से श्रेष्ठ है।

ज्ञान जो उन्हें ईश्वरीय उपहार के रूप में प्राप्त हुआ, और फिर

आदम के सामने स्वर्गदूतों की हार

ज्ञान। कुरान अपने विवरण का समापन इस प्रकार करता है
इस घटना को दो सार्वभौमिक नामों से पुकारा जाता है: सर्वज्ञ, सर्वज्ञ। इस प्रकार देवदूत

स्वीकार करते हैं:

“चूँकि आप सर्वज्ञ और सर्वविवेकशील हैं, अतः आप

आदम को नामों की शिक्षा दी और उस ज्ञान के द्वारा उसे हमसे श्रेष्ठ बनाया। आप सर्वज्ञ हैं, इसलिए हमें हमारी क्षमता के अनुसार दीजिए और उसे उसकी क्षमता के कारण श्रेष्ठता दीजिए।

• सूरह अल-नहल से:

> मवेशियों में तुम्हारे लिए एक सबक है। हम तुम्हें देते हैं
> जो कुछ उनके पेट में है, उसे पीते हैं, गंदगी और
> खून, शुद्ध दूध, पीने वालों को मीठा। तुम ले लो
> ताड़ और लताओं के फल एक मजबूत पेय और
> यह एक अच्छी रोज़ी है, इसमें उन लोगों के लिए बड़ी निशानी है जो
> समझो! तुम्हारे रब ने मधुमक्खी को प्रेरणा दी कि, "ले लो!
> अपने लिए, पहाड़ों, घरों और पेड़ों के लिए, और
> जो कुछ वे बना रहे हैं, उसका आनंद लें। फिर हर तरह की चीज़ें खाएँ

> और अपने रब के मार्ग पर चलो, जो सरल है।" फिर उनके पेटों से विभिन्न रंगों का एक तरल पदार्थ निकलता है, जिसमें लोगों के लिए शिफ़ा है। इसमें उन लोगों के लिए एक निशानी है जो सोच-विचार करें। (16:66-69)

यह दिखाने के बाद कि सर्वशक्तिमान ईश्वर ने कुछ पशुओं (जैसे भेड़, बकरी, गाय और ऊँट) को शुद्ध और स्वादिष्ट दूध का स्रोत बनाया है; अपने कुछ वनस्पति प्राणियों (जैसे खजूर और लताएँ) को मीठी, सुखद, स्वादिष्ट भेंटों की मेज़ बनाया है; और अपनी शक्ति के कुछ चमत्कारों (जैसे मधुमक्खी, जो शहद का उत्पादक है जिसमें रोग प्रतिरोधक क्षमता है) को मनुष्य को इनके साथ समान उपहारों की तुलना करने, तथा इस प्रकार चिन्तन करने और शिक्षा लेने के लिए प्रेरित करने के लिए बनाया है, आयतें इस प्रकार समाप्त होती हैं: " इसमें उन लोगों के लिए एक निशानी है जो चिन्तन करें।"

वाक्पटुता का छठा बिन्दु: कभी-कभी एक श्लोक ईश्वरीय प्रभुत्व के अनेक परिणामों और आदेशों को सामने रखता है और उन्हें एकता के सूत्र में बांध देता है या एक सार्वभौमिक सिद्धांत को जोड़ देता है।

• सूरत अल-बकरा से:

> हे ईश्वर, उसके सिवा कोई ईश्वर नहीं, वह जीवित है, स्वयंभू है। उसे न तो नींद आती है, न नींद।
> जो कुछ आसमानों में है और जो कुछ ज़मीन में है, सब उसी का है। कौन है जो उसकी इजाज़त के बिना उससे सिफ़ारिश करे? वह जानता है जो कुछ उनके आगे है और जो कुछ उनके पीछे है

> और वे उसके ज्ञान में से कुछ भी नहीं समझते, परन्तु वही लोग समझते हैं जिन्हें वह चाहता है। उसका सिंहासन आकाश और धरती को घेरे हुए है, और उन्हें थामे रखना उसपर अत्याचार नहीं करता। वह सर्वोच्च, अत्यन्त प्रभुत्वशाली है। (2:255)

दस तरीकों से ईश्वरीय एकता को साबित करने के साथ-साथ, यह श्लोक, जिसे (सर्वोच्च) सिंहासन का श्लोक कहा जाता है, ईश्वर के साथ साझेदारों को जोड़ने को अस्वीकार करता है और इस सवाल का खंडन करता है: ऐसा कौन है जो उसकी अनुमति के बिना उसके साथ मध्यस्थता करेगा? इसके अलावा, चूँकि यहाँ ईश्वर का महानतम नाम प्रकट होता है, इसलिए इसमें ईश्वरीय सत्यों से संबंधित अर्थ सर्वोच्च स्तर के हैं।

यह सर्वोच्च स्तर पर प्रभुता की अभिव्यक्ति करने वाला एक कार्य भी दर्शाता है। इसके अलावा, ईश्वर के सर्वव्यापी संरक्षण या सबसे बड़ी डिग्री में बनाए रखने का उल्लेख करने के बाद - स्वर्ग और पृथ्वी पर उनका एक साथ नियंत्रण - एकता के बंधन या एकता के एक पहलू के रूप में, यह उनकी उत्पत्ति को सारांशित करता है कि वह सर्वोच्च, महान है।

• सूरत इब्राहिम से:

> अल्लाह ने आकाशों और धरती को पैदा किया और आकाश से पानी बरसाया, जिससे तुम्हारे लिए फल पैदा होते हैं। उसने तुम्हारे लिए कश्तियाँ बनायीं कि वे उसके आदेश पर समुद्र में चलें।

> तुम्हारे लिए सूर्य और चन्द्रमा निरन्तर अपनी गति में रहते हैं और उसने रात और दिन
> और आकाश को तुम्हारे अधीन कर रखा है।
> जो कुछ तुम उससे मांगते हो वह तुम्हें देता है। यदि तुम उसकी गिनती करते हो
> ईश्वर की कृपा है, आप उसकी गिनती कभी नहीं कर सकते।
> (14:32-34)

ये श्लोक बताते हैं कि कैसे सर्वशक्तिमान ईश्वर ने इस ब्रह्मांड को एक महल की तरह बनाया और कैसे इसे एक महल की तरह बनाया।
स्वर्ग और पृथ्वी हमारे लिए दो सेवकों की तरह हैं,
वह हमारी ज़रूरतों के लिए बारिश भेजता है। वे यह भी कहते हैं
उसने जहाजों को हमारे अधीन कर दिया है ताकि सभी
अन्यत्र उगाए गए फलों और अनाजों से लाभ उठाएं
और वे वस्तु विनिमय के माध्यम से अपनी आजीविका चला सकते हैं
उनकी उपज। दूसरे शब्दों में, उसने समुद्र बनाया,
हवाएँ, और पेड़ इस तरह से और इस तरह से
गुण जो हवा कोड़े के रूप में कार्य करते हैं, जहाज
घोड़े की तरह, और समुद्र रेगिस्तान की तरह।

जहाजों के माध्यम से हमें वैश्विक संबंध बनाने में सक्षम बनाने के अलावा, उसने विशाल नदियों को परिवहन का एक प्राकृतिक साधन बनाया। ऋतु-पुत्रों को लाने और उनमें उत्पन्न अपनी कृपाओं को प्रस्तुत करने के लिए

हमारे लिए, सच्चे वरदान दाता ने सूर्य को बनाया
और चाँद अपने मार्ग पर चला और उन्हें बनाया
दो आज्ञाकारी सेवकों या गाड़ी को चलाने वाले पहियों की तरह
विशाल घूमने वाली मशीन। उसने रात को नियुक्त किया है

एक लबादा, हमारे आराम और नींद के लिए एक आवरण, और दिन हमारी आजीविका कमाने का एक साधन है।

इन उपकारों को गिनाने के बाद कि उनका दायरा कितना विस्तृत है और उपकार अपने आप में कितने अनगिनत हैं, आयतें इस सारांश के साथ समाप्त होती हैं: वह तुम्हें वह सब देता है जो तुम उससे मांगते हो। अगर तुम ईश्वर की नेमतों को गिनोगे तो तुम उन्हें कभी गिन नहीं पाओगे। दूसरे शब्दों में, ईश्वर हमें वह सब कुछ देता है जो हम अपनी क्षमता और स्वाभाविक ज़रूरत के अनुसार मांगते हैं। उसके उपकार गिनती से परे हैं। अगर उन्हें आसमान और धरती, साथ ही सूरज और चाँद, रात और दिन के संदर्भ में पेश किया जाए, तो बेशक उन्हें गिनना असंभव है।

वाक्पटुता का सातवाँ प्रकटीकरण: यह दिखाने के लिए कि प्रत्यक्ष कारणों का संबंधित प्रभाव या परिणाम लाने में कोई रचनात्मक भूमिका नहीं होती है, कुरान कभी-कभी किसी चीज़ के अस्तित्व के उद्देश्यों और उसके द्वारा प्राप्त परिणामों को प्रस्तुत करता है। यह दर्शाता है कि अचेतन और निर्जीव कारण केवल प्रत्यक्ष आवरण हैं, और यह कि बहुत ही बुद्धिमान उद्देश्य और महत्वपूर्ण परिणाम केवल एक सर्वज्ञ और सर्वज्ञ व्यक्ति द्वारा ही चाहे जा सकते हैं और उनका पीछा किया जा सकता है।

उद्देश्यों और परिणामों का उल्लेख करके, कुरान कारण और परिणाम के बीच की बड़ी दूरी को दर्शाता है, भले ही हमारी आँखें हमें क्या बताती हों।

कारण, चाहे कितना भी बड़ा क्यों न हो, सबसे छोटा परिणाम उत्पन्न कर सकता है। इस प्रकार दिव्य नाम सितारों के रूप में प्रकट होते हैं और उन्हें एक दूसरे से जोड़ते हैं।

पर्वत शिखर क्षितिज पर आकाश से मिलते प्रतीत होते हैं, तथापि उनके बीच बहुत बड़ा अंतराल है जिसमें तारे उगते और डूबते हैं, तथापि कारणों और परिणामों के बीच की दूरी इतनी अधिक है कि इसे केवल विश्वास और कुरान की रोशनी के माध्यम से ही देखा जा सकता है।

• सूरत 'अबासा से:

> लोगों को भोजन पर ध्यान देना चाहिए कि हम खूब वर्षा करते हैं, फिर धरती को चीरते हैं, फिर उसमें अनाज उगाते हैं, अंगूर, हरी सब्ज़ियाँ, जैतून, खजूर, ऊँचे-ऊँचे वृक्षों से भरे बाग़, मेवे और चरागाहें, ताकि तुम्हारे और तुम्हारे चौपायों के लिए रोज़ी मिल सके। (80:24-32)

श्लोकों में सर्वप्रथम दैवी शक्ति के चमत्कार का उल्लेख है-

उद्देश्यपूर्ण क्रम में कार्यों को उनके प्रत्यक्ष कारणों के साथ व्यवस्थित करें, और फिर, आपके और आपके मवेशियों के लिए प्रावधान के माध्यम से, उनके पीछे के उद्देश्य की ओर ध्यान आकर्षित करें। फिर वे साबित करते हैं कि एक स्वतंत्र एजेंट है जो उस उद्देश्य का पीछा कर रहा है, उन सभी कारणों और परिणामों की श्रृंखला के साथ, और कारण केवल एक पर्दा है जो उसे स्पष्ट दृष्टि से छिपा रहा है।

उसी वाक्यांश के माध्यम से, छंद घोषणा करते हैं कि परिणाम लाने में भौतिक या प्राकृतिक कारणों की कोई रचनात्मक भूमिका नहीं होती है और इसका अर्थ है: “आपके और आपके मवेशियों के लिए आवश्यक पानी स्वर्ग से आता है। चूंकि यह आप पर और आपके मवेशियों पर दया नहीं कर सकता और इस तरह आपका भरण-पोषण नहीं कर सकता, यह अपने आप नहीं आता है; बल्कि, इसे नीचे भेजा जाता है। फिर पृथ्वी वनस्पतियों के बढ़ने और आपको भोजन प्रदान करने के लिए दरारों में फट जाती है। चूंकि असंवेदनशील, अचेतन पृथ्वी आपके प्रावधान पर विचार नहीं कर सकती या आप पर दया नहीं कर सकती, यह अपने आप नहीं फटती है; बल्कि, कोई आपके लिए वह 'दरवाजा' खोलता है और आपको आपका प्रावधान सौंपता है। चूंकि चरागाह और पेड़ आपकी प्रावधान के बारे में नहीं सोचते हैं या दया से आपके लिए फल और अनाज पैदा नहीं करते हैं, वे केवल धागे, रस्सी या केबल हैं जिन्हें एक सर्वज्ञ, सर्व-दयालु व्यक्ति पर्दे के पीछे से जीवों तक अपनी उदारता बढ़ाने के लिए फैलाता है। इस प्रकार अनेक दिव्य नाम जैसे कि सर्व दयालु, सर्व दयावान, सर्व प्रदाता, सर्व दानदाता, तथा सर्व तेजस्वी इन श्लोकों में प्रकट होते हैं, यद्यपि उनका उल्लेख नहीं किया गया है।

• सूरत अल-नूर से:

> क्या तुम नहीं देखते कि परमेश्वर बादलों को हलके से चलाता है, फिर उन्हें इकट्ठा करके ढेर बना देता है और काम पूरा कर देता है?

> उनके बीच का चक्र? फिर तुम देखते हो कि उनके बीच से वर्षा निकल रही है। वह आकाश से ओलों से भरे पहाड़ों को (बादलों जैसे) नीचे उतारता है, और
>
> जिस पर चाहता है उसे गिरा देता है, और जिस पर चाहता है उसे गिरा देता है वह चाहता है कि वह इसे दूसरी ओर मोड़ दे। उसकी बिजली की चमक लगभग सब कुछ छीन लेती है। भगवान इसे दूसरी ओर मोड़ देते हैं।
> रात और दिन। वास्तव में, इसमें अंतर्दृष्टि वाले लोगों के लिए एक सबक है। भगवान ने हर गतिशील प्राणी को बनाया है
> पानी का। उनमें से कुछ अपने पेट पर जाते हैं, कुछ पानी के नीचे जाते हैं।
> कुछ दो पैरों पर चलते हैं, और कुछ चार पैरों पर चलते हैं। भगवान ने बनाया जो चाहे वो करे। ईश्वर सब पर सर्वशक्तिमान है
>
> (24:43-45)

ये श्लोक एकत्रित बादलों से वर्षा करने के विचित्र दैवीय उपायों की व्याख्या करते हैं,

जो ईश्वरीय प्रभुत्व के सबसे महत्वपूर्ण चमत्कारों में से हैं और ईश्वर के ऊपर सबसे अधिक उत्सुक परदे हैं।

दया के दिव्य खजाने। जबकि बादल के परमाणु
वायुमंडल में बिखरे हुए हैं, वे भगवान के आदेश पर एक साथ आते हैं
और बादल बनाते हैं, ठीक उसी तरह जैसे एक बादल
तुरही की आवाज़ पर बिखरी हुई सेना इकट्ठी हो रही थी। फिर, अलग-अलग जगहों से आ रही छोटी-छोटी टुकड़ियाँ
सेना बनाने का निर्देश, भगवान बादलों में शामिल हो जाते हैं
एक साथ मिलकर एक विद्युत परियोजना को पूरा करना
उनके बीच सर्किट। वह उन ढेरों का कारण बनता है
बादल, बारिश या बर्फ या ओलों से भरे हुए, बरसना
पृथ्वी पर सभी जीवित प्राणियों तक जीवन का जल पहुँचाया।

बारिश अपने आप नहीं गिरती, बल्कि बारिश से मिलने के लिए भेजी जाती है।
कुछ उद्देश्यों और आवश्यकता के अनुसार।
वातावरण साफ है और बादल नहीं दिख रहे हैं,
पर्वत जैसे बादल, एक प्रभावशाली सभा की तरह एकत्रित होते हैं, क्योंकि जो जानता है
सभी जीवित प्राणियों और उनकी आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए उन्हें एक साथ लाता है और उनसे वर्षा करता है। ये घटनाएँ कई दिव्य नामों का सुझाव देती हैं: सर्वशक्तिमान, सर्वज्ञ,
सभी चीजों का निपटान करने वाला, सबकी व्यवस्था करने वाला, सबका पालन-पोषण करने वाला, सबकी सहायता करने वाला, तथा पुनर्जीवन देने वाला।

वाकपटुता का आठवाँ गुण: अपनी बात पर सहमत कराना
सर्वशक्तिमान परमेश्वर के अद्भुत कार्यों के प्रति हमारे हृदय में
परलोक की खोज और हमारी बुद्धि को उसकी पुष्टि के लिए तैयार करने के लिए,
कुरान कभी-कभी उसका उल्लेख करता है
दुनिया में आश्चर्यजनक कार्य। अन्य स्थानों पर, यह
उनके चमत्कारी कार्यों का वर्णन करता है
भविष्य और परलोक को इस प्रकार से देखना कि हम
किसी बात के कारण उनमें विश्वास है
जिनसे हम अपने जीवन में परिचित हैं।

• सूरह या सिन से:

> क्या मानवता इस बात पर गौर नहीं करती कि हमने उसे किस तरह से बनाया है?
> फिर भी मानवता एक स्पष्ट विरोधी है।
> मानवता ने हमारे लिए एक उपमा गढ़ी है और
> इसके निर्माण को भूल गए। यह पूछता है: "कौन पुनर्जीवित करेगा
> हड्डियाँ जब वे सड़ चुकी हों?" कह दो, "वह अवश्य ही

उनको पुनर्जीवित करो जिन्होंने उनको पहली बार उत्पन्न किया था।
वह सारी सृष्टि को जानता है, जिसने तुम्हारे लिए अग्नि बनायी है
हरे पेड़ से और देखो, तुम उसमें से आग जलाते हो।”
वह जिसने आकाशों और धरती को पैदा किया, वह इस पर समर्थ नहीं है
क्या वह उन जैसा कोई पैदा कर सकता है? हाँ, वह सर्वशक्तिमान है।
सृष्टिकर्ता, सर्वज्ञ, उसका आदेश, जब वह
किसी चीज़ की इच्छा करने के लिए उसे 'हो जाओ' कहना होता है और वह हो जाती है। इसलिए महिमा
उसी के हाथ में हर चीज़ की हुकूमत है और उसी की तरफ़ तुम लौटाए जाओगे।
(36:77-83)

इन आयतों में, कुरान सात या आठ तरीकों से पुनरुत्थान को साबित करता है। सबसे पहले, यह प्रस्तुत करता है
मानवता की पहली रचना और इसका अर्थ है: "आप एक शुक्राणु-बूंद के चरणों के माध्यम से बनाए गए हैं, आपकी माँ के गर्भ की दीवार पर लटकी हुई कोई चीज़,
चबाये हुए मांस का एक टुकड़ा, हड्डियाँ जैसी कोई चीज़
और मांसपेशियों के ऊतकों में हड्डियों का आवरण।
आप यह देख सकते हैं, आप दूसरे सृजन (पुनरुत्थान) को कैसे नकार सकते हैं, जो कि उससे भी आसान है
सबसे पहला?"

लोगों को उनके महान उपकारों की याद दिलाकर
उनमें से उसने तुम्हारे लिए आग बनाई है
हरे पेड़, सर्वशक्तिमान ईश्वर का अर्थ है: "वह जो
ऐसी कृपा करता है कि तुम्हें अपने हाल पर नहीं छोड़ता, कि तुम कब्र में जाकर पड़े रहो,
फिर से नहीं उठाया जाएगा।”

वह सुझाव देते हैं: “आप देखते हैं कि कैसे मृत या सूखे पेड़ पुनर्जीवित हो जाते हैं और हरे हो जाते हैं, तो आप कैसे मान सकते हैं क्या यह असंभव है कि लकड़ी जैसी हड्डियों को पुनर्जीवित किया जा सकेगा? फिर वही है जिसने आकाशों और धरती को पैदा किया क्या वह मनुष्यता, स्वर्ग और पृथ्वी का फल बनाने में असमर्थ है? क्या वह जो एक विशाल वृक्ष पर शासन करता है इसके फल को कोई महत्व न दें और इसे अपने हाल पर छोड़ दें क्या आपको लगता है कि वह मानवता को छोड़ देगा, सृष्टि के वृक्ष का परिणाम, अपने स्वयं के उपकरणों के लिए या दूसरों को, और इस प्रकार उस सृजन के वृक्ष को, जिसके सभी भाग बुद्धि से गूँथे गए हैं, ताकि बर्बाद हो जाएँ?”

फिर से उसका मतलब है: "वह जो पुनर्जीवित करेगा क़यामत के दिन तुम ऐसी हो कि सारा संसार सारा ब्रह्माण्ड उसके सामने एक आज्ञाकारी सैनिक की तरह है। यह उसकी आज्ञा 'हो जाओ' के प्रति पूर्ण आज्ञाकारिता के साथ समर्पित है, और यह हो जाता है। उसके लिए, वसंत का सृजन करना और फूल बराबर हैं। यह बिल्कुल अनुचित है उन्हें नपुंसक मानना और उनकी शक्ति को चुनौती देना तर्कहीन है, यह पूछकर कि 'कौन पुनर्जीवित करेगा' हड्डियां?'”

अतः उसकी महिमा हो, जिसके हाथ में सभी चीज़ों का प्रभुत्व है, कुरान संकेत देता है: "वह सब कुछ नियंत्रित करता है और उसके पास सभी चीज़ों की चाबियाँ हैं वह रात और दिन बदलता रहता है, और जीतता रहता है-

गर्मी और गर्मी, उतनी ही आसानी से जैसे किताब के पन्ने पलटना। वह इतना सर्वशक्तिमान है कि जैसे एक घर बंद करके दूसरा खोल देता है, वैसे ही वह इस दुनिया को बंद करके अगली दुनिया खोल देता है। इस तथ्य और इसके प्रमाणों को देखते हुए, तुम उसके पास वापस लौट जाओगे। वह सभी को पुनर्जीवित करेगा और उन्हें मस्टरिंग के स्थान पर इकट्ठा करेगा, जहाँ वह तुमसे दुनिया में रहते हुए तुम्हारे किए गए कामों का हिसाब माँगेगा।"

ऐसी आयतें किसी के मन और दिल को पुनरुत्थान को स्वीकार करने के लिए तैयार करती हैं, क्योंकि वे दिखाती हैं कि यह हमारे जीवन में आम चीज़ों से कैसे मिलता जुलता है। कुरान कभी-कभी परलोक में ईश्वर के कार्यों का इसी तरह से उल्लेख करता है ताकि हम सच्चाई देख सकें।

• क्रमशः सूरह तकवीर, इन्फितार और इंशिकाक से-

सक्रियता:

जब सूर्य मुड़ा हुआ होगा। (81:1)

जब आकाश फट जायेगा (82:1)

जब आकाश फट जायेगा (84:1)

इन सूराओं में, कुरान इस दुनिया के विनाश और महान सभा का वर्णन इस तरह से करता है जिसे हम समझ सकते हैं। हम वसंत और शरद ऋतु के दौरान और भूकंप और बड़े पैमाने पर होने वाली घटनाओं में इसी तरह की घटनाओं को देखते हैं।

तूफान, और इसलिए कुछ समझ हो सकती है
वर्णित घटनाएँ.

मैं उदाहरण के तौर पर एक श्लोक का उल्लेख करूंगा: जब पन्नों के रोल खुले रखे जाते हैं (81:10)।
आयत में कहा गया है कि क़यामत के दिन हर व्यक्ति को अपने कर्मों का लेखा-जोखा रखने वाले पन्नों की एक सूची दी जाएगी। यह समझना मुश्किल है कि क्या हुआ है।
हमें समझने की आवश्यकता है, यद्यपि हम घटनाओं के प्रत्यक्षदर्शी हैं
हर वर्ष होने वाली घटनाएँ, जैसे कि हर वसंत में मनाए जाने वाले सामान्य पुनरुत्थान के दौरान होती हैं, जो विश्व के विनाश और पुनरुत्थान के समान हैं।

हर फलदार वृक्ष या फूलदार पौधे में
कर्म, क्रियाएँ और कर्तव्य। इसकी पूजा का प्रकार
इसमें प्रकट दिव्य नामों को दर्शाया गया है।

इसके कर्म (अंकुरण से लेकर पुष्पित होने और फल देने तक का जीवन चक्र) इसके कर्मों में दर्ज हैं।
अगले वसंत में प्रदर्शित किए जाने वाले बीज
पृथ्वी। क्योंकि यह अपने स्रोत के कार्यों को स्पष्ट रूप से प्रदर्शित करता है
या इसकी उत्पत्ति जीभ के रूप और आकार में है, इसकी
शाखाएँ, टहनियाँ, पत्तियाँ, फूल और फल बिछे
उन कार्यों के पन्ने खोलो।

इस प्रकार जो हमारे सामने यह कार्य करता है
आँखें उसके नामों के प्रदर्शन के रूप में सर्वज्ञ, सर्व-संरक्षण, सर्व-व्यवस्था, सर्व-पालन, और
वह अत्यन्त सूक्ष्म है जो कहता है: जब पन्नो के रोल

अन्य बिंदुओं की तुलना इससे करें और समझें।

इसकी व्याख्या पर विचार करें: जब सूर्य को मोड़ दिया जाता है (81:1)। मोड़े जाने (जिसका अर्थ है “लुढ़का हुआ” या “लपेटा हुआ”) के शानदार रूपक के अलावा, यह श्लोक कई संबंधित घटनाओं की ओर संकेत करता है: सबसे पहले, गैर-अस्तित्व, आकाश और आकाश को क्रमशः पर्दे की तरह पीछे खींचकर, सर्वशक्तिमान ईश्वर ने अपनी दया के खजाने से एक शानदार दीपक (सूर्य) को प्रकाश में लाने और दुनिया को दिखाने के लिए लाया।

संसार के नष्ट हो जाने के बाद, वह उसे पुनः आवरण में लपेट देगा और हटा देगा।

दूसरा, सूर्य ईश्वर का एक अधिकारी है, जिसका कार्य अपने प्रकाश का प्रसार करना तथा संसार के सिर के चारों ओर प्रकाश और अंधकार को बारी-बारी से मोड़ना है।

प्रत्येक शाम वह अपना सामान इकट्ठा कर लेता है और छुपा लेता है।
कभी-कभी वह बहुत कम व्यापार करता है, क्योंकि बादल उसे ढक लेते हैं; कभी-कभी वह व्यापार करने से पीछे हट जाता है, क्योंकि चंद्रमा उसके चेहरे पर पर्दा डाल देता है और थोड़े, निश्चित समय के लिए उसका खाता-बही बंद कर देता है।

किसी समय यह अधिकारी अपने पद से इस्तीफा दे देगा।

भले ही इसके चेहरे पर दो काले धब्बे उगने के कारण इसे हटाने का कोई कारण न हो, जैसा कि वे उगने लगे हैं, सूर्य ईश्वर की आज्ञा का पालन करेगा

उस प्रकाश को वापस खींचने का आदेश जो वह भेजता है
धरती को अपने सिर पर लपेट ले। भगवान चाहेंगे
आदेश दें: "पृथ्वी के प्रति अब तुम्हारा कोई कर्तव्य नहीं है।
अब, नरक में जाओ और उन लोगों को जला दो, जिन्होंने तुम्हारी पूजा करके एक आज्ञाकारी अधिकारी का विश्वासघात के साथ अपमान किया, जैसे कि तुमने देवता होने का दावा किया हो।
अपने काले धब्बों वाले चेहरे पर, सूरज का अर्थ यह प्रदर्शित होता है: जब सूरज मुड़ा हुआ होता है।

वाक्पटुता का नौवां बिन्दु: कभी-कभी
बुद्धिमान कुरान एक विशेष उद्देश्य का उल्लेख करता है और,
हमारे मन को सार्वभौमिक दृष्टि से सोचने के लिए प्रेरित करना,
ईश्वरीय शक्ति के माध्यम से उस उद्देश्य की पुष्टि और स्थापना होती है
सार्वभौमिक नियमों के रूप में कार्य करने वाले नाम।

• सूरत अल-मुजादिला से:

> परमेश्वर ने उस स्त्री की बात सुन ली है जो
> अपने पति के बारे में आपसे बहस करती है और शिकायत करती है
> भगवान के पास जाओ। भगवान आपकी बातचीत सुनता है। भगवान है
> वह सब कुछ सुनने वाला, सब कुछ देखने वाला है। (58:1)

कुरान कहता है: "सर्वशक्तिमान ईश्वर सब कुछ सुनने वाला है।
वह अपने सत्य के नाम से एक पत्नी को आपसे बहस करते और अपने पति के बारे में शिकायत करते हुए सुनता है,
एक बहुत ही खास बात। एक महिला मनुष्यों के बीच सबसे दयालु है, और

देखभाल और कोमलता आत्म-बलिदान की ओर ले जाती है। इसलिए,

सर्वशक्तिमान ईश्वर अपनी दयालुता के कारण उसकी शिकायत सुनते हैं और अपने सत्य के नाम के माध्यम से इसे बहुत महत्वपूर्ण मानते हैं।”

किसी विशेष घटना से एक सार्वभौमिक सिद्धांत का निष्कर्ष निकालते हुए, जो व्यक्ति किसी विशेष, छोटी घटना को सुनता और देखता है, उसे सभी चीजें सुननी और देखनी होंगी।

जो व्यक्ति ब्रह्मांड पर प्रभुत्व का दावा करता है, उसे हर उस प्राणी की परेशानियों से अवगत होना चाहिए जिसके साथ अन्याय हुआ है और उसकी पुकार सुननी चाहिए। जो ऐसा नहीं कर सकता, वह भगवान नहीं हो सकता। इस प्रकार ईश्वर सब कुछ सुनने वाला और सब कुछ देखने वाला है, यह दो महान सत्यों को स्थापित करता है।

• सूरत अल-इसरा से:

> पवित्र है वह, जिसने अपने बन्दे को रातों-रात मस्जिदुल हराम से मस्जिदुल अक़्सा तक पहुँचाया, जिसके मुहल्ले को हमने बरकत दी, ताकि उसे अपनी निशानियाँ दिखाएँ। वह सब कुछ सुनने वाला, देखने वाला है। (17:1)

यह आयत पैगंबर के स्वर्गारोहण के पहले चरण से संबंधित है। वह पैगंबर या सर्वशक्तिमान ईश्वर को संदर्भित कर सकता है। यदि यह पैगंबर को संदर्भित करता है, तो इसका अर्थ है: "यह यात्रा एक व्यापक, एक सार्वभौमिक स्वर्गारोहण है। इसके दौरान, सबसे दूर की सीमा के लोटे-वृक्ष तक (जहाँ सृजित का क्षेत्र समाप्त होता है)

और दो धनुष की दूरी पर, उसने भगवान के संकेतों को सुना और देखा। दिव्य कला के अद्भुत कार्य उसकी आँखों और कानों के सामने दिव्य नामों की अभिव्यक्तियों की सार्वभौमिक डिग्री में प्रदर्शित किए गए थे। " इस प्रकार यह श्लोक इस यात्रा को एक सार्वभौमिक यात्रा की कुंजी के रूप में प्रस्तुत करता है।

यदि वह सर्वशक्तिमान ईश्वर को संदर्भित करता है, तो इसका अर्थ है: "अपने सेवक को यात्रा के अंत में अपनी उपस्थिति में प्रवेश करने और उसे एक कर्तव्य सौंपने के लिए, वह उसे मस्जिद अल-हरम से मस्जिद अल-अक्सा ले गया। उसने उसे पैगंबरों से मिलवाया, जो वहाँ एकत्र हुए थे। यह दिखाने के बाद कि वह सभी पैगंबरों के धर्मों के सिद्धांतों का उत्तराधिकारी है, उसने उसे अपने प्रभुत्व के क्षेत्रों में उनके सभी आंतरिक और बाहरी आयामों में, दो धनुष की लंबाई की दूरी तक यात्रा कराई।"

पैगम्बर एक सेवक हैं और ईश्वर की उपस्थिति में चढ़े हैं। लेकिन उनके साथ ब्रह्मांड से संबंधित एक भरोसा और एक प्रकाश था जो ब्रह्मांड का रंग बदल देगा। अनंत खुशी के द्वार खोलने की एक कुंजी भी थी।

इस प्रकार सर्वशक्तिमान परमेश्वर स्वयं को सुनने और सब कुछ देखने के गुणों के साथ वर्णित करता है ताकि विश्वास, प्रकाश और कुंजी के वैश्विक उद्देश्यों को दर्शाया जा सके।

• सूरह अल-फ़ातिर से:

> स्तुति हो ईश्वर की, जो आकाशों और धरती का सृजनहार है, जिसने फ़रिश्तों को दो, तीन या चार पंखों वाला संदेशवाहक नियुक्त किया है। वह अपनी इच्छानुसार सृष्टि में वृद्धि करता है।
> परमेश्ँवर सभी प्राणियों पर सामर्थी है। (35:1)

इस श्लोक का अर्थ है: "आकाश और पृथ्वी को सुशोभित करके और अपनी पूर्णता के कार्यों को दिखाकर, उनके राजसी निर्माता उनके असंख्य दर्शकों को उनकी असीम प्रशंसा और स्तुति करने के लिए प्रेरित करते हैं। उन्होंने उन्हें अनगिनत उपहारों से सजाया है ताकि आकाश और पृथ्वी सभी उपहारों और उन्हें प्राप्त करने वालों की भाषा में अपने सबसे दयालु निर्माता की अंतहीन प्रशंसा और महिमा करें।"

श्लोक यह भी दर्शाता है कि जिस महान ईश्वर ने पृथ्वी के सभी निवासियों को आवश्यक अंग, क्षमताएँ और पंख प्रदान किए हैं ताकि वे पूरी दुनिया में यात्रा कर सकें, और जिसने स्वर्गदूतों (स्वर्ग के निवासियों) को पंख प्रदान किए हैं ताकि वे सितारों के स्वर्गीय महलों और नक्षत्रों की ऊँची भूमियों में उड़ सकें और यात्रा कर सकें, वह सभी चीज़ों पर शक्तिशाली होना चाहिए। जिसने एक मक्खी को एक फल से दूसरे फल पर उड़ने के लिए और एक गौरैया को एक पेड़ से दूसरे पेड़ पर उड़ने के लिए पंख दिए हैं, वही वह है जिसने शुक्र से बृहस्पति और बृहस्पति से शनि तक उड़ने के लिए पंख दिए हैं।

इसके अलावा, पृथ्वी के निवासियों के विपरीत, स्वर्गदूतों को किसी विशेष सीमा तक सीमित नहीं किया जाता है या उन्हें किसी विशिष्ट सीमित स्थान तक सीमित नहीं किया जाता है। दो, तीन या चार के माध्यम से।
वह अपनी इच्छानुसार सृष्टि में वृद्धि करता है, आयत बताती है कि फ़रिश्ते एक ही समय में चार या उससे ज़्यादा सितारों पर मौजूद हो सकते हैं। इस प्रकार यह बताकर कि ईश्वर ने फ़रिश्तों को पंख दिए हैं (एक ख़ास घटना), क़ुरान एक सार्वभौमिक, जबरदस्त शक्ति की उत्पत्ति की ओर इशारा करता है और इसे इस सारांश के साथ स्थापित करता है: ईश्वर सभी चीज़ों पर शक्तिशाली है।

वाक्पटुता का दसवाँ बिंदु: कभी-कभी कुरान मानवता के विद्रोही कृत्यों का उल्लेख करता है और अपने सदस्यों को गंभीर धमकियों के साथ रोकता है। लेकिन लोगों को निराशा में न डालने के लिए, यह कुछ ईश्वरीय नामों के साथ समाप्त होता है जो उसकी दया की ओर इशारा करते हैं और उन्हें सांत्वना देते हैं।

• सूरत अल-शूरा से:

> कह दो, "यदि उसके अतिरिक्त कोई और पूज्य होते, जैसा कि वे कहते हैं, तो वे सिंहासन वाले रब के विरुद्ध कोई उपाय अवश्य खोजते।" वह पवित्र है और जो कुछ वे कहते हैं उससे कहीं अधिक उच्च है। सातों आकाश और धरती और जो कुछ उनमें है, सब उसकी स्तुति करते हैं। प्रत्येक वस्तु उसकी स्तुति करती है, किन्तु तुम उनकी स्तुति को नहीं समझते। वह अत्यन्त क्षमाशील, अत्यन्त क्षमाशील है। (17:42-44)

आयतों का अर्थ है: “कहो: 'यदि कोई देवता होते
उसकी संप्रभुता में उसके साथ, वे चाहते थे
सृष्टि पर उसके सम्पूर्ण शासन में हिस्सा मांगा।
इससे ब्रह्माण्ड में अव्यवस्था उत्पन्न हो जाती।
हालाँकि, सृष्टि का प्रत्येक भाग राजसी की महिमा करता है
उन नामों से जाना जाने वाला एक व्यक्ति
दिव्य नामों के शिलालेख प्रकट हुए
वे उसे किसी साझीदार से मुक्त घोषित करते हैं।
ठीक वैसे ही जैसे स्वर्ग उसे पवित्र और
अपने प्रकाश-प्रसार के माध्यम से उसकी एकता की गवाही देते हैं
सूर्य और तारों की दुनिया, साथ ही उनके माध्यम से
प्रदर्शित बुद्धि और व्यवस्था, वातावरण 'आवाज़' के माध्यम से उसे
महिमामंडित और पवित्र करता है
बादल और उसकी गड़गड़ाहट, बिजली और बारिश के शब्द।”

यह उसकी एकता की भी गवाही देता है। ठीक वैसे ही जैसे पृथ्वी अपने महान सृष्टिकर्ता की महिमा करती है और उसे अपना ईश्वर घोषित करती है।
पौधों और सजीव प्राणियों के अपने जीवित शब्दों के माध्यम से एक,
प्रत्येक पेड़ उसकी महिमा करता है और अपने पत्तों के शब्दों के माध्यम से
उसकी एकता की गवाही देता है,
फूल, और फल। इसी तरह, यहां तक कि सबसे छोटे
और सबसे विशेष प्राणी सर्वशक्तिमान की महिमा करता है, जिसके कई
नाम वह प्रदर्शित करता है
उनके शिलालेखों के माध्यम से, जो उस पर अंकित हैं, और उसकी एकता की
गवाही देते हैं।

आयतों में कहा गया है कि मानवता ही मुद्दा है और
ब्रह्माण्ड का परिणाम, उसका नाजुक फल जो
परमेश्वर के नाम पर पृथ्वी पर शासन करने का सम्मान दिया गया है।
हालाँकि, अविश्वासी और जो लोग
ईश्वर के साथ भागीदार (भले ही ब्रह्मांड एक स्वर से अपने राजसी निर्माता की महिमा करता है, उसकी एकता की गवाही देता है, और पूर्ण आज्ञाकारिता में पूजा करता है) एक ऐसा घिनौना काम करता है जो दंड के योग्य है। ताकि ऐसे लोग निराशा में न पड़ें,

सर्वशक्तिमान परमेश्वर उन्हें देता है
पुनर्विचार करने का समय आ गया है ।
वह सदैव क्षमाशील है, वह दरवाज़ा खुला छोड़ देता है
पश्चाताप और क्षमा की आशा के लिए।

छंदों के अंत में सारांश दिए गए हैं
मार्गदर्शन के अनेक पहलू और चमत्कारों की झलकियाँ। यहाँ तक कि वाक्पटुता के महानतम प्रतिभाशाली व्यक्ति भी
कुरान की प्रामाणिकता से आश्चर्यचकित हो गए हैं
रूपों और, निष्कर्ष यह है कि यह एक मानव नहीं हो सकता
मूल, पूर्ण निश्चय के साथ विश्वास किया है कि
यह एक रहस्योद्घाटन है। बिंदुओं के साथ
और गुण जो पहले ही बताए जा चुके हैं, अन्य श्लोक
इसमें और भी कई गुण हैं, जैसे कि
"अंधे" अपने चमत्कारी प्रभाव को देख सकते हैं
व्यवस्था।

तीसरी किरण

कुरान की तुलना अन्य किसी भी ग्रंथ से नहीं की जा सकती। शब्द और भाषण, क्योंकि भाषण की विभिन्न श्रेणियाँ हैं। श्रेष्ठता, शक्ति,

सुंदरता और उत्कृष्टता के लिए, वाणी के चार स्रोत हैं:
वक्ता, संबोधित व्यक्ति, उद्देश्य, और
जब यह बोला जाता है। इसका स्रोत केवल अवसर नहीं है, जैसा कि कुछ साहित्यिक लोगों ने गलत अनुमान लगाया है। इसलिए केवल भाषण पर ही विचार न करें।

चूँकि वाणी अपनी शक्ति और सुन्दरता प्राप्त करती है
इन चार स्रोतों से, यदि कुरान के स्रोत
ध्यानपूर्वक अध्ययन किया जाए तो उसकी वाक्पटुता का स्तर,
श्रेष्ठता और सुंदरता को समझा जाएगा।
भाषण को पहले वक्ता के अनुसार माना जाता है, यदि यह आदेश और निषेध के रूप में है तो इसमें इच्छा और शक्ति होती है जो कि वक्ता के आनुपातिक होती है।
वक्ता का पद। तब यह अनूठा हो सकता है
और बिजली की तरह प्रभाव पड़ता है, जिससे वृद्धि होती है
श्रेष्ठता और शक्ति.

• क्रमशः सूरह हूद और फ़स्सिलात से:

> हे पृथ्वी, अपना जल निगल जा और हे आकाश, अपना जल रोकना।
> बारिश! (11:44)

> हे स्वर्ग। हे पृथ्वी। तुम दोनों आओ, स्वेच्छा से या
> उन्होंने कहा, "हम आज्ञाकारी होकर आये हैं।" (41:11)

इसका अर्थ है: "हे स्वर्ग और पृथ्वी, स्वेच्छा से या अनिच्छा से आओ, और अपने आप को उसके अधीन कर दो
मेरी बुद्धि और शक्ति। अस्तित्वहीनता से बाहर आओ और उन स्थानों के रूप में प्रकट हो जहाँ मेरे कार्य हैं
कला का प्रदर्शन किया जाएगा।" उन्होंने उत्तर दिया: "हम पूर्ण आज्ञाकारिता में आए हैं। आपकी अनुमति से हम इसे पूरा करेंगे
और शक्ति, सभी कर्तव्य जो आपने हमें सौंपे हैं।"

उन सम्मोहक आदेशों की उदात्तता और बल पर विचार करें जिनमें अदम्य शक्ति है
और इच्छाशक्ति, और हमारे द्वारा दिए गए आदेशों के बारे में सोचें
निर्जीव वस्तुओं के प्रति: "हे पृथ्वी, रुक जाओ। हे स्वर्ग, टुकड़े-टुकड़े हो जाओ। हे संसार, स्वयं को नष्ट कर लो।" क्या
ऐसे आदेशों की तुलना उसके आदेशों से कैसे की जा सकती है?
हमारी इच्छाओं और असंवेदनशील आदेशों की तुलना की जाए
एक सर्वोच्च शासक के बाध्यकारी आदेशों के साथ
क्या आपमें शासकत्व के सभी आवश्यक गुण हैं?

एक सर्वोच्च कमांडर के मार्च करने के बाध्यकारी आदेश से लेकर एक शक्तिशाली,
आज्ञाकारी सेना, और एक साधारण निजी की
कमांडर और प्राइवेट के बीच का अंतर उतना ही बड़ा है। आदेशों की ताकत और श्रेष्ठता पर विचार करें: उनका आदेश, जब वह

जो कोई चीज़ चाहे, तो उससे कह दे, "हो जा" और वह हो जाती है (36:82),
और जब हमने फ़रिश्तों से कहा, "आदम को सजदा करो" (2:34) और मानवीय आदेश दिए।

और देखें कि क्या उनके बीच अंतर है

जुगनू और सूरज के बीच जैसा नहीं।

विचार करें कि महारथी अपने काम का वर्णन किस प्रकार करते हैं

ऐसा करते समय कलाकार अपनी कलात्मकता को किस प्रकार समझाते हैं काम करते समय परोपकारी लोग अपनी अच्छाई की चर्चा कैसे करते हैं। हम उनके संयुक्त कार्यों और शब्दों का परिणाम देखते हैं। अगर वे कहते हैं कि उन्होंने अच्छा किया है

एक निश्चित तरीके से और एक निश्चित उद्देश्य के लिए किया गया है, और जिस तरह से इसे किया जाना चाहिए, आप देख सकते हैं

बिना किसी कार्रवाई के केवल शब्दों से इसका अंतर।

• सूरह क़ाफ़ से:

> क्या उन्होंने अपने ऊपर आकाश को नहीं देखा,
> हमने इसे बनाया और सजाया? इसमें कोई दरार नहीं है। धरती हमने फैलाई है, और मजबूती से फेंकी है
> वहाँ पहाड़ियाँ बनाई हैं, और हर तरह की मनमोहक चीज़ें बनाई हैं
> उस पर आगे बढ़ना। यह अंतर्दृष्टि और प्रतिबिंब का विषय है,
> और हर सेवक के लिए एक शिक्षा और अनुस्मारक है जो
> हम हमेशा पश्चाताप और पूजा में भगवान की ओर मुड़ते हैं।
> आकाश से धन्य जल बरसाओ जिससे हम
> बगीचों को बढ़ाओ और फसलों को अनाज दो, और
> ऊंचे खजूर के पेड़ और उनके गुच्छे। प्रावधान
> बन्दों के लिए और इसके द्वारा हम मुर्दे को जिला देते हैं
> इसी प्रकार मरे हुओं का भी जिलाया जाना होगा। (50:6-11)

छंदों में वर्णन इस प्रकार है,

उत्तम वाक्पटुता, पुनरुत्थान के कई प्रमाण संघ के अवलोकनीय भाग से प्राप्त हुए हैं

आयत, जो कि क्रियान्वित है। इस प्रकार मृतकों का पुनरुत्थान होगा, के साथ समापन करके वे उन लोगों को चुप करा देते हैं जिनके बारे में सूरा कहता है कि वे पुनरुत्थान से इनकार करते हैं। यह लोगों की उन घटनाओं की चर्चा से कितना अलग है जिनसे उनका कोई लेना-देना नहीं है।

असली और प्लास्टिक के फूलों के बीच का अंतर इससे कहीं ज़्यादा है। मैं इन आयतों की बहुत ही संक्षेप में व्याख्या करूँगा।

सूरा की शुरुआत काफ़िरों द्वारा क़यामत के इनकार से होती है। उन्हें इसकी सच्चाई का यकीन दिलाने के लिए सूरा पूछता है: "क्या तुम नहीं देखते कि हमने इस व्यवस्थित और भव्य आकाश को कैसे बनाया; कैसे हमने इसे सूर्य, चंद्रमा और सितारों से सजाया, जिसमें कोई दरार नहीं है; कैसे हमने तुम्हारे लिए धरती को फैलाया और कितनी बुद्धिमत्ता से इसे सुसज्जित किया? उस पर पहाड़ स्थापित करके, हम इसे समुद्र के आक्रमण से बचाते हैं। क्या तुम नहीं देखते कि हमने इस पर विभिन्न प्रकार की बहुरंगी और सुंदर वनस्पतियों और चारागाहों के जोड़े बनाए और फिर उनसे धरती को सजाया; कैसे हमने आकाश से बरकत वाला पानी भेजा ताकि उसमें बाग़ और बाग़ उग सकें, साथ ही अनाज और खजूर जैसे ऊँचे पेड़ स्वादिष्ट फल दे सकें, जिनसे हम अपने बंदों को रोज़ी देते हैं; कैसे हम उस पानी से मृत मिट्टी को जीवित करते हैं और हज़ारों उदाहरण लाते हैं

"क्या तुम जानते हो कि तुम जीवित हो? जिस तरह हम मृत पृथ्वी पर वनस्पति उगाते हैं, उसी तरह हम तुम्हें क़यामत के दिन जीवित करेंगे, जब पृथ्वी मर जाएगी और तुम उसमें से जीवित निकलोगे!"

पुनरुत्थान को प्रमाणित करने वाली इन आयतों में प्रदर्शित वाक्पटुता कितनी उत्कृष्ट है, तथा उन शब्दों से कितनी श्रेष्ठ है जिनका प्रयोग हम किसी दावे को सिद्ध करने के लिए करते हैं!

कुरान की चमत्कारिकता के बारे में अविश्वासियों को आश्वस्त करने के लिए वस्तुनिष्ठ तर्क और सत्यापन के प्रयोग का समापन करते हुए, मैं सत्य के नाम पर इसकी अतुलनीय स्थिति की ओर संकेत करता हूँ।

कुरान से तुलना करने पर, अन्य सभी शब्द वास्तविक तारों की तुलना में कांच में तारों के छोटे प्रतिबिंबों की तरह हैं। वास्तव में, मानव मन अपने विचारों और भावनाओं के दर्पणों में जो अर्थ चित्रित करता है, वह कुरान के शब्दों से कितना दूर है, जिनमें से प्रत्येक एक अपरिवर्तनीय सत्य का वर्णन करता है!

कुरान के फ़रिश्ते जैसे जीवन देने वाले शब्दों, सूर्य और चंद्रमा के निर्माता के शब्द, जो मार्गदर्शन के प्रकाश को भी फैलाते हैं, और आत्माओं को मोहित करने वाले और वासना को भड़काने वाले प्रभावित व्यवहारों से उत्पन्न चुभने वाले शब्दों के बीच कितनी दूरी है!

कुरान की तुलना में हमारे शब्द फ़रिश्तों की तुलना में डंक मारने वाले कीड़ों के समान हैं

और अन्य चमकदार आत्मिक प्राणी। यह महज एक दावा नहीं है; बल्कि, जैसा कि अब तक लिखे गए द वर्ड्स में हमारी चर्चाओं से स्पष्ट है , यह सबूतों पर आधारित निष्कर्ष है।

हमारे शब्द, जो कल्पनाओं और कल्पनाओं से भरे हैं, कुरान के शब्दों और वाक्यांशों से कितने दूर हैं। यह शाश्वत ईश्वरीय संबोधन, जो परम दयालु के सर्वोच्च सिंहासन से उत्पन्न हुआ, मानवता को अन्य सभी प्राणियों से श्रेष्ठ एक स्वतंत्र प्राणी के रूप में ध्यान में रखते हुए आया, और ईश्वर के ज्ञान, शक्ति और इच्छा पर आधारित है। प्रत्येक शब्द और कथन मार्गदर्शन के मोती और विश्वास की सच्चाइयों का स्रोत है, साथ ही एक इस्लामी सिद्धांत की खान भी है। हमारे परिचित शब्दों और कुरान के बीच कितनी बड़ी दूरी है।

एक धन्य वृक्ष की तरह जिसके नीचे ब्रह्मांड

झूठ के बावजूद, कुरान ने सभी इस्लामी आध्यात्मिक मूल्यों और नैतिक पूर्णता, सार्वजनिक प्रतीकों और नियमों, सिद्धांतों और आदेशों के पत्ते पैदा किए हैं। यह संतों और संतों के फूलों में फूट पड़ा है।

विद्वानों को शुद्ध किया, और दिव्य सत्यों, सृष्टि के दिव्य नियमों और ब्रह्मांड के संचालन से संबंधित सच्चाइयों और वास्तविकताओं के फल उत्पन्न किए, और फलों की गुठली जो आचरण के सिद्धांतों और व्यावहारिक जीवन के कार्यक्रमों के रूप में “वृक्ष” के रूप में विकसित हुई हैं।

प्रत्येक व्यक्ति और भूमि को इससे लाभ मिला है।
कुरान ने 14 शताब्दियों तक सत्य के अनमोल रत्नों का प्रदर्शन किया। उस दौरान, न तो बहुत अधिक परिचितता थी, न ही इसकी सत्यता की अधिकता थी, न ही समय की कमी थी।
न तो मार्ग और न ही महान परिवर्तन और उथल-पुथल
मानव जीवन ने लोगों को इसके प्रति उदासीन बना दिया है
अमूल्य सत्य और बढ़िया, प्रामाणिक शैलियाँ।
इन चीजों को नुकसान पहुंचाया गया है या उनका मूल्य कम कर दिया गया है, या इसकी सुंदरता और ताज़गी समाप्त हो गई। यह अपने आप में चमत्कारी है।

यदि कोई यह दावा करता है कि उसने
कुरान की समानता, कुछ कुरानिक की व्यवस्था की
सत्य को एक पुस्तक में शामिल किया और दावा किया कि
कुरान जैसी किसी किताब के बारे में, यह कुछ इस प्रकार होगा
निम्नलिखित:

मान लीजिए कि एक कुशल बिल्डर ने एक शानदार इमारत बनाई विभिन्न रत्नों से बना महल, सभी सममित तरीके से बनाए गए हैं, और आनुपातिक रूप से इसे अलंकृत किया गया है
प्रत्येक रत्न की स्थिति और महल का सामान्य डिज़ाइन।
अब कल्पना कीजिए कि एक साधारण वास्तुकार, यह जानते हुए भी कि महल के आभूषण, डिज़ाइन और अलंकरण में से कुछ भी नहीं, इसमें घुस गया और मास्टर बिल्डर के काम को नष्ट कर दिया ताकि यह एक साधारण इमारत जैसा दिखे। मान लीजिए कि यह व्यक्ति इस पर कुछ मोती लटकाता है
जो बच्चों को खुश करता है, और फिर कहता है: “देखो! मैं हूँ

मूल निर्माता से अधिक कुशल और अधिक धन और अधिक मूल्यवान आभूषणों वाला।"

क्या कोई ऐसे बेतुके दावे को गंभीरता से लेगा?

तीसरी रोशनी

इसमें तीन किरणें होती हैं।

पहली किरण

कुरान की चमत्कारिकता का एक महत्वपूर्ण पहलू तेरहवें वचन में समझाया गया है। मैं इसका उल्लेख यहाँ भी कर रहा हूँ, क्योंकि संदर्भ ऐसा करना उचित बनाता है।

यह देखने और सराहने के लिए कि कैसे कुरान की प्रत्येक आयत चमत्कार और मार्गदर्शन का प्रकाश फैलाकर अविश्वास के अंधकार को दूर करती है, अपने आप को इस्लाम-पूर्व अरब में कल्पना करें। अज्ञानता के उस समय और बर्बरता के उस रेगिस्तान में, सब कुछ बेजान पर्दों में ढका हुआ था और अज्ञानता और असावधानी के अंधेरे के बीच प्रकृति थी।

अचानक, आप कुरान की शानदार भाषा से ऐसी आयतें सुनते हैं: आकाश और पृथ्वी में जो कुछ भी है, वह ईश्वर की स्तुति करता है, जो सर्वोच्च, सर्व-पवित्र, सर्वशक्तिमान, सर्व-ज्ञानी है (62:1)। देखें कि कैसे दुनिया के बेजान या सोए हुए जीव जीवन में आ जाते हैं।

परमेश्वर की महिमा की ध्वनि सुनकर श्रोताओं के मन में क्या विचार आते हैं, वे कैसे जागते हैं, उठते हैं, और परमेश्वर के नामों का उल्लेख करके उसका गुणगान करना शुरू करते हैं।

इस ध्वनि पर: सातों स्वर्ग और पृथ्वी उसकी महिमा करते हैं (17:44), उस काले आकाश में तारे, जिनमें से प्रत्येक अग्नि का एक ठोस टुकड़ा है, और पृथ्वी के प्राणी श्रोताओं के लिए आकाश को मुँह की तरह प्रस्तुत करते हैं; और तारे, जिनमें से प्रत्येक ज्ञान-प्रदर्शन करने वाले शब्द, सत्य दिखाने वाले प्रकाश की तरह है; और पृथ्वी भूमि और समुद्र के साथ एक सिर की तरह है, जिनमें से प्रत्येक एक जीभ है; और सभी जानवर और पौधे महिमा के शब्दों के रूप में। यदि आप प्रत्येक पद को वर्तमान संदर्भ में और एक "आधुनिक" दृष्टिकोण से देखते हैं,36 यदि आप इसे परिचितता के सतही आवरण से देखते हैं, तो आप न तो यह देख पाएंगे कि प्रत्येक पद चमत्कारीपन की मधुर धुन में किस तरह का अंधकार दूर करता है और न ही इसके चमत्कारीपन के इस पहलू की सराहना करेंगे।

यदि आप कुरान की चमत्कारिकता के उच्चतम स्तर को देखना चाहते हैं, तो निम्नलिखित दृष्टांत पर विचार करें:

[36] दूसरे शब्दों में, प्रत्येक ने अपने प्रकटीकरण के बाद से अपना प्रकाश फैलाया है, और इसकी विषय-वस्तु बहुत पहले ही ज्ञात चीजों में शामिल हो चुकी है, क्योंकि बहुत पहले ही कुरान के "सूर्य" और इस्लाम के प्रकाश द्वारा अज्ञानता के घने अंधकार को दिन के उजाले में बदल दिया गया है।

कल्पना कीजिए कि एक विशाल, फैला हुआ पेड़ अदृश्य के पर्दे के नीचे छिपा हुआ है। इसके सभी अंगों के बीच एक रिश्ता, सामंजस्य और संतुलन है, ठीक वैसे ही जैसे मानव शरीर के अंगों के बीच होता है। प्रत्येक अंग पेड़ की प्रकृति के अनुसार एक रूप और आकार ग्रहण करता है। अगर कोई उस छिपे हुए पेड़ के बिल्कुल अनुरूप एक चित्र बनाए, जिसमें प्रत्येक भाग को उसका सटीक आकार और रूप दिया जाए, साथ ही मूल में दिखाई देने वाले बिल्कुल समान संबंध और अनुपात दिए जाएं, तो कोई भी संदेह नहीं कर सकता कि कलाकार अदृश्य को भेदने वाली नज़र से छिपे हुए पेड़ को देखता और चित्रित करता है।

इसी तरह, कुरान की चीज़ों की वास्तविकता के बारे में दी गई व्याख्याओं का खंडन नहीं किया जा सकता। यह सृष्टि के वृक्ष को दुनिया की शुरुआत से लेकर परलोक की सबसे दूर की सीमाओं तक फैला हुआ बताता है, जो धरती से लेकर ईश्वरीय सिंहासन तक और परमाणुओं से लेकर सूर्य तक फैला हुआ है। यह सभी भागों के बीच अनुपात को इस हद तक बनाए रखता है, और प्रत्येक भाग और फल को इतना उपयुक्त रूप देता है कि सभी सटीक और सत्य की खोज करने वाले विद्वानों ने निष्कर्ष निकाला है: "भगवान ने जो चमत्कार चाहा है। भगवान उसे आशीर्वाद दें। हे बुद्धिमान कुरान, केवल तुम ही सृष्टि के रहस्य को सुलझा सकते हो।"

आइए हम परमेश्वर के नामों और गुणों, साथ ही उसके प्रभुत्व के कार्यों को समय और स्थान में अनंत काल तक फैले हुए प्रकाश के एक महान वृक्ष के रूप में प्रस्तुत करें। इसमें शामिल है

अनंत काल से एक अंतहीन विशाल क्षेत्र में क्रियाएँ, साथ ही एक अंतहीन विशाल क्षेत्र में क्रियाएँ
से: वह मानवता और व्यक्ति के हृदय के बीच आता है (8:24), बीज-अनाज को अलग करने वाला
और खजूर का पत्थर (6:95), और वह तुम्हें आकार देता है
गर्भों को जैसा वह चाहे (3:6) और आकाश को
अपने दाहिने हाथ में लपेटे हुए (39:67), उसने बनाया
उसने आकाशों और धरती को छः दिन में वश में कर लिया... और उसने सूर्य और चन्द्रमा को भी वश में कर लिया (7:154)

बुद्धिमान कुरान उस उज्ज्वल वास्तविकता का वर्णन करता है, उन नामों और विशेषताओं की सच्चाई भी
उन कृत्यों के सभी पहलुओं और

परिणाम, इतने सामंजस्यपूर्ण और उचित रूप से कि कोई भी वस्तु किसी अन्य के आदेश को बाधित या अमान्य करती है। वे सभी लोग जिन्होंने चीजों की वास्तविकता को समझा है और छिपे हुए सत्य की खोज की, और सभी ऋषियों ने आंतरिक आयाम के दायरे में यात्रा की
चीजों ने इस विवरण की घोषणा की है: "महिमा भगवान के लिए हो। कितना सही, वास्तविकता के साथ कितना अनुरूप, कितना सुंदर, कितना उपयुक्त।

विश्वास के छह स्तंभों पर विचार करें, जो हैं दो शक्तिशाली वृक्षों की एक शाखा की तरह - आकस्मिकता (भौतिक अस्तित्व) और क्षेत्र आवश्यकता (ईश्वरीय अस्तित्व) की। कुरान उस शाखा के सभी भागों का वर्णन करता है।

सभी भागों का सामंजस्य इतना संतुलित और सुव्यवस्थित है कि मानव मन उसे समझ नहीं सकता।
बल्कि, वह इसकी सुंदरता पर आश्चर्यचकित है। कुरान
पांचों के बीच एक सुंदर अनुपात, उत्तम संबंध और पूर्ण संतुलन स्थापित किया है
इस्लाम के स्तंभ (जो शाखा की टहनी की तरह हैं)
विश्वास का), बेहतरीन विवरणों के बीच (जैसे, कम से कम
अच्छे आचरण) और सबसे दूर के उद्देश्यों के बीच, और
सबसे गहन ज्ञान और सबसे छोटा ज्ञान
फल.

सही क्रम, संतुलन, अनुपात और
शरिया में देखी गई सुदृढ़ता, जिसकी उत्पत्ति
सर्वव्यापक कुरान के अकाट्य आदेशों, साथ ही इसके कथनों के द्वितीयक अर्थों, संकेतों और संकेतों से,

एक अकाट्य, निर्णायक प्रमाण और एक न्यायसंगत, निर्विवाद
उस अनुपात, संतुलन, व्यवस्था और
सुदृढ़ता.

इस प्रकार इसका स्पष्टीकरण नहीं दिया जा सकता
किसी के आंशिक ज्ञान पर विश्वास न करें, खासकर एक अशिक्षित व्यक्ति पर। बल्कि, वे एक सर्वव्यापी ज्ञान से निकले हैं और वे ईश्वर के वचन हैं।
वह जो सभी चीजों को एक साथ देख सकता है
चीज़ और एक साथ सभी सत्यों का निरीक्षण करें
दो अनंत काल। स्तुति हो ईश्वर की जिसने भेजा है

इसी बात को लेकर उसने अपने बन्दे के लिए किताब उतारी है और उसमें कोई कुटिलता नहीं छोड़ी है। (18:1)

दूसरी किरण

बारहवें और अन्य शब्दों पर क्या चर्चा की गई

मानव दर्शन कुरान की बुद्धिमता से किस हद तक कमतर है। यहाँ हम उनकी तुलना दूसरे नज़रिए से करते हैं।

दर्शन और विज्ञान अस्तित्व को स्थायी मानते हैं और जीवों की प्रकृति और गुणों पर विस्तार से चर्चा करते हैं। यदि वे अपने निर्माता के प्रति अपने कर्तव्यों का उल्लेख करते भी हैं, तो वे बहुत ही संक्षिप्त रूप से करते हैं, जैसे कि वे ब्रह्मांड की पुस्तक के केवल डिजाइन और अक्षरों पर चर्चा करते हैं और उसके अर्थ को अनदेखा करते हैं। लेकिन चूँकि कुरान अस्तित्व को क्षणभंगुर, गतिशील, भ्रामक, अस्थिर और परिवर्तनशील मानता है, इसलिए यह सभी प्राणियों की प्रकृति और बाहरी, भौतिक गुणों का बहुत ही संक्षिप्त रूप से उल्लेख करता है और अपने निर्माता द्वारा उन्हें सौंपे गए पूजा के कर्तव्यों, उनके नामों को प्रकट करने के तरीकों और ब्रह्मांड के निर्माण और संचालन के दिव्य नियमों के प्रति उनके समर्पण को विस्तार से बताने में बहुत समय व्यतीत करता है। इस प्रकार, सत्य और असत्य में अंतर करने के लिए, हमें मानवीय दर्शन और दर्शन के बीच के अंतरों को देखना चाहिए-

संक्षेपण और विस्तार से संबंधित कुरानिक ज्ञान और ज्ञान।

चाहे घड़ी बाहर से कितनी भी स्थिर, स्थिर और स्थिर क्यों न दिखाई दे, लेकिन सार रूप में और भीतर से वह निरंतर गतिशील अवस्था में होती है। इसी तरह दुनिया, जो ईश्वरीय शक्ति की एक विशाल घड़ी है, निरंतर परिवर्तन और उथल-पुथल में निरंतर घूमती या घूमती रहती है। रात और दिन की इसकी दो "सुइयां" इसके सेकंड के बीतने को दर्शाती हैं, और साल और सदियों की इसकी "सुइयां" इसके मिनट और घंटे के बीतने को दर्शाती हैं। समय दुनिया को क्षय की लहरों में डुबो देता है और अतीत और भविष्य को अस्तित्वहीन बनाकर केवल वर्तमान के लिए अस्तित्व की अनुमति देता है।

अंतरिक्ष के संबंध में भी दुनिया बदल रही है और अस्थिर है। इसका वायुमंडल तेजी से बदल रहा है, दिन में कई बार बादलों से भर रहा है और बादलों से हट रहा है और मौसम संबंधी परिवर्तन प्रदर्शित कर रहा है। ऐसी गतिविधि सेकंड के बीतने के अनुरूप है। पृथ्वी, दुनिया की तलहटी, जीवन और मृत्यु के चक्रों और वनस्पतियों और जानवरों के माध्यम से निरंतर परिवर्तन से गुजरती है। ऐसे चक्र मिनटों के बीतने के अनुरूप हैं और दुनिया की क्षणभंगुरता को प्रदर्शित करते हैं।

इस तरह के चक्र पृथ्वी के आंतरिक भाग में पाए जा सकते हैं, जहाँ कंपन और उथल-पुथल के कारण भूकंप और पृथ्वी का उद्भव और अवतलन जैसी घटनाएँ होती हैं।

पहाड़ों की। ये घंटे की सुई की तरह हैं जो दुनिया की नश्वरता को दर्शाती हैं। आकाश में आकाशीय पिंडों की हलचल (दुनिया की छत), धूमकेतुओं और नए तारों का दिखना जबकि कुछ अन्य

सूर्य और चंद्र ग्रहण भी समाप्त हो जाते हैं, यह प्रदर्शित करें कि यह स्थिर नहीं है और इसलिए अंतिम विनाश की ओर बढ़ रहा है। हालाँकि धीमी गति से इसके परिवर्तन हैं, वे यह भी दिखाते हैं कि दुनिया है नश्वर है और अपने अपरिहार्य अंत की ओर बढ़ता है।

वे "स्तंभ" जिन पर यह दुनिया बनी है इसे लगातार हिलाते रहें। जब सम्मान के साथ विचार किया जाता है अपने निर्माता के लिए, जिसकी गतिविधियाँ और परिवर्तन दैवी शक्ति की गतिविधियों के परिणाम कलम से लिखी जाती है सनातन-प्रार्थना की गलतियाँ, यह संसार और इसके परिवर्तन कार्य करते हैं हमेशा नवीनीकृत या हमेशा पॉलिश किए गए दर्पण के रूप में सभी अलग-अलग पहलुओं में दिव्य नामों की अभिव्यक्तियों को प्रतिबिंबित करते हैं। इस प्रकार, जब संबंध में विचार किया जाता है स्वयं एक भौतिक, निर्मित इकाई होने के नाते, विश्व लगातार ऐंठन होती है और क्षय की ओर बढ़ती है और मौत।

यद्यपि संसार बहते पानी की तरह बहता है, असावधानी ने उसे जमा दिया है और (दार्शनिक) प्रकृतिवाद ने उसे इतना ठोस बना दिया है कि वह एक परदा बन गया है जो व्यक्ति को परलोक को छुपा देता है तथा उसे भूलने पर मजबूर कर देता है।

दर्शनशास्त्र आधुनिक वैज्ञानिक विचारों से पोषित होता है
और भ्रष्ट आधुनिक सभ्यता द्वारा समर्थित
आकर्षक मनोरंजन और मादक इच्छाएँ
यह लोगों में जागृति पैदा करता है। ऐसी चीजें दुनिया को
इससे वह अधिक गन्दला हो जाता है और उसका ठोसपन बढ़ जाता है,
जिसके कारण लोग सृष्टिकर्ता और परलोक को भूल जाते हैं।

इस तरह की आयतों के माध्यम से: विपत्ति। क्या है
विपत्ति? (101:1-2); जब अपरिहार्य घटना
(56:1) और पहाड़ और पवित्रशास्त्र की यह शपथ कि
(५२:१-२) कुरान इस दुनिया को चकनाचूर कर देता है
और इसे ऊन की तरह तानता है। इस तरह के छंदों के माध्यम से:
क्या उन्होंने प्रभुत्व और आंतरिक पर विचार नहीं किया है
आकाश और धरती का क्या पहलू है? (7:185)
तब उन्होंने अपने ऊपर आकाश को नहीं देखा, कि कैसे
और हमने ही उसे बनाया है? (50:6) और क्या इनकार करनेवालों को मालूम
नहीं था कि आकाश और धरती एक ही चीज़ के हैं?
फिर हमने उन्हें एक ही टुकड़ा कर दिया? (21:30)
वह दुनिया पारदर्शिता प्रदान करती है और इसकी गन्दगी दूर करती है। अपने
चमकीले, प्रकाश फैलाने वाले "तारों" के माध्यम से:
परमेश्वर आकाश और पृथ्वी का प्रकाश है (24:35)
और: इस दुनिया का जीवन एक खेल और मनोरंजन है (6:32), यह उस ठोस
दुनिया को पिघला देता है।

इसके धमकी भरे छंदों के माध्यम से जो मौत की याद दिलाते हैं,
जैसे: जब सूर्य मुड़ा हुआ होता है (८१:१), जब
आकाश फट गया है (82:1), जब आकाश फट गया है (82:1),

जब संसार दो टुकड़ों में विभाजित हो जाता है (84:1), और तुरही फूँकी जाती है, और आकाश और पृथ्वी पर के सभी लोग अचेत होकर गिर पड़ते हैं, सिवाय उनके जिन्हें परमेश्वर चाहता है (39:68), तो यह भ्रम नष्ट हो जाता है कि संसार शाश्वत है।

वह अपनी गरज जैसी आवाज़ों के ज़रिए, जैसे कि: वह जानता है जो कुछ धरती में आता है और जो कुछ वहाँ से निकलता है और जो कुछ आसमान से उतरता है और जो कुछ उसमें चढ़ता है। तुम जहाँ कहीं भी हो, वह तुम्हारे साथ है। अल्लाह तुम्हारे सब कामों को देखता है (57:4) और कह दो: "प्रशंसा अल्लाह के लिए है, जो तुम्हें अपनी निशानियाँ दिखाएगा ताकि तुम उन्हें जान सको। तुम्हारा रब उससे बेख़बर नहीं है जो कुछ तुम करते हो" (27:93), यह ग़फलत को दूर करता है, जो स्वभाववाद को जन्म देता है।

इस प्रकार, ब्रह्मांड से संबंधित कुरान की आयतें ऊपर बताए गए सिद्धांत का पालन करती हैं। वे दुनिया की वास्तविकता को उजागर करती हैं और उसे वैसा ही प्रदर्शित करती हैं जैसा वह है।

दुनिया का कुरूप चेहरा दिखाकर यह हमें उससे दूर कर देता है; इसका सुंदर चेहरा दिखाकर, जो निर्माता की ओर मुड़ा हुआ है, यह हमारा चेहरा उसकी ओर मोड़ देता है। यह हमें सच्ची बुद्धि का ज्ञान देता है और हमें सिखाता है

ब्रह्मांड की पुस्तक के अर्थ, इसके अक्षरों और सजावट पर कम ध्यान दिया गया है।

मानव दर्शन के अनुसार, यह स्वयं को कुरूप चीज़ों के हवाले नहीं करता है और लोगों को नीच चीज़ों को भूलने पर मजबूर करता है।

वे अक्षरों की सजावट जैसी निरर्थक चीजों पर अपना समय बर्बाद करने लगते हैं।

तीसरी किरण

दूसरी किरण में हमने कुरान की बुद्धिमत्ता के सामने मानवीय दर्शन की हीनता की ओर संकेत किया है।
साथ ही बाद की चमत्कारिकता भी। इस किरण में,
जो कुरान की बुद्धिमत्ता की तुलना
अपने छात्रों के दर्शन (जैसे, शुद्ध विद्वान,
संत, और इल्लुमिनिस्ट [अधिक प्रबुद्ध
दार्शनिकों के वर्ग]), हम संक्षेप में चर्चा करेंगे
इस संबंध में कुरान की चमत्कारिकता।

अब हम इसका सबसे सच्चा सबूत पेश करते हैं
बड़प्पन, इसकी सच्चाई का सबसे स्पष्ट प्रमाण, और सबसे अधिक
यह चमत्कारिकता का एक शक्तिशाली संकेत है। इस पर विचार करें:
कुरान में ईश्वरीय एकता के प्रकटीकरण की सभी डिग्री, विविधता और आवश्यकताओं को पूरी तरह से संतुलित तरीके से समाहित और समझाया गया है।37 इसके अलावा,
यह उच्च दिव्य के बीच संतुलन बनाए रखता है
सत्य, सभी आज्ञाएँ और सिद्धांत शामिल हैं
दिव्य नामों द्वारा अपेक्षित, और सटीक बनाए रखता है

---

[37] उदाहरण के लिए, ईश्वरीय सत्ता की एकता, तथा अद्वितीय होना या परमेश्वर होने के नाते उसके आवश्यक गुणों में कोई मेल नहीं है और प्रभु, और उनके गुणों, नामों और कार्यों में। (ट्र.)

और उनके बीच संवेदनशील रिश्ते। यह ईश्वर की दिव्यता और प्रभुत्व के सभी कार्यों और "कार्यों" को पूर्ण संतुलन के साथ एक साथ रखता है।

ये सभी इसके अद्वितीय गुण और चरित्र को दर्शाते हैं।

ऐसी कलाएँ जो महानतम मानवीय कृतियों में नहीं पाई जा सकतीं, न ही उन संतों में जो चीज़ों की आंतरिक वास्तविकताओं को भेदते हैं, या उन प्रकाशकों में जो चीज़ों और घटनाओं के आंतरिक पहलुओं को समझते हैं, या उन पूरी तरह से शुद्ध विद्वानों में जो अदृश्य दुनिया में प्रवेश करते हैं। ऐसा लगता है मानो, श्रम के एक निश्चित विभाजन के अनुसार, प्रत्येक समूह ने खुद को सत्य के शक्तिशाली वृक्ष की एक शाखा के लिए समर्पित कर दिया और खुद को केवल उसके पत्तों और फलों में व्यस्त रखा, जबकि वह बाकी सभी के बारे में अनभिज्ञ था।

पूर्ण, असीमित सत्य को सीमित मस्तिष्क और दृष्टि से नहीं समझा जा सकता, बल्कि केवल कुरान की सार्वभौमिक और सर्वव्यापी दृष्टि से ही समझा जा सकता है। जो कुरान नहीं है, वह सार्वभौमिक सत्य को उसकी संपूर्णता में नहीं समझ सकता, भले ही वे उससे लाभ उठाते हों, क्योंकि उनका दिमाग सीमित, सीमित और केवल इसके कुछ भागों में ही पूरी तरह से लीन है।

वे अक्सर अति पर चले जाते हैं, एक या दो बिंदुओं पर अन्य की अपेक्षा अधिक ध्यान देते हैं, और इस प्रकार छात्रों के बीच संतुलन और सटीक संबंधों को नष्ट कर देते हैं।

सत्य। इस मुद्दे पर दूसरे अध्याय में चर्चा की गई थी
चौबीसवें वचन की शाखा। हम करेंगे
यहाँ एक अन्य दृष्टान्त के साथ इस पर विचार करें।

समुद्र के नीचे रत्नों से भरे खजाने की कल्पना करें।
कई गोताखोर इसकी तलाश करते हैं, लेकिन चूंकि उनकी आंखें
बंद, वे अपने हाथों से इसे खोजते हैं।
एक बड़ा हीरा और निष्कर्ष निकालता है कि उसने पाया है
खजाना। जब वह सुनता है कि उसके दोस्तों के पास है
अन्य रत्न मिले, जैसे गोल माणिक या चौकोर माणिक
एम्बर, वह सोचता है कि वे जो उसने पाया है उसके पहलू या अलंकरण हैं। प्रत्येक
गोताखोर के पास है
वही विचार.

---

38 कुरान में अल्लाह ने कहा है: मैं तुम्हें जाने नहीं दूंगा।
तुममें से किसी के भी कर्म को व्यर्थ न जाने दो, चाहे वह पुरुष हो या स्त्री।
तुम एक दूसरे से भिन्न हो (3:195) इस्लाम धार्मिक जिम्मेदारी में पुरुषों और महिलाओं के बीच भेदभाव नहीं करता है।
प्रत्येक लिंग अधिकांश जिम्मेदारियों को साझा करता है, लेकिन प्रत्येक
कुरान में कुछ विशेष जिम्मेदारियाँ बताई गई हैं।
आम तौर पर संबोधन के लिए पुल्लिंग रूप का उपयोग किया जाता है, क्योंकि यह एक है
अरबी की विशेषताओं में से एक। लगभग हर भाषा में, पुल्लिंग रूप का उपयोग पुरुषों और महिलाओं दोनों के समूह के लिए किया जाता है।
महिलाएं, अंग्रेजी शब्द मानव जाति की तरह, जिसमें दोनों शामिल हैं
पुरुष और महिलाएँ। इसलिए, भाईचारे में बहनापा भी शामिल है,
और, चूँकि विश्वासियों में पुरुष और महिला दोनों शामिल हैं, इसलिए विश्वासी भाई-बहन हैं। हालाँकि, क्रम में
मूल पाठ को बनाए रखने और दोहराव से बचने के लिए, आमतौर पर
हम अनुवाद में स्त्रीलिंग रूपों का उल्लेख नहीं करते हैं। (ट्र.)

इस तरह का विचार और रवैया सत्यों के बीच संतुलन और सटीक संबंधों को नष्ट कर देता है। यह उनमें से कई का रंग भी बदल देता है, क्योंकि व्यक्ति सत्य का असली रंग देखने या दूसरों को दिखाने के लिए जबरदस्ती व्याख्या और विस्तृत व्याख्या करने के लिए मजबूर हो जाता है। कुछ लोग तो उन्हें नकारते या झूठा भी ठहराते हैं।

जो लोग इल्लुमिनिस्टों की किताबों या सूफी गुरुओं की किताबों का ध्यानपूर्वक अध्ययन करते हैं, जो कुरान और सुन्ना के तराजू पर तौले बिना अपने दर्शन और रोशनी पर भरोसा करते हैं, वे इस निर्णय की पुष्टि करेंगे। हालाँकि उन्हें कुरान से लाभ हुआ है और आम तौर पर वे कुरान से ही शिक्षा प्राप्त करते हैं, लेकिन उनकी शिक्षाओं में कुछ कमियाँ और दोष हैं क्योंकि वे स्वयं कुरान नहीं हैं। कुरान, जो सत्य का सागर है, अपनी आयतों में संपूर्ण खजाने को समाहित करता है और देखता है और अपने रत्नों का इतने सामंजस्यपूर्ण और संतुलित तरीके से वर्णन करता है कि वे अपनी सुंदरता को पूरी तरह से दिखाते हैं।

उदाहरण के लिए, जिस प्रकार कुरान ईश्वरीय प्रभुत्व की महानता को देखता और प्रदर्शित करता है: इस संसार के विनाश और अगले संसार के निर्माण के दिन पूरी धरती उसकी मुट्ठी में है, और आकाश उसके दाहिने हाथ में लपेटे हुए हैं (39:67) और जिस दिन हम आकाश को लपेट लेंगे जैसे पुस्तकों के लिए लपेटा हुआ पन्ने (21:104), वह देखता और प्रदर्शित करता है

ईश्वर द्वारा व्यक्त की गई सर्वव्यापी दया:
धरती या आसमान में कुछ भी छिपा नहीं है
वह आपको गर्भ में अपनी इच्छानुसार आकार देता है।
(3:5-6); वह हर एक चलते हुए प्राणी को पकड़ लेता है।
माथे के बाल (11:56), और कितने चलते-फिरते प्राणी हैं
कोई चीज़ अपनी रोज़ी नहीं देती, अल्लाह ही उसकी और तुम्हारी रोज़ी देता है (29:60)

जैसे यह देखता है और द्वारा व्यक्त की गई विशाल रचनात्मकता को इंगित करता है: (उसने) आकाश और पृथ्वी का निर्माण किया है
पृथ्वी और अंधकार और प्रकाश बनाया (6:1),
यह वस्तुओं पर व्यापक ईश्वरीय नियंत्रण तथा उनकी व्यापक प्रभुता को देखता और दिखाता है:
वह तुम्हें और जो कुछ तुम करते हो उसे पैदा करता है (37:96) वह देखता है
और इसमें व्यक्त महान सत्य को दर्शाता है: वह देता है
पृथ्वी पर मृत्यु के बाद जीवन (30:50) और सत्य
उनकी उदारता के विषय में व्यक्त: आपका
प्रभु ने मधुमक्खी को प्रेरित किया है (16:68), और महान सत्य
उनकी संप्रभुता और व्यक्त आदेश के विषय में
में: सूर्य और चंद्रमा और तारे किसके अधीन हैं
उसका आदेश (7:54).

कुरान करुणा और प्रशासन की सच्चाई को देखता और दिखाता है जो इस प्रकार व्यक्त होती है: क्या वे
क्या आप अपने ऊपर पक्षियों को कतारों में अपने पंख फैलाते और बंद करते नहीं देखते? कोई भी उन्हें सहारा नहीं देता
अत्यन्त दयावान के सिवा, वह हर चीज़ को देखता है

(67:19); विशाल सत्य जो इस प्रकार व्यक्त किया गया है: उसके सिंहासन में आकाश और पृथ्वी सम्मिलित हैं, और वह उनकी रक्षा करने से कभी नहीं थकता (2:255); उसके निरीक्षण से संबंधित सत्य, जो इस प्रकार व्यक्त किया गया है: तुम जहां कहीं भी हो, वह तुम्हारे साथ है (57:4); सर्वव्यापी सत्य जो इस प्रकार व्यक्त किया गया है: वह प्रथम और अंतिम, बाह्य और आंतरिक है, और सभी चीजों को जानता है (57:3); उसका प्राणियों से स्वयं के मुकाबले अधिक निकट होना, जो इस प्रकार व्यक्त किया गया है: हमने मनुष्य को पैदा किया और जानते हैं कि उसकी आत्मा उससे क्या फुसफुसाती है; हम मनुष्यता के उसके गले की नस से भी अधिक निकट हैं (50:16); उच्च सत्य जो इस प्रकार व्यक्त किया गया है: फ़रिश्ते और आत्मा एक दिन में उसके पास चढ़ते हैं जिसकी अवधि 50,000 वर्ष है (70:4); और सर्वव्यापी सत्य जो इस प्रकार व्यक्त किया गया है: परमेश्वर न्याय और पूर्ण दयालुता और स्वजनों को देने का आदेश देता है, और सभी शर्मनाक कामों, स्वस्थ विवेक के लिए घृणित चीजों, अन्याय और विद्रोह को मना करता है (16:90)।

संक्षेप में, कुरान इस दुनिया और परलोक से संबंधित ज्ञान और व्यवहार से संबंधित सभी सत्यों को देखता है और दिखाता है, तथा विश्वास के छह स्तंभों में से प्रत्येक को दर्शाता है। यह उद्देश्यपूर्ण और ईमानदारी से इस्लाम के पांच स्तंभों में से प्रत्येक और दोनों दुनिया में खुशी हासिल करने के सभी अन्य सिद्धांतों को इंगित करता है। यह सटीक संतुलन और सुरक्षा को बनाए रखता है।

उनके बीच सटीक संबंध और अनुपात बनाए रखता है। उन सभी की संपूर्णता के सामंजस्य से उत्पन्न सूक्ष्मता और सुंदरता

ये सत्य कुरान की चमत्कारिकता के एक रूप को जन्म देते हैं।

धर्मशास्त्रियों ने कुरान का अध्ययन किया है और इस पर कई लेख लिखे हैं। विश्वास के स्तंभों पर कई खंड लिखे गए हैं। लेकिन कुछ उनमें से कुछ ने, मुताज़िलियों की तरह, प्रसारित ज्ञान की तुलना में तर्क को प्राथमिकता दी है
दिव्य रहस्योद्घाटन और इसलिए करने में सक्षम नहीं हैं
इन सत्यों को 10 से भी अधिक प्रभावशाली ढंग से समझाइए
कुरान की आयतें। ऐसा लगता है जैसे उन्होंने पहाड़ों के नीचे सुरंगें खोद दी हैं जो दुनिया के अंत तक जाती हैं
पानी प्राप्त करने और ले जाने के लिए वे साथ चले गए हैं
कारण और प्रभाव की जंजीरों के साथ जहाँ तक
समय की शुरुआत और फिर, जंजीरों को काटना,
ज्ञान प्राप्त करने के लिए अनंत काल तक छलांग लगा दी
परमेश्वर के वचन (लोगों के लिए जीवन का जल) और यह सिद्ध करें कि
अनिवार्यतः विद्यमान किसी का अस्तित्व।

दूसरी ओर, कुरान की प्रत्येक आयत
के कर्मचारियों की तरह हर जगह से "पानी" निकालें
मूसा ने सब कुछ से एक खिड़की खोल दी और
राजसी निर्माता को ज्ञात करना। इसके अलावा,
क्योंकि वे सही संतुलन बनाए नहीं रख सके
सत्य के बीच, सभी विधर्मी समूहों के नेता,

जो लोग पैगम्बर की सुन्नत के बजाय अपने दर्शन पर भरोसा करके चीज़ों की आंतरिक प्रकृति को जानने की कोशिश करते हैं, वे बीच रास्ते से ही लौट आते हैं और अलग-अलग संप्रदाय बना लेते हैं। इस कारण वे पाखंड और गुमराही में पड़ जाते हैं और दूसरों को भी गुमराह कर देते हैं। उनकी असफलता कुरान की चमत्कारिकता को भी दर्शाती है।

निष्कर्ष

कुरान की चमत्कारिकता की झलकियों के बीच, इसकी पुनरावृत्ति और वैज्ञानिक तथ्यों और विकासों का संक्षिप्त उल्लेख, जिन्हें गलत तरीके से दोषों का कारण माना जाता है, उन पर उन्नीसवें वचन के चौदहवें अंश में चर्चा की गई थी।

कुरान की चमत्कारिकता की एक और झलक, जो पैगम्बरों के चमत्कारों के उल्लेख में झलकती है, बीसवीं आयत के दूसरे अध्याय में दिखाई गई।

---

39 सुन्ना पैगंबर के हर कार्य, शब्द और पुष्टि का रिकॉर्ड है, साथ ही इस्लामी कानून और जीवन का दूसरा स्रोत है (कुरान पहला है)। नए सिद्धांतों और नियमों को स्थापित करने के अलावा, सुन्ना कुरान में अस्पष्टताओं को स्पष्ट करता है, जो इसमें केवल संक्षेप में उल्लेख किया गया है, जो बिना शर्त है उसे निर्दिष्ट करता है, और जो विशेष रूप से कहा गया है उससे सामान्यीकरण और जो आम तौर पर कहा गया है उससे विशेषीकरण को सक्षम बनाता है। (संपादक)

वर्ड। आपको अन्य वर्ड्स और मेरे अरबी ग्रंथों में चर्चा की गई कई अन्य झलकियाँ मिलेंगी। हालाँकि, मैं यहाँ एक और पहलू जोड़ूँगा।

जिस प्रकार पैगम्बरों के चमत्कार कुरान की चमत्कारिकता का एक पहलू प्रदर्शित करते हैं, उसी प्रकार कुरान अपने सभी चमत्कारों के साथ मुहम्मद का चमत्कार है, और उनके सभी चमत्कार कुरान के चमत्कार का गठन करते हैं।
वे इसकी दिव्य रचना को प्रदर्शित करते हैं, जिसके माध्यम से प्रत्येक शब्द एक चमत्कार बन जाता है, क्योंकि एक बीज की तरह, प्रत्येक शब्द में सत्य का एक वृक्ष हो सकता है; हृदय के केंद्र की तरह, इसका एक शक्तिशाली सत्य के सभी भागों के साथ संबंध हो सकता है।

चूँकि यह एक सर्वव्यापी ज्ञान और अनंत इच्छा पर निर्भर करता है, इसलिए इसे इसके अक्षरों, स्थिति, अर्थ, अर्थ और इसकी संपूर्णता के माध्यम से अनगिनत अन्य चीजों के साथ जोड़ा जा सकता है। यही कारण है कि अक्षरों के विज्ञान के विशेषज्ञ दावा करते हैं कि कुरान के प्रत्येक अक्षर में इतने रहस्य हैं जितने एक पृष्ठ को कवर कर सकते हैं, और वे इसे उन लोगों के सामने साबित करते हैं जो उस विज्ञान में विशेषज्ञ ज्ञान रखते हैं।

अब तक चर्चा की गई सभी रोशनी, किरणों, झलकियों, चमक और किरणों पर विचार करें, और देखें कि कैसे शुरुआत में किया गया दावा एक निर्णायक, निर्विवाद निष्कर्ष बन जाता है। दूसरे शब्दों में, यह पूरा ग्रंथ निर्णायक रूप से इस सत्य की घोषणा करता है: कहो: “यदि

यदि मनुष्य और जिन्न एक साथ मिलकर इस क़ुरआन के समान कुछ उत्पन्न करें, तो वे कभी भी इसके समान कुछ उत्पन्न नहीं कर सकेंगे, यद्यपि वे एक दूसरे का समर्थन भी करते हों" (17:88)।

आपकी जय हो। आपने जो हमें सिखाया है, उसके अलावा हमें कोई ज्ञान नहीं है। आप सर्वज्ञ, सर्वज्ञ हैं। हमारे प्रभु, अगर हम भूल जाते हैं या गलतियाँ करते हैं तो हमें दोष न दें। प्रभु, मेरा सीना खोलो और मेरा काम आसान करो। मेरी जीभ पर लगी गांठ को ढीला करो ताकि वे मेरे शब्दों को समझ सकें।

हे ईश्वर, आशीर्वाद और शांति प्रदान करें; आपके आशीर्वादों में सबसे अच्छा, सबसे बढ़िया, सबसे सुखद और सबसे स्पष्ट, सबसे शुद्ध, सबसे अनुग्रहपूर्ण और सबसे प्रचुर, सबसे शक्तिशाली, सबसे महान, सबसे सम्मानित और सबसे ऊंचा, सबसे समृद्ध और सबसे समृद्ध, और सबसे सूक्ष्म; आपकी शांति में सबसे पर्याप्त और सबसे प्रचुर, सबसे प्रचुर और सबसे ऊंचा, सबसे उदात्त और सबसे स्थिर; और आशीर्वाद, शांति, दया, प्रसन्नता, क्षमा और क्षमा के रूप में, आपकी उदारता और उदारता के अनुग्रह के रूप में बादलों से बारिश के साथ वृद्धि और निरंतरता में, और आपकी उदारता और उदारता के उत्तम और उत्तम उपहारों के साथ निरंतर गुणन में।

दयालुता; सदा-सदा, बिना आरंभ या अंत के, आपकी अनंतता के साथ-साथ आपके सेवक, आपके प्रिय और आपके रसूल मुहम्मद पर, जो आपकी रचनाओं में सर्वश्रेष्ठ हैं, सबसे उज्ज्वल प्रकाश, सबसे स्पष्ट और सबसे निर्णायक प्रमाण, सबसे गहरा सागर, सबसे व्यापक प्रकाश, जो कृपा और अत्यधिक महिमा और श्रेष्ठ पूर्णता को चमकाता है।

tion; भव्यता के माध्यम से उस पर आशीर्वाद प्रदान करें
आपके होने की कामना, तथा उनके परिवार और प्रियजनों पर आशीर्वाद
साथी जिसके माध्यम से आप हमें क्षमा कर सकते हैं
पापों, हमारे वक्षों को खोलो, हमारे हृदयों को शुद्ध करो, हमारे उत्थान करो
हे आत्माएं, हमें आशीर्वाद दें, हमारी स्मृतियों और विचारों को परिष्कृत करें,
हमारी आत्माओं से गंदगी हटाएँ, हमारी बीमारियों को दूर करें, और हमारे दिलों के ताले खोलें।

प्रथम परिशिष्ट

अपने प्रभु की खोज में लगा एक व्यक्ति अपने आप से कहने लगा: "आइये हम चमत्कारिक व्याख्या वाली कुरान नामक पुस्तक पर नजर डालें, जिसके बारे में कहा जाता है कि यह अल्लाह का वचन है। जिसकी मैं तलाश कर रहा था और जिसकी चुनौतियां
इसके विरोधियों के बारे में। आइए देखें कि यह प्रभु के बारे में क्या कहता है।
क्या यह वास्तव में एक ईश्वरीय पुस्तक है, सृष्टिकर्ता की पुस्तक,
जैसा कि दावा किया जा रहा है?"

चूँकि वह इस युग में रहता है, पहले उसने पूछा सृष्टिकर्ता के बारे में रिसाले-ए-नूर। यह देखते हुए कि यह 130 ग्रंथों में कुरान की कुछ सच्चाइयों की व्याख्या और सारगर्भित व्याख्याएं शामिल हैं,
उन्होंने इसकी विषय-वस्तु और इसमें कुरान की सच्चाइयों के सशक्त प्रसार और बचाव से

समझा
यह अविश्वास का युग है कि क़ुरआन एक अवतरित पुस्तक है।
खासकर अठारहवें संकेत को पढ़ने के बाद
उन्नीसवाँ अक्षर और पच्चीसवाँ शब्द,
जो दृढ़तापूर्वक यह तर्क देते हैं कि कुरान एक चमत्कार है।

40 मामलों में एक एक करके, वह लगभग इसके बारे में आश्वस्त था
ईश्वरीय लेखन और कुछ और बिंदुओं पर ध्यान दिया
अपनी उत्कृष्टता दिखाते हुए:

छह अंक

पहला बिंदु: इसके चमत्कारिकता के सभी पहलू और इसमें निहित सत्य, जो साबित करते हैं
इसकी सच्चाई यह है कि कुरान मुहम्मद का चमत्कार है।
उसी तरह पैगम्बर ने भी अपने सभी चमत्कारों के साथ
और उनकी पैगम्बरी के प्रमाण, साथ ही उनका संपूर्ण ज्ञान और एकीकृत व्यक्तित्व, एक है
कुरान का चमत्कार और इसका निर्णायक प्रमाण
दैवी लेखन.

दूसरा बिंदु: कुरान ने सामाजिक जीवन में एक महत्वपूर्ण, सुखद और ज्ञानवर्धक परिवर्तन लाया।
मानवता के एक बड़े हिस्से के जीवन में क्रांति लाना जारी है। इसके अलावा, यह ऐसी क्रांति लाना जारी रखता है
लोगों की आत्मा, हृदय और बुद्धि में, साथ ही साथ
उनके व्यक्तिगत, सामाजिक और राजनीतिक जीवन में।
6,600 से अधिक श्लोक, जिन्हें अत्यंत उच्च स्वर में सुनाया गया है
सदियों से अनगिनत लोगों द्वारा सम्मान प्राप्त, लोगों को आध्यात्मिक और बौद्धिक रूप से शिक्षित करना, आत्माओं को शुद्ध करना, बुद्धि को परिष्कृत करना, उत्थान और विस्तार करना
आत्माओं को सत्य और स्वस्थ सोच के लिए मार्गदर्शन करें, और

लोगों को खुश रखें। ऐसी किताब चमत्कारी, वास्तविक, असाधारण और बेजोड़ होनी चाहिए।

तीसरी बात: पहले दिन से ही कुरान की वाक्पटुता ने साहित्यकारों को आकर्षित किया है। उदाहरण के लिए, इसने सात कविताओं को फीका कर दिया।40 अपने पिता की कविता को दीवार से हटाते समय, लाबिद की बेटी ने टिप्पणी की: "कुरान के अवतरण के बाद, इसका कोई मूल्य नहीं है।" यह सुनकर: जो तुम्हें आदेश दिया गया है, उसे खुले तौर पर और आग्रहपूर्वक कहो (15:94), एक बेडौइन ने सजदा किया। जब उससे पूछा गया कि क्या वह मुसलमान बन गया है, तो उसने कहा: "नहीं। मैंने इस आयत की वाक्पटुता के आगे सजदा किया है।"

साहित्य और वाक्पटुता के विज्ञान के कई प्रतिभाशाली लोगों, जैसे 'अब्द अल-काहिर अल-जुरजानी, अल-सक्काकी और अल-ज़माखशरी, ने निष्कर्ष निकाला है कि कुरान की वाक्पटुता बेजोड़ है। इसके अलावा, इसने साहित्य और वाक्पटुता के सभी प्रतिभाशाली लोगों को इसके साथ विवाद करने की चुनौती दी है: "या तो मेरे जैसा एक भी सूरा बनाओ , या मुझे नकार कर दोनों दुनिया में अपमान और बर्बादी सहो।" पैगंबर के समय के अविश्वासी साहित्यिक लोग इस चुनौती का सामना नहीं कर सके।

[40] इन्हें सात निलंबित कविताएं के रूप में जाना जाता है क्योंकि ये सोने से लिखी गई थीं और कुरान के अवतरण से पहले काबा की दीवार पर लटका दी गई थीं।

चुनौती दी, और इसलिए उसके खिलाफ हथियार उठा लिए।
इससे सिद्ध होता है कि कुरान के साथ कोई भी विवाद व्यर्थ है।

अरबी भाषा में अनगिनत किताबें लिखी गई हैं

कुरान के उन मित्रों द्वारा जो इसका अनुकरण करना चाहते हैं
और इसके शत्रुओं द्वारा जो इसकी आलोचना करते हैं। कोई भी, यहाँ तक कि सबसे सरल व्यक्ति, जो कुरान सुनता है,
यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि यह सभी मानवीय कार्यों से श्रेष्ठ है।
कोई भी अन्य पुस्तक इसके बराबर भी नहीं आती।
इससे हमारे पास दो विकल्प बचते हैं: या तो यह अन्य सभी पुस्तकों से निम्न है या श्रेष्ठ।
ईमानदारी से दावा करें कि यह घटिया है, तो यह श्रेष्ठतर होना चाहिए।

एक बार किसी ने कहा था: जो कुछ स्वर्ग में है-

पृथ्वी परमेश्वर की महिमा करती है (57:1), और टिप्पणी की:
"मैं इस श्लोक में ऐसी असाधारण बात नहीं ढूंढ़ सकता
कुरान के समान वाकपटुता का दावा किया जाता है।"
कहा गया: “इस्लाम-पूर्व अरब [या किसी अन्य] में जाओ
वह स्थान जहाँ नास्तिकता या भौतिकवाद का अंधकार व्याप्त है] और इस श्लोक को सुनें।
उसने कल्पना की कि वह इस्लाम-पूर्व अरब में रह रहा था
[या कहें कि अस्तित्ववादी दार्शनिकों की दुनिया]।
उसने देखा कि सभी प्राणी उद्देश्यहीन, दयनीय और अर्थहीन जीवन जी रहे थे। इस अँधेरे में,
अस्थिर और क्षणभंगुर दुनिया में वे यात्रा कर रहे थे

एक अँधेरे, असीम स्थान में लक्ष्यहीन रूप से
अर्थ।

अचानक उसने यह श्लोक जीभ से सुना
कुरान की आयतें। उसने देखा कि यह अंधकार को दूर करती है
दुनिया के चेहरे से पर्दा हटाकर उसे इतना रोशन कर दिया
कि शाश्वत धर्मोपदेश और शाश्वत आदेश था
सभी चेतन प्राणियों को पंक्तिबद्ध होकर शिक्षा देना
सदियों का इतिहास। यह उन्हें दिखा रहा था कि ब्रह्मांड
एक विशाल मस्जिद की तरह है जिसमें आकाश और पृथ्वी सहित सभी
प्राणी निरंतर महिमा, प्रशंसा करते हैं,
और परम आनंद और अत्यंत खुशी के साथ उसका आह्वान करें।

फिर, इस आयत की वाक्पटुता का स्वाद चखने और अन्य आयतों से इसकी तुलना करने पर, उन्हें उन अनंत कारणों में से एक का पता चला कि क्यों कुरान की गूंजती और गूंजती वाक्पटुता ने दुनिया के पांचवें हिस्से पर विजय प्राप्त कर ली है।
मानवता पर राज करने वाला यह ग्रह 14 शताब्दियों से अपना राजसी प्रभुत्व बनाए हुए है।

चौथा बिन्दु: कुरान में मिठास है
जो बार-बार सुनाए जाने पर भी कभी बोर नहीं करता, बल्कि आनंद को बढ़ाता है। यह अपनी ताजगी और मौलिकता को बनाए रखता है जैसे कि नया
इसकी आसान उपलब्धता के बावजूद, व्यापक रूप से इसका उपयोग किया जा रहा है
स्मरण शक्ति, तथा इसकी आयु 14 शताब्दियाँ है।
ऐसा लगता है मानो कुरान सीधे-सीधे उसे संबोधित कर रहा है। हालाँकि सभी विद्वानों ने अक्सर इसका सहारा लिया है

हर युग में इसका उपयोग किया गया है और इससे हमेशा लाभ उठाया गया है यह, और हालांकि वे आमतौर पर इसकी शैलियों का पालन करते हैं अभिव्यक्ति की दृष्टि से, यह अभी भी अपनी प्रामाणिक शैलियों को संरक्षित रखता है और स्पष्टीकरण के रूप.

पाँचवाँ बिन्दु: कुरान की जड़ें बहुत गहरी हैं। अपरिवर्तनीय सत्य जिस पर सभी पिछले पैगम्बर इस बात से सहमत हैं। यह उनकी पुष्टि करता है, और वे पुष्टि करते हैं इसके सत्यों पर सहमत होकर। इसके सभी फल (जैसे, इस्लामी विज्ञान और संतत्व के आध्यात्मिक अनुशासन), जो इससे उत्पन्न हुए और दिखाया कि प्रत्येक एक धन्य, जीवित वृक्ष है जो ज्ञानवर्धक सत्य के फल उत्पन्न करता है, यह बताता है कि कुरान स्वयं सत्य है और सत्यों का एक ऐसा संग्रह जिसकी व्यापकता अद्वितीय है।

छठा बिन्दु: संविधान के सभी छह पक्ष या पहलू कुरान प्रकाशमान है और अपनी सच्चाई को प्रदर्शित करता है। नीचे से, यह स्तंभों पर टिका हुआ है सबूत और साक्ष्य [जैसे, तर्कसंगत, वैज्ञानिक, ऐतिहासिक, विवेक और ध्वनि से संबंधित] न्याय]; इसके ऊपर चमत्कार की मुहर की झलकियाँ हैं, इसके आगे दोनों दुनियाओं में खुशी है इसका उद्देश्य है; और इसके पीछे एक और समर्थन बिंदु है: ईश्वरीय रहस्योद्घाटन की सच्चाईयाँ। इसके दाईं ओर निर्देशित कारण की सर्वसम्मत पुष्टि है प्रमाणों पर आधारित है, और इसके बाईं ओर बौद्धिक हैं-

स्वस्थ लोगों की आध्यात्मिक और आध्यात्मिक संतुष्टि
हृदय और अंतःकरण में दृढ़ता, तथा उसके प्रति ईमानदारी से लगाव और समर्पण।

ये सभी इस बात के साक्षी हैं कि कुरान एक दुर्जेय, असाधारण और अजेय गढ़ है जिसे पृथ्वी पर स्वर्ग के हाथों से स्थापित किया गया है।

उन्होंने इस बात पर अपनी मुहर लगा दी कि यह परमेश्वर का दोषरहित, सच्चा वचन है।
ब्रह्मांड, जो हमेशा एकता प्रकट करता है, रक्षा करता है
सदाचार और भलाई का उपदेश दिया है, झूठ और निन्दा का नाश किया है, कुरान को सबसे अधिक पवित्रता और अच्छाई का उपदेश दिया है, झूठ और निन्दा का नाश किया है।
सम्मान का स्वीकार्य, उच्च और प्रमुख पद और
सफलता। इसे देखते हुए, भगवान ने स्वयं पुष्टि की है
इसकी सच्चाई.

इसके अलावा पैगम्बर, कुरान के व्याख्याता,
किसी भी चीज़ से ज़्यादा इस पर विश्वास किया और इसका सम्मान किया
और कोई भी अन्य। वह एक अलग अवस्था में चला गया
जब उसकी आयतें अवतरित हो रही थीं और उनकी पुष्टि हो रही थी
और उसके सभी नियमों और आज्ञाओं का प्रचार किया
अत्यंत दृढ़ विश्वास के साथ, उसे पकड़ने के लिए प्रतीक्षा कर रहे लोगों को
कोई धोखा या गलती दिखाए बिना, और
बिना किसी चीज़ के उसे हिलाया जा सकता था। अशिक्षित होने के बावजूद,
कुरान ने उसे तुरंत संवाद करने में सक्षम बनाया
अतीत और भविष्य के बारे में क्या पता चला,
सृष्टि और ब्रह्मांड के संचालन के तथ्य। अन्य

उनकी बातें कुरान से मिलती-जुलती नहीं हैं और कुछ मामलों में कुरान से कमतर हैं। यह सब साबित करता है कि कुरान अपने दयालु निर्माता का सच्चा स्वर्गीय और धन्य शब्द है।

मानवता का पाँचवाँ हिस्सा या यहाँ तक कि कुछ मामलों में अधिकांश लोग हमेशा कुरान के प्रति उत्साही और धार्मिक भक्ति रखते हैं। वे इसे प्रेमपूर्वक और सत्य की आराधना में सुनते हैं, और जैसा कि कई अवलोकनों, संकेतों और घटनाओं से प्रमाणित होता है। जिस तरह पतंगे प्रकाश के चारों ओर उड़ते हैं, उसी तरह फ़रिश्ते, विश्वास करने वाले जिन्न और अन्य आत्माएँ कुरान के पाठ के दौरान उसके चारों ओर इकट्ठा होते हैं। यह भी पुष्टि करता है कि कुरान को ब्रह्मांड में लगभग सभी प्राणियों द्वारा स्वीकार किया जाता है और यह सर्वोच्च दर्जा प्राप्त है।

सभी प्रकार के लोग इसकी शिक्षाओं से अपना हिस्सा प्राप्त करते हैं। इस्लामी विज्ञान (जैसे, न्यायशास्त्र, धर्मशास्त्र और धार्मिक पद्धति-विज्ञान) के महानतम विद्वानों ने इसमें अपने प्रश्नों के उत्तर पाए हैं और इसलिए उन्होंने अपने निष्कर्ष इसी पर आधारित किए हैं। यह एक और सबूत है कि कुरान सत्य का स्रोत है, सभी सच्चे ज्ञान की खान है। इसके अलावा, किसी भी अविश्वासी अरब साहित्यिक प्रतिभा ने कभी भी ऐसा कुछ नहीं बनाया है। ज्ञान और वाक्पटुता के अन्य प्रतिभाशाली लोग जो कुरान जैसी वाक्पटुतापूर्ण चीज़ बनाने की कोशिश करते थे, उन्हें मजबूर होना पड़ा

ऐसा करने से बचना चाहिए। इससे स्पष्ट रूप से पता चलता है कि
कुरान एक चमत्कार है.

किसी शब्द के मूल्य, उदात्तता और वाक्पटुता को आंकने के लिए हमें यह पूछना होगा कि इसे किसने कहा, किसके लिए कहा गया।
यह क्यों कहा गया और क्यों कहा गया। इस तरह से देखा जाए तो कुरान की कोई बराबरी नहीं है, क्योंकि यह
सभी प्राणियों के स्वामी की वाणी ही वचन है
ब्रह्मांड के निर्माता की। इसमें कुछ भी ऐसा नहीं है जो यह सुझाव दे कि इसे किसी ने गढ़ा है और
फिर झूठा आरोप लगाकर उसे ईश्वर के नाम पर आरोपित कर दिया गया।

ईश्वर ने कुरान को सभी प्राणियों में से अपने चुने हुए प्रतिनिधि पर उतारा, जो उसका सबसे प्रिय है।
प्रसिद्ध एवं प्रतिष्ठित अभिभाषक, जिनका विश्वास
इस्लाम के व्यापक धर्म को अपनाया
और इसके मालिक को दो धनुष की दूरी के रैंक तक बढ़ा दिया । सम्मानित होने के बाद

वह सभी के शाश्वत चाहने वाले के साथ सीधे वार्तालाप के माध्यम से, दोनों दुनिया में खुशी के सिद्धांतों को बताने के लिए वापस लौट आया।

कुरान भी इन सिद्धांतों की व्याख्या करता है
ब्रह्मांड के निर्माण में ईश्वरीय उद्देश्य और परिणाम के रूप में। यह पैगंबर के विचारों पर प्रकाश डालता है
सबसे व्यापक विश्वास, जो सभी को बनाए रखता है
इस्लाम की सच्चाई। यह ब्रह्मांड को दर्शाता और वर्णित करता है
एक मानचित्र, एक घड़ी, या एक घर के रूप में, और इसके बारे में सिखाता है

जिस कलाकार ने इसे बनाया है। इसकी बराबरी या तुलना नहीं की जा सकती

किसी भी मामले में बराबरी नहीं की जा सकती।

इसके अलावा, कुरान की अनेक व्याख्याएं भी हैं

उच्चतम बुद्धि और ज्ञान के सावधानीपूर्वक विद्वानों द्वारा लिखित अनगिनत प्रमाण प्रस्तुत करते हैं

कुरान के गुण, सूक्ष्मताएं और रहस्य, और

अपनी अनेक भविष्यवाणियों का खुलासा और पुष्टि करें।

रिसाले -ए-नूर के 130 ग्रंथ प्रत्येक का स्पष्टीकरण करते हैं

कुरान की खूबी और सूक्ष्मता, जैसा कि पूरे कुरान में देखा जा सकता है। यह सब इस तथ्य पर मुहर लगाता है

कि कुरान एक चमत्कार है, इसकी कोई बराबरी नहीं है, और

अदृश्य के ज्ञाता का वचन, जो

इस भौतिक संसार में अदृश्य जगत की भाषा।

अपनी खूबियों के कारण, कुरान की शानदार

आध्यात्मिक प्रभुत्व और राजसी पवित्र शासन पृथ्वी और युगों को प्रकाशित करता रहता है, साथ ही

समय और स्थान, और अधिक लोग गले लगा रहे हैं

इसे पूर्ण सम्मान के साथ स्वीकार करें। इन्हीं गुणों के कारण,

प्रत्येक अक्षर से कम से कम 10 पुण्य, 10 पुरस्कार मिलते हैं,

और अनन्त दुनिया से संबंधित 10 फल, और

कुछ छंदों और सूरों के अक्षर प्रत्येक देते हैं
सैकड़ों या हजारों पुण्यों का फल मिलता है।

कुछ विशेष शुभ अवसरों पर लिखे जाने पर प्रत्येक अक्षर का प्रकाश और गुण दसियों या सैकड़ों गुना बढ़ जाते हैं।

विश्व यात्री को यह बात समझ में आई
और अपने आप से कहा: "अपने प्रकाशों और रहस्यों की सहमति और अपने फलों और परिणामों की सहमति के आधार पर, यह कुरान, हर तरह से चमत्कारी है, यह साबित करता है और इसकी गवाही देता है

एक ही चीज़ का अस्तित्व, एकता, गुण और नाम
अनिवार्यतः इस प्रकार विद्यमान है कि
असंख्य विश्वासियों की गवाही उनके
उस गवाही में सूत्रों का हवाला दिया गया है।"

कुरान से यात्री को ईमान और सच्चाई के बारे में जो निर्देश प्राप्त हुए हैं, उनका संक्षिप्त उल्लेख करते हुए
ईश्वर की एकता के लिए हम कहते हैं: "ईश्वर के अलावा कोई ईश्वर नहीं है -
अनिवार्यतः विद्यमान एक, एक, एकल—
उसकी एकता में जिसके अस्तित्व की आवश्यकता
कुरान से चमत्कारिक रूप से यह बात सिद्ध हो चुकी है
प्रदर्शनी।" इसे स्वीकार किया जाता है और इसकी मांग की जाती है
स्वर्गदूत, लोग और जिन्न।

इसके सभी छंद हर मिनट पढ़े जाते हैं और
अनगिनत लोगों द्वारा पूर्ण सम्मान के साथ। यह पवित्र है
पृथ्वी के विभिन्न क्षेत्रों में शासन प्रचलित रहा है,
अंतरिक्ष के दायरे में, और सभी उम्र के लोगों के चेहरों पर
समय। इसका प्रबुद्ध आध्यात्मिक प्रभुत्व 1,400 वर्षों से मानवता के पांचवें हिस्से पर पूर्ण वैभव के साथ हावी रहा है। इसी तरह, सर्वसम्मति के साथ

इसके स्वर्गीय और पवित्र सुरों का समझौता

इसके प्रकाशमान दिव्य श्लोकों, इसके रहस्यों और प्रकाशों की संगति, इसके सत्यों की एकरूपता और इसके परिणामों की एकरूपता, यह स्पष्ट रूप से इसी सत्य की पुष्टि करता है और इसका स्पष्ट प्रमाण है।

एमिरदाग का फूल41

कुरान में दोहराव के बारे में उठाई गई आपत्तियों का निम्नलिखित उत्तर प्रेरक है।

मेरे प्यारे, वफ़ादार भाइयों (और बहनों)। यद्यपि यह भ्रमित करने वाला और गलत तरीके से व्यक्त किया गया है - मेरी व्यथित स्थिति के कारण - निम्नलिखित कुरान की चमत्कारिकता के एक पहलू पर एक चिंतन है।

दुर्भाग्यवश, मैं इसे [उचित] शब्दों में नहीं कह सकता।

हालाँकि शब्दों की दृष्टि से यह खराब है, क्योंकि यह कुरान से संबंधित है, यह चिंतन की ओर ले जाएगा। इसे चमकीले, अमूल्य रत्न के आवरण के समान माना जा सकता है। इसलिए, भेंट किए जा रहे रत्न पर विचार करें, न कि उसके फटे हुए आवरण पर। मैंने इसे रमजान के कुछ दिनों के दौरान तेजी से और संक्षिप्त रूप से लिखा था, जब मैं बहुत बीमार और कुपोषित था। कृपया किसी भी कमी को क्षमा करें।

मेरे प्यारे वफ़ादार भाइयों (और बहनों) कुरान सबसे पहले, शाश्वत वक्ता के सबसे महान और सबसे व्यापक रैंक से जारी होता है-

[41] अफ्योन प्रांत (पश्चिमी तुर्की) का एक पहाड़ी जिला जहां सईद नूरसी पर वर्षों तक निगरानी रखी गई थी। (ट्र.)

सार्वभौमिक आधिपत्य। यह सबसे पहले, विश्व के सभी लोगों को संबोधित है।
इसे प्राप्त करने वाले की व्यापक रैंक
ब्रह्मांड का नाम। इसका उद्देश्य मार्गदर्शन करना है
मानवता इसके प्रकटीकरण के समय से लेकर अब तक
समय का अंत। इसलिए इसमें समय के अंत के बारे में पूरी तरह से सार्थक और व्यापक व्याख्याएँ शामिल हैं।
ब्रह्मांड के निर्माता का आधिपत्य, जो है
इस दुनिया और परलोक, पृथ्वी और लोक के स्वामी
स्वर्ग और अनंत काल के बारे में; और दिव्य नियमों के बारे में
सभी प्राणियों के प्रशासन से संबंधित।

यह प्रवचन इतना व्यापक और उन्नत है, और इसलिए इतना समावेशी और चमत्कारी है,
कि सबसे सरल (बहुमत) और सबसे अधिक
बुद्धिमान (अल्पसंख्यक) लोग जो कहते हैं उससे पूरी तरह संतुष्ट हैं। यह संबोधित करता है और प्रकट करता है
हर उम्र और समझ के हर स्तर पर
सीखना ऐतिहासिक कहानियों के संग्रह के रूप में नहीं
सबक देना, लेकिन सार्वभौमिक सिद्धांतों के संग्रह के रूप में। दंड का वर्णन करते समय
आद और समूद और फिरऔन की क़ौम को उनके लिए
पापों, और गलत काम करने वालों के खिलाफ अपनी गंभीर धमकियों के साथ, यह
सभी अत्याचारियों और अपराधियों को चेतावनी देता है, विशेष रूप से
हमारे अपने समय के, उनके परिणामों के
अत्याचार और गलत काम। अंतिम उल्लेख करके

अब्राहम और मूसा जैसे पैगम्बरों की विजय,
यह अन्याय सहने वाले विश्वासियों को सांत्वना देता है।

चमत्कारिक अभिव्यक्ति की कुरान पुनर्जीवित करती है
अतीत, जो असावधानी और
गुमराही, एक अकेला और भयावह क्षेत्र है, एक अंधेरा
और बर्बाद कब्रिस्तान। यह अतीत को बदल देता है
निर्देशों के जीवंत पृष्ठ, एक अद्भुत एनिमेटेड
प्रभु के प्रत्यक्ष नियंत्रण के अधीन क्षेत्र, एक ऐसा क्षेत्र जो
हमारे साथ महत्वपूर्ण संबंध हैं। परिवहन करके
हमें उन दिनों की ओर वापस ले जाना या उन्हें हमें दिखाना,
कुरान हमें अपनी उत्कृष्ट चमत्कारी शैली में शिक्षा देता है।

इसी शैली में यह ब्रह्माण्ड के वास्तविक स्वरूप को दर्शाता है।
प्रकृति। गुमराह लोग इसे एक अंतहीन, जीवन-रहित, एकाकी और भयावह
जगह के रूप में देखते हैं जो क्षय और विनाश में डूबी हुई है।
अलगाव, जबकि विश्वासियों इसे एक किताब के रूप में देखते हैं
सभी का सदा-प्रार्थना-योग्य, सबसे अधिक का शहर
दयालु एक, भगवान के कार्यों को प्रदर्शित करने का स्थान
भगवान की कला। इसमें बेजान वस्तुएं सजीव हो जाती हैं
सभी प्राणी अपने-अपने विशेष कर्तव्यों का पालन करते हैं तथा एक दूसरे की सहायता करते हुए संचार की एक उत्तम प्रणाली बनाते हैं।

यह सबसे शानदार कुरान, जो ज्ञान देता है
और स्वर्गदूतों, जिन्न और मानवता को दिव्य ज्ञान में सबसे अधिक प्रसन्नतापूर्वक निर्देश देता है, इसमें ऐसे पवित्र भेद हैं: प्रत्येक अक्षर एक अज्ञात संख्या लाता है

गुण; सभी जिन्न या मनुष्य, चाहे वे एक साथ भी मिल जाएँ, कुरान के बराबर कुछ भी पैदा नहीं कर सकते; यह सभी लोगों और ब्रह्मांड से सबसे उचित तरीके से बात करता है, और लगातार लाखों लोगों के दिमाग में आसानी से और सुखद रूप से अंकित होता है; इसे जितनी बार पढ़ा जाए, यह कभी ऊब या थकावट नहीं देता; इसके समान वाक्यों और वाक्यांशों के बावजूद जो भ्रम पैदा कर सकते हैं, बच्चे इसे आसानी से याद कर सकते हैं; और यह बीमार और मरने वाले लोगों को खुशी और शांति देता है, जिनके लिए कुछ [मानव] शब्द सुनना भी बड़ी बेचैनी का कारण बनता है। कुरान अपने छात्रों को दोनों दुनियाओं में खुशी प्रदान करता है।

कुरान ने इसे लाने वाले की निरक्षरता को ध्यान में रखते हुए, और खुद को अनावश्यक परेशानी में डाले बिना और दिखावा या दिखावटी बने बिना, अपनी शैलीगत प्रवाह और शुद्धता को बनाए रखा है और कभी भी सबसे आम लोगों की समझ के स्तर को नजरअंदाज नहीं किया है। इसके अलावा, यह लोगों को आकाश और पृथ्वी में सभी परिचित घटनाओं के तहत छिपी हुई दिव्य शक्ति की बुद्धि और असाधारण चमत्कारों के बारे में निर्देश देता है, और इस तरह अपने मार्गदर्शन की कृपा के भीतर चमत्कारीता का एक अच्छा पहलू प्रदर्शित करता है।

कुरान यह दर्शाता है कि यह प्रार्थना और आह्वान की पुस्तक है, शाश्वत मोक्ष का आह्वान है,

और ईश्वर की एकता की घोषणा, ये सब

पुनरावृत्ति की आवश्यकता होती है। इसलिए यह एक वाक्य या कहानी को दोहराता है, कई को कई अर्थ देता है

अभिभाषकों के विभिन्न समूह या श्रेणियाँ, व्यवहार

करुणा के साथ छोटी से छोटी और मामूली बात पर भी

चीजें और घटनाएँ, और उन्हें क्षेत्र में शामिल करता है

इसकी इच्छा और नियंत्रण की शक्ति। यह विशेष घटनाओं पर ध्यान देकर सार्वभौमिक सिद्धांतों को प्रस्तुत करना चाहता है,

साथियों से संबंधित, जो इससे जुड़े हुए हैं

इस्लाम की स्थापना करना और उसके कानून बनाना आदि

बीज, जिससे कई महत्वपूर्ण फल पैदा होते हैं।

यह सब इसकी चमत्कारिकता का एक और पहलू है।

आवश्यकताओं की पुनरावृत्ति के लिए पुनरावृत्ति की आवश्यकता होती है।

कुरान अपने अवतरण के 23 वर्षों के दौरान बार-बार पूछे गए कई प्रश्नों का उत्तर देता है और पूछता है

समझ और सीखने के सभी स्तरों को संतुष्ट करने के लिए।

यह साबित करने के लिए कि सभी चीजें एक ही द्वारा नियंत्रित होती हैं

वह जो ब्रह्माण्ड को नष्ट कर देगा और उसकी जगह कोई और ले लेगा

परलोक की असाधारण दुनिया के साथ, और

मानव मन में एक शक्तिशाली और सर्वव्यापी क्रांति स्थापित करना जो दिव्य को दिखाएगा

परिणामों के नाम पर क्रोध और गुस्सा

ब्रह्माण्ड की रचना के पश्चात् तथा मानवीय अन्याय और गलत कार्यों के कारण, जो ब्रह्माण्ड, पृथ्वी और आकाश को क्रोधित करते हैं, कुरान कुछ वाक्यों और आयतों को दोहराता है।

ये असंख्य प्रमाणों के निष्कर्ष हैं और इनका वजन हजारों निष्कर्षों जितना ही है। इसलिए, इन उद्देश्यों के लिए पुनरावृत्ति करना चमत्कारिकता का एक अत्यंत शक्तिशाली पहलू होना चाहिए - और है - वाक्पटुता का एक अत्यंत उच्च गुण, और विषय-वस्तु की आवश्यकताओं के अनुरूप भाषा की सुंदरता।

उदाहरण के लिए, जैसा कि रिसाले-ए-नूर की चौदहवीं झलक में समझाया गया है और पहले शब्द में शामिल है, दयालु, दयावान ईश्वर के नाम पर, जो हर सूरा (एक को छोड़कर) की शुरुआत में आता है और सूरत अल-नमल में इसके साथ-साथ 114 बार दोहराया जाता है, यह एक सत्य है जो पृथ्वी को ईश्वर के सर्वोच्च सिंहासन और ब्रह्मांड के सभी क्षेत्रों से जोड़ता है, और ब्रह्मांड को रोशन करता है। चूंकि हर किसी को इसकी निरंतर आवश्यकता होती है, इसलिए इसे लाखों बार दोहराना उचित है। हमें इसकी आवश्यकता न केवल हर दिन रोटी की तरह है, बल्कि हर पल है, जैसे हमें हवा और रोशनी की आवश्यकता होती है।

तुम्हारा रब वह है जो अत्यन्त प्रभुत्वशाली, अत्यन्त दयावान है ।

हज़ारों सत्यों की शक्ति रखने वाला यह वाक्य सूरत अल-शूअरा में आठ बार दोहराया गया है , जो पैगम्बरों की अंतिम विजय और मुक्ति तथा उनके विद्रोही लोगों की बर्बादी के बारे में बताता है। यदि, ब्रह्मांड की रचना के परिणामों की ओर से, ईश्वर की सार्वभौमिक प्रभुता के नाम पर, और लोगों को उसमें निर्देश देने के लिए, और जबकि ईश्वर की शक्ति और गरिमा गलत काम करने वालों के विनाश की मांग करती है और उसकी करुणा पैगम्बरों की विजय और मुक्ति की मांग करती है, तो इस वाक्य को हज़ारों बार दोहराया जाए, फिर भी इसकी आवश्यकता होगी। यह कुरान की वाक्पटुता का एक संक्षिप्त और चमत्कारी पहलू होगा।

तुम दोनों अपने रब की किन किन नेमतों को झुठलाओगे? (55:13) और उस दिन अफ़सोस है झुठलानेवालों के लिए (77:15), जो अपनी-अपनी सूरों में बार-बार दोहराई गई हैं, धरती, आसमानों, तमाम ज़माने और इन्सानों और जिन्नों के सामने अपनी नाशुक्री, कुफ्र और गुनाह का इज़हार करती हैं। वे तमाम मख़लूक़ के हक़ों के हनन का भी एलान करती हैं, जिससे आसमान और ज़मीन भड़क उठते हैं, और दुनिया की पैदाइश के नतीज़े बिगड़ जाते हैं और ख़ुदा की हुकूमत का अपमान और इनकार होता है। अगर इन दोनों आयतों को हज़ारों बार दोहराया जाए, तो भी हज़ारों मसलों से जुड़ी एक आम शिक्षा में इनकी ज़रूरत बनी रहेगी।

यह भव्यता में संक्षिप्तता तथा अनुग्रह और सौंदर्य में वाक्पटुता की चमत्कारिकता होगी।

अल-जौशन अल-कबीर, कुरान से लिया गया पैगंबर का एक प्रसिद्ध दुआ है, जिसमें 100 खंड हैं। प्रत्येक खंड के अंत में लिखा है: महिमा

तेरे सिवा कोई माबूद नहीं, हे रक्षक,
जिसकी शरण में हम आते हैं, हमें उस विपत्ति से बचाओ।
अग्नि। ये वाक्य ईश्वर की एकता की पुष्टि करते हैं, जो ब्रह्मांड का सबसे बड़ा सत्य है। वे तीन बातें भी दर्शाते हैं
प्रभु के प्रति सभी सृजित प्राणियों के महान कर्तव्य।
ये निम्नलिखित हैं: महिमा, प्रशंसा, उसे सर्व-पवित्र और दोष रहित मानना, जो बहुदेववादी गलत तरीके से उसे मानते हैं उससे ऊपर उसे मानना;

मानवता को अनन्त दण्ड से बचाने की प्रार्थना (हमारी सबसे महत्वपूर्ण चिंता); और
ईश्वर के प्रति हमारी दासता का पहलू (ईश्वर के समक्ष हमारी लाचारी का सबसे आवश्यक परिणाम)। इस प्रकार
हज़ारों बार दोहराने पर भी यह अपर्याप्त होगा
कई बार.

कुरान में इसी कारण से बार-बार दोहराया गया है
आवश्यक आवश्यकताओं और वास्तविकताओं के अनुसार।
अवसर की मांग पर, वाक्पटुता से, तथा समझने में सुविधा के लिए, यह कभी-कभी सत्य को अभिव्यक्त कर देता है
दिव्य एकता के बारे में एक पृष्ठ पर 20 बार चर्चा की गई है, चाहे

यह स्पष्ट रूप से या निहित रूप से बोर नहीं करता है; बल्कि, यह अर्थ को लागू करता है और प्रोत्साहित करता है।

मक्का और मदीना में उतारे गए सूरह वाक्पटुता और चमत्कारिकता, विस्तार या संक्षिप्तता में एक दूसरे से भिन्न हैं, क्योंकि मक्का के लोग मुख्य रूप से कुरैशी बहुदेववादी थे। इसे देखते हुए, कुरान को एक उच्च शैली के साथ सशक्त, वाक्पटु और संक्षिप्त भाषा का उपयोग करना पड़ा, और अपनी सच्चाई को स्थापित करने के लिए कुछ बिंदुओं को दोहराना पड़ा।

मक्का के सूरा बार-बार विश्वास के स्तंभों और ईश्वरीय एकता के रूपों या श्रेणियों को एक सशक्त, जोरदार, संक्षिप्त और चमत्कारी भाषा में व्यक्त करते हैं। वे ऐसा केवल एक पृष्ठ, पद्य, वाक्य या शब्द में ही नहीं करते, बल्कि एक अक्षर में भी करते हैं, शब्द क्रम बदलते हैं, निश्चित उपपदों का उपयोग करते हैं (या नहीं करते हैं), या कुछ शब्दों, वाक्यांशों और वाक्यों का उल्लेख करते हैं या छोड़ते हैं। वे दुनिया की शुरुआत और अंत, ईश्वरीय सत्ता और परलोक को इतने शक्तिशाली तरीके से साबित करते हैं कि वाक्पटुता के विज्ञान के प्रतिभाशाली लोग चकित रह गए हैं।

मक्का के सूरों की उच्चतम वाक्पटुता और चमत्कारिक संक्षिप्तता की चर्चा पच्चीसवें शब्द और मेरे इशारत अल-इजाज में की गई है, जिसमें कुरान की चमत्कारिकता और उसके चमत्कारिक शब्दों के 40 पहलुओं की व्याख्या की गई है।

इस्लाम के दूसरे चरण के दौरान मदीना में प्रकट हुए सूरा मुख्य रूप से विश्वासियों, यहूदियों और ईसाइयों को संबोधित करते हैं । परिस्थिति, मार्गदर्शन और वाक्पटुता की आवश्यकता के अनुसार, वे शरिया के नियमों और आदेशों की व्याख्या करते हैं - इस्लाम के विश्वास के स्तंभों और उच्च सिद्धांतों की नहीं - एक सरल, स्पष्ट और विस्तृत भाषा में। कुरान के लिए एक अद्वितीय, बेजोड़ शैली में, वे आमतौर पर विश्वास, ईश्वरीय एकता या परलोक से संबंधित वाक्य या वाक्यांश के साथ अपनी व्याख्याओं को समाप्त करते हैं ताकि शरिया के नियमों को सार्वभौमिक बनाया जा सके और ईश्वर और परलोक में विश्वास के माध्यम से उनका पालन सुनिश्चित किया जा सके।

वाक्पटुता के उच्च पहलू को जानने के लिए तथा आयतों के निष्कर्षों में किस प्रकार की खूबियां और सूक्ष्मताएं हैं, जैसे कि ईश्वर सभी चीजों पर सर्वशक्तिमान है; ईश्वर सभी चीजों को जानता है; वह सर्व-सम्माननीय, सर्व-ज्ञानी है; वह सर्व-सम्माननीय, अत्यंत दयालु है, पच्चीसवें वचन के दूसरे प्रकाश की दूसरी किरण को देखें।

इस्लाम के गौण सिद्धांतों और सामाजिक कानूनों की व्याख्या करते हुए, कुरान अचानक अपने श्रोताओं का ध्यान उच्च, सार्वभौमिक सत्यों की ओर खींचता है, शरिया के पाठ से लेकर ईश्वरीय एकता के पाठ तक, और एक सरल शैली से एक उन्नत शैली में बदल जाता है। इससे पता चलता है कि यह कानून और बुद्धिमानी की किताब है।

डोम, पंथ, विश्वास, चिंतन, आह्वान, प्रार्थना और दिव्य संदेश के आह्वान की एक पुस्तक है।

प्रत्येक अवसर पर मार्गदर्शन के अपने उद्देश्य की पेशकश करके, कुरान के मदीना सूरा वाक्पटुता और पवित्रता की एक शानदार चमत्कारिकता प्रदर्शित करते हैं।

मक्कन की शैलियों से भिन्न भाषा

सुरस। कभी-कभी इसमें दो शब्दों का प्रयोग होता है, उदाहरण के लिए

सारे संसार के रब और तुम्हारे रब पर , घोषणा करो
सभी प्राणियों में भगवान के नाम का प्रकटीकरण

और एक ही अस्तित्व में, क्रमशः। ऐसा करने से पूर्व को उत्तरार्द्ध के भीतर अभिव्यक्त किया जाता है। कभी-कभी जब

यह आँख की पुतली में एक परमाणु को स्थिर करता है, यह उसी का उपयोग करता है "हथौड़ा" सूर्य को आकाश में स्थिर करने और

यह स्वर्ग की आंख है।

उदाहरण के लिए, इस श्लोक की शुरुआत: उसने आकाश और पृथ्वी को बनाया, और अंत: उसने

रात को दिन में और दिन को

रात में प्रवेश करने के लिए; उसे पूरा ज्ञान है

स्तनों में क्या है (57:4-6)। इसका मतलब है:
"पृथ्वी और आकाश की शानदार रचना और प्रशासन के साथ-साथ, उसे हृदय में क्या घटित होता है, इसका भी पूरा ज्ञान है।" सरल

आम लोगों को ध्यान में रखकर भाषण देने की शैली को एक उच्च और आकर्षक संबोधन के रूप में प्रस्तुत किया जाता है।
सभी का मार्गदर्शन.

प्रश्न: कभी-कभी एक महत्वपूर्ण सत्य
शायद छिपा रह जाए। साथ ही, समाप्त होने का कारण भी छिपा रह सकता है
एक सार्वभौमिक सिद्धांत या दैवीय सिद्धांत या पहलू के साथ एक साधारण
घटना का वर्णन
एकता हमेशा नहीं जानी जा सकती। कुछ लोग इस कुरानिक शैली को
दोषपूर्ण मान सकते हैं। उदाहरण के लिए,
यह बताने के बाद कि कैसे यूसुफ ने उसे हिरासत में लेने की योजना बनाई
भाई (12:69-76), कुरान एक महान सिद्धांत का उल्लेख करता है: "हर ज्ञानी व्यक्ति से
ऊपर कोई ऐसा व्यक्ति है जो अधिक जानता है।" ऐसा लगता है कि

वाक्पटुता के संबंध में अवसर से असंबंधित।
यह आपके द्वारा कैसे समझाया जाता है?

उत्तर: कुरान ईमान, चिंतन और प्रार्थना की किताब है, साथ ही यह
कानून, बुद्धि और मार्गदर्शन की किताब भी है। इसलिए इसमें निम्नलिखित
बातें शामिल हैं:
प्रकृति, अनेक पुस्तकें और असंख्य निर्देश इसमें समाहित हैं। ईश्वरीय
प्रभुत्व को व्यक्त करने के लिए
सर्वव्यापक और भव्य अभिव्यक्तियाँ,
यह महान पुस्तक की एक तरह की प्रतिलिपि और पाठ है
ब्रह्मांड का। नतीजतन, यह कई उद्देश्यों का पीछा करता है
इसके अधिकांश लंबे और मध्यम लंबाई वाले सूरों में (प्रत्येक
जो प्रत्येक पृष्ठ पर एक छोटे कुरान की तरह है, और
अपनी सभी चर्चाओं में.

इसे देखते हुए, कुरान निर्देश देता है
परमेश्वर के ज्ञान में हर अवसर, के पहलू
दिव्य एकता, और विश्वास की सच्चाई। जहाँ भी

यदि उपयुक्त अवसर आता है, चाहे वह कितना भी महत्वहीन क्यों न लगे, कुरान अन्य निर्देश देता है, जिससे वह अवसर महत्वपूर्ण और उपयोगी बन जाता है।

इसकी वाक्पटुता में वृद्धि हुई।

प्रश्न: कुरान में बहुत अधिक विस्तार से बताया गया है
ईश्वरीय एकता, परलोक और ईश्वर का न्याय
मानवता का, स्पष्ट रूप से और सांकेतिक रूप से।
क्या इसका कोई दैवी कारण है?

उत्तर: इस पर विचार करें: कुरान
ईश्वर के विषय में सभी संदेहों को दूर करने के लिए प्रकट किया गया
पृथ्वी के परिवर्तनों, उथल-पुथल और क्रांतियों पर और ब्रह्मांड के जीवन पर नियंत्रण रखना और
इसकी पुष्टि करने के लिए सबसे जिद्दी प्रतिरोध। यह भी
मानवता को निर्देश देने के लिए प्रकट किया गया था, जिसने सर्वोच्च ट्रस्ट और पृथ्वी के शासन को दिव्य कानूनों के अनुसार, सबसे शक्तिशाली और सबसे अधिक में कंधे पर रखा था
शाश्वत जीवन से संबंधित अपने कर्तव्यों के महत्वपूर्ण पहलू
खुशी या कयामत। अगर कुरान ने ध्यान दिलाया
ऐसे मामलों में लाखों बार भी, यह अभी भी
यह समय या शब्दों की बर्बादी नहीं होगी, और वे
कुरान को लाखों लोगों द्वारा पढ़ा और अध्ययन किया जाएगा
बिना किसी बोरियत के कई बार।

• सूरत अल-बुरुज से:

> जो लोग ईमान लाए और अच्छे कर्म किए, उनका
> ऐसे बाग़ होंगे जिनके नीचे नहरें बह रही होंगी (85:11)

यह श्लोक सिखाता है कि मृत्यु, जो सदैव हमारे सामने खड़ा है, कुछ ऐसा है जो हमें बचाता है, हमारा दुनिया को, और हमारे प्रियजनों को अनन्त निष्पादन से, क्योंकि यह उन्हें एक शानदार, शाश्वत लाभ प्राप्त करने का कारण बनता है जीवन। भले ही यह श्लोक अरबों बार दोहराया गया हो समय, और यदि उतना ही महत्व दिया जाता सम्पूर्ण अस्तित्व के लिए, यह अभी भी होगा इतना अधिक न हो कि उसका मूल्य कम हो जाए।

अनगिनत अमूल्य विषयों को पढ़ाने में इस प्रकार की क्रांतियों को साबित करने और लोगों के मन में स्थापित करने की कोशिश करना जो भयानक क्रांतियों को जन्म देंगी ब्रह्मांड को नष्ट करने और बदलने के लिए, कुरान लगातार उन मामलों की ओर ध्यान आकर्षित करता है, चाहे वह स्पष्ट रूप से हो या सांकेतिक रूप से। चूँकि वे रोटी की तरह उपहार हैं, हवा, रोशनी और दवा, जिनकी हमें हमेशा जरूरत होती है और जिन्हें नवीनीकरण और ताजगी की आवश्यकता है, उनका दोहराव कुरान की कृपा है।

• निम्न पर विचार करें:

उदाहरण के लिए, कुरान गंभीरता से दोहराता है, गुस्से और जोरदार ढंग से ऐसी धमकी भरी आयतें अर्थात: जो लोग ईमान नहीं लाते, उनके लिए आग है जहन्नम की ओर ले जानेवाली है (35:36), और अत्याचारियों के लिए दु:खदायी है सज़ा (14:22)। जैसा कि रिसाले-1 में चर्चा की गई है नूर, मानवता का अविश्वास अधिकांश प्राणियों के अधिकारों का इतना कठोर उल्लंघन है कि यह क्रोधित करता है

पृथ्वी और तत्वों को क्रोधित करता है। इस प्रकार वे प्रहार करते हैं
अविश्वासियों को बाढ़ से बचाया।

जैसा कि स्पष्ट रूप से कहा गया है: जब उन्हें फेंका जाता है
उसमें (जहन्नम में) वे उसकी दहाड़ सुनते हैं, जब वह उबलती है
मानो क्रोध से फट पड़ेगा (67:7-8), नरक है
अविश्वासियों से इतना क्रोधित है कि ऐसा लगता है कि
क्रोध से भर जाना। यदि, इतने व्यापक अपराध और असीमित आक्रमण के सामने, और
भौतिक महत्वहीनता के दृष्टिकोण से नहीं
लेकिन अविश्वासी के अधर्म की महानता और अविश्वास की भयानकता के बारे में, और क्रम में
अपनी प्रजा के अधिकारों के महत्व को दर्शाने के लिए
साथ ही अविश्वास की असीम कुरूपता और इनकार करने वालों की
अधर्म, ब्रह्मांड के संप्रभु ने अपने फैसले में सबसे अधिक क्रोध और गंभीरता से दोहराया है
अपराध और उनकी सज़ाएँ अरबों गुना अधिक,
फिर भी यह कोई दोष नहीं होगा। अनगिनत लोग 1,400 सालों से हर दिन इन शब्दों को पढ़ते आ रहे हैं
बहुत उत्सुकता से और बिना किसी ऊब या आवश्यकता की कमी के
यह दर्शाता है कि यह कोई दोष नहीं है।

हर दिन, हर व्यक्ति के लिए एक दुनिया गायब हो जाती है
और एक नई दुनिया का द्वार खुल जाता है।
१००० बार दोहराना कि ईश्वर के अलावा कोई ईश्वर नहीं है
आवश्यकता की भावना और हमारे प्रत्येक को प्रकाशित करने की लालसा के साथ
क्षणभंगुर दुनिया, हम प्रत्येक पुनरावृत्ति को एक दीपक बनाते हैं

प्रत्येक बदलते दृश्य के लिए। कुरान में शाश्वत सम्राट की धमकियों और दंडों को दोहराने के कई कारण हैं, उनमें से एक है लोगों की हठधर्मिता को तोड़ना और उन्हें उनके विद्रोही शारीरिक स्वभाव से मुक्त करना।

इस प्रकार यह उन्हें बदलते दृश्यों और हमेशा भर्ती की गई दुनिया को अंधकारमय करने से रोकना चाहता है, उनके जीवन के दर्पण में प्रतिबिंबित उनकी छवियों को विकृत करना और उन क्षणभंगुर दृश्यों को उनके खिलाफ मोड़ना जो संभवतः उनके लिए परलोक में गवाही देंगे। यहां तक कि शैतान भी इस बात पर विचार नहीं करता कि शैतान के पास जो कुछ है वह उसके लिए है।

कुरान में धमकियों का कठोर और जोरदार दोहराव अनुचित है। यह दर्शाता है कि नरक की यातनाएँ उन लोगों के लिए शुद्ध न्याय हैं जो उनकी परवाह नहीं करते।

• पैगम्बरों की कहानियों की पुनरावृत्ति पर विचार करें,

खास तौर पर मूसा की कहानी: ऐसी कहानियों में

ज्ञान और लाभ के कई उदाहरण हैं। कुरान मुहम्मद के संदेशवाहक होने के सबूत के तौर पर सभी पिछले नबियों की नबूवत को दर्शाता है। इसका मतलब यह है कि सच्चाई के दृष्टिकोण से, कोई भी व्यक्ति उनके संदेशवाहक होने से इनकार नहीं कर सकता जब तक कि वह अन्य सभी नबियों को नकार न दे।

इसके अलावा, चूंकि हर कोई एक ही समय में पूरी कुरान नहीं पढ़ सकता, इसलिए इसमें उन कहानियों को, विश्वास के मूल तत्वों के साथ, लगभग सभी लंबी और मध्यम लंबाई वाली सूराओं में शामिल किया गया है, जिससे हर एक छोटी कुरान की तरह बन जाती है। वाक्पटुता के लिए इसकी आवश्यकता होती है, और यह दिखाने के लिए किया जाता है कि मुहम्मद सबसे महान हैं।

मानवता की सबसे महत्वपूर्ण घटना और ब्रह्माण्ड का सबसे शक्तिशाली पदार्थ।

कुरान मुहम्मद के व्यक्तित्व को सर्वोच्च स्थान देता है और मानता है कि वह ईश्वर के दूत हैं, विश्वास की पुष्टि के दो स्तंभों में से एक (जिसमें विश्वास के चार आवश्यक तत्व शामिल हैं) जो इस स्तंभ के बराबर है कि ईश्वर के अलावा कोई ईश्वर नहीं है। जैसा कि रिसाले-ए- नूर अपने माध्यम से कई प्रमाणों और संकेतों को दर्शाता है, मुहम्मद का संदेशवाहक होना ब्रह्मांड की सबसे बड़ी वास्तविकता है, उनका व्यक्तित्व सबसे महान प्राणी है, और उनका सार्वभौमिक सामूहिक व्यक्तित्व और पवित्र पद (मुहम्मद सत्य) दोनों दुनियाओं का सबसे चमकीला सूर्य है। रिसाले-ए-नूर इस असाधारण पद को ग्रहण करने के लिए उनकी योग्यता के संकेतों और सबूतों पर भी चर्चा करता है। उन हज़ारों सबूतों और संकेतों में से एक यह है:

"कारण जैसा कर्ता" नियम के अनुसार, अच्छे कार्यों की संख्या के बराबर पुरस्कार की राशि

वे कार्य जो उसके समुदाय ने कभी किए हों या करेंगे
पैगम्बर के खाते में जोड़ दिया जाएगा।
उन्होंने ब्रह्माण्ड की समस्त वास्तविकताओं को प्रकाशित किया
वह जो प्रकाश लेकर आया, जो कुछ भी अस्तित्व में है वह उसका ऋणी है
और वह निरंतर प्रार्थनाएँ प्राप्त करता है
और सभी प्राणियों का आशीर्वाद।

इसके अलावा, असंख्य आत्माओं के साथ, उनके समुदाय के असंख्य धर्मी सदस्यों ने भी परमेश्वर की शांति और आशीर्वाद की प्रार्थना की है।

सदियों से, भगवान से उन्हें उनकी शक्ति देने की प्रार्थना कर रहे हैं
आध्यात्मिक पुरस्कार और उनकी प्रार्थनाओं का पुण्य।

उनके अच्छे कर्मों के अभिलेख में उनके अनुयायियों द्वारा किए गए
श्रीमद्भागवत गीता के पाठ से प्राप्त अनगिनत दीप भी सम्मिलित हैं।
कुरान, जिसके प्रत्येक अक्षर से उतने ही अर्थ निकलते हैं
10, 100 या 1,000 इनाम। पहले से जानना
उस प्राणी का सामूहिक व्यक्तित्व (
मुहम्मदी सत्य) भविष्य में स्वर्ग के एक धन्य, विस्तृत वृक्ष की तरह होगा,
सत्य का ज्ञाता अल्लाह तआला ने कहा।
अदृश्य ने उसे सबसे अधिक महत्व दिया
अपने कुरान में उन्होंने अपने आदेश में,
उसकी आज्ञा मानने और सम्मान पाने की ज़रूरत
उनके मार्ग का अनुसरण करके उनकी मध्यस्थता सबसे अधिक है
मानवता के लिए महत्वपूर्ण मामले.

इस प्रकार, चूँकि कुरान में सत्य दोहराया गया है
इतना महान मूल्य है, स्वस्थ स्वभाव वाला कोई भी व्यक्ति

यह प्रमाणित करेगा कि इसके दोहराव में एक शक्तिशाली तत्व निहित है
और अर्थ का व्यापक चमत्कार।

***

दो समापन नोट

पहला नोट: बारह साल पहले, मैंने सुना था कि
खतरनाक और जिद्दी अविश्वासी ने आदेश दिया
कुरान का अनुवाद किया जाएगा ताकि लोग देख सकें
इसके दोहराव को समझें और समझें कि यह वास्तव में क्या है
है। उन्होंने अनुवाद को प्रतिस्थापित करने का भी इरादा किया
निर्धारित प्रार्थनाओं में मूल के लिए। हालाँकि,
जैसा कि रिसाले-ए- नूरशो ने स्पष्ट रूप से कहा है, सटीक अनुवाद
असंभव है, क्योंकि कोई भी अन्य भाषा अरबी के गुणों और बारीकियों
को अरबी की तरह संरक्षित नहीं कर सकती है।
वाक्यविन्यास और व्याकरण में बहुत सख्त है। कोई भी अनुवाद कुरान
के चमत्कारी वाक्यांशों की जगह नहीं ले सकता
और शब्द, जो अर्थ में व्यापक हैं,
और प्रत्येक अक्षर 10 से 1,000 तक लाता है
गुण.

रिसाले -ए-नूर ने भी योजना को रोक दिया
केवल मस्जिदों में पढ़ी जाने वाली कुरान का अनुवाद।
लेकिन चूंकि उस विधर्मी द्वारा सिखाए गए पाखंडी लोग पृथ्वी के सूर्य को
बुझाने का रास्ता खोजते रहते हैं
शैतान के नाम पर कुरान पढ़ने के बाद, मुझे ऐसा महसूस हुआ कि मैं
एमिरदाग का फूल लिखो। क्योंकि वे इसकी अनुमति नहीं देते

मुझे लोगों से मिलने की अनुमति नहीं है, मुझे नवीनतम घटनाक्रम की कोई जानकारी नहीं है।

दूसरा नोट: डेनिज़ली से हमारी रिहाई के बाद

जेल से छूटने के बाद मैं मशहूर होटल सेहिर की सबसे ऊपरी मंजिल पर बैठा था। मेरे सामने के खूबसूरत बगीचों में चिनार के पेड़ों की पत्तियों, शाखाओं और तनों का नाच, हर एक की मस्ती भरी हरकतें, जैसे हवा के झोंके से दरवेशों का घेरा हिल रहा हो, मेरे दिल को दुखा रही थीं, जो भाइयों से अलग होने और अकेले रह जाने के गम में दुखी और उदास था।

अचानक मुझे पतझड़ और सर्दी की याद आ गई, और एक तरह की लापरवाही ने मुझे जकड़ लिया। मुझे उन सुंदर चिनार और जीवों पर इतनी दया आई जो पूर्ण आनंद से झूम रहे थे कि मेरी आँखें आँसुओं से भर गईं। चूँकि वे मुझे ब्रह्मांड के अलंकृत आवरण के नीचे वियोग और मृत्यु की याद दिलाते थे, इसलिए मृत्यु और वियोग से भरी दुनिया का दुःख दबा हुआ था।

मुझे पर।

अचानक, मुहम्मदी सत्य की रोशनी आई और उस दुख और उदासी को खुशी में बदल दिया। वास्तव में, मैं मुहम्मद के व्यक्तित्व का हमेशा आभारी रहूंगा, जिसने उस समय मुझे केवल एक बार मदद और सांत्वना दी।

उस प्रकाश की असीम कृपा का मेरे लिए, सभी विश्वासियों और सभी के लिए। यह इस प्रकार था:

उन धन्य और नाजुक प्राणियों को मृत्यु और वियोग से कांपते हुए, तथा एक निष्फल ऋतु में अस्तित्वहीन होते हुए (लापरवाह लोगों का दृष्टिकोण) कल्पना करते हुए, स्थायित्व के प्रति मेरे जुनून, सौंदर्य के प्रति प्रेम, तथा साथी प्राणियों और जीवित चीजों के प्रति दया की मेरी भावनाओं पर भारी असर पड़ा।

इसने दुनिया को एक तरह के नरक में बदल दिया, और मन को यातना के साधन में बदल दिया। ठीक उसी समय, मुहम्मद ने मानवता के लिए एक उपहार के रूप में जो प्रकाश लाया, उसने पर्दा उठाया और विलुप्ति, गैर-अस्तित्व, शून्यता, व्यर्थता और अलगाव को नहीं दिखाया, बल्कि चिनार के पत्तों की तरह असंख्य अर्थ और उद्देश्य दिखाए, और, जैसा कि रिसाले -ए नूर में दिखाया गया है, परिणाम और कर्तव्य जिन्हें कुछ प्रकारों में विभाजित किया जा सकता है, इस प्रकार:

एक प्रकार राजसी निर्माता के नाम से संबंधित है।
उदाहरण के लिए, हर कोई एक इंजीनियर की सराहना करता है जो एक असाधारण मशीन बनाता है: "भगवान ने क्या चमत्कार किया है। भगवान उसे आशीर्वाद दें।" अपने कार्यों को ठीक से करके, मशीन अपने इंजीनियर को बधाई देती है और उसकी सराहना करती है। हर चीज़, हर जीवित प्राणी, ऐसी ही एक मशीन है और अपने निर्माता को बधाई और सराहना देती है।

वस्तुओं के जीवन के लिए एक अन्य प्रकार का उद्देश्य
चिनार के पेड़ों की तरह उनमें से प्रत्येक एक पाठ जैसा दिखता है
जिसका अध्ययन करने पर ईश्वर का ज्ञान प्रकट होता है
सचेतन जीवधारी। ऐसे प्राणियों के मन में अपना अर्थ छोड़कर, उनके रूप इनमें
प्राणियों की स्मृतियों और विश्व की पटल पर
प्रतीकों या अमूर्त रूपों, और अभिलेखों पर
अदृश्य दुनिया के क्षेत्र में और
अस्तित्व के लिए, वे भौतिक दुनिया को छोड़ देते हैं
अदृश्य की दुनिया। दूसरे शब्दों में, वे हैं
प्रत्यक्ष अस्तित्व से मुक्त होकर अर्थ, अदृश्य और अदृश्य से संबंधित अनेक अस्तित्व प्राप्त होते हैं।
ज्ञान।

चूँकि ईश्वर का अस्तित्व और ज्ञान सभी चीज़ों को समाहित करता है, इसलिए आस्तिक के लिए ईश्वर के अस्तित्व के लिए कोई जगह नहीं है।
दुनिया में गैर-अस्तित्व, अनंत विलुप्ति, विनाश और शून्यता है। लेकिन एक अविश्वासी की दुनिया
अस्तित्वहीनता, अलगाव और विलुप्ति से भरा हुआ है। जैसा कि एक प्रसिद्ध कहावत है: "हर चीज़ मौजूद है
जिसके लिए भगवान है, उसके लिए कुछ भी नहीं है
उसके लिए जिसके लिए ईश्वर मौजूद नहीं है।”

संक्षेप में, जिस प्रकार विश्वास हमें मरने पर अनन्त दण्ड से बचाता है, उसी प्रकार यह प्रत्येक व्यक्ति को बचाता है।
विलुप्ति के अंधकार से विशेष विश्व
और शून्यता। अविश्वास, विशेष रूप से ईश्वर को नकारना,

जीवन के आनंद को दर्दनाक जहर में बदल देता है, व्यक्ति और उसकी दुनिया को मौत के घाट उतार देता है और ऐसे लोगों को नरक जैसे अंधेरे गड्ढों में डाल देता है। जो लोग इस दुनिया को आखिरत से ज़्यादा पसंद करते हैं, उन्हें इस पर ध्यान देना चाहिए। उन्हें इसका हल ढूँढ़ना चाहिए या ईमान को अपनाना चाहिए और खुद को एक भयानक, अनंत नुकसान से बचाना चाहिए।

पवित्र है तू! हमें कोई ज्ञान नहीं, सिवाय उसी के जो तूने हमें सिखाया है। तू सर्वज्ञ, अत्यन्त तत्वदर्शी है।

आपका भाई जिसे आपकी प्रार्थनाओं की बहुत आवश्यकता है और वह आपको बहुत याद करता है।

- नर्सी ने कहा

उनतीसवाँ पत्र

कुरान

नौ अंक

पहला बिंदु: कुछ लोग दावा करते हैं कि कुरान के रहस्य अज्ञात हैं, और इसके व्याख्याकारों ने इसकी सच्चाई को नहीं समझा है। इस दावे के दो पहलू हैं, और इसे बनाने वाले दो समूहों में आते हैं। पहला समूह सत्य और जांच के लोगों से बना है। वे कहते हैं कि कुरान एक असीम खजाना है और सभी लोग, चाहे किसी भी समय के हों, इसके पूरक, निहित सत्यों से अपना हिस्सा प्राप्त करते हैं (दूसरों के हिस्से में हस्तक्षेप किए बिना) जब वे इसके सिद्धांतों और अपरिवर्तनीय आदेशों को स्वीकार करते हैं।

कुरान को समय के साथ और अधिक विस्तार से समझा जा सकता है, और इसके अर्थ के आयाम स्पष्ट हो जाते हैं। हालाँकि, इसका मतलब यह नहीं है कि हमें अपने धर्मी पूर्वजों द्वारा बताए गए इसके शाब्दिक, स्पष्ट सत्य पर संदेह करना चाहिए, क्योंकि निश्चित और निर्विवाद सत्य पर विश्वास करना ही सत्य है।

कुरान और इस्लाम की बुनियादी बातों का पालन करना अनिवार्य है।

कुरान में स्पष्ट रूप से कहा गया है कि यह अवतरित हुआ है स्पष्ट अरबी में (सरल भाषा में) ताकि इसका अर्थ समझा जा सके। ईश्वरीय संबोधन इन अर्थों पर ध्यान केंद्रित करता है, उन्हें पुष्ट करता है, और विस्तृत करता है। उन्हें अस्वीकार करने का अर्थ है ईश्वर का विरोध करना

सर्वशक्तिमान और रसूल की समझ।
स्पष्ट अर्थ जो मौलिक हैं
कुरान की सच्चाइयां स्रोत से ली गई थीं
संदेशवाहक और स्थापित माध्यम से प्रेषित
विश्वसनीय चैनल। इस पर संदेह नहीं किया जा सकता, क्योंकि इब्न
जरीर अल-तबारी42 ने प्रत्येक आयत का अर्थ इस प्रकार बताया:
विश्वसनीय श्रृंखलाओं के माध्यम से संदेशवाहक का स्रोत
उन्होंने कुरान की एक व्यापक व्याख्या लिखी।

दूसरे समूह में या तो एकनिष्ठ मित्र शामिल हैं जो कोशिश करते हुए
मामले को बदतर बना देते हैं
इस्लाम का विरोध करने वाले शैतानी दुश्मनों की मदद करना
आज्ञाओं और विश्वास की सच्चाइयों को मानना चाहते हैं।

---

42 अल-तबारी (सी839-923): विद्वान और विशाल पुस्तकों के लेखक
प्रारंभिक इस्लामी इतिहास और कुरान की व्याख्या का संग्रह। उन्होंने पहले के मुस्लिम विद्वानों के व्याख्यात्मक और ऐतिहासिक पांडित्य के विशाल भंडार को संक्षेप में प्रस्तुत किया, और उन्हें एक विद्वान के रूप में जाना जाता है।
एक इतिहासकार, फ़क़ीह (विधिवेत्ता) और कुरान के व्याख्याता। (सं.)

कुरान की मज़बूत सूराओं के ज़रिए रास्ता बनाओ, जिनके बारे में तुम कहते हो कि वे कुरान की सच्चाइयों के इर्द-गिर्द एक स्टील के किले की तरह हैं। वे ईमान की सच्चाइयों और कुरान पर शक पैदा करने के लिए अपने झूठे दावे फैलाते हैं।

दूसरा बिंदु: सर्वशक्तिमान ईश्वर कुरान में कई चीजों की कसम खाता है। इन कसमों में कई रहस्य और सूक्ष्म बिंदु हैं। उदाहरण के लिए: सूर्य और उसकी सुबह की चमक की कसम (91:1), ग्यारहवें शब्द में व्यक्त सत्य की ओर इशारा करता है और ब्रह्मांड को एक महल या शहर के रूप में प्रस्तुत करता है। या सिन।

पवित्र कुरान (36:1-2) हमें याद दिलाता है कि कुरान की चमत्कारिकता इतनी पवित्र है कि इसकी कसम खाना उचित है।

तारे के अस्त होने की शपथ (53:1) और: नहीं! मैं तारों के स्थान और गिरने की शपथ लेता हूँ, यह एक बड़ी शपथ है यदि आप जानते! (56:75-76), बताते हैं कि गिरते हुए तारे जिन्न और शैतानों को अदृश्य की खबरें सुनने से रोकते हैं। यह रहस्योद्घाटन की प्रामाणिकता के बारे में किसी भी संदेह को समाप्त करता है।43 ये शपथ हमें उन महान शक्ति और पूर्ण-पूर्ण बुद्धि की भी याद दिलाती हैं जो सितारों, उन शक्तिशाली स्वर्गीय वस्तुओं को उनके स्थानों पर सही तरीके से स्थापित करने के लिए आवश्यक है।

[43] इस्लाम से पहले के समय में, माध्यमों और द्रष्टाओं ने जिन्न और शैतानों के माध्यम से अदृश्य की सीमित जानकारी प्राप्त करने की कोशिश की। जब कुरान का अवतरण शुरू हुआ तो यह दरवाज़ा बंद हो गया। (संपादक)

आदेश, और ग्रहों को एक अद्भुत तरीके से बदलने में
रफ़्तार।

हवाओं के लिए जिम्मेदार स्वर्गदूतों की शपथ में :
बिखराव और फटकना (51:1) और:
भेजे गए दूतों (77:1) की ओर हमारा ध्यान आकृष्ट होता है
घूमती हवाओं और हवा में महत्वपूर्ण ज्ञान
लहरें। हमें याद दिलाया जाता है कि ऐसे कथित "बेतरतीब ढंग से चलने वाले" तत्व वास्तव में महत्वपूर्ण सेवाओं और सूक्ष्म उद्देश्यों के लिए उपयोग किए जाते हैं।

संक्षेप में, कुरान की शपथों में कई सूक्ष्मताएं निहित हैं।
चूँकि मेरे पास इन सबकी व्याख्या करने का समय नहीं है, इसलिए मैं केवल
एक बात पर ध्यान दिलाएँ: अंजीर और जैतून के द्वारा
(९५:१).इस शपथ के माध्यम से, सर्वशक्तिमान ईश्वर याद दिलाता है
उसकी शक्ति की महानता, उसकी दया की मानवता
पूर्णता, और उसकी महत्वपूर्ण कृपाएँ। यह शपथ
यह भी बताता है कि सबसे निचले रैंक की ओर बढ़ रहे लोग धन्यवाद, चिंतन,
विश्वास का उपयोग कर सकते हैं,
और अच्छे कर्मों से आध्यात्मिक विकास की शुरुआत होती है
अंततः उन्हें सर्वोच्च पद तक पहुंचने में सहायता मिलेगी।

अंजीर और जैतून का उल्लेख एक विशेष कारण से किया गया है: इन उपयोगी फलों में कई ध्यान देने योग्य सूक्ष्मताएँ हैं। जैतून सामाजिक रूप से महत्वपूर्ण हैं
और व्यावसायिक जीवन और पोषण से भरपूर हैं। अंजीर
ईश्वरीय शक्ति (ईश्वर) के अद्भुत चमत्कार हैं
यह रेत के कण के भीतर एक विशाल अंजीर के पेड़ को समाहित करता है-

आकार के बीज) जो ईश्वरीय गुणों के अनेक पहलुओं को प्रदर्शित करते हैं
अन्य फलों की तुलना में अधिक समय तक टिकने के कारण प्रोविडेंस
लोगों द्वारा उपभोग किया जाता है। उनके पास कई अन्य चीजें भी हैं
लाभकारी गुण जिनका अध्ययन किया जाना चाहिए
वैज्ञानिक।

तीसरा बिन्दु: अंग्रेजी में संक्षिप्त अक्षर

कई कुरानिक सूराओं (अल-हुरूफ अल-मुक़त्तात) के आरंभ में ईश्वरीय संकेत हैं जिनके माध्यम से ईश्वर
अपने खास बन्दे को अदृश्य की कुछ निशानियाँ बताता है। चाबी उस व्यक्ति के हाथ में है और
उसके उत्तराधिकारियों.

चूँकि कुरान हर युग में समझ के हर स्तर को संबोधित करता है, इसलिए सभी लोग, चाहे वे किसी भी स्तर और समय के हों, अपनी समझ के अनुसार इसे समझ सकते हैं।
स्तर। धर्मी पूर्वजों ने किया था और खुलासा किया था
प्राथमिक हिस्सा। संत और सत्य के साधक पाते हैं
इसमें अदृश्य की ओर उनकी आध्यात्मिक यात्रा से संबंधित कई संकेत हैं। मेरी इशारत अल-इजाज़ में
(चमत्कार के संकेत), मैं उन अक्षरों की व्याख्या करता हूँ
उनकी चमत्कारिक वाकपटुता के दृष्टिकोण से
सूरत अल-बकरा की शुरुआत में ।

चौथा बिन्दु: पच्चीसवाँ शब्द सिद्ध करता है
कुरान का सच्चा और सटीक अनुवाद
असंभव। इसकी उत्कृष्ट शैली, इसके चमत्कारी अर्थ का एक तत्व, नकल नहीं की जा सकती। यहां तक कि समझाते हुए भी

इसकी उत्कृष्ट शैली से प्राप्त सत्य और आनन्द असंभव है। फिर भी, मैं इसे समझने का मार्ग दिखाने के लिए कुछ बिंदु उद्धृत करता हूँ, जो इस प्रकार हैं:

> और उसकी निशानियों में से आकाशों और धरती की रचना और तुम्हारी भाषाओं और रंगों का विविधीकरण भी है। (30:22)
>
> और आकाश उसके दाहिने हाथ में लपेटा जाएगा। (39:67)
>
> वह तुम्हें तुम्हारी माताओं के गर्भ में उत्पन्न करता है, तीन छायाओं में एक के बाद एक सृष्टि करता है। (39:6)
>
> उसने आकाशों और धरती को छः दिन में पैदा किया। (7:54)
>
> परमेश्वर मनुष्य और उसके हृदय के बीच आता है। (8:24)
>
> आकाश और पृथ्वी में एक कण के बराबर भी वस्तु, या उससे कम या अधिक, उससे नहीं बच सकती। (34:3)
>
> वह रात को दिन में बदल देता है और दिन को रात में बदल देता है। वह दिलों में जो कुछ है वह सब जानता है। (57:6)

इन आयतों में कुरान ने ईश्वर की रचनात्मकता की सच्चाई को बहुत ही शानदार और चमत्कारी ढंग से दर्शाया है। यह दर्शाता है कि ब्रह्मांड का निर्माता सभी कणों को उनके स्थान पर रखता है, यहाँ तक कि आँख की पुतली में भी, उसी उपकरण से और उसी समय जिस तरह से वह उन्हें ठीक करता है।

वह सूर्य और चंद्रमा को उनके स्थान पर रखता है।
आँखें रखता है और उनके पर्दे हटाता है
उसी माप से और उसी अमूर्त उपकरण का उपयोग करके जिसका
उपयोग वह व्यवस्था करने के लिए करता है
और आकाश को खोल देता है। राजसी निर्माता
किसी व्यक्ति के चेहरे की अनूठी विशेषताएं और बाहरी और
आंतरिक इंद्रियों को उनके स्थानों पर उसी अमूर्त हथौड़े से स्थिर करें जिसका उपयोग
आकाश में तारों को स्थिर करने के लिए किया जाता है।

ये श्लोक यह भी संकेत देते हैं कि महान् निर्माता,
ताकि आंखें देख सकें और कान सुन सकें
कुरान में कहा गया है कि जब वह काम पर होता है तो उसके कार्य
एक कण पर प्रहार करने के लिए एक हथौड़ा के रूप में छंद और फिर
एक ही समय में सूर्य पर प्रहार करें और दूसरे के साथ

एक ही कविता का शब्द। ऐसी उदात्त शैली दर्शाती है
एकता में एकता, अनंत के भीतर अनंत महिमा
अनुग्रह, असीम परम गोपनीयता में शक्ति, असीम
पूर्ण सूक्ष्मता में विस्तार, अनंत करुणा में अनंत भव्यता, और सटीक में
अंतहीन दूरी
वह सभी विपरीतताओं का परम सामीप्य प्रदर्शित करता है
एकता। यद्यपि इसे असंभव माना जाता है, लेकिन ऐसी एकता का
अस्तित्व ब्रह्मांड के अस्तित्व और जीवन के लिए बिल्कुल आवश्यक है।
ऐसी उदात्तता से पहले,
महानतम साहित्यिक हस्तियाँ केवल साष्टांग प्रणाम कर सकती हैं
प्रशंसा.

उत्कृष्ट कुरान महिमा को दर्शाता है
और उनके आधिपत्य की प्रभुसत्ता की भव्यता:
और उसकी निशानियों में से यह भी है कि आकाश और धरती एक दूसरे पर स्थिर रहेंगे।
उसके आदेश से दृढ़ रहो; फिर जब वह तुम्हें एक बार बुला ले
और अचानक तुम ज़मीन से बाहर आओगे
आगे (30:25).

दूसरे शब्दों में कहें तो, स्वर्ग और पृथ्वी शानदार सेनाओं के बैरकों या प्रशिक्षण मैदानों की तरह हैं। अस्तित्वहीनता और नश्वरता के पर्दे के पीछे छिपे हुए, वे उस स्थान पर दिखाई देते हैं जहाँ वे रहते हैं।

सर्वोच्च सभा एकदम सही गति से और
तुरही की ध्वनि या आदेश के प्रति पूर्ण आज्ञाकारिता में: “अंतिम निर्णय के लिए उठो!”

यह श्लोक ब्रह्माण्ड के अंतिम चरण को भी संदर्भित करता है
विनाश और पुनरुत्थान को चमत्कारिक ढंग से उच्चारित शैली में, और निम्नलिखित विश्वास
दिलाने वाले ढंग से
प्रमाण: बीज मिट्टी में ढँक गए और सड़ गए
जमीन, साथ ही पानी वाष्पित और छुपा हुआ
वातावरण में, इस दुनिया में हर बार फिर से प्रकट होते हैं
एकदम सही क्रम और गति के साथ वसंत। यह नकल करता है
पुनरुत्थान, क्योंकि मरे हुए लोग पुनर्जीवित होंगे
उसी तरह ब्रह्माण्ड के अंतिम विनाश के बाद।

अन्य छंदों में वाक्पटुता की मात्रा की तुलना ऊपर उद्धृत छंदों से करें और निर्णय लें कि क्या

कुरान का सभी भाषाओं में सटीक अनुवाद नहीं किया जा सकता
इसकी पूर्णता। वह सब कुछ जो किया जा सकता है, चाहे वह पहली बार ही क्यों न हो
पहला कदम, संक्षिप्त या अपेक्षाकृत लंबी पद्य-दर-पद्य व्याख्या करना है।

पाँचवाँ बिंदु: उदाहरण के लिए: अल-हम्दु लि-ल्लाह
(सभी प्रशंसा ईश्वर के लिए है) एक कुरानिक वाक्य है जिसका अर्थ
अरबी वाक्यविन्यास और शब्दार्थ के अनुसार है,
कि हर प्रशंसा और धन्यवाद जो कभी किया गया है या
किसी भी प्राणी द्वारा बोला जाएगा, वास्तव में, के लिए और
अनिवार्यतः विद्यमान सत्ता: ईश्वर द्वारा योग्य।

हर का अर्थ अल (द) से निकला है ।
किसी भी प्राणी का अर्थ हम्द (प्रशंसा) से निकलता है ,
क्योंकि मूल अरबी में यह क्रिया के साधारण रूप में है।
अरबी में सामान्य अर्थ को छोड़कर व्यक्त किया जाता है
क्रियाविशेषण से पहले विषय। जैसा कि यह वाक्य
इसमें कोई वस्तु नहीं है, हालांकि यह किसी ऐसे व्यक्ति (या किसी चीज़)
को संबोधित है जो या तो मौजूद है या अनुपस्थित है,
इसका अर्थ सामान्य है। इसलिए, हम किसी भी
इस छोटे से वाक्य से .

जो हुआ है या कभी होगा वह इसी से आता है

नियम यह है कि क्रिया खंड से संज्ञा खंड में संक्रमण
खंड दृढ़ता और अवधि को इंगित करता है ।
योग्य को पूर्वसर्ग ली (से) में व्यक्त किया जाता है
या ईश्वर के लिए), जो योग्यता को निर्दिष्ट और व्यक्त करता है। चूँकि
अल्लाह ईश्वरीय सत्ता का सबसे बड़ा सेवक है

नाम, और चूंकि अस्तित्व दिव्य सत्ता के लिए आवश्यक और अपरिहार्य है और एक झांकी है
राजसी अस्तित्व पर चिंतन करने में मदद करें, अल्लाह अनिवार्य रूप से विद्यमान अस्तित्व को दर्शाता है। अगर
यह इस तरह के संक्षिप्त शब्द का स्पष्ट, संक्षिप्ततम अर्थ है
वाक्य, जिस पर भाषाविदों द्वारा सहमति व्यक्त की गई है
अरबी, इसका उसी भाषा में अनुवाद कैसे किया जा सकता है?
शक्ति और चमत्कार?

केवल एक अन्य भाषा अरबी भाषा से मिलती जुलती है
वाक्यविन्यास तो ठीक है, लेकिन यह अरबी भाषा से व्यापकता में प्रतिस्पर्धा नहीं कर सकता। ऐसे में, कुरान की
पवित्र शब्द, अरबी में प्रकट हुए और इसलिए एक वाक्यविन्यास और व्यापकता प्रदर्शित करते हैं
सर्वव्यापी ज्ञान एक ही समय में हर चीज़ में प्रवेश करता है, इसके सभी सूक्ष्म अर्थों, संकेतों के साथ अन्य भाषाओं में अनुवादित किया जा सकता है,

और चमत्कारी शैली? वास्तव में, प्रत्येक अक्षर
कुरान सच्चाईयों का इतना समृद्ध खजाना है कि
स्पष्टीकरण कम से कम एक पृष्ठ तक विस्तृत हो सकता है।

छठा बिन्दु: इस अर्थ को बेहतर ढंग से व्यक्त करने के लिए,
मैं एक घटना का वर्णन कर रहा हूँ जिसने मुझे ज्ञान दिया।
“हम” पर विचार किया केवल आपकी ही हम पूजा करते हैं
और हम तुझसे ही सहायता मांगते हैं (1:5)
यह समझने के लिए कि हमें क्यों प्राथमिकता दी गई। सामूहिक प्रार्थना के गुण अचानक से समझ में आ गए

मैंने पाया कि मस्जिद की हर जमात मेरे लिए एक तरह से मध्यस्थ थी, मेरे द्वारा घोषित किए गए कारणों और सत्यों का साक्षी और समर्थक। मुझे लगा कि मैं जमात की व्यापक प्रार्थना के साथ ईश्वरीय न्यायालय में अपनी गलत प्रार्थना पेश करने के लिए प्रोत्साहित हूँ।

एक और पर्दा गिरा, और मैंने इस्तांबुल की सभी मस्जिदों को एक मस्जिद और उनके उपासकों को एक विशाल समूह के रूप में कल्पना की। मुझे लगा कि मैं उनकी प्रार्थनाओं और पुष्टियों में शामिल हूँ।

इसके बाद, मैंने खुद को काबा के चारों ओर पूजा करने वालों की गोलाकार पंक्तियों में कल्पना की, और कहा: "अल-हम्दु लि-ल्लाह, रब्ब अल-अलामिन (सभी प्रशंसा ईश्वर की है, जो संसार के स्वामी हैं)", यह देखते हुए कि मेरे पास बहुत से मध्यस्थ हैं जो मेरी प्रार्थना के हर शब्द को दोहरा रहे हैं और पुष्टि कर रहे हैं। इस विचार ने मुझे काबा को प्रार्थना स्थल (मीहराब) के रूप में देखने के लिए प्रेरित किया। पवित्र काले पत्थर को अपने विश्वास की स्वीकारोक्ति सौंपते हुए: "मैं गवाही देता हूँ कि ईश्वर के अलावा कोई देवता नहीं है, और मैं गवाही देता हूँ कि मुहम्मद ईश्वर के दूत हैं-

गेर," जिसे पूरी मण्डली ने कहा, मैंने देखा कि मण्डली में तीन मंडलियां शामिल थीं:

पहला चक्र सभी विश्वासियों और एकेश्वरवादियों द्वारा गठित सबसे शक्तिशाली समूह था। दूसरा चक्र सभी प्राणियों से बना था जो ईश्वर के प्रति समर्पित थे।

ईश्वर की सबसे व्यापक प्रार्थना और महिमा में, प्रत्येक प्रजाति अपने तरीके से प्रार्थना और प्रशंसा करती है। उनकी सेवाएँ, जिन्हें “वस्तुओं के कार्य या कर्तव्य” कहा जाता है, उनकी पूजा का रूप हैं।

यह जानते हुए मैंने कहा: “अल्लाहु अकबर (ईश्वर सबसे महान है)” और आश्चर्य से अपना सिर झुका लिया।

तीसरा घेरा मेरा शरीर था, जो एक अद्भुत और फिर भी छोटा और महत्वहीन संसार था, लेकिन वास्तव में यह अपने कार्य के कारण एक बहुत बड़ा और महत्वपूर्ण संसार था। इसका हर अंग, कोशिकाओं से लेकर बाहरी इंद्रियों तक, पूजा करने और धन्यवाद देने में व्यस्त है। इस घेरे में, मैंने अपने हृदय में आध्यात्मिक क्षमता को महसूस किया जो उस मण्डली की ओर से यह गा रहा था: केवल आप ही की हम पूजा करते हैं, और केवल आप ही से हम सहायता माँगते हैं, जैसा कि मेरी जीभ ने अन्य दो मण्डलियों की ओर से किया था।

संक्षेप में, हम केवल तेरी ही पूजा करते हैं, उन तीन जमातों को संदर्भित करता है। अभी भी इस अवस्था में, मैंने कल्पना की कि ईश्वर के रसूल, कुरान के वाहक और प्रसारक का आध्यात्मिक व्यक्तित्व मदीना में अपना सबसे भव्य रूप धारण कर रहा था, जिसे इस दुनिया में उसका उपदेशक माना जा सकता है, और वह कह रहा था: "ऐ लोगों, अपने रब की पूजा करो।"

मैंने कल्पना की कि तीनों मण्डलियाँ उसकी आज्ञा का पालन करते हुए यह पाठ कर रही होंगी: हम केवल आपकी ही आराधना करते हैं।

फिर, "जब कोई चीज स्थापित होती है, तो वह स्थापित होने के लिए आवश्यक सभी चीजों के साथ स्थापित होती है" के नियम के अनुसार, मेरे दिमाग में निम्नलिखित सत्य आया: संसार का स्वामी सभी लोगों को और उनके माध्यम से सभी प्राणियों को संबोधित करता है। फिर ईश्वर का दूत उस सम्मान की बात मानवता को, आत्मा और चेतना वाले सभी प्राणियों को, समय की परवाह किए बिना संप्रेषित करता है। चूँकि अतीत और भविष्य को इस प्रकार वर्तमान माना जा सकता है, इसलिए सभी लोग [समय और स्थान की परवाह किए बिना] विभिन्न पंक्तियों से बनी एक सभा के रूप में इस संबोधन को सुनते हैं।

यह सत्य, चाहे कितना भी काल्पनिक क्यों न हो, मुझे दिखाता है कि प्रत्येक आयत में अपनी सूक्ष्म शैली, वाक्पटुता और प्रवाह में एक चमत्कारी चमक है। ये सभी अनंत भव्यता और महिमा के शाश्वत वक्ता से, उस महान प्रेषक के माध्यम से आते हैं, जिसे ईश्वर द्वारा प्रिय होने का सबसे बड़ा दर्जा प्राप्त है, और इसके श्रोताओं की विविधता और भीड़ से। यह पूरे कुरान को, यहाँ तक कि इसके प्रत्येक शब्द को भी चमत्कारी बनाता है। मैंने कहा: "विश्वास के प्रकाश और कुरान के लिए सभी प्रशंसा ईश्वर को है" और, उस काल्पनिक दुनिया से बाहर निकलकर, जिसमें मैं अक्षर नून (n) के माध्यम से प्रवेश कर चुका था,44 समझ गया कि कुरान के अलावा

[44] नून शब्द को विभिन्न काल में क्रिया के आगे और पीछे लगाया जाता है जिसका अर्थ होता है हम, जैसे कि ना'बुदु (हम पूजा करते हैं)।

छंद और शब्द, यहाँ तक कि इसके कुछ अक्षर भी, जैसे
नाबुदु में, महत्वपूर्ण सत्यों की उज्ज्वल कुंजियाँ हैं ।

जब मेरा दिल और कल्पना बाहर आ गई
इस स्थिति में, मेरे तर्क ने कहा: "मुझे अपना हिस्सा चाहिए। मैं तुम्हारी तरह
उड़ नहीं सकता। मैं सबूतों के पैरों पर चलता हूँ और
तर्क। आपको मुझे रास्ता दिखाना चाहिए
सृष्टिकर्ता, पूज्य, जिसकी सहायता मांगी जाती है
क्योंकि हम उसी की इबादत करते हैं और उसी से मदद मांगते हैं
कि मैं आपके साथ चल सकता हूं।" जवाब में, मैंने कहा
हृदय भ्रमित कारण से कहता है:

> देखो कैसे सभी प्राणी, चाहे सजीव हों या निर्जीव,
> अपने कर्तव्यों को सही क्रम में पूरा करके परमेश्वर की आराधना करें
> और आज्ञाकारिता। उनमें से कुछ, बेहोश या गूंगा या भावनाहीन होने के बावजूद, एकदम सही क्रम में कर्तव्यों का पालन करते हैं जैसे कि वे सचेत हों और भगवान की पूजा कर रहे हों। इसका मतलब है कि एकमात्र, वास्तव में पूज्य
> और पूर्णतया आज्ञाकारी, उन्हें अपनी आराधना करने के लिए नियुक्त करता है।
>
> पुनः देखें, और पाएंगे कि सभी प्राणी, विशेषकर
> सजीव लोगों की अनगिनत ज़रूरतें और मांगें होती हैं
> यदि उन्हें अस्तित्व में रहना है और जीवित रहना है तो इन अपेक्षाओं को पूरा करना ही होगा।
> वे अपने सबसे तुच्छ लोगों से भी नहीं मिल पाते
> उनकी अपनी ज़रूरतें हैं, और फिर भी हम देखते हैं कि उनकी ज़रूरतें
> नियमित रूप से, समय पर और अप्रत्याशित स्थान से मिलते हैं।

ऐसी असीम गरीबी और अभाव, साथ ही ऐसी
उनकी आवश्यकताओं की असाधारण संतुष्टि
अदृश्य और दया की सहायता से पता चलता है कि उनके पास है
एक अत्यंत समृद्ध, उदार और शक्तिशाली रक्षक
और सहायता के लिए सब वस्तुएं उसकी ओर मुड़ती हैं,
खास तौर पर जीवित प्राणियों के माध्यम से। दूसरे शब्दों में,
मदद मांगने की भाषा में, वे कहते हैं: आप अकेले ही करते हैं
हम मदद मांगते हैं.

तर्क ने जवाब दिया: “मैं भी विश्वास करता हूँ और पुष्टि करता हूँ।”

सातवां बिंदु: फिर मैंने कहा: हमें उस तक ले चलो

सीधा मार्ग, उन लोगों का मार्ग जिन्हें तूने
धन्य (1:6-7)। मानवता के सभी कारवां के बीच, मैंने तुरंत ही शानदार कारवां देखा
पैगम्बर, सत्यवादी, शहीद, संत और धर्मपरायण
लोग सीधे राजमार्ग पर अनंत काल में चले जाते हैं,
भविष्य से सारा अंधकार दूर हो जाएगा। इस प्रार्थना ने मुझे उस कारवां में शामिल होने के लिए प्रेरित किया। मैंने अचानक कहा: "परमेश्वर की जय हो!" किसी को भी होना चाहिए
यह देखने में सक्षम होना कि यह कितना बड़ा नुकसान और विनाश नहीं है
उस शानदार कारवां में शामिल होने के लिए जो अत्यंत प्रगति कर रहा है
भविष्य को रोशन करने के लिए सुरक्षा। वे कहाँ हो सकते हैं
जो लोग इस्लाम में गैर-इस्लामी नवाचारों को शामिल करके उससे दूर हो जाते हैं, उन्हें प्रकाश कैसे मिलेगा? वे मुक्ति के लिए क्या कर सकते हैं?

ईश्वर के रसूल, जो हमारे मार्गदर्शक हैं, ने घोषणा की:
"प्रत्येक नवाचार एक विचलन है, और प्रत्येक विचलन एक विचलन है,

ऐसी बुराई से क्या लाभ ?

विद्वानों को क्या लाभ मिलने की आशा है? वे किस सिद्धांत पर लाभ उठा सकते हैं?
इस्लाम के स्व-स्पष्ट चिह्नों के प्रति अपने विरोध का आधार रखते हैं
या सार्वजनिक प्रतीक या अनुष्ठान (जैसे, अज़ान [आह्वान]
प्रार्थना], त्यौहार के दिन जानवरों की बलि देना
कुर्बानी, जुमा और अन्य सामूहिक कार्य
प्रार्थनाएँ)? वे उन्हें परिवर्तनशील कैसे मान सकते हैं?
वे क्षणिक, भ्रामक प्रकाश से भ्रमित हो गए होंगे
अर्थ के एक पहलू के कारण.

उदाहरण के लिए, एक छिला हुआ फल अपनी स्वादिष्टता को अधिक स्पष्ट रूप से दिखा सकता है, लेकिन बहुत कम समय के लिए, क्योंकि यह जल्द ही पक जाता है।
चोट लगने लगती है और सड़ने लगती है। उसी तरह,
भविष्यसूचक और दैवीय अभिव्यक्तियाँ और अवधारणाएँ
इस्लाम के सार्वजनिक प्रतीकों या अनुष्ठानों में जीवित और सुरक्षात्मक त्वचा की तरह हैं। जैसे कि जब इन्हें हटा दिया जाता है,
किसी दूसरी भाषा में अज़ान पढ़ना मुबारक है
अर्थ उज्ज्वल या अधिक समझ में आने वाला लग सकता है। लेकिन
यह जल्द ही अपनी ताज़गी और भावना खो देता है,
अपने "शव" को अंधेरे दिमाग और आत्माओं में छोड़ रहा है।
प्रकाश बुझ जाता है, और केवल धुआँ रह जाता है।

आठवां बिंदु: कानून के दो क्षेत्र हैं: व्यक्तिगत अधिकार और
सार्वजनिक कानून। दोनों ही संविधान में पाए जाते हैं।
शरिया। यह बाद वाला समूह, जिसे माना जा सकता है

---

45 मुस्लिम, शुक्रवार, 43; अबू दाऊद, सुन्नत, 5.

ईश्वर के अधिकारों में इस्लाम के "सार्वजनिक प्रतीक या अनुष्ठान" या "झंडे" शामिल हैं। चूँकि सभी मुसलमान

इन प्रतीकों से संबंधित किसी भी प्रकार का हस्तक्षेप उनकी सहमति के बिना उनके अधिकारों का हनन है।

यहां तक कि छोटे प्रतीक भी, जैसे कि प्रशंसनीय कर्तव्य,

इस्लाम के सबसे बुनियादी मामलों की तरह ही महत्वपूर्ण हैं। जो लोग इनको बदलने या खत्म करने की कोशिश करते हैं, वे

प्रतीकों और उनके समर्थकों को यह समझना चाहिए कि ऐसे मामले सभी मुसलमानों से संबंधित हैं।

वे सभी मुसलमानों को जोड़ने वाली उज्ज्वल कड़ी हैं

इस्लाम और एक दूसरे के बीच खुशी के युग से ही घनिष्ठ संबंध रहे हैं।

उन्हें समझना चाहिए कि वे क्या कर रहे हैं

सबसे भयंकर पाप। जिस किसी के पास भी थोड़ा सा भी
चेतना को अपरिहार्य भयावहता से कांपना चाहिए

नतीजे।

नौवाँ बिंदु: कुछ शरीयत मामले इबादत से जुड़े हैं। मानवीय तर्क से स्वतंत्र होने के कारण, उनके पालन का कारण ईश्वर का आदेश है। अन्य शरीयत मामले किसी उद्देश्य या किसी समझ में आने वाले लाभ को प्राथमिकता देने का परिणाम हैं।

फिर भी, उनके कानून बनाने का असली कारण
यह ईश्वरीय आदेश है।

पूजा से संबंधित सार्वजनिक प्रतीकों पर भरोसा नहीं किया जा सकता
किसी भी कल्पित या मनगढ़ंत लाभ पर, चाहे जो भी हो
कथित लाभकारी परिणाम। कोई भी हस्तक्षेप नहीं कर सकता

उनके साथ रहो। इसके अलावा, ईश्वरीय ज्ञान भी

उनके विधान के प्रयोजन या परिणामी लाभ उनके ज्ञात लाभों तक ही सीमित नहीं हैं।

उदाहरण के लिए, अज़ान मुसलमानों को क्यों बुलाती है?
बंदूक चलाते समय प्रार्थना करने से भी वही परिणाम प्राप्त होगा
नतीजा? हमें यह समझना चाहिए कि अज़ान का बहुत बड़ा असर हुआ है

इससे भी ज़्यादा फ़ायदे हैं बंदूक चलाने से
वही परिणाम प्राप्त किया जा सकता है, लेकिन यह अज़ान का स्थान कैसे ले सकता है , जो उस क्षेत्र के लोगों की ओर से ईश्वर की एकता की घोषणा करने का एक साधन भी है,
मानवता और ब्रह्मांड के निर्माण का सबसे बड़ा उद्देश्य और परिणाम क्या है? यह ईश्वरीय प्रभुत्व के लिए उनकी सेवा और पूजा को भी व्यक्त करता है।

संक्षेप में, नरक का एक कारण है। बहुत सी बातें
आज जो कुछ हो रहा है उसे देखकर मन करता है कि चिल्लाएं: "लंबे समय तक नरक में रहो! स्वर्ग सस्ता नहीं मिलता, बल्कि
बहुत ऊंची कीमत पर। याद रखें: निवासियों
आग के और जन्नत के वासी हैं
बराबर नहीं। जन्नत के निवासी-वे हैं
विजयी (59:20).

अनुक्रमणिका

ए

बी

सी

डी

एन

पी

टी

में

वी

में